पिता पुत्र

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

पिता पुत्र

होमेन बरगोहांई

अनुवाद
दिनकर कुमार

एकः सूते सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

आवरण : बिमान दास द्वारा बनाए गये शिल्प पर आधारित

ISBN 81-237-3964-8

पहला संस्करण : 2002 *(शक 1924)*

रु. 75.00

Original Title : Pita Putra *(Asamiya)*

Translation : Pita Putra *(Hindi)*

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

अपने जीवन के कुछ अत्यंत आनंददायक क्षणों की
स्मृति में
मैं यह पुस्तक
डा. रबीन्द्र कुमार गोस्वामी
और
डा. (श्रीमती) लक्ष्मी गोस्वामी
को अर्पित करता हूं

भूमिका

होमेन बरगोहांई एक प्रतिभाशाली निबंधकार, आधुनिक कवि, श्रेष्ठ कहानीकार, समीक्षक, प्रमुख असमिया उपन्यासकार और पेशे से पत्रकार हैं। पत्रकार के रूप में इन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का सपादन किया है और ऐसा करते हुए हर बार असम की पत्रकारिता में नया अध्याय जोड़ा है। लेखक और पत्रकार के रूप में इनके पास अपनी प्रतिबद्धता, विश्लेषण और अंतर्दृष्टि रही है। पचास के दशक के लेखक के रूप में बरगोहांई साहित्यिक पत्रिका **रामधेनु** से भी जुड़े रहे, जिसका संपादन स्व. वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य करते थे। उस दौरान विश्व साहित्य के श्रेष्ठ गुणों को असमिया साहित्य में प्रस्तुत करने की कोशिश करनेवाले लेखकों में बरगोहांई भी शामिल थे। साहित्यिक जीवन की शुरुआत में उनका आकर्षण फ्रांस के प्रतीकवादियों और अंग्रेजी के आधुनिक कवियों की तरफ हुआ। उनकी कविताओं पर बाहर का प्रभाव पड़ा। उन्होंने बॉदलेयर की एक कविता का असमिया अनुवाद कर 'रामधेनु' में प्रकाशित करवाया था। इस सामान्य सी बात का उदाहरण देना इसीलिए उचित जान पड़ा, क्योंकि आज भी बरगोहांई के लेखन में परिपक्व अदाज में प्रतीकवाद के प्रति रुझान उजागर होता है।

राजनीतिक अस्थिरता, जनता की बढ़ती गरीवी और निरक्षरता, प्राचीन मूल्यों और संस्थाओं का तीव्र पतन—स्वतंत्रता के बाद के असमिया उपन्यास की पृष्ठभूमि में यही सब रहा है। बाद के दिनों में बदलाव तो आ रहा था मगर वह सकारात्मक नहीं था। जनता ने जिस तरह के बदलाव के सपने देखे थे, वे सपने चकनाचूर हो गए। भ्रष्टाचार, निरंकुशता, छल से भरपूर नेतृत्व को स्वातंत्र्योत्तर कई असमिया उपन्यासों में विषय बनाया गया है, बरगोहांई के उपन्यास भी उसी श्रेणी के हैं। आपने दूसरे कई समकालीन लेखकों की तरह बरगोहांई भी सामाजिक यथार्थ पर ज्यादा ध्यान देते हैं। एक प्रमुख पत्रकार के रूप में इनके पास राजनीतिक नेतृत्व और व्यावसायिक वर्ग की गहरी जानकारी रही है और लेखक के रूप में इन्होंने जनता के साथ इन वर्गो द्वारा होने वाले शोषण को प्रभावशाली तरीके से व्यक्त किया है।

सुबाला (1963), तांत्रिक (1967), अष्टराग (1968), कुशीलव (1970), तिमिर तीर्थ (1975), हालधीया चराये बाउधान खाइ (1973), मत्स्यगंधा (1987), और

साउदर पुतेके नाउ मेलि जाय (1987) उनके अन्य उपन्यास हैं। 'पिता पुत्र' सर्वप्रथम 1975 में प्रकाशित हुआ। बरगोहांई का यथार्थवाद छाया चित्र की तरह नहीं है और उपन्यासकार के रूप में उन्होंने भारतीय समाज के अहम मुद्दों—गरीबी, बेरोजगारी, मूल्यों का पतन, जातिवाद और शीर्ष स्थान पर भ्रष्टाचार को अपनी लेखनी से उजागर किया है। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत कहानीकार व कवि के रूप में पचास के दशक में की थी और सत्तर के दशक में एक उपन्यासकार के रूप में उन्होंने अपनी पहचान बना ली थी। उनकी गिनती असमिया के गिने-चुने श्रेष्ठ उपन्यासकारों में की जाती है और उनके उपन्यास 'पिता-पुत्र' को असमिया साहित्य का महत्वपूर्ण उपन्यास कहा जा सकता है।

जैसा कि शीर्षक से ही पता चलता है, 'पिता-पुत्र' दो पीढ़ियों और उनके बीच के अंतराल की कथा है। कथा को जीवंत बनाने के लिए उपन्यासकार ने विशिष्ट शैली में कथानक का ताना बाना तैयार किया है। उपन्यासकार को ग्रामीण असम के जीवन का अनुभव है और ग्रामीण जीवन के उतार-चढ़ाव से वे भली-भाति परिचित हैं। मोहधूलि असम के दूर-दराज इलाके में स्थित एक गांव है जिसे लेखक ने मंच के रूप में चुना है, जहां आजादी के बाद की घटनाएं मंचित होती हैं। मगर जब हम किस्सागो के साथ-साथ आगे बढ़ते हैं तब पाते हैं कि वह हमें महज उस जीवन का ब्यौरा ही नहीं दे रहा है, न ही उस जीवन का साक्षात्कार भर करवा रहा है बल्कि हमें जीवन का एक बड़ा हिस्सा दे रहा है जिसे हम अपनी धमनियों में महसूस कर सकते हैं।

प्रथम अध्याय में ही उपन्यास का स्वर और वातावरण उजागर होता है। जिसे लेखक ने सावधानी पूर्वक चुना है। केंद्रीय चरित्र का एकाकीपन और अलग-अलग होने का अवसादपूर्ण अनुभव तथा निष्क्रियता का आभास हमें हो जाता है। शिवनाथ सोचता है और महसूस करता है। वह गंध महसूस कर सकता है और देख सकता है मगर वह सक्रिय नहीं हो सकता। वह स्मृतियों और इच्छाओं के जगत में विचरण करता है, मगर जब तक वह सक्रिय हो पाए, विचार उड़न छू हो जाते हैं। जीवन के प्रति उसका रवैया उदासीनता से भरपूर है। उसे धूल, गंदगी, दुर्गंध और नष्ट होती जा रही चीजों का ध्यान रहता है। देहात आदर्श जगह नहीं रह गया है, न ही वहां आजादी की रोशनी फैल पाई है। वातावरण निरस और दमघोंटू है। सड़े हुए केंचुओं की दुर्गंध फैली हुई है, तिलचट्टे की बदबू फैली हुई है। तीखी धूप में एक लड़का घुटने तक कीचड़ से लथपथ होकर स्कूल से घर लौटता है। दृश्य और गंध कष्टकर हैं। बच्चे किसी भी खुली जगह में टट्टी करते हैं, बारिश से भरे नालों में टट्टी को तैरते हुए देखा जा सकता है। हर चीज बदसूरत और निरस है, सिर्फ उन जंगली फूलों को छोड़कर जो मानव निर्मित माहौल को खुशनुमा बनाने की नाकाम कोशिश कर रहे हैं।

बरगोहांई का कहना है कि उन्होंने अपने छोटे से गांव को केंद्र में रखकर अपने उपन्यासों की रचना की है। उनका यह कथन पूरी तरह सही है। ऐसा करते हुए वह अपनी आधुनिक संवेदनशील दृष्टिकोण को अपनाते रहे हैं। मोहधूलि के निवासी अपनी रफ्तार में जीवन गुजार रहे हैं। दरिद्रता और तकलीफ झेलने वाले लोग ऐसी जमीन को भी जोतते हैं, जो उर्वर नहीं है। वे लोग अपनी नियति को दोप देते हैं। निरर्थकता की अनुभूति से घिरा हुआ शिवनाथ सामूहिक गतिविधियों और जीवन को स्वीकार करने की स्थिति की पृष्ठभूमि में एक काला पार्श्व चित्र बनाता हुआ नजर आता है।

पिता-पुत्र का किस्सागो लगातार दो दुनिया में घूमता रहता है—सक्रियता की बाहरी दुनिया और मोहधूलि की घटनाएं व केंद्रीय चरित्र का अवचेतन मन। बहुत सारे तथ्यों को यहां विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत किया गया है और उनके प्रति शिवनाथ की प्रतिक्रिया को भी दर्शाया गया है। वह उन तथ्यों का अध्ययन करता है। उन पर तर्क करता है, विश्लेषण करता है, चीजों को तर्क-संगत परिणाम तक ले जाने की कोशिश करता है, मगर जब निर्णय लेकर कुछ करने का पल आता है, वह घोंघे की तरह अपने खोल के भीतर दुवक जाता है। जैसे-जैसे समय गुजरता जाता है और हर चीज में बदलाव आने लगता है, शिवनाथ वदलाव के मिजाज से अपनी दूरी महसूस करने लगता है। उसकी अपेक्षाओं और वास्तविकता के बीच का अंतर इतना वढ़ता जाता है कि उसका दिल टूट जाता है और वह खामोश रहने लगता है। सक्रिय होने और बाहरी जगत के साथ तालमेल कायम करने में नाकाम रहने के कारण जहां उसे एक अन्य जगत में जीना पड़ता है वहीं वह एक दूसरे जगत पर विश्वास करता है। लगातार अलग-थलग विचारों की दुनिया में जीते हुए उसे कुछ ऐसे मूल्यों को अपनाकर जीना पड़ता है। जिन पर वह हृदय से विश्वास नहीं करता।

आजादी के बाद मोहधूलि जैसे छोटे से गांव में कई अहम बदलाव आते हैं। कुछ स्वतंत्रता सेनानी, चुने गए जनप्रतिनिधि और तस्कर आपस में सांठ-गांठ कर गरीब और अनपढ़ लोगों का शोपण करना शुरू कर देते हैं। आजादी से पहले अफीम का प्रचलन था तो आजादी के बाद धड़ल्ले से शराब बिकने लगती है। व्यवस्था ऐसी बनती है जो जनता को गरीबी और बदहाली के कुचक्र से बाहर निकलने का कोई अवसर नहीं देती। बाढ़ का प्रकोप कुछ लोगों के लिए वरदान बन जाता है। बाढ़ राहत के नाम पर वोट की राजनीति शुरू हो जाती है।

पिता पुत्र की रूपरेखा सावधानीपूर्वक वनाते हुए उपन्यासकार ने एक महत्वाकांक्षी कृति की रचना की है। मोहधूलि जैसे छोटे से गाव में बड़ी-बड़ी घटनाएं नही घटतीं, न ही लेखक कपोलकल्पित किरदारों की मदद से घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने की कोशिश करते हैं। इसी तरह वे छोटी-छोटी घटनाओं को भी नजरअंदाज नहीं

करते। अध्याय के बाद अध्याय का विवरण या तो लेखक की जुबानी प्रस्तुत किया गया है या किसी किरदार के मुंह से कहलवाया गया है। विवरण चाहे देखने में सामान्य लगते हों, उनके माध्यम से पुरानी जीवन शैली में आ रहे बदलाव और द्वंद्व का चित्रण बखूबी किया गया है।

पिता पुत्र का किस्सागो बेरहमी के साथ मोहभंग और मिथकों के टूटने की दास्तान सुनाता है। भूमि सर्वेक्षण करनेवाला एक चरित्र अपनी नौकरी छोड़कर बलिदान का उदाहरण देता है और आजादी की लड़ाई में शामिल हो जाता है। बाद में पता चलता है कि ज्यादा पैसा कमाने और सत्ता के गलियारे तक पहुचने के लिए उसने ऐसी कुर्बानी दी थी। शिवनाथ अपने जिस पिता को साधु के समान महान मानता है, वही पिता नदी पार कर रही औरत की जांघ की तरफ कामुक नजरों से देख रहे होते हैं। आसपास के गांवों पर शिवनाथ के परिवार का जो एकछत्र राज्य था वह समय के साथ-साथ खत्म हो जाता है। ग्रामीण उतने सहज-सरल नहीं हैं, जैसा कि उनके बारे में सोचा जाता है। उनमें से ज्यादातर चालाक और कपटी हैं। यह भी एक मिथक लगने लगता है कि गांव के लोग सामूहिक रूप से एक-दूसरे के सुख-दुःख बांटते हुए जीते हैं।

तीव्र घटनाप्रवाह और विस्तृत परिदृश्य का चित्रण करते हुए 'पिता पुत्र' के लेखक ने कई महत्वपूर्ण प्रश्न खड़े किए हैं। वे निरंतर मूल्यों और संस्थाओं का अर्थ ढूंढते हुए नजर आते हैं। रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी जरूरतों के लिए तरस रहे लोगों का चित्रण करते हुए लेखक ने कई बुनियादी सवाल खड़े किए हैं। क्रियाएं और घटनाएं उपन्यास में नाटकीय तरीके से प्रस्तुत होती हैं और लेखक दृष्टिकोण की भिन्नता के जरिए घटनाओं को विश्वसनीय बनाने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक छोटा-सा चरित्र दिवाकर जब बताता है कि गांव अपराधियों का स्वर्ग बन गया है और अवैध शराब के प्रचलन तथा पुराने जीवन मूल्यों के पतन का ब्यौरा देता है, दिवाकर के विचार का लेखक के नजरिए से कोई तालमेल नहीं हो पाता। प्राचीन परंपराओं को लेखक बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करने की कोशिश नहीं करते। वे प्राचीन परंपरा की कड़ाई के बारे में सवालिया निशान लगाते हैं और ऐसा करते हुए संबंधित विषय की अहमियत का पूरा ध्यान रखते हैं। परंपराओं की सीमा कई मामले में स्पष्ट हो जाती है। एक ऐसी ही परंपरा है—सामाजिक बहिष्कार। इसके तहत किसी एक व्यक्ति को सामूहिक रूप से दंडित किया जाता है मगर लोग इसकी कठोरता को महसूस नहीं करते। एक छोटी जाति के आदमी के साथ भोजन करने के 'अपराध' में जो समाज एक व्यक्ति का बहिष्कार करता है वही समाज एक व्यक्ति द्वारा अपनी पत्नी पर किए जा रहे नृशंस अत्याचार का मूक दर्शक बना रहता है। पत्नी की पिटाई को सामान्य बात समझते हुए इसे स्त्री के अपराध का दंड मान लिया जाता है।

क्रियाएं और घटनाएं आगे बढ़ने के साथ ही आदर्श और मूल्य को लेकर पीढियों के बीच टकराव तेज हो जाता है और पुरानी पीढ़ी को नई पीढ़ी के लिए जगह छोड़नी पड़ती है। लेखक किसी भी पीढ़ी का पक्ष लेते हुए नजर नहीं आते। वे तर्क देते हैं और विश्लेषण करते हैं, मगर बैठकर, न्यायाधीश की तरह कोई फैसला नहीं सुनाते।

उपन्यास की केंद्रीय कहानी में एक वृद्ध पिता के तीन बेटे अपने पिता से अलग हो जाते हैं। एक तरह से तीनों ही बेटे वृद्ध पिता के विभाजित व्यक्तित्व का नाटकीय प्रतिनिधित्व करते हैं। वृद्ध कभी भी अपने भीतर के विरोधाभासों को सुलझा नहीं पाता। वह किसी तरह अपने भीतर के अंतर्विरोध को नियंत्रित कर पाता है। बेटे बड़े होकर अलग-अलग व्यक्तित्व के स्वामी बनते हैं। चीजे पहले जैसी नहीं रह जातीं और शिवनाथ असहाय दर्शक बना रह जाता है।

होमेन बरगोहांई सहज और स्पष्ट गद्य लिखते हैं और इस उपन्यास में भी उनकी उसी वर्णनात्मक शैली का परिचय मिलता है। किसी स्थिति के पीछे भावनात्मक दबाव उत्पन्न करने के लिए लेखक अपनी भाषा को गद्य से पद्य के रूप में रूपांतरित कर देते हैं। ऐसा करते हुए भाषा प्रांजल और मिठास से भरपूर हो उठती है और हृदय पर उपन्यास का गहरा प्रभाव पड़ता है। उपन्यास के अंत में एक सामान्य चरित्र कहता है कि जनता को बदहाली से बचाने के लिए वर्ग सघर्ष ही एकमात्र रास्ता है, मगर वक्ता खुद नशे में लड़खड़ा रहा है। लेखक इस तरह अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है कि मानवीय दुर्दशा के पीछे गलत विश्वास उतना जिम्मेवार नहीं है जितना कि दोहरी मानसिकता और आत्म छल।

पिता-पुत्र एक अध्ययनशील, जागरूक एवं प्रबुद्ध लेखक की कृति है। यह असम के एक गांव के बारे में है मगर यह गांव समूचे असम का ग्रामीण अंचल बन जाता है और फिर पूरे भारत का ग्रामीण अंचल लगने लगता है। मगर जैसे-जैसे परिवर्तन की हवा बहती है, शहरी क्षेत्रो से विचार और मान्यताएं देहातों मे भी पहुंचने लगती हैं। यह एक ऐसा उपन्यास है जिसे शायद ही किसी असमियाभाषी पाठक ने नहीं पढ़ा हो।

—आनंद बरमुदे

प्रथम पर्व

1

मोहधूलि गांव में समाचारपत्र लेनेवाला एक भी आदमी नहीं था। गांव में पढ़ने-लिखने वाले बिल्कुल न हों—ऐसी बात भी नहीं थी, परंतु सबके सब हलवाहे-चरवाहे थे, समाचारपत्र पढ़ने के लिए किसी के पास समय नहीं था। वैसे शिवनाथ फुकन की बात अलग थी। वह एक छोटा-मोटा जमींदार था। गांव में खेती के लिए उपयोगी जितनी उपजाऊ जमीन थी—सबका मालिक वही था। गांव के एक चौथाई लोग उसी के खेत पर बंटाई के आधार पर फसल उपजाते थे। बाकी सारे लोग प्रति वर्ष जंगल काटकर खेती करने लायक जमीन साफ कर फसल उपजाते थे। शिवनाथ ने गांव के स्कूल से छात्रवृत्ति की परीक्षा उत्तीर्ण की थी, परंतु घर की स्थिति अच्छी होने के बावजूद शहर जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने की उसकी इच्छा नहीं हुई। घर में ही रहकर खेतीबारी करने में जुट गया। छुटपन से ही उसके मन में साहित्य के प्रति गहरा लगाव था और विभिन्न विषयों की पुस्तकें पढ़ना उसे अच्छा लगता था। पुस्तकों के प्रति यह नशा संभवतः उसे अपने पिता से विरासत में मिला था।

असम में जिस समय असमिया भाषा की जगह बंगला भाषा चलती थी, शिवनाथ के पिता गोपीनाथ ने उस समय बंगला भाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की थी। गोपीनाथ ने स्कूल में पढ़ते समय माधवचंद्र मुखर्जी नामक एक साहित्य-रसिक बंगाली शिक्षक के प्रभाव में आकर बंगला साहित्य का अध्ययन करना आरंभ कर दिया, और मरने के दिन तक यह नशा बना रहा। शिवनाथ ने अन्य संपत्तियों और जमीन के साथ ही एक आलमारी बंगला पुस्तकें भी उत्तराधिकार के रूप में अपने पिता से प्राप्त की थीं। अक्षर ठीक से पढ़ने योग्य होने के बाद ही शिशु शिवनाथ ने सचित्र कहानियों की पुस्तकों की खोज में पिता की पुस्तकों की आलमारी को टटोलना शुरू कर दिया, और दो दिनों के भीतर ही उसने उनके बीच एक पूरी तरह अपरिचित और रहस्यमय जगत का आविष्कार किया।

आलमारी में अन्य बहुत सारी पुस्तकों के बीच थी कृतिवास की 'रामायण' और काशीराम दास की 'महाभारत'। दोनों पुस्तकों में अनगिनत रंगीन चित्र थे। उन चित्रों ने शिवनाथ को इतना मुग्ध कर दिया, जिसके कारण उसके बचपन का

सारा स्मरणीय समय उन दोनों पुस्तकों के साथ ही गुजरा था, ऐसा कहा जा सकता है। आज भी शिवनाथ फुरसत की घड़ियों में आंखें मूंदकर अतीत की स्मृतियों में डूब जाता है, चालीस वर्ष बीत जाने पर भी उसके मन की आंखों के सामने उभर आते हैं कौरव-पांडव और राम-रावण के वे बहुरंगी चमकते हुए चित्र, उसकी नाक में समाने लगती है अनगिनत तिलचट्टों का आश्रयस्थल किताबों की उस आलमारी की अद्‌भुत गंध। गंध अच्छी थी, यह बात नहीं, बल्कि कुछ मात्रा में वह घृणा संचारक थी। किंतु विवर्ण प्राचीन पुस्तक, तिलचट्टों की विष्ठा, मरे हुए तिलचट्टे, आलमारी की बंद हवा—इन सबकी मिश्रित गंध में समझाई न जा सकनेवाली मादकता थी, जिसके कारण शिवनाथ कभी-कभी पूरी शाम उसी के नशे में चूर रहता था। सभी मनुष्यों की सारी इंद्रियां समान रूप से शक्तिशाली या संवेदनशील नहीं होतीं। किसी मनुष्य की दृश्य-शक्ति अधिक सूक्ष्म और स्पर्शकातर होती है, ऐसे मनुष्य दृश्य सौंदर्य से अधिक मुग्ध या प्रभावित होते हैं। कुछ लोगों की श्रवण शक्ति अधिक तेज होती है, कर्ण पथ से ही पृथ्वी के अधिकांश सौंदर्य या माधुर्य को वे लोग इंद्रिय चेतना में ग्रहण करते हैं। पर कुछ लोग ऐसे भी हैं—जो प्रमुखतः गंध विलासी हैं। मुख्य रूप से नाक की सहायता से ही वे लोग जीवन का अनुभव करते हैं।

शिवनाथ इसी श्रेणी का व्यक्ति है। रूप, रस, शब्द और गध—इन सबके भीतर वह गंध के प्रति ही सबसे अधिक जागरूक है। प्रौढ़ता के दरवाजे पर खड़े होकर आज जब वह अतीत की कुछ बातें याद करने की कोशिश करता है, तब दृष्टि या श्रुति के अनुभवों की तुलना में कुछ गंधों की बातें ही उसे याद आती हैं। समय का विस्तीर्ण प्रांतर पार कर कभी अकस्मात उसकी नाक से टकराती है बचपन की गंध। गांव में जब बाढ़ आती, हजारों केंचुए बिल से बाहर निकल आते थे और पानी के नीचे जब सारा इलाका डूब जाता, तब दो दिनों के भीतर ही केंचुए मरने लगते थे। पानी सूखने के साथ-साथ मरे हुए केंचुए जमीन पर बिछे नजर आते, जो लोगों और गाय-भैंस के पैरों से कुचले जाते और कीचड़ में घुल जाते। कुछ दिनों के बाद पानी सूखने के बाद कीचड़ रह जाता और आषाढ़-सावन महीने की तीखी धूप के कारण वहां से भाप उड़ने लगती, तब उस भाप के साथ सड़े हुए केंचुओं की गंध घुलकर बहुत दिनों तक गांव की हवा को भारी बनाए रखती थी। बचपन में शिवनाथ को वह गंध इतनी खराब लगती थी, जिसके कारण वह कभी-कभी भात भी नहीं खा पाता था। किंतु आज उस गंध को याद कर तनिक भी घृणा का अनुभव नहीं करता। सुदीर्घ अतीत के बीच से बहकर आई वह गंध जैसे उसके मन में उस खोए हुए जगत को वापस पाने की कामना ही जगा देती है।...केंचुए की गंध के बक्से पर सवार होकर और दो-चार गंध दूर से बहती आती हैं—जो शिवनाथ की आंखों के सामने एक अन्य जगत का चित्र ही प्रस्तुत करती हैं। वे गंध हैं—शेफाली फूल की गंध, कलमौ फूल की गंध, पके धान की गंध।

कलमौ फूल ! शिवनाथ आंखें मूंदकर जब बचपन की बातें सोचता है तब मन की आंखों के सामने बैंगनी रंग के कलमौ फूल नाचने लगते हैं, और एक अद्भुत आवेग से उसका तन-मन विह्वल कर देते हैं। जेठ से लेकर भादो के लगभग अंत तक बाढ़, बरसात और कीचड़ का ग्रास बना रहता है गांव। उस मौसम के कुछ विशेष आकर्षण अवश्य हैं। सड़े हुए केंचुओं की उबकाई लानेवाली गंध तो है ही, उससे भी अधिक शिवनाथ को झुंझलाहट होती थी रास्ते पर जमे घुटनों तक कीचड़ को देखकर। गांव के छोटे-छोटे बच्चे घर से निकल कर रास्ते के किनारे ही टट्टी करते थे, महिलाएं भी घर के कूड़े से लेकर मवेशीघर के गोबर तक सारी गंदगी रास्ते के किनारे ही जमा करती थीं। इस तरह रास्ता गड्ढा जैसा बन जाता था, उसके किनारे गंदगी का पहाड़ खड़ा हो जाता था। मूसलाधार बरसात में पानी के साथ किनारे की सारी गंदगी रास्ते के बीच में पहुंच जाती थी और कीचड़ के साथ विष्ठा-गोबर सब कुछ मिश्रित होकर एक नरककुंड बन जाता था। घर से निकलकर रास्ते पर कदम रखने की बात सोचते ही शिवनाथ की आंखों के सामने अंधेरा छा जाता था, पूरा जीवन जैसे कीचड़ से लथपथ और दुर्गंधयुक्त वस्तु जैसा लगने लगता था। बरसात के रुकने पर धूप फैलने से ही हालत सुधरती हो, यह बात भी नहीं थी। बल्कि शिवनाथ के लिए तब एक नई समस्या पैदा हो जाती थी। बरसात रुकने पर कुछ दिनों तक धूप फैलने के बाद पानी सूख जाने के कारण गोंद सरीखा कीचड़ और भी अधिक गाढ़ा हो जाता था, जिसके कारण कीचड़ वाले रास्ते पर चलते हुए घुटने तक कीचड में समाए पैरों को वापस खींचना कठिन हो जाता था। जैसे यह सब बातें कल की हों, ठीक वैसे ही शिवनाथ को बचपन की बातें याद आती हैं।

तब वह आठ-नौ वर्ष का स्कूली छात्र था, घर से स्कूल की दूरी एक मील की थी, आषाढ़-श्रावण की झुलसाती धूप सिर पर झेलते हुए वह जब घुटने तक कीचड़ वाले रास्ते से होकर स्कूल जाता या घर लौटता तब एक तरफ किताबों के बोझ और धूप के तीखेपन से अधमरा हो जाता, दूसरी तरफ कीचड़ में फंसे पैरों को जोर-जोर से खींचकर एक कदम के बाद दूसरा कदम बढ़ाते हुए उसकी आधी चेतना लुप्त हो जाती। उसे अब भी याद है, भेदेला बूढ़े के दरवाजे से लेकर देउबर ददाई के दरवाजे तक यह रास्ता सबसे अधिक डरावना था। उस रास्ते के बारे में सोचकर एक दिन पहले ही शाम से शिवनाथ का मन डर के मारे कांपने लगता था। वैसे आज चालीस सालों के बाद भी रास्ते में कोई परिवर्तन नहीं आया है, वह पहले की तरह ही है। परंतु आठ-वर्षीय लड़के के लिए जो उठाया न जा सकने वाला बोझ था, चालीस या पचास वर्षीय व्यक्ति के लिए वैसा नहीं हो सकता। जो भी हो, बरसात का मौसम शिवनाथ के जीवन और जगत को कीचड़ से सराबोर कर देता था, आकुल हृदय के साथ वह हमेशा उस मौसम के जल्द बीत जाने के लिए प्रार्थना करता था।

ठीक वैसी दशा में एक दिन सुबह जागते ही दरवाजे पर पेशाब करने गया शिवनाथ देखता—रास्ते का कीचड़ सूखकर सख्त बन चुका है, पास के पोखरों के किनारे तक फैला पानी सूखकर बीच में सिमट गया है, शैवाल और जलकुंभी के जंगल को चीरकर एक-दो कलमौ फूल ने मुंह निकाला है। नौटंकी की तरह पल भर में ही सारी घटनाएं घट गई हों, ऐसी बात भी नहीं थी, परंतु सभी वस्तुओं के आविष्कार करने का एक विशेष क्षण होता है, वैसे ही एक विशेष क्षण में शिवनाथ ने शरत के स्पष्ट कदमों के निशानों का अविष्कार किया। उस क्षण का रोमांच और उत्तेजना का भाव आज भी शिवनाथ के मन से पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। दरवाजे पर निश्चल होकर शिवनाथ ने एक बार कलमौ फूलों की तरफ, तो एक बार रास्ते के सूखे हुए कीचड़ की तरफ देखा, और एक बार पूरब के आकाश की तरफ देखा। हां, चारों तरफ शरत के आगमन के लक्षण साफ-साफ दिखाई दे रहे हैं। शिवनाथ का नन्हा-सा कलेजा आनंद के मारे सीने के भीतर उछलने लगता। बरसात का मौसम खत्म हुआ, मनुष्य का मल और गाय का गोबर मिश्रित घुटनों तक के कीचड़ में चलने की नारकीय यंत्रणा खत्म हुई, सड़े हुए केंचुओं की बर्दाश्त न होनेवाली गंध खत्म हुई। अब आया है कलमौ फूल और साफ रास्ते के सुनील आकाश का मौसम, नदी के निर्मल पानी और शीतल चांदनी का मौसम, धुंध और कांस और उजले बादल का मौसम। नदी के किनारे के भीतरी गांव के एक लड़के के लिए बरसात का प्रस्थान और शरत का आगमन एक महत्वपूर्ण घटना है—यह बात व्यक्तिगत अनुभव नहीं होने पर किसी के लिए भी हृदयंगम करना सहज नहीं होगा। और शिवनाथ के लिए इस तात्पर्य का प्रतीक था कलमौ फूल। कारण, रास्ते के किनारे पोखर में कलमौ फूल को देखने के साथ ही शिवनाथ समझ जाता था कि बरसात खत्म हो गई, अब आया है सुंदर और सूखा मौसम शरत, जीवन को दबा-कुचलकर रखने वाली सारी बाधाएं और ढक्कन अब धीरे-धीरे दूर होंगे, अब चारों तरफ से आएंगे बहुत दूर के अनगिनत आमंत्रण। शिवनाथ के मन में अभी भी कलमौ फूल ने एक विशेष जगह बनाकर रखी है। कलमौ फूल को देखते ही या उसकी याद आते ही अतीत के कब्रगाह से एक विशाल मृत जगत पुनः जीवंत होकर शिवनाथ की आंखों के सामने खड़ा हो जाता है। वह अनुभव करता है जैसे यह एक मायावी चाबी हो—जिससे अतीत की पिटारी चाहते ही खोली जा सकती है, जी चाहे तो अतीत के समय को पुनः फैलाकर देखा जा सकता है। वैसे सिर्फ कलमौ फूल ही एकमात्र चाबी नहीं है, और भी दो-चार ऐसी चाबियां हैं। परंतु आज सिर्फ कलमौ फूल की बातें ही शिवनाथ को याद आईं, इसका भी एक विशेष कारण है।

सावन के मध्य भाग से ही बरसात शुरू हो गई थी। उसके बाद से एक पखवाड़े से ज्यादा समय गुजरा है कि लोगों ने सूरज का मुंह देखा नहीं है। बीच-बीच में मूसलाधार वर्षा होती है तो कभी-कभी हल्की बूंदाबांदी ही होती है। इस दौरान वाष्पगर्भ

मेघ आकाश को इस तरह छिपाकर रखता है कि लोग धान के भाप से कटहल के बीज की तरह उबलने लगते हैं। प्रायः प्रतिदिन शिवनाथ की पत्नी एक बार स्वयं से कहती है : ब्राह्मणों की विधवाएं इन दिनों क्या कर रही हैं ? खाए-पिए बगैर शायद उनकी स्थिति मरने जैसी हो गई होगी।

सूरज का मुंह देखे बगैर ब्राह्मण की विधवा मुंह में अन्न नहीं डालती, इसीलिए शिवनाथ की पत्नी को चिंता सताती है। वैसे शिवनाथ की चिंता ऐसी नहीं है, वह क्षुब्ध है दूसरी ही बात से। सुबह और शाम नदी के किनारे उसे घूमने जाने की आदत है। पिछले एक पखवाड़े से लगातार वर्षा होने के कारण गांव के रास्ते पर घुटने तक कीचड़ और गंदगी भरी पड़ी है कि उस नरककुंड को पारकर नदी किनारे की हवा खाने या प्रकृति की शोभा देखने के लिए मन में कोई आग्रह या शक्ति बची नहीं रहती। फिर भी दस दिनो तक पूरी तरह घर में घुसे रहने से तंग होकर आज सुबह वह नदी किनारे जाने के लिए घर से निकल गया था, पर रास्ते से गुजरते हुए उल्टी करने की इच्छा हुई। रास्ते की एक तरफ गांव के लोगों के घर-बार थे, दूसरी तरफ खड्ड-नाले, सब्जियों के खेत, धान के खेत और किसी-किसी का मवेशीघर इत्यादि। गांव के दस-बारह वर्ष से छोटे बच्चे रास्ते के किनारे के खड्डों का इस्तेमाल पाखाने के रूप में करते हैं। वर्षा के मौसम में खड्ड पानी से भर चुके हैं। दूर जंगल या धान के खेत तक जाने को पगडंडियां भी जलमग्न हैं। इसीलिए बच्चे ज्यादा तकलीफ न उठाकर रास्ते को ही पाखाने के रूप में इस्तेमाल करने लगे हैं। आज सुबह नदी की तरफ जाते हुए शिवनाथ ने देखा—कनबापू के घर से लेकर घनश्याम के घर तक का रास्ता घुटने तक कीचड़, गोबर और बच्चों की टट्टी से एकाकार होकर एक वीभत्स दृश्य नजर आता है। वह नदी किनारे जा नहीं सका। आधे रास्ते से ही लौट आया।

तब से उसे एक ही चिंता सता रही है : कब यह वर्षा की मुसीबत खत्म होगी ? कब गांव के रास्ते से नरककुंड साफ होंगे और लोगों के चलने लायक रास्ता बनेगा ? किस दिन सुबह उठते ही दरवाजे पर जाकर वह रास्ते के किनारे के खड्डों में बैंगनी रंग के छोटे-छोटे कलमौ फूलों को खिले हुए देख पाएगा ? कोई दूसरा दिन होता तो शिवनाथ के मन में ऐसे विचारों का तांता वहीं टूट चुका होता। पर आज उसके भीतर ऐसे विचार आगे बढ़ने के लिए लंबे रास्ते तलाश रहे हैं। मोहधूलि गांव में कोई अखबार नहीं पढ़ता, न ही वह स्वयं अखबार पढ़ता है। फिर भी पिछले कई दिनों से सभी के कानों तक यह खबर पहुंच चुकी है कि अंग्रेजों ने आखिरकार भारत को आजाद कर देने का फैसला किया है। दो कांग्रेसी कार्यकर्ता और नौकरीपेशा लोगों को छोड़कर गांव के अधिकतर लोगों ने इस खबर को कोई अहमियत दी थी या खबर सुनकर कोई आवेग अनुभव किया था—शिवनाथ इस बात पर विश्वास नहीं करता। बल्कि एक दिन रामेश्वर के घर में आहू धान कटने के बाद नवान्न

के दिन इस विषय की चर्चा करते हुए देउबर दादा और उनकी उम्र के कुछ लोगों ने स्पष्ट रूप से भविष्य के प्रति आशंका व्यक्त की थी। उन्हें सन् 1918 की बातें याद आई थीं। प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हो चुका था, तभी मोहधूलि इलाके में एक अफवाह फैली कि अंग्रेज जर्मनों से हार गए हैं। अफवाह सुनते ही मोहधूलि के आसपास मिसिंग गांव के सहज-सरल लोगों की धारणा बनी कि अंग्रेज हार गए तो देश में अब कोई राजा नहीं रहा, इसीलिए जिसकी जैसी इच्छा हो, वैसा कर सकता है। वे रात-दिन हुजूम बांधकर मोहधूलि गांव आते और लोगों के घरों में लूटपाट करते। बर्छी से सज्जित मिसिंग युवाओं के सामने थाने के छह सिपाही नदी की धारा के सामने घास की तरह निरर्थक साबित हुए। मोहधूलि गांव के लोग उन बुरे दिनों को आज भी 'लूटपाट के दिन' के रूप में याद करते हैं। देउबर दादा और उनके हमउम्रों को आशंका है—अंग्रेज अगर भारत छोड़कर चले जाएंगे तो फिर वैसी ही हालत नहीं होगी, इस बात की सुनिश्चितता क्या है ? शिवनाथ की वृद्ध चाची ने स्पष्ट रूप से घोषणा की है—महारानी का राज खत्म हुआ तो प्रलय अवश्य होगा। वैसे जंगल की गोद में छिपे मोहधूलि गांव में देश की स्वाधीनता का चरम लग्न पूरी तरह अर्थहीन हो चुका है, यह बात भी नहीं है। रामेश्वर, भोला, हेमचंद्र, परेश—गांव के ऐसे कई युवाओं ने बयालीस के आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था, पुलिस उन्हें पकड़ नहीं पाई, मगर शिवनाथ समेत गाव के बहुत लोग जानते हैं कि परेश और रामेश्वर ने रात में डाकघर को जला दिया था, हेमचंद्र एक साल की कैद की सजा काटकर भी आया था। आजादी मिलने से पहले इन युवाओं की खुशी का ठिकाना नहीं है। पिछले कुछ दिनों से उन्होंने घर का काम-काज करना छोड़ दिया है। चेहरे पर हंसी लिए सपने में खोए मनुष्य की तरह वे चारों तरफ घूमते फिर रहे हैं और स्वाधीनता के आगमन के बारे में लोगों को बता रहे हैं। एक दिन वे लोग शिवनाथ के पास भी आए थे। लड़कों के आवेग-विह्वल चेहरे और खुशी की हंसी देखकर उसे भी अच्छा लगा। एक नए और उज्ज्वल भविष्य की आशा में वे प्रफुल्लित हो उठे हैं। बातचीत करते हुए उन्होंने शिवनाथ को बताया था : "दादा, रेव महाजन जैसे लोगों के दिन खत्म हो चुके हैं, अब हमारा दिन आया है। रेव महाजन जैसे लोगों को हम समाज से बाहर करके ही छोड़ेंगे।"

उनकी बातें सुनकर शिवनाथ हंस पड़ा था। रेब महाजन से भोला-रामेश्वर क्यों नाराज हैं—शिवनाथ अच्छी तरह जानता है।

दरअसल रेब महाजन शहरी आदमी है। युद्ध के समय 'होलसेलर' बनकर वह मोहधूलि आया था। उसके बाद वह लौटकर नहीं गया। चीनी, नमक और किरासिन तेल का अवैध व्यापार कर उसने लाखों की कमाई की। साथ ही, मोहधूलि के चारों तरफ मिसिंग गांवों में बहुत सारे अफीमची लोगों की उपस्थिति अनुभव कर उसने अफीम का अवैध व्यवसाय भी शुरू कर दिया। वह अंग्रेज सरकार का अंध भक्त

था, वहीं कांग्रेसी वालंटियरों का घोर शत्रु भी। रामेश्वर और उसके साथियों ने जब कांग्रेसी वालंटियर के रूप मे मोहधूलि इलाके में संगठन का कार्य शुरू किया, तब रेब महाजन ने उनका सिर्फ मजाक ही नहीं उड़ाया, बल्कि हर तरीके से बाधा डालने की कोशिश की थी। थाने के दारोगा का प्रमुख मंत्री रेब महाजन था। गांव के गरीब लोग जब कई-कई दिन बगैर नमक के खाना खा रहे थे, तब उनके हिस्से के नमक को रेब महाजन ने ऊंची कीमत लेकर शहर में बेच दिया था। उसके ऐसे दुष्कर्मो का विरोध करनेवाला कोई नहीं था। रामेश्वर और उसके साथियों की नजरों में रेब महाजन धीरे-धीरे अन्याय, अत्याचार और शोषण का प्रतीक बन गया था। रामेश्वर और उसके साथियों के लिए देश आजाद होने का मतलब रेब महाजन का प्रभाव खत्म होना, था—इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। इसके अलावा जवाहरलाल नेहरू भी कह चुके हैं—जो व्यक्ति एक दिन स्वाधीन भारत के भाग्य-विधाता बनेंगे, वह शासन क्षमता पाते ही मुनाफाखोर और अवैध व्यवसायियो को पास के लैंपपोस्टों से लटकाकर फांसी दे देंगे। अंग्रेजी शासन के आखिरी वर्षो में अर्थात, द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रारंभ से ही देश की आम जनता को रोजमर्रा की जरूरत की चीजों की किल्लत और आकाश को छूने वाली महंगाई से सबसे अधिक तकलीफ झेलनी पड़ी थी, इसके अलावा मुनाफाखोरों और अवैध व्यवसायियों के अबाध अत्याचार से जनता त्रस्त थी। यह समस्या विदेशी शासन के अभिशाप का प्रतीक बन गई थी। इसीलिए आम भारतीयो के लिए आजादी का सबसे बडा आकर्षण मुनाफाखोरों और अवैध व्यवसायियों के अत्याचार से मुक्ति का वादा था। जो आदमी जनता के हृदय की बात जितना अधिक समझ पाता है, वह उतना ही बड़ा और लोकप्रिय नेता होता है। भारत के हृदय-सिंहासन पर स्थान पानेवाले जवाहरलाल ने जनता के हृदय की वेदना समझी है। इसीलिए उन्होंने पहले ही घोषणा कर दी कि सत्ता में आते ही वे मुनाफाखोरों और अवैध व्यवसायियों को कठोर दंड देंगे।

आजादी मिलने के बाद देश में क्या नई घटनाएं घटेंगी या उनके जीवन में क्या परिवर्तन आएगा, इस बारे में भोला-रामेश्वर आदि की कोई स्पष्ट धारणा नहीं है। उन्होंने सिर्फ एक ही बात अच्छी तरह दिल में बैठा ली है कि पराधीनता अपमान की बात है, वहीं आजाद होना गर्व की बात है। और कुछ हो न हो, एक बात वे निश्चित मानते हैं कि आजादी मिली तो थाने का दारोगा और रेब महाजन अत्याचार करते नहीं फिरेंगे, और चीनी-दाल-नमक सभी उचित कीमत पर खरीद पाएंगे। इस स्पष्ट संभावना ने उनके लिए आजादी को अधिक अर्थपूर्ण बना दिया है, सिर्फ एक सैद्धांतिक धारणा की जगह उसे एक प्रत्यक्ष अनुभव का विषय बना दिया है।

2

आज 14 अगस्त है। और कुछ घटे बाद, अर्थात रात के बारह बजने के साथ ही स्वाधीन भारत का नया इतिहास आरंभ होगा। पराधीन देश के नागरिक के रूप में करोड़ों भारतीयों के जीवन में आज का दिन अंतिम है। यह सोचकर शिवनाथ ने हल्के आवेग की सिहरन महसूस की। कुछ देर पहले वह नदी किनारे घूमने निकला था, मगर कीचड़ देखकर आधे रास्ते से ही लौट आया था। इसीलिए उसी अनुभव की पृष्ठभूमि में उसका मन अपने आप आजादी का अर्थ खोजने की कोशिश करने लगा। शिवनाथ को याद है कि उसने रास्ते को सदैव वैसी दशा में देखा था। उसके जन्म से सौ साल पहले भी रास्ता उसी अवस्था में था—इस बारे में शिवनाथ को थोड़ा भी संदेह नहीं है। ऋतु के परिवर्तन को छोड़कर इस गांव में दूसरा कोई परिवर्तन नजर नहीं आता। आजादी की पूर्व-संध्या में शिवनाथ के मन में एक आशा जगी कि अब कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य होगा। और कुछ हो या न हो इस रास्ते में कुछ सुधार अवश्य आएगा, सूअर की तरह बिष्ठा से लिथड़ने से गांववासी बच सकेंगे। सन् 1945 के वर्षाकाल में जोरहाट का एक कांग्रेसी नेता तक अंचल का भ्रमण करने आया था। रास्ते की अवस्था देखकर आतंक से सिहरकर उसने लोगों से कहा था : ''यही सब गुलामी का अभिशाप है। विदेशी शासकों ने लंबे समय से हमारे लोगों को कीचड़ में जानवरों की तरह घिसटने के लिए विवश किया है। इसीलिए हम सबको आजादी हासिल करने के लिए जी-जान लगाकर कोशिश करनी चाहिए। आप लोग देखेंगे—देश आजाद होते ही आपलोगों के गांव का यह रास्ता एक दिन के लिए भी ऐसा नहीं रहेगा।''...

आज आजादी से ठीक पहले की घड़ियों में शिवनाथ को वे बातें याद आईं। रास्ता अगर ठीक हो, नदी किनारे घूमने जाने के लिए उसे नरककुंड पार नहीं करना पड़े, तभी उसके लिए आजादी कुछ सार्थक कहलाएगी। बरसात लगभग खत्म हो चुकी है और कुछ दिनों के बाद रास्ते के किनारे नालों में कलमौ फूल खिलेंगे, शरत का सुंदर स्पर्श सारे कलुष और मालिन्य को पोंछ डालेगा, तब रास्ता अपने आप साफ हो जाएगा। पर इतने दिनों तक यह सुख अस्थाई था। शरत, हेमंत, वसंत के बाद फिर वर्षा ऋतु आती है, फिर रास्ता नरककुंड बन जाता है और तब आभास होता है कि यह नारकीय यंत्रणा कभी भी खत्म नहीं होगी। पर आज एक बात सोचकर शिवनाथ को काफी खुशी हुई कि अब हर साल रास्ते के नरककुंड बनने की विभीषिका हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी। आजादी स्थाई सुविधा और सौंदर्य लेकर आएगी।

यह सोचकर शिवनाथ को अच्छा लगा। पर अगले ही पल वह सोच में डूब गया : एक प्रौढ़ भद्र व्यक्ति की सुबह की सैर आसान बनाने के सिवा आजादी का कोई दूसरा अर्थ नहीं है क्या ? एक विशाल देश दो सौ सालों की गुलामी के

अंधेरे को खत्मकर मुक्त जीवन के सूर्योदय की प्रतीक्षा कर रहा है, इस अंतिम घड़ी में क्या उसे आवेग का कुछ उल्लास अनुभव नहीं करना चाहिए ? सचमुच, क्या मैं आवेग का अनुभव नहीं कर रहा ? शिवनाथ ने स्वयं से ही यह प्रश्न पूछा। उसके दिल ने फौरन इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया और पल भर के लिए अतीत की स्मृतियों में खो गया।

सन् 1942 के अगस्त या सितंबर महीने की बात है। अचानक आधीरात में बाहर दरवाजे पर किसी की दस्तक की आवाज सुनकर शिवनाथ की नींद टूट गई। पहले उसने सोचा कि बरामदे पर रखे धान को खाने के लिए गाय घुस आई है। कान लगाकर उसने आवाज सुनने की कोशिश की। पर नहीं, गाय नहीं, कोई आदमी हल्के से दरवाजे पर दस्तक दे रहा था। शिवनाथ को आश्चर्य हुआ। ग्रामीण लोगों के घर में आकर कोई इस तरह दरवाजे पर दस्तक नहीं देता, वह भी आधीरात के समय। गला खखार कर या चीख-पुकार कर गृहस्थ को अपने आने की सूचना देना ग्रामीणों की आदत है। आधीरात को कौन आ सकता है, यह सोचकर शिवनाथ को हैरानी नहीं हुई। कई बार आधीरात को बिस्तर से उठकर एक-दो नहीं, एक साथ पंद्रह-सोलह लोगों का स्वागत-सत्कार करना पड़ा है। जीयाढ़ल इलाके की तरफ खेतों में काम करने वाले रंगपुरी के लोग कई बार अपने गांव से आते हुए आधीरात मे शिवनाथ को जगाकर उसके घर टिकते रहे हैं। वैसे उनके लिए घर की मालकिन को आधीरात में नहाकर फिर से रसोई में घुसना नहीं पड़ता। अनाज देने से वे लोग स्वयं खाना पका लेते हैं। पर वे रंगपुरिया लोग आएंगे तो इस तरह दरवाजे पर दस्तक नहीं देंगे। प्रवेशपथ के पास से ही चार-पांच लोग एक साथ चीखते हुए शोर मचाते आते हैं—बाबूजी उठिए, आप शरण नहीं देंगे तो इन अनजान मुसाफिरों को कौन शरण देगा ? दस लोगों की खातिर करने लायक ईश्वर ने बाबूजी को बल दिया है, इसीलिए खातिर भी करते है, सबको ईश्वर ऐसी शक्ति नहीं देता—इत्यादि। पल भर में ही सारी बातें सोचकर शिवनाथ ने बिस्तर से ही चीखकर पूछा, ''कौन है ?''
''मैं, केशव मंडल-- ।'' आवाज को दबाकर मगर शिवनाथ को सुनाकर आगंतुक ने उत्तर दिया।

शिवनाथ एक झटके में बिस्तर से उठ गया।

केशव मंडल !

आधीरात में !

अगस्त महीने में 'भारत छोड़ो आंदोलन' शुरू होने के साथ ही केशव संदिकै अमीन का काम छोड़कर आंदोलन में शामिल हो गया था। कुछ दिन बाद शिवनाथ को खबर मिली कि केशव संदिकै को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस का फरमान जारी हुआ है, पर वह छिपते हुए भाग रहा है। वही केशव संदिकै आज आधीरात में शिवनाथ के घर आया है।

शिवनाथ ने शयनकक्ष से फिर चिल्लाकर कहा, "संदिकै, आ रहा हूं, ठहरो।" उसके बाद उसने फौरन लैंप जलाया और पास ही दूसरे बिस्तर पर सो रही पत्नी की तरफ देखकर कहा, "सुनती हो ? उठो तो, संदिकै आया है।"

पत्नी के शरीर को हिलते-डुलते देखकर वह तेजी से बाहर की तरफ बढ़ा।

केशव संदिकै सर्दी और थकान के मारे अधमरा होकर आया था। उसकी हालत देखकर शिवनाथ ने उससे कुछ नहीं पूछा। उसे सीधे मवेशीघर में ले गया। अलाव के पास कटहल की लकड़ी की पीढ़ी रखकर उसे बैठने के लिए कहा और आग सुलगा दी। इस बीच शिवनाथ की पत्नी भी आ गई थी। अलाव पर उसने केतली में पानी भरकर चढ़ा दिया और तांबूल का पात्र सामने रखकर उनकी बातचीत सुनने के लिए उत्सुक होकर बैठ गई। आग की रोशनी में शिवनाथ ने केशव मंडल के चेहरे की तरफ गौर से देखा। सिर्फ छह महीनों के दौरान ही उनकी मुलाकात हो नहीं पाई थी। पर शिवनाथ ने महसूस किया कि इन छह महीनों में ही केशव मंडल ने सिर पर खादी का कपड़ा लपेट रखा है। चेहरे पर आधा इंच लंबी अधपकी दाढ़ी फैल चुकी है। पहले केशव मंडल सिर पर पगड़ी नहीं बांधता था, न ही दाढ़ी-मूंछ बढ़ाता था। पर कुछ पल केशव मंडल के चेहरे की तरफ देखते हुए शिवनाथ ने महसूस किया कि पगड़ी या दाढ़ी-मूंछ के कारण ही वह बदला-बदला-सा नजर नहीं आ रहा, बल्कि उसके चेहरे से एक ऐसा भाव फूट रहा है—जिस भाव को उसने पहले कभी केशव मंडल के चेहरे पर नहीं देखा था। शायद केशव मंडल ने कई दिनों से ठीक से खाना नहीं खाया था या पूरी तरह भूखा रहा था, बीमार की तरह उसका चेहरा सूख गया है और आंखें धंस गई हैं। पर उसके चेहरे पर क्षुधा की यंत्रणा या क्लांति का कोई चिह्न नहीं है। बल्कि किसी पुण्य व्रत के लिए उपवास करने वाले मनुष्य की तरह उसकी आंखों से, चेहरे से भावों की ज्योति फूट रही है।

शिवनाथ को आश्चर्य हुआ। सब कुछ उसे कठिन पहेली की तरह लग रहा था। केशव मंडल उसके छुटपन का साथी है। दोनों के गांव अलग हैं, पर कक्षा क से लेकर छात्रवृत्ति तक दोनों एक साथ एक ही बेंच पर बैठकर पढ़ते रहे, एक साथ खेले, एक साथ भविष्य के सपने देखे और गृहस्थ जीवन शुरू करने के बाद भी दोनों ने मित्रता की डोरी को कभी कमजोर होने नहीं दिया। केशव संदिकै, अमीन के रूप में शिवनाथ को जमीन-जायदाद के कार्यों में काफी मदद करता रहा, शिवनाथ भी मुसीबत के समय मित्र की तरह मदद करता रहा था। जिस दिन शिवनाथ को खबर मिली कि केशव मंडल सरकारी नौकरी छोड़कर स्वाधीनता आंदोलन में शामिल हो गया है, आश्चर्यचकित होकर वह काफी देर तक जड़ बना रहा था। केशव मंडल के स्वभाव में या चरित्र में ऐसा कोई गुण नहीं था, या होने का शिवनाथ को अंदाजा भी नहीं था जो गुण उसे आहार-मैथुन-निद्रारूपी जीवन के कारागार से मुक्त कर एक दूसरे जगत में ले जा सके। बल्कि आदमी के रूप में वह ठीक ही था, मगर

ग्रामीण मंडल के रूप में कुछ आरोपों से वह मुक्त नहीं था। एक बार चेतीया गांव की बकुली ने आकर शिवनाथ के सामने फरियाद की कि उसके पड़ोसी नराम ने उसकी बाड़ी की एक हाथ जमीन पर कब्जा कर लिया है, रोकने पर नराम ने बताया कि केशव मंडल ने वही सीमा बताई है, जबकि सीमा दिखाने के समय बकुली को सूचना नहीं दी गई थी। सारा इलाका जानता है कि महेश्वर चेतीया की चौदह पीढ़ियों का उस बाड़ी पर कब्जा रहा है, उसकी एक उंगल जमीन पर आज तक कोई विवाद नहीं हुआ, उस स्थिति में जमीन का एक हाथ नराम का है, आज केशव मंडल कैसे बता सकता है ? बकुली केशव मंडल के पास गई। केशव मंडल ने जवाब दिया कि पिछले सेटलमेंट में ही वह जमीन नराम के पट्टे में चली गई थी, उसे पता नहीं था, इसीलिए इतने दिनों से वह जमीन बकुली की सीमा में थी।

सेंटलमेंट कब हुआ था ?

सन् इकतीस में। आज से तेरह साल पहले ही नराम के पट्टे में जमीन चली गई, जबकि उसे अब इस बात का पता चला ? इसके अलावा तेरह साल पहले वह जमीन नराम के पट्टे में कैसे घुसी ?

मोहधूलि गांव में कौन नहीं जानता कि कूंजी ठेकेरा के पेड़ के साथ वह बाड़ी चेतीया परिवार के चौदह पुरखों की संपत्ति है ? फिर पिछले सेंटलमेंट में वह जमीन नराम के नाम कैसे हो गई ? तब भी क्या केशव संदिकै लाट, बड़ा अमीन नहीं था ? नन्हें बच्चों के भविष्य के बारे में सोचकर डरी हुई विधवा बकुली केशव अमीन से एक के बाद एक प्रश्न पूछने लगी, पर केशव अमीन निर्विकार रूप से चुपचाप बैठा रहा। उसके चेहरे से ऐसा भाव उजागर हो रहा था, जैसे छोटे बच्चों को सूई लगाते समय डाक्टर के चेहरे का भाव होता है कि बच्चे तो रोएंगे ही, इसीलिए चुपचाप अपना काम करने के अलावा वह कर ही क्या सकता है। काफी देर तक बोलते रहने के बावजूद जब केशव मंडल से कोई उत्तर नहीं मिला तो अंत में बकुली ने रोना शुरू कर दिया। केशव मंडल ने तब अचानक उसे संबोधित किया, "तुम एड़ी की चादर बहुत सुंदर बनाती हो, सभी कहते हैं। देना तो एक, ओढ़कर देखूंगा। तुम्हारे हाथों से बुनी महीन एड़ी की चादर ओढ़कर घूमने से लोग शायद केशव मंडल को भी आदमी समझने लगें।" मंडल की बात सुनकर बकुली को जैसे अथाह सागर का किनारा मिल गया। फौरन खड़ी होकर घर की तरफ रवाना हुई और कठिन वक्त में व्यापारी को बेचने के लिए रखी गई एक एड़ी चादर लाकर मंडल को उसने सौंप दी। मंडल ने बकुली को आश्वासन दिया कि वह नराम को समझा कर दो दिन के भीतर ही जमीन से उसका कब्जा हटवा देगा।

दो दिन की जगह दो सप्ताह बीत गए, पर बकुली की जमीन से नराम का कब्जा खत्म होने का कोई संकेत नजर नहीं आया। दो सप्ताह के दौरान बकुली, मंडल के घर कच्चू की सब्जी से लेकर कर्दे फल तक, गाय के दूध से लेकर बत्तख

तक रिश्वत के तौर पर पहुंचाती रही। इसके बावजूद नराम का कब्जा बरकरार ही रहा, तब बकुली चिंतित हो उठी। एक दिन उसने मंडल के घर जाकर सीधा सवाल किया, "फूफा, आप इस विधवा औरत की आंखों की तरफ देखकर सच कहिए, मुझे जमीन वापस मिलने की कोई आशा है या नहीं ? नराम से कुछ कहने पर वह कटार लेकर मुझे काटने के लिए दौड़ता है। मेरे पास धन का बल भी नहीं, आदमी का बल भी नहीं। उसके साथ मैं कैसे लड़ूंगी ? उसने आपसे क्या कहा है, मुझे बताइए।"

केशव मंडल ने बकुली की आंखों में देखने की जगह बिल्कुल विपरीत दिशा में देखते हुए कहा, "एक बात हुई, जानती हो। यह सब काम मेरे अकेले के वश का नहीं है। मंडल, कानूनगो, सबडेपुटी—इन सबको मिलाकर काम पूरा होता है। तुम्हारे लिए जितना कर सकता था, मैंने किया, मगर इस बदमाश नराम ने हाकिम को मिलाकर मुझे परेशानी में डाल दिया है। तुम एक काम करो। कचहरी जाकर धारा 144 का एक केस कर दो। साथ ही एक दिवानी मुकदमा भी ठोंक दो। मैं तुम्हारी तरफ से गवाही दूंगा। तुम मुकदमा जीतोगी ही।" मंडल की बात सुनकर डर के मारे बकुली की जुबान सूख गई। कभी शहर नहीं देखनेवाली एक विधवा कचहरी में खड़ी होकर किस तरह मुकदमा कर सकेगी ? मुकदमे के लिए इतने पैसे कहां से आएंगे ?

बकुली ने मंडल के चेहरे की तरफ देखा। अचानक उसने महसूस किया कि मंडल से किसी सहायता की कोई आशा नहीं है। यानी पुरखों की बाड़ी के एक हिस्से से बकुली के लड़के हमेशा के लिए वंचित हो गए हैं। बकुली की रुलाई फूट पड़ी और आंखों से आंसू बहने लगे। वह खड़ी हो गई और खतरनाक जानवर के सामने से भागने की तरह वह मंडल से लगभग डरकर घर की तरफ दौड़ती हुई बढ़ी। पर कुछ आगे बढ़कर उसे ठिठक जाना पड़ा। दिल की उस बेचैनी की हालत में भी बकुली ने आंगन के सामने तांबूल पेड़ से बंधी हुई एक जानी-पहचानी गाभिन गाय को देखा जो आंखें मूंद कर तृप्ति के साथ नमक मिलाकर दिया गया चारा खा रही थी।

बकुली ने घूम-फिरकर अच्छी तरह गाय का मुआयना किया। हां, कोई संदेह नहीं, यह नराम की ही दुधारू गाय है। नराम के बेटे इस गाय को कभी-कभी मिरियनी की बेटी कहते हैं, चूकि उसकी मां को मिरि गांव से खरीद कर लाया गया था। बकुली ने सोचा कि मंडल से जाकर यह बात पूछेगी। वह जब घूमी तब उसने देखा, मंडल स्वयं बकुली के पास आकर खड़ा हो गया है।

"गाय को पहचान गई हो न ? पहचानोगी ही। तुम्हारे पड़ोसी नराम की गाय है। साठ रुपए देकर कल खरीद लाया। घर की गायों के सारे बछड़े बूढ़े हो चुके हैं, चाय की घूंट सफेद करने के लिए भी घर में थोड़ा दूध नहीं रहता।...क्या इस

गाय के लिए साठ रुपए कुछ ज्यादा दे दिए ?''

मंडल की बातें बकुली के कानों में पहुंचीं मगर दिमाग में नहीं। गाय की तरफ देखती हुई वह सोचने लगी—मैं इतने दिनों से मंडल को कुछ सेर दूध देकर ही सोचती रही हू कि मेरा काम हो रहा है, इधर नराम ने दूध के भंडार को ही लाकर मंडल के घर में रख दिया है, यह मैं जान ही नहीं पाई। नराम से मैं कैसे जीत सकूंगी ?

वह केशव मंडल और यह केशव मंडल—दोनों एक ही आदमी हैं क्या ? सारी बाते शिवनाथ के लिए जटिल पहेली जैसी थीं। लकड़ियों को कुरेद कर उसने आग की आंच को तेज किया और अपनी सोच में डूबा रहा।

''इस तरह बैठे रहने से होगा क्या ? खाने-पीने का इंतजाम करना चाहिए न ?'' पत्नी की आवाज सुनकर ही शिवनाथ की तन्मयता टूटी। अपनी उदासीनता की वजह से कुछ लज्जित भी हुआ। जरूरत से अधिक उत्साह दिखाते हुए उसने कहा, ''खाने-पीने का इंतजाम करने के लिए कहना पड़ेगा क्या ? अब तक तो तुम्हें रसोईघर में होना चाहिए था। संदिकै के चेहरे को देखकर लगता है—शायद इसने एक सप्ताह से कुछ खाया नही है। उठो—जरा फुर्ती दिखाओ।''

सर्दी और थकान की वजह से अब तक संदिकै चुपचाप था। पर मुंह-हाथ धोकर कुछ देर आग सेंकने से उसके शरीर और मन मे कुछ जान लौट आई थी। पति-पत्नी की बातें सुनकर उसने कहा, ''ठहरो फुकन, तुम मेरे खाने के लिए इतने चिंतित हो रहे हो—इस आधीरात को मैं कहां से आया, क्यों आया—इसके बारे में तो तुमने कुछ पूछा तो ही नहीं। तुम्हारे दिल में कोई कौतूहल नही है क्या ?'' ''रुको, रुको, पहले तुम्हें एक मुट्ठी भात खिलाकर आदमी तो बना दूं, उसके बाद यह पूछने के लिए बहुत समय मिलेगा।''

फिर पत्नी की तरफ देखकर शिवनाथ ने कहा, ''मगर भात के साथ क्या दोगी ? एक कबूतर मरवाऊं क्या... ?''

संदिकै ने बीच में बाधा देते हुए कहा, ''सुनो फुकन, बत्तख-कबूतर मारने की बात छोड़ो। आजकल मैंने जो नया वेष धारण किया है, तुमने गौर नहीं किया ? आजकल मैं गांधीजी का शिष्य हूं—समझे। मछली-मांस खाना छोड़ चुका हूं। अहिंसा मानता हूं। तुमने यह खबर जरूर सुनी होगी—मैं नौकरी छोड़कर कांग्रेस के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में शामिल हो चुका हूं। पांच महीना पहले ही मुझे गिरफ्तार करने का आदेश दिया जा चुका है, पर हमारे जिले के कांग्रेस के नेता के निर्देश से मैंने भूमिगत होकर गांव-गांव में घूमते हुए आंदोलन के संदेश को प्रचारित किया और संगठन का काम करता रहा। अब नेता के निर्देश से स्वयं को पुलिस के हवाले करने आया हूं। कल सुबह थाने जाकर मैं आत्मसमर्पण कर दूगा। उसके बाद कितने सालों

की कैद होगी, नहीं जानता। हमारे नेता कहते रहे हैं कि युद्ध समाप्त होने से पहले ब्रिटिश सरकार द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों को रिहा करने की कोई आशा नहीं है। युद्ध कब खत्म होगा, कौन जानता है ? पांच सालों तक भी चल सकता है, पंद्रह सालों तक भी चल सकता है। अपनी गिरफ्तारी देने के बारे में सोचा, तभी तय किया—पता नहीं क्यों, अचानक मुझे तुम्हारी याद आई। सोचा, अनिश्चित काल के लिए जेल जाने से पहले तुमसे मिलकर तुम्हारे घर में खाना खाकर जाऊंगा तो मेरी यात्रा शुभ होगी।''

उसके बाद संदिकै ने देखा, शिवनाथ पत्नी की तरफ देखकर कुछ कह रहा था, वह आंचल के कोर से आंसू पोंछ रही थी।

''ओह—आप तो रोने लगीं। क्या हुआ आपको ?''

पत्नी की तरफ से शिवनाथ ने उत्तर दिया, ''तुम जेल जाने की बात इस तरह कह रहे हो, जैसे जेल की जगह ससुराल जाओगे। इनके लिए जेल मामूली जगह नहीं है। इसीलिए रुलाई फूट रही है।''

केशव मंडल एक गहरी तृप्ति का अनुभव कर ठहाका लगाने लगा। फिर शिवनाथ की पत्नी की तरफ देखकर कहने लगा, ''सत्याग्रही किसी से नहीं डरता। सत्याग्रही की पहली शिक्षा यही होती है।...आप जाइए, भात पकाइए। आधीरात को बिस्तर से उठकर रसोई में भेजने के लिए मैं जिम्मेवार हूं—मुझे क्षमा कीजिएगा। पर आप सब्जी-तरकारी नहीं बनाएं, भात में ही एक आलू डाल दें, हो जाएगा।''

पत्नी की आंखों से तब भी आंसू निकल रहे थे। आंचल के कोर से आंखों को पोछते हुए उसने केशव मंडल की तरफ इस तरह देखा, मानो कहना चाहती हो—मैं भात के साथ कुछ भी दूं, तुम्हें बीच में बोलने की जरूरत नहीं है।

रसोईघर मे घुसने से पहले बासी शरीर को धोने के लिए वह गर्म पानी की केतली लेकर बाहर निकल गई।

केशव मंडल और शिवनाथ आग की तरफ देखते हुए काफी देर चुपचाप बैठे रहे। दोनों जैसे एक-दूसरे के मन को पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। इसी तरह काफी देर बैठे रहने के बाद उसने कहा, ''तुम इतना कुछ कर पाओगे, कभी सोचा भी नहीं था, संदिकै ! अचानक तुममें ऐसा बदलाव कैसे आ गया ? सर्वनाश के इस रास्ते पर क्या चीज तुम्हें खींच लाई ?''

''फुकन, दूसरों के सामने जो भी कहूं, तुमसे तो झूठ नहीं बोल सकता।'' मंडल गंभीर होकर कहने लगा, ''मुझे समझने में तुम्हें तो कोई कठिनाई नहीं है। जन्म से लेकर अब तक झूठ-छल मे ही समय गुजारा है। स्कूली दिनों की एक घटना तुम्हें याद है, फुकन ? एक बार हम नदी में तैरने गए थे, तभी स्कूल की वार्निंग घंटी बजी। हम दौड़कर घर पंहुचे और बिना कुछ खाए स्कूल रवाना हो गए। उस दिन पहले भुवन पंडित का गणित का पीरियड था। घर से हिसाब का काम कर

लाने के लिए कहा था, पर हम दोनों खेलने में इतने मशगूल रहे थे कि हिसाब का काम करना भूल गए थे। पंडित एक-एक कर सबसे हिसाब की कापी मांग रहा था और काम नहीं करने वालों को बेंच पर घुटनों के बल खड़ा कर दस-दस बेंत मार रहा था।

''बेंत खानेवालों की दशा देखकर अपने अंजाम की कल्पना कर मेरी कंपकंपी छूटने लगी। तभी पंडित मेरे पास पहुंच गया। तेरी कॉपी कहां है ?—कलेजा कंपा देने के अंदाज में उसने मुझ से पूछा। मैंने भी निर्भीक भाव से, यानी बाहर से निर्भीक होने का दिखावा करते हुए पंडित की आंखों में आखें डालते हुए कहा, ''सर, मैंने सारा हिसाब किया था, पर दौड़ते हुए स्कूल आ रहा था, रास्ते में बारिक की बाड़ी में उस बांस के झुरमुट के नीचे कीचड़ में हिसाब और निबंध की कापियां गिर पड़ीं।'' पंडित ने आंखें तरेरकर फिर पूछा, ''झूठ बोल रहा है ? चमड़ी उधेड़ डालूंगा, जानता नहीं ? कीचड़ में गिरने का मतलब यह तो नहीं कि तू कॉपी छोड़कर आया ? उठाकर ला क्यों नहीं पाया ?'' मेरी हिम्मत भी बढ़ गई थी। फौरन जवाब दिया, ''सर, जैसे ही कॉपियां कीचड़ में गिरीं, मेरा पैर भी कापियो पर पड़ गया, कापियां कीचड़ के भीतर समा गई। सर, आप मेरे साथ चलें तो अभी कापियां दिखा सकता हूं।'' मेरे मुंह से ऐसी निर्भीक बात सुनकर भुवन पंडित किंकर्तव्यविमूढ़ होकर कुछ पल मेरी आंखों की तरफ देखता रहा, फिर मुझसे कुछ कहे बगैर तुम्हारे करीब पहुंचा। तुम मेरे पास ही बैठे थे। पंडित का प्रश्न सुनकर तुमने सहज रूप से कहा, ''सर, आज नदी में नहाने गया था और खेलने में लगा रहा, हिसाब करना भूल गया।'' तुम्हारी बात सुनकर भुवन पंडित उसी तरह सुलग उठा, जैसे आग में घी डाल दिया गया हो। ''बदमाश, कुल का कलंक—सिंह का बच्चा गीदड़ बन रहा है ? खेलते हुए हिसाब करना भूल गया।'' उसके बाद तुम्हें बेंच पर घुटनों के बल खड़ा कर और लड़कों की तुलना में अधिक जोर से दस बेंत की सजा दी।...

''वही हो तुम, और वही हूं मैं। तुम्हें क्या कहकर छलूंगा ? मंडल की नौकरी में रहते हुए भी कम पाप नहीं किया है। विधवा की संदूक की बाली से लेकर साल भर के लिए अनाज नहीं जुटाने वाले किसान के हल के बैल तक—क्या-क्या नहीं हड़पा मैंने ! तुम यह नहीं सोचना कि अचानक मेरे मन में सुमति का उदय हो गया और अपने पाप स्वीकार कर मैं प्रायश्चित करना चाहता हूं। मगर...मगर...बात क्या हुई, जानते हो ? तुम्हें खोलकर ही सब कुछ बता देता हूं, तुम्हें जो समझना हो, समझना :

कुछ महीने पहले की बात है। चमुवा गांव में जमीन की सीमा दिखाने के काम से गया था और एक घर में बातें करते हुए शाम हो गई थी। साइकिल चलाते हुए लौट रहा था, कपाहतली गांव के गोपी भगत के दरवाजे तक पहुंचा ही था कि तभी तेजी से बरसात शुरू हो गई। फौरन गोपी भगत के घर में घुस गया। रात के आठ बज रहे थे। गृहस्थ को आवाज लगाने से पहले आंगन से ही दीवार के

सुराख से देखा—कोई ढिबरी हाथ में लेकर एक कागज पढ़ रहा है, और चार-पांच लोग उसे घेरकर उसकी बातें सुन रहे हैं। इस बीच बारिश में मैं आधा भीग चुका था। इसीलिए गृहस्थ को पुकारा और फौरन दरवाजा धकेलकर भीतर चला गया। मुझे देखकर और मेरी आवाज सुनकर वे लोग इस तरह कांप उठे, मानो उन्होंने भूत को साक्षात देख लिया हो। उनके हाव-भाव देखकर मैं ठिठक कर खड़ा हो गया। जो भी हो, धीरे-धीरे उन लोगों के चेहरों को मैं पहचानने लगा—गोपी भगत, उसकी पत्नी, उसका बड़ा बेटा नारायण और गांव के दो लड़के। इन्हीं में से एक लड़के के हाथ में फुलस्केप साइज के दो कागज थे। दूसरे के हाथ में ढिबरी थी। वे क्या पढ़ रहे थे ? मुझे देखकर इस तरह क्यों चौंक उठे थे ? सोचकर मुझे हैरानी हुई। पहले मैंने ही कहा—भगत दादा, काम से लौट रहा था, आपके घर के पास वर्षा शुरू हो गई। मगर...मगर...मुझे देखकर आपलोग भूत को देखने की तरह घबरा क्यों रहे हैं ? ये लोग क्या पढ़ रहे हैं जो चाची भी भात चूल्हे पर छोडकर सुन रही है ?''

एक ही सांस में काफी बातें कहकर केशव मंडल कुछ पल चुप रहा। कुछ पल शिवनाथ का भी कौतूहल बनाए रखने का शायद उसका जी चाहा। काफी देर केशव मंडल को चुप देखकर शिवनाथ सचमुच अपना कौतूहल दबाकर रख नहीं पाया। उसने कहा, ''उसके बाद ?''

''मेरी बात सुनकर वे एक-दूसरे की आंखो में देखने लगे। किसी के मुंह से बोली नहीं फूटी। उसी तरह कुछ देर खामोश रहने के बाद गोपी भगत बोला, 'केशव बच्चे, तुम ठहरे सरकारी कर्मचारी, अंग्रेज सरकार के विश्वस्त आदमी। पर हमलोग यहां राजद्रोह की बातें कर रहे हैं। देखना, बाद में यह बात तुम्हारे मुंह से बाहर निकली तो तुम्हें गौ वध, मातृ वध, ब्रह्म वध का पाप लगेगा। दुनिया में गाय-सूअर की तरह गिरते-पड़ते खाते हुए जीना ही तो जीवन नहीं है।' ...भगत ने आखिरी बात शायद मेरे बुरे स्वभाव को ध्यान में रखकर ही कही थी, पर उस निंदा वाक्य पर मैंने ध्यान नहीं दिया। मेरी आंखें तब गोपी भगत, उसकी पत्नी और तीन लड़कों पर टिकी हुई थीं। मैं उन सबको अच्छी तरह पहचानता हूं। हमारी तरह ही कम पढ़े-लिखे हलवाहे-चरवाहे देहाती लोग, देश के मायने के बारे में किसी को खबर नहीं। पर उस दिन उनके चेहरों का भाव देखकर मैं हैरान रह गया। चाची की आंखें भीगी हुई थी, लड़कों के चेहरे उत्तेजना के कारण लाल हो उठे थे, भगत दादा के चेहरे पर उदासी का भाव था। दादा के मुंह से राजद्रोह की बात सुनकर पहले मुझे हंसने की इच्छा हुई थी, ककहरा नहीं जाने वाली चाची और हल के खूंटे के अलावा दुनिया की कोई चीज न समझने वाले दादा अब बुढ़ापे में राजद्रोह कर देश को आजाद करेंगे। पर उनके चेहरों के भाव देखकर मेरे भीतर की हंसी भीतर ही रह गई। मैं समझ गया, आज बात दूसरी थी, आज सचमुच कोई ऐसी घटना घटी है जिसके कारण कौवे के मुंह से कोयल का गीत निकल रहा है। और मैं यह भी समझ गया—कि

उस घटना का रहस्य उस कागज में छिपाया जा रहा है जिसे लड़के पढ़ रहे थे। मैंने कहा, 'दादा, तुमने एक नहीं, तीन वधों की शपथ दी है। अब विश्वासघात करूं, क्या इतना अमानुष मैं हो सकता हूं ? पर तुमलोगों को सबकुछ मुझे भी बताना पड़ेगा। तुमलोगों के हाव भाव देखकर मेरे मन में कैसा-कैसा हो रहा है। वह कैसा कागज पढ़ रहे हो ? उसमें क्या लिखा है ?' मेरी बात सुनकर लड़के एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। मैं समझ गया, लड़के मुझे कागज नहीं दिखाना चाहते। पर भगत दादा ने डांट कर कहा, 'इतने डर क्यों रहे हो ? मंडल भी हमलोगों की तरह आदमी है, जानवर नहीं है न ? दे दो कागज, वह भी पढ़ ले। देश के सारे लोग यह कागज पढ़ पाते तो ज्यादा अच्छा होता।...हे हरि, कैसी माया दिखा रहे हो तुम ? एक ही लहू-मांस का बना आदमी देवता होता है, दूसरा राक्षस होता है।' भगत दादा की बात सुन नारायण ने बड़ी बेरुखी से कागज मेरी तरफ बढ़ा दिया। पढ़ने से पहले मैं कागज को उलट-पलट कर देखने लगा। फुलस्केप साइज के कागज के एक तरफ अंग्रेजी में कुछ बातें छपी हुई थीं, लाल स्याही से एक गुणा का बड़ा चिह्न बनाकर उन अक्षरों को काटा गया था। युद्ध के समय की बात है, दूसरी चीजों की तरह कागज की भी काफी किल्लत थी, इसीलिए एक तरफ लिखे गए कागज के दूसरे हिस्से का उपयोग किया गया था। दूसरे हिस्से का स्वरूप देखकर मैंने अंदाजा लगाया, यह हस्तलिखित अखबार होगा। कागज के सबसे ऊपर बडे-बड़े अक्षरों में 'वंदे मातरम्' लिखकर लाल स्याही से पूरे पृष्ठ पर लिखा गया था। मैं कागज पढ़ने लगा। उससे कुछ दिन पहले नौगांव की तरफ तिलक डेका, भोगेश्वरी फुकनी आदि किसी-किसी कांग्रेसी वालंटियर की पुलिस की गोली से हुई मौत के बारे में सुना था। मगर अदरख के व्यापारी को जिस तरह जहाज से मतलब नहीं होता, उसी तरह जमीन मापने वाले हम जैसे मंडल वैसी बातों की तरफ ध्यान नहीं देते थे। कागज पर उन बातों का विस्तृत विवरण था। पढ़ कर समझ गया कि वह कागज बयालीस के आंदोलनकारी बागियों का गुप्त अखबार या प्रचार-पत्र था, कई हाथों से गुजरते हुए वह दूरदराज में स्थित हमारे मोहधूलि गांव तक पहुंच गया था। शुरू से अंत तक मैंने ध्यान से वह कागज पढ़ा। पुलिस की गोली लगने पर भी किस तरह तिलक डेका ने राष्ट्रीय झंडे को हाथ से गिरने नही दिया था। भोगेश्वरी फुकनी मरते वक्त क्या बातें कह गई थी—वह सारी बातें खून में आग लगा देने वाली भाषा में उस कागज पर लिखी गई थीं। मैं तुम्हारी तरह साहित्य का जानकार नहीं हूं, इसीलिए कागज की भाषा मुझे याद नहीं है, पर एक बात मैं तुमसे कह सकता हूं कि कागज पढ़कर मेरे मन में उथल-पुथल मचने लगी।

खैर, इस बारे में ज्यादा नहीं कहूंगा। कागज पढ़ चुका था, तब तक वर्षा बंद हो चुकी थी। मैं बिना कुछ बोले नारायण को कागज सौंपकर बाहर निकल आया था। प्रवेश-द्वार पार कर रहा था, तभी पीछे से नारायण चिल्लाया, 'यह सब बातें

बाहर फैलाने पर नतीजा बुरा होगा, अभी सावधान कर देता हूं।' नारायण की बात सुनकर हंसने की इच्छा हुई। उस दिन घर पहुंचकर ठीक से खा नहीं पाया। कोई शाम को हरिण का मांस देकर गया था, उसी को पकाया गया था। पर मांस को मैंने छुआ तक नहीं।

बच्चों की मां ने पूछा—आज तबीयत ठीक नहीं है क्या ? खाने में रुचि नहीं दिखा रहे हैं। मांस को छुआ भी नहीं, क्या हुआ है आज ?

मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया, पर मन ही मन मैंने सोचा, मेरी तबीयत बिगड़ रही है। इतने दिनों से जिन बातों को जीवन की सबसे बड़ी बात मानता था, जिन बातों से काफी स्वाद मिलता था, अचानक वे सारी बातें बेकार और निरर्थक लगने लगी हैं। रात में ठीक से नींद भी नहीं आई। तरह-तरह की बातें सोचता रहा। सुबह उठकर नहाया और पूजा-पाठ करने के बाद फैसला किया—नौकरी छोड़ दूंगा, देश की स्वाधीनता की लड़ाई में शामिल हो जाऊंगा।''

अलाव बुझने लगा था। पर शिवनाथ का उधर ध्यान ही नहीं गया था। केशव मंडल बात पूरी कर कुछ पल चुप रहा, तब जाकर उसकी तन्मयता टूटी। कुछ सूखी लकड़ियां अलाव में डालकर अन्यमनस्क भाव-भंगिमा के साथ वह फूंककर आंच तेज करने लगा। आग जब तेज हुई तो लपटों की तरफ एकटक देखते हुए वह किसी भाव से विभोर हो उठा। अचानक जमीन फाड़कर निकलने की तरह उसकी प्यारी बिल्ली कहीं से आकर उसके पैरों के पास लोटने लगी। कोई दूसरा दिन होता तो वह उसके शरीर पर हाथ फेरकर पुचकारता, गोद में भर लेता। पर आज उसने उसके अस्तित्व को भी स्वीकार नहीं किया। आग की लपटों की तरफ अपलक दृष्टि से देखते हुए वह काफी देर तक खामोश और निश्चल होकर बैठा रहा। शिवनाथ की खामोशी की भाषा मानो वह भी समझ रहा हो, ऐसा भाव दर्शाते हुए केशव मंडल ने भी फिर मुंह नहीं खोला।

कुछ समय बाद शिवनाथ की पत्नी रसोई से निकली और केशव मडल के सामने की जगह को ठीक से पानी डालकर पोंछ डाला। उसके बाद पीतल के लोटा-थाली और गमछा ठीक से रखकर भात लाने चली गई। उसी समय पड़ोस के भीमकांत के घर से मुर्गे की बांग की पहली आवाज सुनाई पड़ी।

''सुबह हो गई!'' बहुत देर के बाद शिवनाथ बोला, ''जब तीर्थ ही जा रहे हो तो ब्रह्म-मुहूर्त में यात्रा करना ही अच्छा होगा। तुम खाना खाओ, मैं नहाकर आता हूं।'' मंडल के जवाब की प्रतीक्षा किए बगैर शिवनाथ घर के पिछवाडे में स्थित कुंए की तरफ रवाना हो गया।

शिवनाथ की पत्नी भात लेकर आ गई। बानकांछी में नलसिटिकि चावल का भात, बानबाटी में मांगुर मछली का झोल, थाली के किनारे आलू और कद्दू की भुजिया, एक प्लेट में बैंगन का भुर्ता। इतनी तैयारी देखकर केशव मंडल लगभग

चीख उठा, "इस्स-इस्स–आधीरात को नींद से उठकर इतना कुछ पकाने की जरूरत क्या थी आपको ? कहा था न, भात में एक आलू डाल देने से काम चल जाएगा। आपने तो महाभारत की द्रौपदी को भी मात दे दी है। द्रौपदी जब तक स्वयं नही खाती थी तब तक सभी अतिथियों के लिए बर्तन से भोजन निकाल सकती थी। आपने तो स्वयं खाकर सोने के बाद भी असमय के अतिथि के लिए इतना सारा अमृत परोस दिया। जो आशा लेकर मैं यहां आया था, मेरी वह आशा सोलह आना पूरी हो गई। फुकन से भेंठ हुई, उसे अपने मन की सारी बातें खोलकर बता सका। आपके हाथ का पवित्र अन्न मुंह में डाल सका, मेरी यात्रा सचमुच शुभ और मंगलमय होगी।"

केशव मंडल खाने लगा। शिवनाथ की पत्नी तांबूल का पात्र करीब सरकाकर तांबूल काटने लगी और बोली, "तांबूल कुछ अधिक काटकर केले के पत्ते में बांध देती हूं। कुछ दिनों तक खा सकेंगे।"

कृतज्ञता के साथ चेहरा-आंखें करुण बनाकर मंडल ने उत्तर दिया, "नहीं-नही, मैं तांबूल भी छोड़ चुका हूं। फिर जेल में तांबूल नहीं खाने देंगे।"

मंडल ने खाना खत्म किया, तब तक शिवनाथ नहाकर बाहर जाने के लिए ढंग के कपडे पहनकर भीतर चला आया। उस रूप में उसे देख मंडल हैरान हुआ। "अरे, तुम भी सज-धज कर निकले हो, कहीं जाओगे क्या ?" उसने सवाल किया।

"थाने तक तुम्हारे साथ चलता हूं।" संक्षेप मे शिवनाथ ने उत्तर दिया। मंडल ने हाथ जोड़कर शिवनाथ की पत्नी को नमस्कार कहकर विदाई ली, उसके बाद शिवनाथ के पीछे-पीछे रास्ते पर चलने लगा।

आंगन मे पैर रखते ही शिवनाथ पूरब की तरफ मुड़कर कुछ पल ठिठका रहा। सूर्योदय में काफी देर थी। पूरब के आकाश में इकलौता तारा तब भी टिमटिमा रहा था। शिवनाथ ने एक बार चारों तरफ घूमकर देखते हुए भोर की पृथ्वी की अपार्थिव नीरवता और प्रशांति को महसूस करने की कोशिश की। एक आकस्मिक आवेग के कारण उसका शरीर सिहर उठा।

मडल की तरफ देखे बगैर उसने कहा, "संदिकै, मैं अक्सर इसी समय सैर पर निकलता हूं। भोर का यह सुंदर और पवित्र दृश्य देखकर मुझे हमेशा एक कविता याद आती है, तब मैं दरवाजे के पास खड़ा होकर मंत्र की तरह यह कविता गुनगुनाने लगता हूं :

जागकर देखूं बाहर से ही
पश्चिम में बुझती रोहिणी की ज्योति
इधर अंधेरा–उधर उजाला
चमकता है ऊपर एक नन्हा सितारा।
पूरब से आई हंसी की आवाज–

जाग रहे लोगों के स्वर से भरपूर
पश्चिम में छोटी-छोटी चिड़िया
उजाले की खुशी में चहचहाने लगती है।

पर आज मुझे वह कविता गुनगुनाने का जी नहीं चाहता। आज मुझे कोई दूसरी कविता गुनगुनाने का जी करता है। पर वैसी कोई कविता याद नहीं आ रही। हमेशा इसी समय जब आंगन से बाहर खड़ा होता हूं, ठंडी हवा लगने के साथ-साथ मेरा तन-मन शांत हो जाता है, मन शांति और पवित्रता से भर जाता है। आज बाहर तो शाति है, मगर मेरा मन पूरी तरह अशांत है। देश के लिए सब कुछ त्याग कर तुम जेल जा रहे हो, और मैं धन-दौलत भोगते हुए घर में पड़ा रहूंगा, घरवाली का प्यार पाता रहूंगा। जीवन में सिर्फ तरह-तरह की किताबें ही पढ़ता रहा, तरह-तरह की बातें सीख पाया, तरह-तरह की बातें सोचता रहा, पर काम के समय ठन-ठन मदनगोपाल, काम के नाम पर एक लकीर भी नहीं खींच पाया। एक किताब पढ़ने या विचार करने के लिए तुम्हें जीवन में समय नहीं मिला, पर जब काम करने का समय आया, तुम सब कुछ छोड़कर दौड़े आए कधे पर जिम्मेवारी संभालने के लिए। तुम्हारा जीवन ही धन्य है।...चलो, शुभ लग्न बीतने से पहले ही तुम्हें थाने तक पहुंचा दूं।''

3

सचमुच मैं किसी प्रकार के आवेग का अनुभव नहीं कर रहा हूं ? यह सवाल मन में पैदा होते ही शिवनाथ अतीत की स्मृतियों में खो गया—मानो वह जानता हो कि इस सवाल का जवाब अतीत के स्मृति-भंडार के किसी एक हिस्से में यत्नपूर्वक रखा गया है। विशेष रूप से उसे उस सुबह की याद आई। गांव के अधिकतर लोग तब भी सो रहे थे, सिर्फ एक-दो घरों की औरतें जागकर ढेकी से धान कूटना शुरू कर चुकी थी, कोई-कोई बिस्तर पर ही जम्हाई ले रहा था—उसी समय गांव के वीरान रास्ते से शिवनाथ और केशव मंडल थाने की तरफ चुपचाप बढ़ रहे थे। भोर की शीतल हवा में कदंब के फूल की गंध या मवेशीघरों की गायों के शरीर की गंध या गोबर की गंध घुलकर आ जाती थी। पर परिचित परिवेश और परिचित गंध के बावजूद शिवनाथ का मन यथार्थ के दायरे में बंध नहीं पाया था, वह जैसे इतिहास के किसी दूसरे युग में एक नई धरती पर आ गया था और अत्यंत उत्साह के साथ एक सहयात्री के साथ दूरदराज में स्थित एक दुर्गम तीर्थस्थल की तरफ यात्रा आरंभ कर चुका था। थाने तक पहुंचने के लिए उस छोटे रास्ते को पार करते हुए उसने अपने भीतर जो प्रबल आवेग महसूस किया था, जीवन में वैसा दिल को छूनेवाला

आवेग उसने कभी महसूस नही किया। और तो और, आज *14 अगस्त, 1947* के दिन—दो सौ सालों की गुलामी के बाद भारत को मिल रही आजादी की पूर्व-घड़ी में भी वह उस दिन जैसा आवेग महसूस नहीं कर रहा।

थाना परिसर में पहुंचकर उसने केशव मंडल से विदा ले ली। बिना कुछ बोले उसने मंडल के कंधे पर हाथ रखा और मुड़ गया। दिल में भले ही हलचल मची हो, उसे जाहिर करना शिवनाथ का स्वभाव नहीं है। पर उस दिन उसका वह स्वभाव भी बदल गया। दो कदम बढ़ते ही कुछ सोचकर वह अचानक लौट आया। तब केशव मंडल ठिठककर शिवनाथ को जाते हुए देख रहा था। शिवनाथ ने लौटकर केशव मंडल को बांहों में भर लिया, फिर कुछ भी बोले बगैर या पीछे मुड़े बगैर वह तेजी से नदी की घाट की तरफ रवाना हो गया।

शौचादि क्रिया से निवृत्त होकर शिवनाथ घर लौटता था, पर उस दिन घर जाने की बात वह भूल ही गया। गांववासी बरसात के दिनों में दूरदराज के जंगल से बड़े-बड़े उरियाम, सोम, गहरा आदि पेड़ों को काटकर लकड़ी का गट्ठर बनाकर लाते हैं, साल भर उसी से खाना पकाते हैं, बरसात का पानी सूखता है तब गट्ठर किनारे के रेत पर ही पड़े रहते है, लोग वहीं कुल्हाड़ी से लकड़ियां काटकर घर ले जाते हैं। शिवनाथ एक ऐसी ही लकड़ी पर बैठ गया और सूखी टहनी का दातून बनाकर दांत साफ करते हुए तन्मय होकर कुछ सोचने लगा।...दरअसल कल आधीरात से सिर्फ एक सवाल उसे बैचेन कर रहा है—केशव मंडल जैसा आदमी—जीवन में जो मामूली लोभ पर भी विजय न पा सका, अपने सिवा दूसरे के बारे में कभी सोच न सका, आहार-मैथुन-निद्रा के अलावा अन्य किसी बात से उसका कोई संबंध नहीं रहा—वैसा आदमी अचानक संसार के समस्त परिचित बंधनों को तोड़कर इस अनजान और दुर्गम पथ पर पैर रखने की प्रेरणा कहां से पा सका ?

बबूल का पौधा बोने से बबूल ही होगा, तुलसी या बैंगन या गुलाब नहीं होगा। हम जानते हों या न जानते हों, प्रत्येक घटना की एक प्रस्तुति होनी चाहिए। केशव मंडल का सारा अतीत चलचित्र की तरह शिवनाथ के मन की आंखों के सामने कौंध गया। नहीं-नहीं—शिवनाथ एकालाप करते हुए स्वयं से कह उठा—उस झूठे, धूर्त, मजाकिया, भोजन के विलासी, पैसे के लालची, फूहड़ केशव मंडल के अतीत में आज के इस सर्वत्यागी, विप्लवी एवं कारावास पथ के पथिक की कोई संभावना या अंकुर का नामोनिशान नहीं था। केशव मंडल के छद्म वेष में यह मानो कोई दूसरा आदमी है। *यह कैसे संभव हो सकता है ? इसकी कोई व्याख्या नहीं हो सकती।* बिन बादल बरसात की बात लोग यूं ही कहते हैं। परंतु बादलविहीन आकाश से वर्षा होते हुए आज तक किसी ने नहीं देखा है। मनुष्य के जीवन में कभी-कभी ऐसी घटनाएं घटती हैं—जिनके कारण के बारे में सहज व्याख्या नहीं की जा सकती। लगता है, केशव मंडल के जीवन में वैसी ही एक घटना घटी है। आखिरकार शिवनाथ

इसी निष्कर्ष पर पहुंचा।

भाव-विभोर होकर उदासीनतापूर्वक दांत साफ करते हुए दातून का अगला हिस्सा कब पूरी तरह खत्म हो चुका था—शिवनाथ को पता ही नहीं चला। केशव मंडल का मामला उसके लिए जीवन का एक मौलिक प्रश्न बन गया—यह सोचकर वह इस बारे में गंभीरतापूर्वक सोचने लगा। उसने महसूस किया कि जीवन में बहुत दिनों के बाद आज एक गंभीर आत्मविश्लेषण करने की जरूरत है।

कल रात खाना खाने के बाद शिवनाथ जब बिस्तर पर लेटा था, तब उसके मन में ऐसा कोई नया विचार या नई अनुभूति पैदा नहीं हुई थी। बिस्तर पर लेटते ही उसने जम्हाई लेकर हमेशा की तरह ईश्वर का नाम लिया था, फिर पास ही दूसरे बिस्तर पर बच्चों के साथ लेटी पत्नी के साथ घर-गृहस्थी की एक-दो समस्याओं के बारे में बातें करता रहा था—और दो दिन बाद धान की कटाई शुरू करनी पड़ेगी। इस बार कितनी औरतों की जरूरत पड़ेगी, किसे-किसे रखा जाएगा, किस-किस दिन इंतजाम किया जाएगा—खासकर इसी विषय पर बातें हुईं। पर बात करते हुए एक वाक्य आधा फुसफुसाकर कहते हुए पत्नी अचानक सो गई। इसमें उस बेचारी का कोई कसूर नहीं। सुबह बिस्तर से उठने से लेकर रात को खाकर बर्तन धोने तक उसे एक पल भी सांस लेने की फुरसत नहीं मिलती। यंत्र की तरह निरंतर काम करते हुए दिन कैसे बीत जाता है, वह समझ नहीं पाती। रात में खाना खाने के बाद उसे अपना शरीर लाश की तरह लगता है, तब देर तक जागकर बातें करने या सोचने के लिए तन-मन में शक्ति बची नहीं रहती।

पत्नी सो गई, पर शिवनाथ की आंखों में देर तक नींद नहीं आई। अचानक उसने स्वयं को काफी अकेला महसूस किया। वैसी स्थिति में उसने महसूस किया कि काफी दिनों की सोई हुई कामना उसके मन में धीरे-धीरे जाग रही है—पत्नी को अपने बिस्तर पर पाने की उसे तीव्र इच्छा हुई। आज से कुछ साल पहले ऐसी इच्छा मन मे जागने के साथ ही खून का प्रवाह तेज हो गया होता, और शरीर के रोम-रोम तक उस इच्छा का समाचार पहुंचा देता। पर आजकल वैसा नहीं होता। उसकी उम्र भी तो काफी हो गई। कितनी हुई ? छियालीस या सैंतालीस ? आजकल मन में कामना जागने के साथ ही खून में पहले की तरह तीव्र ज्वार नहीं उठता, एक-दो छोटी-बड़ी लहरें उठती हैं जो अपने आप शांत हो जाती हैं। इसकी मुख्य वजह यह नहीं है कि उसका शरीर कमजोर हो गया है या कामना की तीव्रता भी कम हो गई है, उससे भी बड़ा कारण है—बच्चे बड़े हो चुके हैं, जब तक वे सोते हैं तब तक उनकी मां भी एक नींद पूरी कर लेती है। इसके अलावा, दिनभर अथक मेहनत करते रहने के कारण वह इस कदर टूट चुकी होती है कि उसके शरीर में या मन में जीवन के किसी अन्य विलास के लिए शक्ति और इच्छा बची नहीं रहती। आज जब इच्छा हुई कि पत्नी बिस्तर पर आए तो अंधेरे में ही शिवनाथ ने पत्नी

के बिस्तर की तरफ देखा और अंधेरे में ही उसने मानो देख लिया—लाश की तरह पत्नी का असार शरीर, उभरी हुई नसों वाली शिथिल चमड़ी में छिपी गरदन, जगह जगह फटे हुए कपड़े से झांकते शरीर के हिस्से, पशुवत परिश्रम और असमय ही वृद्धावस्था की क्रूर खरोंच। अचानक शिवनाथ ने पत्नी के प्रति तीव्र वितृष्णा का भाव महसूस किया।

परंतु कुछ पल बाद ही उस वितृष्णा की जगह सहानुभूति, करुणा और स्नेहपूर्ण ममता का भाव उमड़ पड़ा। पत्नी को अपनी बगल में पाने की आशा छोड़कर शिवनाथ ने अपने विचारों का रुख दूसरी तरफ मोड़ने का प्रयास किया। उसका बड़ा लड़का इस बार नौवीं की परीक्षा देगा। उसके बाद गांव के हाईस्कूल में पढ़ाने की उसे इच्छा नहीं है। जब से स्कूल की स्थापना हुई, किसी भी लड़के ने प्रथम श्रेणी तो दूर की बात है, द्वितीय श्रेणी में भी परीक्षा उत्तीर्ण नहीं की है। लड़का शहर के सरकारी हाई स्कूल में पढ़ना चाहता है। कचहरी में किरानी की नौकरी कर रहे उसके मामा ने भी उसे बुलावा भेजा है—अपने साथ रखकर पढ़ाएगा। शिवनाथ इस विषय पर विचार करने लगा। लड़के का भविष्य संवारने के लिए उसे शहर भेजना जरूरी है, यह बात वह अच्छी तरह समझता है। उसे सिर्फ एक बात का डर है—कहीं उसके कड़े अनुशासन के अभाव में और मामा का लाड़-प्यार पाकर लड़के का स्वभाव और चरित्र न बिगड़ जाए, कहीं उसकी मामी उसे बिन बुलाई मुसीबत समझकर उसके साथ अपमानजनक व्यवहार न करे। यही सब सोचते-सोचते उसने महसूस किया कि उसकी पलकों को नींद के बोझ ने भारी कर दिया है, अनिद्रा से छटपटाने की यंत्रणा और अधिक देर भोगनी नहीं पड़ेगी। करवट बदलकर वह कुछ देर ईश्वर का स्मरण करता रहा और नींद की गोद में स्वयं को समर्पित कर दिया।

सिर्फ कल ही नहीं, दिन के बाद दिन, रात के बाद रात, शिवनाथ का जीवन हमेशा एक जैसा है। रोज जब वह बिस्तर पर जाकर लेटता है तब विषय-आशय और आहार-मैथुन के सिवा किसी बात का ख्याल मन में नहीं आता। सुबह जागकर जब वह एक नए दिन के सामने खड़ा होता है, तो वह दिन जीवन में गुजरे हजारों दिनों से कुछ अलग हो सकता है, ऐसा वह नहीं सोचता। वह जिस रास्ते से हमेशा नदी किनारे या खेत की तरफ आता-जाता है, उस रास्ते के सारे मोड़, घास, पेड़ जिस तरह उसके लिए जाने-पहचाने हैं, दिन-रात का अंतहीन आवर्तन भी उसी तरह उसके लिए जाना-पहचाना है। जीवन में अब कही भी कुछ अप्रत्याशित विस्मय नहीं है, अनसुलझा रहस्य नहीं है, अद्भुत संभावना नहीं है। कल रात तक तो वह यही मानता रहा था, पर आधी रात को गहरी नींद से उसे जगाकर गहरे अंधेरे में उसके घर में केशव मंडल समा आया, जो अपने साथ अपरिचित जीवन का हृदय में उथल-पुथल मचानेवाले संदेशा लेकर आया—जो संदेशा सुनने के पल से उसके मन की चालीस साल पुरानी नींद टूट गई है और उसे सदा जागृत आंखों के सामने संपूर्ण

जगत नए और अपरिचित रूप में दिखाई पड़ने लगा है।

उसका बचपन का साथी केशव मंडल—जिसे वह हमेशा झूठा, धुरंधर, कुटिल और धूर्त केशव मंडल के रूप में जानता था—उसी केशव मंडल में उसने अचानक मानव की मुक्ति के आदर्श के पीछे घूम रहे चिरकाल के सर्वस्वत्यागी, विप्लवी को देखा, और उस पल एक गुप्त यंत्रणा से उसका हृदय छटपटा उठा। जीवन में उसने जितनी किताबें पढ़ी हैं, केशव मंडल के चौदह पुरखों ने उनका नाम तक नहीं सुना होगा। वह जितनी बातों पर सोच-विचार करता रहा है, केशव मंडल वैसी बातों की कभी कल्पना तक नहीं कर सकता। पर जब महान आह्वान सुनाई पड़ा तो तुच्छता के बीच पड़े हुए केशव मंडल के कानों तक भी वह आह्वान पहुंचा और वह संसार के सारे परिचित बंधन फौरन तोड़कर जीवन के नए रास्ते पर निकल पड़ा।

शिवनाथ ने वह आह्वान सुना था क्या ? अगर सुना था तो उसने क्या किया ? सबके जीवन में एक बार एक आदर्श का आह्वान आता है—कभी ईश्वर का, कभी संग्राम का, कभी वैराग्य का, कभी सृष्टि या ध्वंस का आह्वान होता है। कोई उस आह्वान को ध्यान से सुनकर घर छोड़कर निकल पड़ता है, कोई सुनकर भी न सुनने का ढोंग करता है, किसी को सांसारिक शोर-शराबे में वह आह्वान ठीक से सुनाई ही नहीं देता।

शिवनाथ ने कई बार वह आह्वान सुना है, पर हर बार उसने न सुनने का दिखावा करने की कोशिश की है। स्वाधीनता और स्वाभिमान के लिए युगों से मनुष्य द्वारा किए जा रहे संग्राम का आदर्श बहुत वर्ष पहले ही उसके हृदय में पैदा हुआ था। तब वह छात्रवृत्ति स्कूल में पांचवीं या छठी कक्षा का विद्यार्थी था। यह लगभग 1912 या 1913 की बात है। पिता की किताबों की आलमारी को टटोलते हुए उसे कुछ बंगला किताबें मिलीं—योगींद्र ग्रंथावली और नवीनचंद्र सेन ग्रंथावली। शब्दों की झंकार उसे छुटपन से ही आकर्षित करती थी, इसीलिए ठीक से समझ में आए या न आए, शब्द की झंकार के मोह में वह बंगला किताबें पढ़ता गया था। योगींद्र ग्रंथावली में सर जॉन हाम्पडेन की जीवनी थी। राजा जॉन की निरकुंशता और अत्याचारी शासन के खिलाफ सिर उठाने वाले जॉन हाम्पडेन की जीवनी इस तरह जोशीली भाषा में लिखी गई थी जिसे पढ़कर भाव-प्रवण शिवनाथ के बाल-सुलभ हृदय में उथल-पुथल मचने लगी थी। उसी पल उसने मन ही मन प्रतिज्ञा ली थी कि बड़ा होकर भविष्य में वह भी निरंकुशता और अत्याचारी शासन के खिलाफ हाम्पडेन की तरह लड़ेगा। उसके बाद उसने नवीन ग्रंथावली में पलासी की लड़ाई के बारे में पढ़ा। इन दोनों किताबों ने उसे मानवीय अधिकार और देशप्रेम के संबंध में सबसे पहले दीक्षित किया। पर तब वह छोटा लड़का था, सपने देखने के सिवा उसका कोई काम नहीं था या कोई उपाय भी नहीं था।

प्रथम विश्व युद्ध जब खत्म हुआ था तब शिवनाथ ने युवावस्था में कदम रखा

था। देश के बारे में सोचने वाले सारे लोग तब भारत के आकाश मे एक नए उन्माद का स्पर्श महसूस कर रहे थे, उस उन्माद से लोगों की नसों में खून उबलने लगा था। शिवनाथ भी उसके संक्रमण से बच नहीं पाया था। उसके कानों में गूंज उठा था लोगों की खून में आग सुलगाने वाला अग्नि-कवि अंबिका गिरि का गीत :

यह नहीं है हंसी-ठिठोली, जी बहलाने का गान
यह है जीवन-मरण एकाकार करने वाला करने अग्निवाणी का गान
यह है सुप्त जीवन-चक्र को जगानेवाला वज्र निनाद तान
यह है मानव अधिकार हेतु किया गया शृंखल अभियान।
यही है शत आघात की रक्त धुली श्रावण की बाढ़
यही है मां का आदेश—संतान दे प्राणों का बलिदान।

और कुछ दूर से बंग देश के विद्रोही कवि नजरूल इस्लाम दहाड़ उठे थे:

दुर्गम गिरि, कातार मरु, दुस्तर पारावार
सघिते हबे रात्रि निशीथे, यात्रीरा हुंसियार।

शिवनाथ की देह में यौवन की हवा तब लगी ही थी, उसी दौरान उसके कानों में देशप्रेम के ऐसे जोशीले संगीत गूंजने लगे, दुस्साहसिक अभियान और दुर्गम पथ पर बढ़ने के लिए उत्तेजक आह्वान सुनाई पड़ने लगा। उस समय अगर शिवनाथ रास्ते से सेना को मार्च करते हुए लड़ाई के मैदान की तरफ जाते देख लेता तो इसमें कोई संदेह नहीं कि वह एक ही झटके में घर से निकलकर सेना में शामिल हो चुका होता। पर घर के भीतर घुसकर शिवनाथ जब यत्न से संजोकर रखे गए अखबारो और पत्रिकाओं के पृष्ठों में बाहरी जगत के युद्ध-विराम, विप्लव और जागरण का शोर कान लगाकर सुन रहा था तब उसके घर के बाहर देहाती जीवन और प्रकृति का वही चिंरतन दृश्य था—बैलों के पीछे कंधे पर हल लेकर खेत जाते हुए किसान और घर लौटते हुए किसान, झुंड बनाकर नदी किनारे जाती हुई गांव की बहू-बेटियां, गायों का रंभाना, कुत्तों का भौंकना, चिड़ियों की चहचहाहट, नामघर में ढोल बजाने की आवाज, बीच-बीच में बहुत दूर से आती मोहगुवाल की सीटी की आवाज और वनघोवा का सुर। इन दृश्यों और शब्दों के बहु योजन के भीतर विप्लवी सेना और उसके रण संगीत का कोई अस्तित्व नहीं था, था सिर्फ धरती की एकमात्र अधीश्वरी 'महारानी' का पुरखों से चला आ रहा साम्राज्य। इसीलिए शिवनाथ क्रांति पथ का राही बन नहीं पाया। घर-गृहस्थी और किताबों के बीच ही उसकी जिंदगी गुजरती रही।

ठीक उसी समय शिवनाथ ने एक नया नाम सुना—

मोहनदास करमचंद गांधी।

अब तक शिवनाथ सिपाही विद्रोह और उग्रवादी स्वदेशी आंदोलन की क्रांतिकारी विचारधारा से प्रेरित होता रहा था, उसकी आंखों के सामने शरतचंद के 'पथेरदाबी'

का सव्यसाची आदर्श था। न जाने कितने दिन आंखें मूंदकर वह दिवास्वप्न देखता रहा—सव्यसाची की तरह कैसे वह भी विदेश जाकर देश की आजादी की लड़ाई के लिए तैयारी कर रहा है, संसार की सारी माया के बंधनों को तोड़कर वह किस तरह क्रांति के दुर्गम रक्ताक्त पथ पर अकेले बढ़ता जा रहा है, कदम-कदम पर किस तरह फांसी का फंदा हाथ फैलाकर उसे पुकार रहा है। पर इस रक्त-पिपासा और तन-मन में जोश भरने वाले रण-संगीत के बीच गांधी की शांत और नम्र आवाज—उनका अहिंसा और. चरखे से धागा बुनने का आह्वान—इतना अदभुत और नवीन प्रतीत हुआ कि शिवनाथ ठिठक गया, बहुत दूर से आ रही गांधी की बातों को वह मंत्र-मुग्ध की तरह कान लगाकर सुनने लगा। इस समय उसके लिए प्रमुख सहारा अंबिका गिरि रायचौधरी द्वारा संपादित 'चेतना' थी। सन् 1905 में जिस रायचौधरी ने बंगाल के उग्रवादी विप्लवियों का शिष्य बनकर लोगों से सशस्त्र संग्राम का आह्वान किया था—

जिसका जहां हो दाव-कुठार-बर्छी
हाथों में थाम लो,
डरना नहीं, संशय नहीं
सीने में साहस भर लो।

उन्हीं रायचौधरी ने सन् 1920 में भारत के नए नायक गाधी का शिष्य बनकर अहिंसा और असहयोग के संदेश का गली-गली प्रचार करते हुए गाना शुरू कर दिया—

एक तरफ है शत रोषाग्नि
माटी की भाप से रची हुई
दूसरी तरफ है एक हथियार
आत्मबल से भरपूर।
अत्याचार बढे तो बढ़े
सीना तानकर करेंगे उसे नाकाम।
संवर जाएगा राजतिलक से
जननी का माथा।

'चेतना' में जोशीली भाषा में छपी गांधी के विप्लव की बातें पढ़ते हुए शिवनाथ मन ही मन जबर्दस्त रोमांच का अनुभव करने लगा। तभी 1921 आ गया और देशभर में गांधीजी का असहयोग आंदोलन शुरू हो गया।

शिवनाथ की उत्तेजना दोगुनी हो गई। उसने निश्चय किया कि इस बार वह आंदोलन में शामिल होगा। पर अगले ही पल उसे याद आया—वह अपने घर का इकलौता लड़का है, पिताजी बूढ़े हो गए हैं, इस समय अगर वह वालंटियर बनकर जेल चला जाएगा तो देखभाल करनेवाला कोई नही रहेगा। इस तरह खेतीबारी भी चौपट हो जाएगी। पिताजी भी उसे उस रास्ते पर जाने की अनुमति नहीं देंगे। एक

तरफ घर का बंधन तो दूसरी तरफ विप्लव का उत्तेजनापूर्ण आह्वान—इन दोनों की खींचतान में फंसा शिवनाथ किंकर्तव्यविमूढ़ बना हुआ था। उसी दौरान एक दिन अचानक उसका ममेरा भाई सर्वेश्वर उसके घर आया।

सर्वेश्वर डिब्रूगढ़ की कचहरी में किरानी की नौकरी करता था। सर्वेश्वर को देखकर शिवनाथ ने सोचा—वह छुट्टी लेकर घूमने आया है। पर जब उसने सुना कि सर्वेश्वर सरकारी नौकरी से इस्तीफा देकर कांग्रेस का वालंटियर बन गया है और अभी गांव मे असहयोग का संदेश प्रचारित करने के लिए आया है, तब शिवनाथ हैरान हो गया। उसके दिल में तरह-तरह के भाव और विचार उथल-पुथल मचाने लगे। अपना ममेरा भाई सर्वेश्वर—उसे समझ पाने में कोई कसर बची है क्या ? मामूली सोच, मामूली अनुभूति और मामूली आशा-आकांक्षा रखनेवाला शख्स सर्वेश्वर—उसमें कोई भी ऐसी विशेषता नहीं बताई जा सकती थी जिसके आधार पर अनुमान लगाया जा सकता कि वह कभी स्वाधीनता और विप्लव जैसी बड़ी-बड़ी बातें सोचेगा या समझ पाएगा, जबकि आज वही आदमी अपने जीवन का सर्वस्व त्यागकर स्वेच्छा से कष्टप्रद मार्ग पर चला आया है। राजा द्वारा राजसिंहासन छोड़ने की तरह एक गरीब युवक द्वारा अपनी जीविका के एकमात्र संबल—किरानी की नौकरी छोडना क्या कम महत्वपूर्ण बात है ?

शिवनाथ ने गौर से सर्वेश्वर का चेहरा देखा। जैसे घर के भीतर कई लोग बैठे हों, तभी खिड़की से आ रही शाम के सूरज की सुनहरी किरण किसी एक व्यक्ति के चेहरे पर पड़े तो वह जैसा सुंदर और अपार्थिव दिखता है, ठीक उसी तरह इस पल, सर्वेश्वर भी बहुत सुंदर दिख रहा है, मानो रोशनी का एक पवित्र वृत्त उसके मुखमंडल के चारो तरफ फैला है, उसे पहचानना मुश्किल हो रहा है।

शिवनाथ ने स्वयं से ही पूछा—कहां से यह रोशनी आई है ? इस रोशनी से नहा रहा सर्वेश्वर हमेशा इसी तरह उज्ज्वल बना रहेगा क्या ? पश्चिम के सूरज के डूबने के साथ उसकी सुनहरी रोशनी से उज्ज्वल और सुंदर बनी चीजें जिस तरह अंधेरे की कालिमा में गुम हो जाती हैं, क्या उसी तरह सर्वेश्वर का चेहरा भी एक दिन अंधेरे की तरह काला हो जाएगा ?

उसके कुछ दिन बाद ही शिवनाथ को खबर मिली कि एक दिन पुलिस सर्वेश्वर को उसके घर से पकड़कर ले गई। उस रात शिवनाथ ठीक से सो नहीं पाया। एक गुप्त ईर्ष्या की भावना उसके सीने में सुलगती रही। वह सर्वेश्वर, उसका ममेरा भाई सर्वेश्वर, जिसकी जिंदगी का सबसे बड़ा सपना कचहरी का किरानी बनकर शहर में घर बनाना और चेतीया मौजादार की बड़ी बेटी के साथ विवाह करना था—उसी सर्वेश्वर ने आज हंसते-हंसते विप्लवियों के पुण्य तीर्थ कारावास की यात्रा की, और जो शिवनाथ जीवन भर लीक पर चल रही जिंदगी से कुछ अलग, विशिष्ट काम करने का सपना देखता रहा था वह धान के भंडार और मवेशीघर से चिपका

रह गया।

उदासीन भाव से दातून दांतों पर घिसते हुए जबड़े पर चोट लगी, जिसके साथ ही वह स्मृति के जगत से यथार्थ के धरातल पर लौट आया—कुल मिलाकर मैं कभी काम का आदमी नहीं बन सका—उसने स्वयं से ही कहा—मेरा सारा जीवन सपना देखते हुए और स्वयं से बातें करते हुए ही बीत गया। मुझे सन् 1921 में जेल जाना चाहिए था, चूंकि उसके लिए काफी दिनों से मैं स्वयं को तैयार करता रहा था। पर जेल सर्वेश्वर गया—जो सर्वेश्वर सपने में भी देश के बारे में सोचता होगा, इसमें मुझे संदेह था। ठीक उसी तरह आज केशव मडल भी जेल गया और मैं धान के भंडार और मवेशीघर से चिपका रह गया। दरअसल बात क्या है ? मन ही मन मैं भले ही बड़ी-बड़ी बातें क्यों न सोचूं, क्या मैं हकीकत में महालोभी, स्वार्थी और भौतिक सुखों में रमा हुआ व्यक्ति नहीं हूं ? दूसरी तरफ, सर्वेश्वर या केशव मंडल का बाहरी व्यवहार भले ही स्वार्थ से भरपूर और हीनाकांक्षी नजर आता हो, वास्तव में उनके मन में हमेशा वैराग्य की एक भावना बनी रही है ?

मनुष्य को पहचान पाना असंभव है—शिवनाथ आखिर इस निष्कर्ष पर पहुंचा।

4

दो शताब्दी की गुलामी की बेड़ियां तोड़कर कल देश आजाद हो जाएगा। एक ऐसे पल में क्या मै किसी प्रकार के आवेग का अनुभव नहीं कर रहा ?

इस एक प्रश्न का उत्तर तलाशते हुए शिवनाथ अपने समूचे अतीत की पड़ताल कर आया। ऐसा कौन विचारवान आदमी होगा—जो एक ऐसे ऐतिहासिक और युगांतकारी पल में किसी न किसी प्रकार के आवेग का अनुभव नहीं कर रहा हो ?

शिवनाथ भी अनुभव कर रहा है। बल्कि दूसरे बहुत लोगो की तुलना में वह कुछ ज्यादा ही अनुभव कर रहा है। चूंकि बगैर कविता लिखे वह एक कवि है, जीवन भर वह कविता से हृदय के लिए संजीवनी रस प्राप्त करता रहा है, इसीलिए वह किसी भी बड़ी घटना के महत्व को कवि-सुलभ कल्पना की मदद से अधिक उज्ज्वल रूप में देख सकता है। फिर भी उसके भीतर भाव जागा कि आज वह जिस आवेग का अनुभव कर रहा है, इससे हजारों गुना तीव्र आवेग का अनुभव उस दिन हुआ था, जब आधीरात को जेल का मुसाफिर केशव मंडल विप्लवी के वेष में अंधेरे से निकलकर उसके घर में घुसा था। पारस पत्थर के स्पर्श से लोहा के सोना बन जाने की तरह आदर्श के जिस अग्नि-स्पर्श ने केशव मंडल सरीखे लोभी और विषय-सर्वस्व आदमी को भी सर्वत्यागी विप्लवी बना दिया, उस आदर्श की शक्ति देखकर शिवनाथ ने दांतों तले उंगली दबा ली थी। उस पल उसके भीतर भी इच्छा जागी थी कि वह

भी केशव मंडल का हाथ पकड़कर विप्लव के पथ पर चला जाए। पर जीवन में हमेशा घटित होने की तरह उस समय भी वह इच्छा मन में ही दबी रह गई, हकीकत नहीं बन पाई। और तो और, उसके भीतर जो आवेग का तूफान उठा था, किसी को पता भी नहीं चल सका।

आज आजादी मिलने के पूर्व की घड़ियों में वह कुछ आवेग का अनुभव कर रहा है, पर उस दिन की तुलना में यह अत्यंत सामान्य है। उसने स्वयं आजादी की लड़ाई में भाग नहीं लिया था, पर फुटबाल खेल के दर्शक जिस तरह खेल के साथ-साथ हाथ-पैर फटकारते रहते हैं, वह भी स्वतंत्रता सेनानियो के साथ उनके बरावर ही आवेग के ज्वार-भाटा को महसूस करता रहा था—अपने दिवास्वप्न के जगत में वह विप्लवियों के समूह में शामिल होता था, पुलिस के संगीन की नोक का वार झेलता था, फांसी की सजा पानेवाला मुजरिम बनकर जेल की वीरान कोठरी में जंजीरों में जकड़े हुए हाथ-पैर के साथ दिन गुजारता रहा था। आज जब बहुवांछित स्वाधीनता मुट्ठी में आ गई है, शिवनाथ ने मन के गहरे कोने में एक किस्म की शून्यता महसूस की। आजादी की जिस लडाई से इतने दिनो तक देश के लाखों लोगों को जीने का नया अर्थ मिलता था, उन्माद मिलता था, अवलंब मिलता था, आज के बाद वे लोग किस वजह से जिंदा रहेंगे ? जिस रण-संगीत की ताल के साथ उन लोगों ने अपने दिल की धड़कन को एकाकार कर दिया था, आज वह रण-संगीत खामोश हो जाने के बाद वे लोग जीवन का कैसा नया छंद तलाश पाएंगे ? सर्वेश्वर और केशव मंडल की तरह जिन लोगों ने धूल में पड़े-पड़े आजादी की लड़ाई से प्रेरणा लेकर जीवन की नई ऊंचाई की तरफ छलाग लगाई थी, वे लोग इसके बाद किस कारण जिंदा रहेंगे ? कल ये जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, गोपीनाथ बरदलै आदि जैसे लोगों के लिए जीवन का नया उन्माद और चुनौतियां प्रतीक्षारत है, उनके लिए जीवन में कभी उत्तेजना की कमी नहीं होगी। परंतु लड़ाई खत्म होने पर घर लौट जानेवाले सैनिकों की तरह सर्वेश्वर और केशव मंडल जैसे लोगों के लिए क्या प्रतीक्षारत है ? क्या सर्वेश्वर फिर कचहरी मे किरानी की नौकरी तलाशेगा ? क्या केशव मंडल विधवा-दुखियारी औरतों को डरा-धमका कर घूस खाना शुरू कर देगा ?

5

"बाबूजी, तबीयत ठीक नहीं है क्या ?"

प्रवेशद्वार की तरफ से किसी की तेज आवाज सुनकर शिवनाथ लगभग चौंक पड़ा। सिर उठाकर उसने देखा—कैवर्त गांव का कतीया प्रवेशद्वार पर खड़े होकर उसे पुकार रहा है। बहुत देर तक अपनी स्मृति के जगत में चक्कर काटते रहने के कारण

उसने स्वयं को काफी थका-थका-सा महसूस किया। कतीया को देखकर उसने राहत का अनुभव किया। उसने भी चिल्लाकर जवाब दिया, "तबीयत ठीक ही है रे। यूं ही चुपचाप बैठा हूं ! आ, इधर आ, एक तांबूल खाकर जाना।"

शिवनाथ का स्नेह भरा बुलावा पाकर कतीया दांत निपोड़कर हंस पड़ा। खुशी जाहिर करने का इससे अलग कोई तरीका वह नहीं जानता।

फाटक खोलकर वह भीतर चला आया और दुलार पाकर जिस तरह बिल्ली गुर्राती है, उसी तरह तरंग में आकर वह बातें करने लगा, "सुबह ही पोखर देखने गया था, बाबूजी ! चेनीमछली तैरती दिखाई दी—हथेली जितनी बड़ी। घर में एक मुट्ठी चावल भी नहीं था। कल रात भी नहीं था। दिवाकर के घर से मांगकर कल रात का भोजन बनाया। आज उन्हें चावल लौटाना पड़ेगा। घर में बच्चों के खाने के लिए सिर्फ एक मछली छोड़कर बाकी सारी मछलियां लेकर बाजार गया था, बाबूजी ! इस्स ! बड़ी भूल हो गई बाबूजी, मैं आपके घर ही कुछ मछलियां देकर चला जाता। पर बाबूजी, आप बाहर दिखाई नहीं पड़े। मैं भी किन ख्यालों में डूबा हुआ था, एक ही झटके में बाजार पहुंच गया।...आज शाम भी कुछ मछलियां पकड़ पाऊंगा, आपके लिए जरूर लेकर आऊंगा।"

कतीया की बात पूरी हुई, इसके साथ ही वह शिवनाथ के बरामदे पर पहुंच गया। लगभग एक सेर चावल की गठरी और छोटी शीशी में थोड़ा-सा सरसों का तेल, उसने बांस की खपच्ची से टांग दिया और बरामदे के नीचे विलायती मिट्टी से बनाई गई पक्की सीढ़ी पर बैठ गया। सिर पर बांधे गंदे-पुराने गमछे को खोलकर उसने चेहरा और गरदन पोंछी, दो बार 'राम-राम' कहकर जम्हाई ली, फिर गमछे को पंखे की तरह हिला-हिलाकर गर्मी से निजात पाने की कोशिश करने लगा।

शिवनाथ ने जैसे आज पहली बार ही कतीया को देखा हो, उसी तरह के भाव के साथ कुछ पल उसे देखता रहा। कमर के नीचे का हिस्सा किसी तरह छिपाने लायक एक गंदा और फटे कपड़े का टुकड़ा ही उसके शरीर पर नजर आ रहा था। कपड़े की हालत देखकर ऐसा लगता था मानो शर्म छिपाने के लिए भी वह पर्याप्त नहीं था। उसका चमकता हुआ काला शरीर पूरी तरह सामने था। सावन महीने की उमस भरी गर्मी के मौसम में उसके शरीर से पसीने की धारा बह रही है, जिससे उसका सारा शरीर चमक रहा है और उसके शरीर से पसीने, गंदगी और मछली की घुली-मिली गंध निकल रही है। काले-विवर्ण चेहरे पर कई दिनों की बढ़ी हुई अधपकी दाढ़ी, सिर के आधे से अधिक बाल भी सफेद हो चुके हैं। गमछे को हिलाते हुए वह तेजी से सांस ले रहा था और इस प्रक्रिया में उसके शरीर की मांसपेशियां धीरे-धीरे कांप रही थीं। शिवनाथ को अचानक वह काफी कमजोर और बीमार बूढ़ा जैसा लगने लगा। हालांकि उम्र ही क्या हुई होगी (शिवनाथ ने हिसाब करने की कोशिश की), उससे पांच-छह साल वह छोटा होगा। दस-बारह साल की उम्र में ही जब वह पहले

चरवाहे के रूप में उसके घर आया था, तब शिवनाथ युवा हो चुका था। इसीलिए अभी तो उसकी उम्र चालीस के लगभग हुई होगी। पर उसे देखकर कोई भी मानने के लिए तैयार नहीं होगा कि वह सिर्फ चालीस साल का होगा। वैसे उसे देखकर यह कहना भी कठिन है कि उसकी सही उम्र क्या होगी। गंभीर दुर्घटना में मारे जानेवाले व्यक्तियों के चेहरे जिस तरह विकृत होकर पहचाने नहीं जाते, वैसे ही कतीया की उम्र भी जीवन के प्रचंड आघातों से क्षत-विक्षत और विकृत होने के कारण पहचानी नहीं जा सकती। उसे देखकर अकाल वृद्ध कहा जा सकता है, मगर उसकी उम्र का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता।

कुछ पल कतीया के चेहरे की तरफ देखते रहने के बाद शिवनाथ ने एक बार भीतर की तरफ मुखातिब होकर जोर से कहा, "अरे आईकन-आईकन—बाहर दो तांबूल दे जा, कतीया आया है,"—फिर कतीया की तरफ देखते हुए पूछा, "इस बार तूने किसी के साथ हल जोतने की बात नहीं की थी क्या ?"

"हल नहीं जोतें तो गुजारा कैसे चलेगा ? बाबूजी" कतीया ने जवाब दिया, "इस साल देवीराम के साथ खेती की है। पर आज हल जोतने नहीं जा पाया। कल रात उसके दोनों बैलों के जोड़े पाउंड में फंस गए। देवीराम कहीं गया था, इसीलिए रात में देरी से घर लौटा। हाथ में पैसे न होने के कारण उसकी पत्नी छुड़ाकर नहीं ला पाई, इसी बात पर देवीराम ने उसकी धुलाई कर दी। आज सुबह गया था तो देखा, बेचारी सूज गई है। औरत पर हम भी हाथ उठाते हैं बाबूजी, पर गलत-सही का विचार किए बगैर इतना अत्याचार तो हम कर नहीं सकते।"

कतीया का स्वभाव ऐसा ही है। एक बार बोलना शुरू करेगा तो देर तक बोलता ही जाएगा। देवीराम की पत्नी के साथ झगड़े के बारे में कतीया के साथ बात करना शिवनाथ को अच्छा नहीं लगा। इसीलिए उसने तेजी से सवाल किया, "देवीराम के साथ तेरी क्या बातचीत हुई है ?"

"बातचीत क्या होगी बाबूजी, मुंह से बोला है कि बीघा पके धान की फसल देगा। अब सचमुच देगा या नहीं, नहीं जानता। उसके पास अपनी जमीन ही कितनी है ? खेती करना चाहे तो दो बैलों से काम निकल सकता है। उसके पास तो चार बैल हैं, आदमी ठहरा अकेला। इसीलिए मजबूर होकर उसे दूसरे आदमी को रखना पड़ता है। देवीराम के साथ खेती करना कठिन काम है, बाबूजी ! खेती के समय अधमरा करके भी अपना काम निकाल लेगा, मगर धान देते वक्त खराब धान ही चुन-चुनकर दे देगा।...बाबूजी, गोसाईं की सौगंध खाकर कहता हूं कि आपके खेतों में जो तीन सालों तक हल जोतता रहा था, तभी सुखपूर्वक गुजारा कर पाया था। जब से आपने मुझे भगा दिया, तब से बहुत तकलीफ में हूं, बाबूजी ! अगले साल बुवाई के समय मुझे एक हल जोतने के लिए देना ही पड़ेगा, बाबूजी !" शिवनाथ की छोटी बेटी तांबूल लेकर कतीया के पास खड़ी हो गई। कतीया ने गमछे को फैला

दिया। लड़की ने दरवाजे से ही तांबूल फेंक दिया और दौड़कर भीतर चली गई।

अब तक शिवनाथ के चेहरे पर हंसी का हल्का, सा भाव भले ही था पर कतीया की आखिरी बात सुनने के बाद गंभीर होकर उसने कहा, "मैं किसी अफीमची को अपना हलवाहा नही बना सकता। हलवाहा बनाना तो दूर की बात है—तेरा तो चेहरा भी नहीं देखना चाहिए। इस जवानी में ही अफीम का आदी बन गया है, घर में बीवी-बच्चे ठीक से भरपेट खाना नहीं खा सकते, और तू मछली बेचकर दो पैसा हाथ में आते ही सीधे अफीम व्यापारी के पास दौडता है। तेरे जैसे आदमी की मदद करने से क्या फायदा ?...ठीक है कतीया, एक बात पूछूं, सच-सच बता हमारे इस इलाके में कौन-कौन अफीम बेचता है ?"

शिवनाथ का सवाल सुनकर कतीया के चेहरे पर आतंक का भाव नजर आया। इस सवाल का सही जवाब देकर अफीम के व्यापारियों को फंसाएगा तो वह भी फंसेगा। दूसरी तरफ, शिवनाथ के सामने बैठकर उसके सवाल का जवाब दिए बगैर खामोश रहे, ऐसी हिम्मत उसकी हो नहीं सकती। कुछ देर सिर झुकाए बैठे कतीया ने असहाय भाव से करुण स्वर में कहा, बाबूजी..."

कतीया के दिल का भाव समझते हुए शिवनाथ ने कहा, "मैं तुझसे अफीम व्यापारी के नाम पूछकर पुलिस या आबकारी विभाग के पास नहीं जाऊंगा। जाने की जरूरत भी नहीं है। क्योंकि पुलिस या आबकारी वाले अफीम बेचनेवालों से अनजान नहीं हैं। सिर्फ मैं जानना चाहता हूं कि तेरे जैसे फटेहाल आदमी का खून चूसनेवाले लोग कौन हैं। बता, तुझे डरने की कोई जरूरत नहीं है।" मोहधूलि इलाके के बीस-पच्चीस गांवों के लोग जानते हैं कि शिवनाथ की जुबान पत्थर की लकीर है। पूरब का सूरज पश्चिम से निकल सकता है, पर शिवनाथ अपनी जुबान से फिर नहीं सकता। कतीया के चेहरे से आतंक के बादल छंट गए और हंसी की धूप फैल गई। अब तक मुंह में दबाए हुए तांबूल को चबाते हुए उसने कहा, "बाबूजी, आपके सामने झूठ बोलने की हिम्मत किसकी हो सकती है ? हमारे इलाके मे अफीम बेचनेवाला सिर्फ रेब महाजन ही है। मैं उन्हीं से दवा खरीद लाता हूं। पर हमारे मौजे में बेचनेवाले कई हैं। मिरी गांव की तरफ दीघलरा मिरी बेचता है। चेतीया गांव की तरफ खगेश्वर लाहन बेचता है, अपके गांव का देवानंद भी बेचता है, ऐसा भी कुछ लोग कहते हैं।"

इतना कहकर जैसे कुछ याद आ गया हो, कतीया के चेहरे पर मुस्कान फैल गई, जोश के साथ वह कहने लगा, "बाबूजी, मैं झूठ-मूठ ही आपको नाम बताने से डर रहा था। कल रेब महाजन की दुकान में ही कुछ अफीमचियों की बातें मैंने सुनीं—कह रहे थे, हमारे देश को सुराज मिल गया है। यह भी कहा कि देश को कांग्रेस के हवाले करके साहब लोग आज या कल के भीतर ही अपने देश लौट जाएंगे। सुना है, हमारे रेब महाजन भी हाल ही में कांग्रेस में शामिल हो गए हैं, यानी देश

के मालिकों के साथ वह भी उस पार्टी के बन गए हैं। अब तो पुलिस भी उनका कुछ बिगाड़ नहीं पाएगी। यह सब बातें सच हैं, बाबूजी ?''

शिवनाथ कुछ कहे इससे पहले ही बाहर से किसी ने पुकारा तो उसने मुड़कर देखा, मोहन गांवबूढ़ा हाथ की लाठी पीछे कमर से टिकाकर खड़ा था और चिल्लाकर कुछ कह रहा था। मोहन गांवबूढ़ा की एक खासियत यह है कि वह सारी बातें पद्य बनाकर ही करता है, गद्य में वह अपनी घरवाली से भात तक मांगकर नहीं खाता। इसीलिए मोहन गांवबूढ़ा को देखते ही लोग सारी बाते, कामकाज भूलकर उसके मुंह से धाराप्रवाह पद्य सुनने की प्रतीक्षा करने लगते हैं।

शिवनाथ ने मोहन गांवबूढ़ा को देखकर जोर से कहा, ''रास्ते पर ही खडे हो गए। घर में आइए, एक तांबूल खाकर जाइए।''

मोहन गांवबूढ़ा ने वहीं से जवाब दिया :

सुना है या नहीं—
काल का भी काल विपरीत काल
दारोगा चूमे केशव का गाल।
स्कूल फील्ड में जमी है बैठक
कांग्रेस-पुलिस में हुआ है मेल।
सुना है कल स्वराज मिलेगा,
देश में घी-मधु-दूध का दरिया बहेगा।
किसके हिस्से में क्या मिलता है,
सोचा और सुनने को क्या मिलता है—

शिवनाथ फिर चिल्लाया, ''खबर मिली या नहीं ?''

मोहन गांवबूढ़ा ने जवाब दिया :

केशव मंडल का है यह दावा,
कि स्वराज वही लेकर आया।
हम भी सोचें, बात सही है,
जेल जानेवाला इक शख्स वही है।
उसे मिलेगा कोई पद बड़ा,
इस बात में कोई शक नहीं रहा।

शिवनाथ क्या कहेगा, इसकी परवाह किए बगैर मोहन गांवबूढ़ा रास्ते पर आगे बढ़ गया। शिवनाथ को हैरानी नहीं हुई। मोहन गांवबूढ़ा का स्वभाव कैसा है—यह बात दस-बारह गांव के सारे लोग जानते हैं। लगभग साठ साल का वह बूढ़ा बाएं कंधे पर एक थैला लटकाए, बगल में एक फटा हुआ छाता दबाए और दाएं हाथ में लाठी लिए हुए दस-बारह गांवों में घूमता-फिरता है, पर वह किसी के घर के भीतर नहीं जाता। वह तभी किसी के घर के भीतर जाता है जब वह जानता है कि कोई

मुसीबत आई है, नहीं तो रास्ते पर घूमते हुए बाहर से ही चिल्ला-चिल्ला कर सभी लोगों के सुख-दुख की खोज-खबर लेता रहता है, रास्ते में बहू-बेटी या बच्चे नजर आए तो उन्हें रोककर पद्य तैयार कर नीति-उपदेश सुनाता है, चलते-चलते थक जाने पर रास्ते के किनारे किसी पेड़ के नीचे बैठकर तांबूल चबाते हुए सुस्ताता है, और सूरज ढलने के साथ-साथ अपने घर की तरफ रवाना हो जाता है। वह हमेशा वैसा नहीं था। पर दस साल पहले जब उसका जवान लड़का तांबूल के पेड़ से गिरकर मर गया, तब से उसने एक पल भी घर के भीतर रहना छोड़ दिया और दिन भर इसी तरह घूमना शुरू कर दिया। अब तक पुत्र का शोक काफी कम हो चुका है, पर घूमते रहने की आदत वह छोड़ नहीं सकता।

मोहन गांवबूढा खहूवा के घर के सामने बांसों के झुरमुट के पीछे ओझल हो गया, फिर भी काफी देर तक तन्मय होकर शिवनाथ उधर ही देखता रहा।

कुछ पल शिवनाथ के चेहरे की तरफ देखने के बाद आखिरकार कतीया ने कहा, ''बाबूजी, मैं अब चलता हूं। दुकान से एक सेर चावल लाया हूं, मेरे घर पहुंचने पर ही चूल्हा जलेगा। आपसे भला क्या छिपाऊंगा बाबूजी, कल रात हमारे घर में सभी भूखे ही सो गए। कल किसी ने मेरी टोकरी से मछलियां चुरा लीं। गुस्से से भरकर घर लौटा तो दुकान जाकर कर्ज मांगने का मन नहीं हुआ। बाड़ी में एक कटहल को आधा पका देखा था, उसी को खाकर हम सब सो गए। अब भूख से पेट की अंतड़िया ऐंठ रही हैं, बाबूजी ! जब मेरी यह हालत है तो उन बच्चों ने जरूर रोना-धोना शुरू कर दिया होगा। चलूं, बाबूजी !''

शिवनाथ ने कुछ कहे बगैर स्नेह भरी दृष्टि से कतीया की तरफ देखा। कतीया खड़ा हो गया। चावल की गठरी और सरसों के तेल की शीशी लेकर लड़खड़ाते हुए बाहर की तरफ बढ़ा। कुछ दूर जाकर वह अचानक ठिठक गया और शिवनाथ की तरफ मुड़कर बोला, ''बाबूजी, मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करता हूं, अगले साल मुझे एक हल जोतने दें। आपकी शरण में आए बगैर बीवी-बच्चों के साथ भूखों मर जाऊंगा, बाबूजी !''

6

शिवनाथ के पास जितनी जमीन है उसमें तीन भागों में दो भाग वह बंटाई पर देता है, बाकी एक भाग में हलवाहे की मदद से खुद ही खेती करता है। पास के कैवर्त गांव से हलवाहे का इंतजाम करता है। उस गांव में कुल चालीस घर हैं। लोगों के पास घर की जमीन को छोड़कर अतिरिक्त जमीन नहीं है। मछली बेचकर वे अपनी जीविका चलाते हैं, पर उससे साल भर में तीन महीने भी ठीक से गुजारा कर पाना

कठिन हो जाता है। पहली बात है कि मछली पकड़ पाना किस्मत और मौसम पर निर्भर करता है। इसके अलावा देहात में अधिकतर लोग खुद ही मछली पकड़ते हैं, इसीलिए खरीदकर मछली खानेवालों में शिवनाथ की तरह कुछ संभ्रात लोग, दारोगा, डाक्टर-पोस्टमास्टर-दुकानदार तक ही सीमित हैं। गांव के अधिकतर लोग पैसे देकर मछली नहीं खरीदते, धान देकर मछली ले लेते हैं। सिर्फ दुकानदार और नौकरीपेशा लोग ही नगद भुगतान करके मछली खरीदते हैं। इस तरह कैवर्त गांव के लोग मछली बेचकर जो कमाई करते हैं, उससे साल भर की रोजी-रोटी का जुगाड़ नहीं हो पाता। इसीलिए अतिरिक्त उपार्जन करने के लिए वे आसपास के गांवों के धनी किसानो के खेतों में काम करते हैं। पर इस तरह हलवाहा रखनेवाले लोगों की संख्या भी बहुत कम है। जो रखते भी है वे एक खेती के बदले में हलवाहे को सिर्फ दो बीघा पके धान की फसल देते हैं। रोजगार देने वालों की तुलना में रोजगार मांगनेवालों की संख्या इतनी अधिक होती है कि उनके पास अधिक मजूरी के लिए कहने का कोई मौका नहीं होता। मालिक को सारी शर्ते चुपचाप मान लेने के सिवा उनके पास कोई चारा नहीं होता। उनके घरो की औरतें भी धान की कटाई के समय शिवनाथ जैसे एक-दो धनी किसानो के खलिहान में मजूरी करके या दूसरे दिनों में टोकरियों में छोटी मछलियां पकड़कर लोगो के घरों में बेचकर कुछ कमाई कर लेती हैं। मर्द-औरत मिलकर कठिन मेहनत करते हैं, फिर भी उन्हें हमेशा दो वक्त का खाना नसीब नहीं हो पाता, सप्ताह में कम से कम तीन-चार वक्त वे निराहार ही रहते हैं या फिर भरपेट खाना खा नहीं पाते।

'आपका आश्रय न मिला तो बच्चों के साथ भूखों मर जाऊंगा बाबूजी'—कतीया की करुण पुकार बार-बार शिवनाथ के कानों में गूंज रही थी। उसकी गृहस्थी की तस्वीर उसके सामने उभर आई। कुछ साल पहले कतीया ने उसके हलवाहे के रूप में काम शुरू किया था और तीन सालों तक खेती करता रहा था। पर उसके साथ करार हो जाने के बाद ही शिवनाथ को पता चला कि वह अफीम खाता था। अफीम के नशे में धुत होने के कारण सुबह वह बिस्तर से उठ नहीं पाता था, खुद शिवनाथ जाकर उसे जगाकर हल जोतने के लिए लाता था। समझा-बुझाकर, डांट-डपटकर शिवनाथ ने उसकी यह लत छुड़ाने की कोशिश की, पर जब उसने अफीम खाना नहीं छोड़ा तो शिवनाथ ने उसे काम से हटा दिया। जो भी हो, जब वह उसके पास मजूरी करता था, तब उसकी गृहस्थी का हाल उसने अच्छी तरह देखा था। सुबह सूरज उगने के काफी देर बाद भी जब कतीया हल जोतने के लिए बैल लेने नहीं आता, तब उसे बुलाने शिवनाथ को जाना पड़ता था। उसके घर का पिछला हिस्सा सड़क की तरफ था, यानी सामने का हिस्सा विपरीत दिशा में था।

घर के सामने बगीचे में एक विशाल कटहल का पेड़ था और नीचे कच्चू ढेकीया की झाड़ियां नजर आती थीं। झाडियों को साफकर वहां बैंगन, मिर्च आदि सब्जियां

उगाने के बारे में कतीया ने कभी सोचा ही नही था। बल्कि झाड़ियां होने से उसे सहूलियत ही होती है, ऐसा वह सोचता था, चूंकि झाड़ियो के कारण सड़क से घर का पिछला हिस्सा नजर नहीं आता था और बीवी-बच्चों को शौच करने की सुविधा भी हो गई थी। कतीया के घर जाने की बात सोचते ही शिवनाथ का मन विरक्त हो उठता था, चूंकि साल के किसी भी मौसम में किसी भी समय उसके घर जाने पर वहां फैली गंदगी की बदबू नाक में समा जाती थी। इसके बावजूद उसे जाना पड़ता, क्योंकि कतीया के विवेक पर वह निर्भर करता तो साल भर के लिए खेत बिन जोते ही पड़े रह जाते। नाक बद कर वह कतीया के आगन में पहुंच जाता था। तब तक सूरज काफी ऊपर चढ़ चुका होता, कतीया के घर के पुराने बाड के सूराखों से सूरज की किरणें भीतर झांक रही होतीं। आंगन में खड़े होने पर घर के भीतर ही नहीं—पीछे का हिस्सा भी दिखाई देता था। आंगन में खड़ा शिवनाथ देखता—दो वर्ष के बच्चे को बरामदे में बैठाकर उसकी मां गांव के किसी घर में सवेरे-सवेरे जा चुकी है (शायद तांबूल मांगने के लिए) और बच्चा एक मृत केंचुए को हाथ में लेकर खेल रहा है। पूरा घर एक कमरे की झोंपड़ी है, पश्चिम की तरफ एक चौके के ऊपर एल्युमिनियम की पिचकी हाडी और लोटे की एक छोटी कड़ाही पड़ी हुई है, पूरब की तरफ जमीन पर सूखी घास के ऊपर बिछाई पाटी पर कतीया गहरी नींद में सो रहा है। सीने पर एक वर्ष का बच्चा चिपका हुआ है। उसके दो बड़े बच्चे भी हैं, उनकी उम्र बारह और आठ साल होगी। बीच में कई बच्चे मर चुके हैं। चिड़ियों के लिए घोंसला जिस तरह रात गुजारने का आश्रय-स्थल होता है, कैवर्त गांव के गरीब बच्चों के लिए उनका घर भी वैसा ही आश्रय-स्थल था। सुबह जागते ही वे बाहर निकल जाते थे, चूंकि घर में सुबह खाने के लिए कुछ नहीं होता था, पढ़ाई-लिखाई करने का सवाल ही पैदा नही होता था या खेल-कूदकर समय गुजारने की कोई सुविधा भी नहीं होती थी। वे बाहर निकलकर आसपास के बच्चो के साथ जंगली फल-मूल की तलाश में भटकते फिरते थे या नदी किनारे जाकर नाव खेते थे या तैरते हुए समय गुजारते थे। कतीया के बच्चे भी जरूर निकल चुके होंगे। शिवनाथ कल्पना करने की कोशिश करता : वे अब तक किसी के बगीचे में गिरे हुए सड़े आमों को कीड़े समेत मुंह में डाल चुके होंगे या सुबह-सुबह खाली पेट ही खट्टी बेर चबा रहे होंगे।

पर उनकी भोजन की खोज इस तरह खत्म नही होती। शिवनाथ ने कई बार गौर किया है—ये बच्चे खासकर सुबह और शाम के वक्त जंगल में जाकर जगली कच्चू के फूल, पके वन करेला, गोरू खीच और वन जरा के बीज तलाशते फिरते थे, ये सब उनके प्रिय खाद्य पदार्थ थे। इन सबसे अधिक दुर्लभ पदार्थ उनके लिए कोंटकोरा और करबी फूल के बीज होते थे। नदी के उस पार घने जंगल में कोंटकोरा के पेड़ हैं। उन पेड़ों से बीज तोड़कर लाकर वे नदी के रेत में उन्हें पकने के लिए

गाड़ देते थे। तीन-चार दिनों में जब बीज अच्छी तरह पक जाते तब एक रस्सी में उन्हें माला की तरह गूंथकर बच्चे घर के छप्पर पर सूखने के लिए उन्हें लटका देते थे। जब तक तेज धूप में बीज सूखकर सख्त नहीं हो जाते, तब तक खाने के लायक नहीं हो पाते थे। पर कभी-कभी अपने आप को रोक पाने में असमर्थ बच्चे कोंटकोरा के आधे सूखे बीज खा लेते थे और उल्टियां करते हुए अधमरे हो जाते थे। करबी के बीज को खाने का भी यही तरीका होता था। अधपके करबी के बीज खाने पर पेट में जरूर फैल जाता था और उल्टिया होने लगती थीं, पर उन जहरीले पदार्थ को खाने के लिए बच्चों में कैसा जबर्दस्त उत्साह होता था। उस इलाके में करबी के पेड़ ज्यादा नहीं थे। जो दो-चार पेड़ थे वे स्कूल परिसर में ही थे। लड़के छिपते-छिपाते बाड़ लाघकर करबी के पेड़ पर चढ़ते तो चौकीदार उन्हें खदेड़ता। डर के मारे लडके पके कटहल की तरह पेड़ से जमीन पर 'धम्म' से गिर पड़ते, बहुतो को चोट लगती। फिर भी वे अपनी कोशिश नही छोड़ते थे। मां-बाप उनके लिए खाद्य पदार्थ मुहैया नही कर पाते थे, इसीलिए वे प्रकृति से इसी तरह खाद्य पदार्थ छीन लेना चाहते थे। कतीया के घर के बरामदे में बैठकर मरे हुए कंचुए के साथ खेल रहे बच्चे और पिता के पास सोए बच्चे की तरफ देखते हुए शिवनाथ सोचता—बड़े बच्चे भले ही जंगली फल वगैरह खाकर पेट भर लेंगे, पर दो मासूम बच्चे अभी क्या खाएंगे ? बरामदे में बैठा बच्चा भूख से व्याकुल होकर मरा हुआ केंचुआ ही मुंह में तो नहीं डाल लेगा ? चौके के ऊपर औंधी पड़ी हांड़ी में शायद भात का एक दाना भी नहीं बचा हुआ है।

कुछ पल तक यह सब सोचते हुए इन बातों को वेकार और निरर्थक समझकर शिवनाथ उनको मन से निकाल फेंकता और कतीया को जगाने के लिए चीखकर आवाज लगाता। पहले कतीया के चेहरे पर नजर डालते ही शिवनाथ के दिल मे करुणा का भाव पैदा हो जाता।

बीस सालों की गंदगी जमा होने के कारण अलकतरे से भी अधिक कालिमा में लिपटा कतीया का चेहरा तकिए से फिसलकर पाटी पर पड़ा हुआ है, मुंह से लार की धारा निकलकर पाटी पर फैली हुई है, लार के आकर्षण मे ढेर सारी मक्खियां उसके चेहरे के सामने भिनभिना रही हैं। शायद उसके खुले मुंह से निकल रही सांस और तेज हवा के कारण मक्खियां लार पर बैठ नहीं पा रही हैं। फटा-पुराना गंदा गमछा जो उसने पहन रखा है, वह कमर से खिसकर चुका है, जिसके कारण वह अर्धनग्न हो चुका है। गर्मी के मौसम के चढ़ते सूरज की किरणें टूटे बाड़ के सुराखो से घर के भीतर घुसकर कतीया की रिक्तता और नग्नता को इस तरह प्रगट कर रही हैं कि देखकर ऐसा लगता है मानो युद्ध में बुरी तरह जख्मी हो चुका एक पशु अब सिर्फ मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा हो। पर अगले ही पल शिवनाथ को ख्याल आया कि कतीया अफीम के नशे में इतनी देर तक बिस्तर पर बेसुध सोया हुआ है, बच्चों

के मुंह का कौर छीनकर भी वह अफीम जरूर खाता है।

उसके भीतर गुस्सा भर आया। वह चीख पड़ा, "कतीया, अफीमची कुत्ते, नवाबों की तरह अगर दोपहर तक सोना ही चाहता है तो खेती करने का करार क्यों किया था ? आज के बाद अगर मुझे तुम्हें जगाने के लिए आना पड़ा तो तुम्हें काम से निकाल बाहर करूंगा।"

आखिरकार शिवनाथ उसे छोड़ देने के लिए विवश हो गया था, वैसे खेती करने के दौरान नहीं, बल्कि उसके अगले साल। आज तीन साल बाद कमजोर घड़ियों का फायदा उठाते हुए उसने शिवनाथ से फिर विनती की है—'अगले साल मुझे एक हल जोतने के लिए देना पड़ेगा, नहीं तो बच्चों के साथ भूखा ही मर जाऊंगा।'

शिवनाथ ने मन ही मन कुछ हिसाब किया। नहीं, जब तक कतीया अफीम छोड़ नहीं देता तब तक उसे हल जोतने का काम नहीं दिया जा सकता।

पर क्या इस जन्म में वह अफीम की लत छोड़ पाएगा ? फिर उसने भूखों मरने की जो बात कही है, क्या अभी वह जिंदा है ? सिर्फ उसी की नही, कैवर्त गांव के सारे लोगों की यही दशा है। बगैर खाए उनमें से कोई मरा नहीं, यह सच है, पर मनुष्य की तरह उनमें से कोई जी नहीं रहा है। एक वक्त खाकर, एक वक्त भूखा रहकर वे लोग पूरी जिंदगी गुजार देते हैं। दोपहर किसी तरह पेट में अन्न के कुछ दाने डालने के बाद रात में चूल्हा सुलगेगा या नहीं, इस बारे में वे कभी निश्चित नहीं हो पाते। सिर्फ भोजन ही उनकी एकमात्र समस्या नहीं है। वे छोटी जाति के अछूत हैं—इसीलिए कदम-कदम पर अपमान और तिरस्कार के चलते उनका जीवन दूभर हो जाता है। चारों तरफ आहोम, सुतीया, कलिता और ब्राह्मण बहुल गांवों के बीच भी जातिगत भेदभाव और विषमता है, पर एक बात के संबंध में सभी एकमत हैं कि कैवर्त गांव के लोग समाज के सबसे निचले लोग हैं, वे अछूत हैं। लोगों के घर में आने पर—और तो और, शिवनाथ के घर आने पर भी—उन्हें घुसने का अधिकार नहीं है। उनकी जगह आंगन ही है। किसी के आंगन में धान उबालकर सूखने के लिए फैलाया गया हो, तब वे आंगन में भी नहीं जा सकते।

शिवनाथ को याद है—जब वह छोटा था तब एक दिन कैवर्त गांव का एक छोटा लड़का सूख रहे धान के पास खड़ा हो गया था, जिसकी वजह से शिवनाथ की मां ने सारा धान उठाकर फेंक दिया था और लड़के पर गालियों की बौछार कर डाली थी। अब भी कई घरों में कैवर्त गांव के लोग आकर जिस जगह बैठते हैं, उनके जाने के बाद पानी छिड़ककर उस जगह को शुद्ध करने का नियम प्रचलित है। शिवनाथ जब स्कूल में पढ़ रहा था तब एक कैवर्त जाति का शिक्षक आया था। वह शिवसागर की तरफ से आया था। एक वार शिवनाथ कक्षा में प्रथम आया तो उसके पिता ने स्कूल के सारे शिक्षकों को जलपान करने के लिए आमंत्रित किया। भीतर जलपान की तैयारी चल रही थी और शिवनाथ के शिक्षकगण दालान में बैठकर

बातें कर रहे थे। तभी भीतर से बुलावा आया। शिक्षकगण भीतर की तरफ रवाना हुए, उनमें कैवर्त शिक्षक भी था। अचानक शिवनाथ के पिता ने कैवर्त शिक्षक को रोक लिया, "तुम यहीं बैठो।" इस तरह रोके जाने पर कैवर्त शिक्षक कुछ पल तक स्वर्ग से निकाले गए मनुष्य की तरह ठिठका रहा। फिर बगल में जो कुर्सी दिखाई पड़ी उसी पर असहाय भाव के साथ बैठ गया। उसे वहां अकेले छोड़कर बाकी सभी शिक्षक भीतर चले गए। कैवर्त शिक्षक को जलपान देने की जिम्मेवारी शिवनाथ को सौंपी गई। कुछ देर बाद शिक्षक के लिए शिवनाथ जलपान लेकर आया तो उसने देखा—तेजी से जेब से रुमाल निकालकर शिक्षक आंसू पोछ रहा था।

अब भी कभी किसी कारणवश शिक्षक का चेहरा आंखों के सामने कौंध जाता है तब शिवनाथ के दिल में हूक-सी उठती है।

कैवर्तो के प्रति पड़ोस के दूसरे संप्रदायों के लोगों की मानसिकता एक बार इससे भी अधिक भयंकर रूप से एक घटना के जरिए प्रकट हुई थी। पड़ोस के एक गांव के ब्राह्मण के सोलह-सत्रह वर्षीय लड़के के साथ एक कैवर्त लड़के का किसी बात पर झगड़ा हो गया। ब्राह्मण के लड़के ने कैवर्त लड़के को जाति के नाम पर गाली दी, जिसे बर्दाश्त न कर कैवर्त लड़के ने ब्राह्मण के लड़के को थप्पड़ मार दिया। रात में ब्राह्मण के लड़के ने गले में फंदा डालकर आत्महत्या कर ली। मरने से पहले वह एक पत्र लिख गया था, "डोम का थप्पड़ खाने के बाद जीवित रहा नहीं जा सकता।"

चारों तरफ से घृणा, तिरस्कार और अपमान के अभिशप्त दायरे में घिरे टापू की तरह इस कैवर्त गांव के लोगों के दुख-दर्द को शिवनाथ बचपन से ही देखता रहा है। चूंकि वह स्वयं कुछ सोचता है और बाहरी दुनिया की खबर रखता है, इसीलिए बीच-बीच में उसके मन में सवाल पैदा होता—क्या इतने दुख और अपमान के ये लोग हकदार हैं ? पर सच कहा जाए तो इस क्षणिक चिंतन को छोडकर उसने भी कभी इस व्यवस्था का विरोध नहीं किया है, विरोध तो दूर की बात है, मन ही मन इसी व्यवस्था को मानता रहा है। उसके घर में भी कोई कैवर्त आदमी भीतर प्रवेश नहीं कर सकता, कैवर्त हलवाहे दोपहर खेत से लौटकर जब पानी मांगते हैं तो उन्हें कच्चू पत्ते पर ही पानी पीने के लिए दिया जाता है। आज ही तो उसकी बेटी ने छू जाने के डर से जब दूर से ही कतीया की तरफ तांबूल फेंक दिया तो उसने कोई एतराज नहीं किया। वैसे ऐसा उसने यह सब कभी सोचकर नहीं किया कि उचित है या तर्कसंगत है, मानसिक अभ्यास के कारण ही ऐसा करता रहा है। सदियों पुरानी मानसिकता को उखाड़ फेंकने के लिए उसने कोई कोशिश नहीं की, ऐसा उसने कभी सोचा भी नहीं।

पर आज वह एक ऐतिहासिक घड़ी की नई रोशनी में हर बात पर नए सिरे से सोच रहा है और एक नए मोड़ पर खड़ा होकर भविष्य के क्षितिज की तरफ

देख रहा है, इसीलिए नए सिरे से उसके भीतर सवाल उठ रहा है : क्या स्वाधीनता इन अभिशप्त लोगों के जीवन में कोई नया परिवर्तन ला सकेगी, या हजारों सालों से उन्हें समाज के जिस बदबूदार पाताल में निर्वासित कर रखा गया है, उसी पाताल में वे हजारों सालों तक इसी तरह सड़ते-गलते रह जाएगे ?

7

बादलों को चीरकर अचानक तेज धूप निकल आई। आंखें चुंधियाने पर शिवनाथ ने आंखे मूंद लीं और कुछ पल कुछ न सोचने की कोशिश की। इसी तरह कुछ देर रहने पर उसे नींद आने लगी। हल्की नींद की स्थिति में उसने एक सपना देखा—स्वाधीनता के बीस साल गुजर जाने पर कैवर्त गांव के सारे लोग धनी हो चुके हैं, उस गांव का कोई आदमी शिवनाथ के पास हलवाहा बनने या खेती के लिए जमीन मांगने नहीं आता। खुद शिवनाथ और उसके लड़के आदत न होने की वजह से खेती नहीं कर पाते। दूसरी तरफ, मजूरी करनेवालों की कमी है। इस तरह शिवनाथ के खेत साल-दर-साल बिना जोते बंजर होते जा रहे हैं। चार कक्ष वाला उसका धान का भंडार, जो हमेशा भरा रहता था, अब खाली हो गया है। एक दिन उदास होकर उसकी पत्नी उसके पास आकर बोलती है—आज रात खाना बनाने के लिए एक मुट्ठी चावल भी नहीं है। शिवनाथ के कलेजे से एक आह निकल पड़ती है—हे भगवान। मेरी किस्मत इस तरह बदल जाएगी, कौन जानता था ? अचानक किसी की आवाज सुनकर शिवनाथ हड़बड़ाकर उठ गया। आंखें खोलकर उसने देखा, पत्नी करीब खड़ी है।

"इतनी देर से एक ही जगह बैठे-बैठे क्या सोच रहे हैं ? खाना तैयार है, नहाएंगे नहीं ?"

विवश लड़के की तरह शिवनाथ खड़ा हो गया और बनियान उतारते हुए पत्नी से बोला, "पानी देने के लिए कहो, नहा लेता हूं।"

पत्नी के भीतर चले जाने के बाद पलभर शिवनाथ बरामदे पर सोच में डूबा खड़ा ही रहा। कुछ देर पहले जो सपना उसने देखा था, वह याद आया। भले ही सपना था, उसने साफ-साफ महसूस किया कि यह भविष्य का संकेत था। कैवर्त गांव के लोगों का जीवन अगर नहीं बदलेगा तो स्वाधीनता का कोई अर्थ भी नहीं होगा। दूसरी तरफ, उसका जीवन जब तक नहीं बदलता तब तक कैवर्त गांव के लोगों की स्थिति भी नहीं बदल सकती। वे भूमिहीन गरीब हैं, इसीलिए उनके अति सुलभ श्रम के जरिए वह राजा की तरह बैठे-बैठे ऐश करता रहा है। पर किसी तरह उन्हें भी जमीन मिल जाएगी।

ज्यादा सोचने की हिम्मत शिवनाथ को नहीं हुई। नींद में चल रहे आदमी की तरह घर के भीतर धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए उसने खुद से ही सवाल पूछा, 'मैं देश की स्वाधीनता चाहता हूं, पर कैवर्त गांव के लोगों को मुझसे स्वाधीनता मिले, क्या ऐसा चाहता हूं ?'

हृदय से जो जवाब निकला, उसे सुनने का धैर्य और साहस शिवनाथ के पास नहीं था। झूठ-मूठ ही व्यस्तता दर्शाते हुए वह चिल्ला पड़ा, "अरे लड़को, अरी तुम कहां गईं, मेरे नहाने का पानी कहां है ? सूरज चढ़ चुका है, अब तक किसी को नहाने का पानी देने की याद नहीं आई।"

द्वितीय पर्व

1

तीन दिन बाद वैशाखी बिहू है। रात में खाना खाने के बाद शिवनाथ नई फूस सामने रखकर रस्सी बनाने लगा। गाय, बैल और बछड़ों को मिलाकर उसके मवेशियों की संख्या पैंतीस होगी। सबके लिए नई रस्सी तैयार करनी पड़ेगी। पर अकेले इतनी सारी रस्सियां तैयार करना उसके लिए मुमकिन नहीं होगा। वैसे इस बीच इस समस्या का समाधान होता रहा है। उसका हलवाहा, चरवाहा और बंटाई पर खेती करने वाले गोरू बिहू के दिन शाम को उसका हालचाल पूछने आते हैं और रिश्वत के तौर पर चार-पांच रस्सियां अपने साथ लाते हैं। बदले में सभी को भरपेट नाश्ता और 'बिहूबान' के रूप में गमछा मिलता है। कभी-कभी तो मवेशियों से ज्यादा रस्सियां इकट्ठी हो जाती हैं। फिर भी गृहस्थ होने के नाते शिवनाथ प्रमुख मवेशियों के लिए अपने हाथ से ही रस्सी तैयार करता है।

शिवनाथ कीर्तनघोषा का एक पद गुनगुनाते हुए रस्सी तैयार कर रहा था, तभी उसकी पत्नी चरखा लेकर पास आकर बैठ गई। पति आधीरात तक जागकर रस्सी बटेगा और वह बिस्तर पर गहरी नींद में सोएगी—ऐसा हरगिज नहीं हो सकता। इसके अलावा बिहू से पहले हथकरघे से गमछा भी काटकर तैयार करना पड़ेगा, इसके लिए भी रात भर में कुछ सूत कात लेने से कल सुबह तक एक गमछा तैयार किया जा सकेगा। पत्नी ने सूत कातना शुरू किया तो शिवनाथ ने कीर्तन गुनगुनाना बंद कर दिया। कुछ देर तक दोनों चुपचाप अपना काम करते रहे। तेईस सालों से एक-दूसरे की काया की छाया और ध्वनि की प्रतिध्वनि के रूप में विवाहित जीवन गुजारने के बाद उन्हें अधिकतर समय में बात करने की जरूरत महसूस नहीं होती। वे जानते हैं कि मुंह से बगैर कुछ बोले भी किसी भी तरह उनके मन का संपर्क जारी रहता है, कभी टूटता नहीं। सूत का एक गोला तैयार करने के बाद पत्नी ने तांबूल खाने के लिए पात्र अपने करीब खींच लिया। उसी समय बगल के कमरे में सो रहे दोनों लड़कों में से किसी एक लड़के के खर्राटे की आवाज सुनाई पड़ने लगी।

पत्नी ने कहा, "कौन है यह—पूरे गांव की नींद तोड़ देगा, जिस तरह खर्राटे भर रहा है।"

"मंझला है शायद"—शिवनाथ बोला, "पर वह तो कभी खर्राटा नहीं भरता।

लगता है, सोते हुए गरदन टेढ़ी हो गई है, एक बार देख आओगी ?''

''रहे वैसे ही। मेरा अभी उठने का जी नहीं करता'' यह कहकर मुंह में तांबूल डालकर जैसे अचानक कुछ याद आ गया हो, वह बोली, ''कितने आश्चर्य की बात है, तीन दिन बाद ही बिहू है, पर कहीं से ढोल की आवाज सुनाई नहीं देती। पहले के जमाने में चैत बीतते-न बीतते रात-रात भर ढोल बजने की आवाज चारों तरफ सुनाई देने लगती थी। आजकल के लोगों को क्या हो गया है ? बिहू-त्योहार, आचार-व्यवहार, एक-एक कर सब छोड़ते ही जा रहे हैं।''

वह फिर चरखा चलाने लगी।

शिवनाथ ने फौरन कोई जवाब नहीं दिया। अब तक वह अपने आप में ही पूरी तरह खोया हुआ था और गहराती हुई रात की खामोशी वह महसूस नहीं कर रहा था। पर पत्नी की बात सुनकर उसका ध्यान टूटा और गांव की निस्तब्ध रात की अनुभूति ने ज्वार की तरह प्रचंड गर्जन करते हुए उसकी चेतना पर वार किया। उस गर्जन को वह कान लगाकर सुन रहा है, कुछ इसी अंदाज में उसने काम बंद कर दिया और कुछ पल चुपचाप बैठा रहा। फिर रस्सी बटते हुए वह बोला, ''तुम ठीक ही कह रही हो। बिहू शुरू होने में तीन दिन ही बचे हैं, फिर भी गांव मरघट की तरह शांत बना हुआ है, देखते-देखते ही बिजली की तरह समय बदलता जा रहा है, सोचकर हैरानी होती है।''

समय किस तरह बदलता रहा है, इस बात को ठीक से महसूस करने के लिए शिवनाथ अतीत में खो गया। जब वह पंद्रह-सोलह साल का किशोर था, तभी की बात है। उसके घर में गोपाल नामक एक नौकर था। नाम का ही नौकर था, हकीकत में घर के लड़के में और उसमें कोई फर्क नहीं था। उस समय लोगों के संबंध भी बिल्कुल अलग ही होते थे। जिस उम्र में कपड़े पहनने का ढंग तक नहीं आता, उसी उम्र में लड़के शिवनाथ के घर में आते थे और कम से कम पांच-छह साल तक रहकर जवान होकर ही घर से जाते थे।

शिवनाथ के पिता को इस बात का मान था कि उनके घर से जो लड़का जाएगा वह किसी और के घर-नौकर बने या रोटी के लिए किसी के सामने हाथ फैलाए, यह बात वह बर्दाश्त नहीं करेंगे। इसीलिए घर से विदा होते समय शिवनाथ के पिता उन लड़कों को रुपए-पैसे, बर्तन, कपड़े-लत्ते के अलावा एक दुधारू गाय भी उपहार के रूप में देते थे। उसी गाय के बछड़ों से धीरे-धीरे उन लड़कों का मवेशीघर भर जाया करता था। इसके अलावा नौकरों के परिवारों से ऐसी आत्मीयता हो जाती थी कि जीवन भर उन परिवारों की अपने बच्चों की तरह खोज-खबर रखते थे और संकट में उनकी मदद करते थे। पांच-छह साल रहने के बाद जिस दिन नौकर जाने लगता था, उस दिन घर का महौल विवाह के बाद दुल्हन की विदाई जैसा बन जाता था। जाने वाला नौकर रो-रोकर कई दिनों से खाना छोड़ देता था, विदाई के दिन

गृहस्थ और नौकर की रुलाई सुनकर और विदाई के करुण दृश्य देखकर राहगीर भी ठिठकर जाया करते थे। शिवनाथ के घर में जितने भी नौकर आए थे, उनमें गोपाल की याद उसे सबसे अधिक आती है। चूंकि वह उसका हमउम्र था और किशोरावस्था में वही उसका एक मात्र साथी था। जीवन और प्रकृति के बहुत सारे रहस्यों के द्वार गोपाल ने ही उसकी आंखों के सामने एक-एक कर खोले थे और नए-नए रहस्य अभियानों पर उसे अपने साथ हाथ पकड़कर ले गया था। बांस वन के बीच पोखर के किनारे प्रेत के पैरों के निशान और चांदनी रात में मैदान के बीच पेड़ की टहनी पर बैठे बूढ़े का आविष्कार करने की डरावनी सिहरन, घने जंगल में ऊंचे ओरियम पेड़ पर चढ़कर तीतर और बटेर के बच्चों को चुराने की उत्तेजना, बोवाल पेड़ की डाल पर बैठकर बोवाल के बीज की मदद से रास्ते के किनारे खड्ड में जमा हुए पानी में बर्छी के जरिए एक-एक कर पाभी मछली पकड़ने की खुशी, नदी के किनारे झाड़ियों के पीछे छिपकर नदी के घाट पर उन्मुक्त होकर नहा रही गांव की औरतों को देखने का वर्जित आनद--इन सब अविस्मरणीय अनुभवों से गोपाल ने ही पहली बार शिवनाथ का परिचय करवाया था। आनंद, उत्तेजना और एक अतल रहस्य के उत्स के साथ गोपाल ने जिस चीज से उसका पहली बार परिचय करवाया था—वह है मनुष्य का शरीर। शिवनाथ का अपना शरीर। और औरत का शरीर। वैसे अपने शरीर की खोज या उससे आनंद प्राप्त करना जैसे शिवनाथ का वास्तविक अनुभव था। औरत के शरीर के मामले में वैसा अनुभव नहीं था। जिन काल्पनिक औरतों के शरीर को छूने या संभोग करने के आनंद में शिवनाथ एक दिन डूब गया था, वे सारी औरतें गोपाल की उर्वर कल्पना की पैदाइश थीं। वैसे तब शिवनाथ उन्हें कल्पना की पैदाइश नहीं समझता था। गोपाल के साथ लंबी बातचीत करने के लिए उसे दो ही मौके मिलते थे, शाम को मैदान में मवेशी की तलाश में जाते समय और रविवार या छुट्टी के दिन दोपहर में नदी में नहाने के लिए जाते समय। मवेशी की तलाश में वे समय से दो घंटा पहले ही मैदान की तरफ निकल पड़ते थे। माघ महीने की शाम की फीकी पीली धूप से खेत करुण नजर आते थे, घास और फूस के जंगल ओस के कारण भीगने लगते थे। मवेशियों के चरने के कारण 'चप-चप' की आवाज और उनके रंभाने की आवाज के सिवा कुछ भी सुनाई नहीं देता था--वैसे करुण और शांत वातावरण में गोपाल और शिवनाथ एड़ी की चादर ओढ़े बातों में खो जाते थे। बातों-बातों में कब सूरज डूब जाता था, आकाश में सितारे टिमटिमाने लगते थे, गांव के दूसरे लड़के मवेशियों को लेकर घर लौट जाते थे--उन्हें पता ही नहीं चलता था। मवेशी लेकर घर पहुंचने पर हमेशा उन्हें पिताजी की डांट सुननी पड़ती थी—पर बातों के नशे में वे डांट-फटकार का डर भी भूल जाते थे। नदी में नहाने जाते तो सूरज सिर पर चढ़ जाता, सारे लोग नहाकर घर लौट चुके होते और नदी का घाट सुनसान हो चुका होता, फिर भी गोपाल और शिवनाथ की बातें खत्म नहीं

होती थीं। नदी किनारे रेत के टीले पर बैठकर नगी देह सर्दी की धूप सेंकते हुए दुनिया-जहान को भूलकर वे अपनी बातों में मशगूल रहते थे। वैसे बातें करते थे, यह कहना भी पूरी तरह ठीक नहीं होगा, क्योंकि बातचीत के दौरान शिवनाथ अधिकतर श्रोता ही रहता था। गोपाल अनर्गल बातें कहता, विस्मय और उत्तेजना के साथ शिवनाथ सुनता रहता। बीच-बीच में वह एकाध सवाल पूछ लेता। दिन के बाद दिन, घंटे के बाद घंटा दोनों दोस्तों की जो बातें होतीं, उन बातों का विषय हमेशा एक ही होता—गोपाल की प्रणय लीला और औरतों के बारे में उसके विचित्र अनुभव। अक्सर गोपाल अपने किस्से इस तरह शुरू करता था—

"कातीराम के घर में उस रात नवान्न का भोज हुआ था। उस दिन क्या हुआ, जानते हो ? मै भी भोज खाने के लिए गया था। भीतर भगत नाम-कीर्तन गा रहे थे। बाहर वाली कोठरी में कातीराम की बड़ी बहन बोगीदै अलाव के पास सूत कात रही थी। मैं भी उसके पास जाकर बैठ गया। उससे इधर-उधर की बातें करने के बाद वहां किसी को मौजूद न पाकर मैंने उससे कहा, 'बोगीदै' मैंने तेरे लिए एक नया ब्लाउज खरीद कर रखा है, तुम्हें देने का मौका नही मिल रहा है। कब लाकर दूं, बता।' वह बोली, 'तेरा ब्लाउज मै क्यों लूंगी भला, मुझे ब्लाउज देने के लिए मेरे मां-बाप-भाई नहीं हैं क्या' ? मैंने कहा, 'जवान लड़की भैया से ब्लाउज नहीं लेती। जिससे लेना चाहिए उसी से लेती है। बोगीदै, तू मेरी बात समझकर भी क्यों न समझने का ढोंग कर रही है ? मैं तुझे कल ब्लाउज दे जाऊंगा।' अब वह मेरी बात समझ गई थी। उसका गुलाबी मुखड़ा आग की लपटों से भी ज्यादा लाल हो चुका था, फिर मेरी बात सुनकर और नजर का इशारा पाकर पूरी तरह शर्म से दुहरी हो उठी थी, नाक पर पसीने की बूंदें चमकने लगी थीं। मैंने गौर किया, मेरी बात सुनकर वह नाराज नहीं हुई, बल्कि उसके पूरे शरीर से प्रेम की गर्मी फूटने लगी थी। जवान लड़की इस हालत में क्या चाहती है, मैं अच्छी तरह जानता हूं। हिम्मत करके मैंने उसके गाल पर चिकोटी काटी।"

गोपाल का किस्सा सुनते-सुनते शिवनाथ का शरीर भी गर्म होने लगा था, गोपाल को रुकते हुए देखकर उसने अधीर होकर पूछा, "उसके बाद ? उसके बाद ?"

तृप्ति की हंसी के साथ गोपाल बोला, "उसके बाद और क्या होना था ? जो होना चाहिए वही हुआ। जैसे ही मैंने उसके गाल पर चिकोटी काटी, उसने छिपाने के लिए अपने सीने में मुंह गड़ा दिया। मैंने चेहरा उठाने के लिए खींचतान की तो उसकी छाती का भी स्पर्श हुआ। मैंने महसूस किया कि खुशी के मारे उसका समूचा शरीर कांप रहा है। मैं समझ गया, यही सुनहरा मौका है, मैं अभी उससे जो भी मांगूगा, वह देने के लिए तैयार हो जाएगी। मेरा शरीर भी गर्म हो रहा था, मैंने आगे-पीछे की परवाह किए बगैर उससे कह दिया, 'बोगीदै सुन, मुझे तुझसे बहुत जरूरी बात कहनी है, कुछ देर के लिए बाहर चल।' उसने पूछा, 'कहां ?' मैंने थोड़ा सोचकर

कहा, 'मवेशीघर में आ जा। किसी को शक नहीं होगा। मैं बाहर जाने के बहाने वहीं राह देखूंगा। तू पीछे-पीछे वहां आना। 'इधर-उधर देखकर वह बोली, 'तू पागल है क्या ? अभी किसी काम के लिए मां बुलाएगी, नहीं मिली तो शोर मचेगा।' मैंने खड़ा होकर कहा, "कोई शोर नहीं मचेगा। कोई पूछे तो कहना—एक गाय नहीं लौटी थी, उसी को देखने के लिए गई थी।' इतना कहकर उसके जवाब की प्रतीक्षा किए बगैर मैं सीधे मवेशीघर पहुंच गया और उसके आने की राह देखने लगा।"

गोपाल का किस्सा सुनते हुए शिवनाथ स्वयं को गोपाल की जगह महसूस कर उस अनुभव में शामिल हो रहा था, उत्तेजनावश उसके होंठ सूख चुके थे। फिर बेचैन होकर उसने पूछा, "उसके बाद ? फिर क्या हुआ ?"

गोपाल कहने लगा, "उसके बाद मैं उन लोगों के भंडार के उस तरफ मवेशीघर में उसकी राह देखने लगा। मैं जानता था कि वह आएगी। एक-एक पल मेरे लिए एक-एक युग के बराबर था। कुछ देर बाद वह आ गई, उसके शरीर की गंध पहचानकर सभी मवेशी शांत होकर चारा खाले लगे। मैंने उसे देखते ही बांहों में भींच लिया। मेरे सीने के बीच वह हवा में थर-थर कांप रहे केले के पत्ते की तरह कांपने लगी। मेरे कानों के पास मुंह रखकर वह फुसफुसाई, 'क्या कहना चाहता था ?' मैंने उसके कांप रहे होंठों को चूमकर कहा, 'यही कहना चाहता था। '

शिवनाथ ने पूछा, "फिर ? फिर क्या हुआ ?"

वीर दर्प के साथ गोपाल ने जवाब दिया, "फिर क्या होना था ? शास्त्र में भी तो लिखा हुआ है—भगतों को गाते हुए सुना नहीं है क्या ?"

महाकामातुर इन्द्र रतित कुशल।
षोडस शृंगार भाव देखायल सकल।।

वैसे शास्त्र का वाक्य कहकर गोपाल संकेतों के जरिए शिवनाथ की जिज्ञासा को शांत नहीं कर पाया। बोगीदै को सीने से सटाकर 'षोडस शृंगार भाव' उसने कैसे दिखाया, औरत के अंतहीन रहस्यमय देह दुर्ग के द्वारों को एक-एककर उसने कैसे खोला और भीतर क्या देखा—यह सारी बातें उसे विस्तारपूर्वक शिवनाथ को बतानी पड़ीं। गोपाल के अंतहीन किस्सों के खजाने का यह एक नमूना ही था। रोज गोपाल के किस्से सुनते-सुनते शिवनाथ की यह धारणा बन गई कि मोहधूलि की जितनी रूपवती, कमसिन और नाजुक लड़कियों को वह दूर से ही ललचाई नजरों से देखता रहा है, जिन लड़कियों को वह चिर रहस्मयी और आकाश की परी की तरह स्पर्शातीत मानता रहा है, वह सारी लड़कियां किसी न किसी समय गोपाल की नजरों के सामने अपनी देह के सारे रहस्य खोल चुकी हैं और भोग के नैवेद्य के रूप में उसके सामने स्वयं को अर्पित कर चुकी हैं। माघ बिहू की उरूका की रात जब जवान लड़कियां रातभर जागकर बिहू के लिए तिल-पीठा, घिला पीठा तैयार करती हैं तब गोपाल नदी के घाट के मेजीघर से भागकर पीठा चुराने आता है, और जवान

लड़कियां उसे अपने बिस्तर तक खींचकर ले जाती हैं। किसी के घर में ब्याह होने पर जब गांव की युवतियों के शरीर में रहस्यमय बेचैनी फैल जाती है तब गोपाल की आंख के एक इशारे पर ही युवतियां घर के पिछवाड़े की झाड़ियों में दौड़कर चली जाती हैं और उसे 'षोडस शृंगार भाव' दिखाने का मौका देती है। शाम को सूरज ढलने के वक्त कोई युवती हाथ में एक गगरी पानी भरकर घर लौट रही होती है तब सुनसान जगह पर पेड़ के पीछे छिपा गोपाल उसे आमंत्रण देता है—

बगिया में आम का पेड़ तीन टहनी वाला
जहां बैठकर बोली कोयल
शाम ढले आ जाना सुंदरी
चलनी लाने के बहाने।

गोपाल का व्याकुल निमंत्रण पाकर लड़की के सीने में हलचल मच जाती है, चाल में तेजी आने के कारण, गगरी छलकने लगती है और आधा पानी छलक जाता है, घर पहुंचकर गगरी रखकर सारे काम-काज भूल कर कृष्ण की बांसुरी सुनकर सुध-बुध खोकर जमुना किनारे दौड़नेवाली राधा की तरह वह भी सुनसान जंगल में गोपाल के साथ मिलने के लिए दौड़ पड़ती है।

गोपाल के किस्से सुनते हुए शिवनाथ के किशोर शरीर में सात समुंदर की लहरें उठने लगतीं, ईर्ष्या से वह सुलग उठता, समूचे शरीर में वह यौवन का भयंकर यंत्रणादायक वेग महसूस करता।

बड़ा होने पर काफी दिनों के बाद वह समझ गया था कि सारे किस्से गोपाल की कल्पना की उपज थे, उसके यौवन से व्याकुल मन की इच्छा पूरी करने की कोशिश भर थी।

बिहू आने पर अब भी बीच-बीच में शिवनाथ को गोपाल की बातें याद आती हैं। शिवनाथ जब छोटा था तब मोहधूलि के आसपास के मिरि, कछारी, कैवर्त और आहोम गांव के युवक-युवती एक साथ खेत में बिहू नृत्य करते थे। वर्षा की शुरुआत के साथ आकाश के किसी कोने में बादल का कोई टुकड़ा नजर आते ही चैत के जाने की परवाह किए बगैर—अचानक किसी गांव का बिहू के नशे में बौराया कोई युवक मढ़ाए गए नए ढोल पर थाप लगाने लगता था और तेज हवा के साथ जंगल की आग फैलने की तरह चारों तरफ ढोल की थाप का उन्माद चारों तरफ फैल जाता। खेत से सरसों का बोझ कंधे पर लादकर घर लौट रहा युवक ढोल की आवाज सुनकर ठिठककर रुक जाता, पल भर में सारे दुख-दर्द भूलकर बाकी रास्ते को वह नाचते-नाचते तय करता था। घर के पिछवाड़े मौसमी के पेड़ के नीचे कपड़ा बुन रही युवती ढोल की आवाज सुनकर ठिठक जाती थी। किसी अज्ञात रहस्य का निमंत्रण उसे भी पल भर के लिए उन्मादित कर डालता था, फिर अगले ही पल बिजली की गति से उसके हाथ हथकरघे पर चलने लगते थे। चैत के पंद्रह दिन बीतने के साथ ही गांव के

युवक-युवती झुंड बनाकर खेतों में बिहू नृत्य करना शुरू कर देते थे। उन दिनों किसी भी गांव की किसी भी सड़क पर खड़े होने पर चारों तरफ से मन को बौराने वाली ढोल की आवाज और बिहू नाम का सुर सुनाई देता था। युवक-युवतियों का बिहू आधी रात तक चलता था, जबकि ढोल की आवाज रात-रात भर सुनाई देती थी। आषाढ़ महीने में वर्षा की रात में जिस तरह बादलों की घरघराहट चारों तरफ से सुनाई देती है उसी तरह बिहू के नशे में चूर युवाओं के ढोल की थाप से चैत महीने में गांव की खामोश रातें गूंजती रहती थीं। ढोल की थाप घरों में सोए युवाओं के सीने में प्रतिध्वनि पैदा करती थी और थाप के साथ दिल की धड़कन जुगलबंदी करने लगती थी। कहीं दूर से आ रही बिहू गीत की आवाज युवक-युवती के मन में सुनहरे सपनों के चित्र अंकित कर देती थी, विवाहित औरत-मर्द और बूढ़े-बूढ़ियों के मन में छोड़ आए दिनों की स्मृतियां जगा देती थी।

गोपाल ऐसे ही बिहू का मूर्त प्रतीक था। चैत शुरू होने के साथ-साथ उसकी दशा उन्मादित व्यक्ति जैसी हो जाती थी। पैदल चलना भूलकर वह दिन भर नशे मे धुत आदमी की तरह नाचते हुए नजर आता था। शाम होते ही बिहूतली में जाना ही पड़ेगा, इसीलिए उससे पहले अपने सारे काम निपटाने के लिए वह जल्दबाजी करता था। काम अगर पूरा नहीं भी होता, तो भी शाम होते ही अपने अधूरे काम को जस का तस छोड़कर वह घर से अंतर्धान हो जाता था। शिवनाथ के पिता उसे मजा चखाने के लिए धमकी देते थे, पर भीतर ही भीतर उसका रवैया देखकर मुस्करा उठते थे। दरअसल पूरे चैत महीने के लिए वे उसे छुट्टी दे देते थे, पर छुट्टी लेकर ही गोपाल नहीं मानता था। सिर पर बांधने के लिए गमछा और लौंग-दालचीनी खरीदने के लिए रोजाना दो आना भी देना पड़ता था।

गोपाल शिवनाथ को चुपके से बताता था कि रात में नींद से बचने के लिए लौंग बहुत जरूरी है, इसके अलावा बिहूतली में लड़कियों को लौंग देने से वे खुश होती हैं और लौंग देने के बहाने सभी लड़कियों की हथेलियां दबाने का मौका भी मिल जाता है। वह हमेशा एक ही बिहूतली में जाता हो, यह बात नहीं। उसके घर के चारों तरफ छह-सात मील तक जितने गांवों में बिहू उत्सव होता था, वह प्रत्येक गांव की बिहूतली में जाता था। आधीरात तक नाचते हुए वह भोर के समय ही घर लौटता था। अगले दिन वह बिहूतली के अनुभव विस्तारपूर्वक शिवनाथ को सुनाता था।

काफी दिनों के बाद शिवनाथ समझ गया था कि गोपाल बिहूतली का जो अनुभव सुनाता था, उनमें कल्पना का रंग डाल देता था। बिहूतली में ढोल की थाप के साथ बिजली की गति से नाचने वाली लड़कियों के आंचल चीरकर बाहर निकलने के लिए व्याकुल छातियां किस तरह उठती-गिरती रहती थीं, नृत्य के दौरान उनकी मांसल बांहें किस अंदाज से हिलती थीं, नृत्य के बहाने लड़कियां किस तरह कलेजे

में आग लगा देती थीं—गोपाल के वर्णन से ये सारे दृश्य शिवनाथ की आंखों के सामने सजीव हो उठते थे। यह सब बातें जरूर सच्ची थीं। पर इनके साथ गोपाल जोड़ देता था—बिहूतली की सारी लड़कियों के शरीर को उसने किस तरह छुआ। उसके हाथ की सख्त पकड़ से किसी भी लड़की की छाती अछूती नहीं है, एक ही झटके में एक लड़की को खींचकर पास की झाड़ी में किस तरह उससे प्यार करता है—इत्यादि।

शिवनाथ गोपाल की हर बात पर विश्वास करता था और भीतर-ही-भीतर ईर्ष्या की आग से जलने लगता था। ईर्ष्या की यंत्रणा एक दिन बर्दाश्त से बाहर हो गई तो शिवनाथ ने गोपाल से कहा, "तेरी बातें सुनते-सुनते रात में बिहू देखने का मेरा भी जी करता है। आज रात मैं भी तेरे साथ बिहू देखने जाऊंगा।"

शिवनाथ की बात सुनकर आतंकित गोपाल बोला, "क्या बोला ? रात को मेरे साथ बिहू देखने जाएगा ? पिताजी को किसी तरह पता चल गया तो तुझे काट डालेंगे—जानता है ? ऐसी बात दुबारा नहीं कहना।" शिवनाथ रात में चुपके से बिहू देखने गया, यह बात पिताजी सुनेंगे तो जरूर क्रोधित होंगे—यह बात शिवनाथ जानता था। वे समाज के बड़े लोग थे, स्वयं बिहू में शामिल होना दूर की बात, शिवनाथ के पिता बिहू देखना भी अपने परिवार की प्रतिष्ठा के लिए नुकसानदेह समझते थे। पर उस पल पिता के डर की तुलना मे बिहूतली में नाचनेवाली युवती का आकर्षण शिवनाथ के मन में अधिक प्रबल था। यौवन की दहलीज पर कदम रखने वाले शिवनाथ ने फिर कहा, "पिताजी को पता नहीं चलेगा। मैं सारा इंतजाम कर दूंगा। तू क्यों डरता है ? तुझे क्या करना होगा, सुन। तू जैसे हमेशा जाता है, वैसे ही बिहू देखने जाने की बात कहकर चले जाना। पर बिहूतली न जाकर गांव के किसी घर में या पूर्ण की दुकान पर जाकर बैठा रहना। रात में जब पिताजी खाकर सो जाएंगे तब तू लौटकर भंडार के नीचे या मवेशीघर में छिप जाना। मैं चुपके से निकल पड़ूंगा। पर दूर की बिहूतली मे तू मुझे मत ले जाना। रात में ही मुझे लौटकर आना पड़ेगा।"

गोपाल समझ गया कि शिवनाथ बिहू देखे बगैर माननेवाला नहीं। "ठीक है।" बहुत सोच-विचार कर गोपाल ने कहा, "पर पकड़े जाने पर मुझे फंसाएगा तो तू भी नहीं बचेगा और सुन, किसी तरह आठ आना लेकर आना। तू जाएगा, इसीलिए लौंग-दालचीनी का इंतजाम अधिक करना पड़ेगा।"

मोहधूलि से एक मील दूर सातोला-चूक नामक एक आहोम गांव है। उस गांव में भी युवक-युवती रात में बिहू नृत्य करते हैं। गोपाल शिवनाथ को उसी बिहूतली में ले गया। गांव के पिछले हिस्से में स्थित मैदान मे विशाल सेमल पेड़ के नीचे उनकी बिहूतली थी। पास ही एक छोटा पोखर भी था। पर पोखर के बीच में घुटनों तक ही पानी था। गांव के लड़के दिन भर गरै मछली की तलाश में पोखर के पानी को खंगालते रहते थे। इसीलिए पोखर में जो भी पानी बचा था वह कीचड़ से भरा

हुआ था। भीषण उत्तेजना सीने में लिए शिवनाथ जब बिहूतली पहुंचा तो वास्तविक दृश्य को देखकर जैसे उसकी कल्पना ने भी हार मान ली।

आकाश में चांद था। पूर्णिमा नहीं थी, पर पूर्णिमा में ज्यादा दिन नहीं बचे थे। चांदनी से नहाया मैदान चांदनी की एक विशाल झील की तरह नजर आ रहा था। सर्दी की नमी को वसंत की गर्मी ने सोख लिया था। इसीलिए अब रात की हवा भी धूप में सूखने वाले कपड़े की तरह फरफराहट का भाव पैदा कर रही थी। सास लेने के साथ हवा भीतर समाती थी और धमनियों में लहू की रफ्तार तेज होती मालूम पड़ती थी। किसी एक रहस्यमय उन्माद से समूचा शरीर कांप उठता था। मैदान तक पहुंचने से पहले ही ढोल और गगना की आवाज के साथ बिहूगीत के सुर दोनों ने सुने। सड़क से खेत में उतरने के साथ ही उन्होंने देखा—चांदनी में भीगे मैदान के बीच जहां सेमल के पेड़ की छाया है, वहां कुछ युवक-युवती ढोल की थाप के साथ कमर लचकाते हुए अपूर्व लय के साथ नाच रहे हैं, उन्हें देखने के लिए चारों तरफ दर्शकों की भीड़ जुटी हुई है। दूर से देखने से ऐसा लगता है मानो चांदनी से नहाए विशाल आसमान के नीचे रात की इस गहरी खामोशी के बीच युवक-युवती यौवन के रहस्यमय देवता के सामने नाच-गाकर पूजा-आरती कर रहे हैं। किसी दिन भी ऐसा दृश्य न देखनेवाले शिवनाथ का कल्पनाशील मन अचानक उत्तेजित हो उठा। जल्द से जल्द बिहूतली तक पहुंचने के लिए वह दौड़ने लगा।

अब तक गोपाल ने जैसा वर्णन किया था—सारी नर्तकियों के शरीर का स्पर्श करना, छाती दबोचना, झाड़ी के पीछे खींचकर प्यार करना—ऐसा कुछ भी शिवनाथ को नजर नहीं आया। फिर भी शिवनाथ जरा भी हताश नहीं हुआ। बल्कि उसने जो भी देखा, उससे वह तृप्त हो गया। शिवनाथ के शरीर में नए यौवन के उत्ताप और वसंत काल की चांदनी रात के उन्माद ने उसकी आंखों में जो माया जाल रच दिया था, उसके बीच से वह देख रहा था—जब पुष्ट यौवन वाली लड़कियां अपने ऊंचे स्तनों को उठाते-गिराते हुए नाचती हैं, तब जैसे नृत्य की ताल के साथ यौवन के रक्त-समुद्र में जबर्दस्त ज्वारभाटा उठने लगता है, तालियों के सुर के साथ जब वे मधुर और कोमल स्वर में बिहूनाम गाती हैं, तब जैसे शरीर की रक्त कणिकाएं उसी की प्रतिध्वनि समवेत स्वर में गा उठती हैं। मंत्रमुग्ध होकर बिहू देखते हुए सभी लड़कियों के बीच एक खास लड़की का चेहरा शिवनाथ की आंखों में विशेष रूप से चमक उठा। शिवनाथ को कोई शक नहीं था कि अगर उसे बिहूतली में प्यार कर भविष्य का जीवन-साथी चुनने की आजादी होती तो वह जरूर उस लड़की को चुन लेता।

पहली नजर में ही प्यार। पर अफसोस की बात यह थी कि पहली नजर में ही उस लड़की के प्रति प्यार महसूस करने के बावजूद उससे प्रणय निवेदन करने के लिए दुबारा मिलने की कोई संभावना नहीं थी। शिवनाथ बिहूतली में पहली बार

आया है और आखिरी बार भी। जैसे आखिरी बार देख रहा हो, उसी तरह सब कुछ भुलाकर वह उस लड़की की तरफ देखता रहा। लड़की के कसे हुए शरीर की प्रत्येक भंगिमा से उसके शरीर में कामना की आग सुलगने लगी और वह यह सोचकर जल-भुन उठा कि यह सोने जैसा शरीर, पुष्ट लाल गाल, मांसल बांहें—इनका वह किसी दिन अपने हाथ से स्पर्श नहीं कर पाएगा, यह सब कुछ किसी और का हो जाएगा...

2

एक लंबा सपना देखने के बाद जैसे शिवनाथ हड़बड़ाकर जाग गया, और अब तक उसके कान में ढोल, मंजीरा, पेंपा, गगना की आवाज से उत्तेजनापूर्ण शोर सुनाई दे रहा था। सब कुछ अचानक बंद होने और गहरी खामोशी फैलने पर पल भर के लिए वह हैरान रह गया। अनजान जंगल में राह तलाशने की तरह इधर-उधर देखते हुए उसकी नजर पत्नी पर टिकी। पल भर पहले उसकी आंखों के सामने एक सुंदर युवती नाच रही थी, उस युवती की आंखों के दो सितारे झिलमिलाते हुए नाच रहे थे। उसके कोमल रक्तिम गालों ने चांदनी की शुभ्रता और स्निग्धता को समेट लिया था, उसके शरीर की लहरें सागर की लहरों की तरह उठती-गिरती थीं, पर अगले ही पल शिवनाथ ने एक बदसूरत और अधेड़ औरत को देखा—जिसकी गरदन के पास झुर्रियां लटक रही हैं और शिराएं बाहर झांक रही हैं, अपने में खोई चरखा चलाते हुए जिसका मुंह अजीब मुद्रा में खुला हुआ है, तीस सालों से चूना-तंबाकू-तांबूल के दाग से काले हो चुके सामने के दांत बाहर दिखाई दे रहे हैं, जिसके मांसहीन नितंब की कृशता स्पष्ट हो रही है। वह सूखी और बीमार नजर आ रही है। कुछ पल के लिए शिवनाथ का मन घड़ी के घंटे के तरह इन दो औरतों के बीच आंदोलित होता रहा। आखिरकार जब वह पूरी तरह वास्तविकता के धरातल पर उतर आया तब उसने पत्नी के प्रति तीव्र दैहिक घृणा का भाव महसूस किया। पत्नी जैसे एक आईना थी, जिस आईने में शिवनाथ ने बुढ़ापे के चंगुल में नष्ट होते अपने जीवन की तस्वीर देखी। जहां दोपहर की तेज धूप की जगह सिर्फ शाम की लंबी उदास छायाएं थीं। तब मन में सजीव थी बिहूतली की स्मृति, कानों में बिहूनाम की लंबी सीटी सुनाई दे रही थी। आंखों के सामने मक्खन के समान कोमल जोड़ा भर उन्नत स्तन नाच रहे थे। मगर, मगर...

शिवनाथ स्वयं से ही कहने लगा—यह सब बातें सोचना भी मेरे लिए पाप है, पाप न भी हो तो समय की बर्बादी है, चूंकि अब मैं बूढ़ा हो गया हूं (बूढ़ा हो गया हूं ?) हां। अब मेरी उम्र सैंतालीस पारकर अड़तालीस हो चुकी है। शास्त्रों का वाक्य माना जाए तो और तीन साल तक गुजारकर घर-परिवार छोड़कर वानप्रस्थ

लेने का समय हो जाएगा। इस उम्र मे मेरे जैसे आदमी को युवती के शरीर की कल्पना या कामना करना अच्छा नहीं लगता। काफी देर की खामोशी तोड़ते हुए शिवनाथ फिर नाम गुनगुनाने लगा–

हे प्रभु, जगबंधु नतरिलो भवसिधु
कीनो गति हैबेक आमार।
बुझियो नुबुझा हलों की मायात परि रैलों
करा प्रभु करुणा इबार।।*

बहुत देर तक शिवनाथ को गुमसुम देखकर पत्नी को अच्छा नही लग रहा था, मशीन की तरह चरखा घुमाते हुए कई बार नींद के झोंके ने उसे दबोचा था, पर जब पति ने फिर गाना शुरू कर दिया तो उसकी आंखों से नींद खत्म हो गई और एक नए उत्साह के साथ समूचा शरीर सजीव हो उठा। पल भर चरखा चलाना बंद कर उसने एक तांबूल मुंह में डाला, फिर जोश में भरकर चरखा चलाने लगी।

इधर जिस उत्साह और भक्तिभाव से शिवनाथ ने पद गाना शुरू किया था, वह उत्साह कुछ देर बाद ही क्षीण होने लगा। दरअसल वह मुंह की आवाज से मन की आवाज को दबाना चाहता था, पर अंत में उसने पाया कि आज मन की आवाज अधिक शक्तिशाली थी।

प्रौढ़ावस्था की दहलीज पर खड़े होकर उसका मन बार-बार करुण दृष्टि से अतीत की तरफ देख रहा है और पीछे की धूप और रंगीन बगीचे की तुलना मे सामने के अंधेरे और खाली खेत को देखकर वह आगे न बढ़कर ठिठक जाना चाहता है। पर जीवन के रास्ते पर एक पल भी रुकने का कोई उपाय हो सकता है ? जिस तरह हलवाहा बैल को पीछे से कुरेदता रहता है, उसी तरह काल भी पीछे से लगातार कुरेदता रहा है, आगे बढ़ते जाने के सिवा कोई चारा नहीं है।...

शिवनाथ ने कुछ देर बगैर कुछ सोचे रस्सी बटने पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की। पर कुछ पल बाद ही उसके मन के परदे पर एक नया दृश्य नजर आने लगा। बहुत साल पहले की बात है। शिवनाथ तब दस साल का रहा होगा। शिवनाथ के पिता रोज खेत का काम देखने जाते थे और कभी-कभी शिवनाथ को भी अपने साथ ले जाते थे। माघ के आखिरी हिस्से में या फागुन के प्रारंभ में खेत को जोतकर आहू धान बोने लायक बनाया गया था। वैसे ही समय में एक दिन पिता शिवनाथ को अपने साथ खेत पर ले गए। घर से आधे मील की दूरी पर खेत थे। रास्ते में पिता शिवनाथ को किस्से सुनाने के बहाने नीति की बातें समझाते थे, शिवनाथ भी किस्से सुनने के लोभ के कारण पिता के साथ खेत जाना पसंद करता

* हे प्रभु जगबंधु, भवसिंधु पार नहीं कर सका। मेरी क्या गति होगी ? समझकर भी नही समझ पाया। कैसी माया में फंसा, प्रभु, तुम इस बार दया करो।

था। किस्सों के अलावा एक और आकर्षण था, वह था खेत की जुताई के दौरान फेंके गए घोंघे और केंकड़े बटोरकर भूनकर खाने का लोभ। खेत में तब कूडे को जलाने और मिट्टी को समान करने का काम चल रहा था। यह दृश्य देखना शिवनाथ को अच्छा लगता था। बहुत दूर तक वांस की बाड़ों तक फैले खेत में कहीं घास-फूस का कोई नामोनिशान नही था। फागुन महीने की शाम की फीकी सुनहरी धूप में चमकती हुई मिट्टी नजर आती थी। लोग खेतो की मिट्टी को समान कर रहे थे, धूल धुए की तरह उड़कर फिर मिट्टी में मिल जाती थी। पर कहीं-कहीं धुआं बादल जैसे बहुत ऊपर उठकर क्षीण रेखा बनकर गायब हो रहा था। वह था कूडे जलाने के कारण निकलने वाला धुआ। खेत पहुंचने से पहले दूर से ही कुडली मारकर ऊपर उठ रहे धुएं को देखा जा सकता था। दूर से ही कूड़ा जलने की गध नाक में समा जाती थी। गंध-विलासी शिवनाथ की प्रिय गंधो में से प्रमुख गंध है फागुन महीने में खेतों में जलाए जानेवाले कूड़े की गंध। जब भी जिस हालत में इस गंध की याद आती है—उसके मन की आंखों के सामने शाम की सुनहरी धूप में चमक रहे खेत का चित्र, उसके बीच में कूड़े को जलाती आग, एक-दो बगुले और कना मुचरी चिड़िया, खेत में कुदाल चला रहे लोग, उड़ता हुआ धुआं और इन सबको समेटे हुए एक खामोशी कौंध जाती है।

...उस दिन खेत का काम देखकर पिता के साथ शिवनाथ घर लौट रहा था। तब पूरी तरह शाम नहीं उतरी थी। सूरज सुर्ख लाल रंग के आग के गोले की तरह क्षितिज मे लटक रहा था। पल भर बाद वह नीचे लुढ़कने वाला था। खेत के एक तरफ से एक नाला बहता है। उसमे कहीं घुटनो तक, कही कमर भर पानी रहता है। डूब रहे सूरज की रोशनी से नाले का पानी सुनहरा नजर आ रहा था। उसके किनारे खड़े होकर शिवनाथ के नन्हें कल्पनाशील हृदय में एक ऐसी सिहरन हुई—मानो वह किसी अपार्थिव जगत के घाट पर खड़ा हो गया हो। नाले को पार करने के लिए पिता के साथ शिवनाथ ने पानी में पैर डाला ही था तभी दूसरी ओर दाई तरफ से एक जवान लड़की भी नाला पार करने लगी। खेतों के बाद वांस वन है और उसके दूसरी तरफ एक गाव है। वह उसी गांव की लड़की थी। नाले के किनारे कुछ गाय और बछड़े घास चर रहे थे। लड़की की नजर भांपने से ही पता चलता था कि वह गाय की तलाश में खेत की तरफ आई है। नाले में उतरते ही लड़की ने मेखला को ऊपर की तरफ उठा लिया। पहले घुटनो तक, फिर घुटनों के ऊपर तक और नाले के बीच में जहां पानी अधिक था घुटनों से जितना ऊपर उठाया जा सकता था, उसका मेखला उठ चुका था। नदी किनारे के गांवों के लिए यह आम दृश्य है। युवती-बहू सभी नदी-नाले पार करते समय कपड़े ऊपर उठा लेती हैं। शिवनाथ जब पिता के साथ नाले के बीच में पहुंचा, तब जैसे कोई खींच रहा हो, उसी अंदाज में उसकी आंखें पिताजी की तरफ मुडीं और शिवनाथ स्तब्ध रह गया, पिताजी कनखियो

से लड़की की उघड़ी जांघों की तरफ देखते हुए मंत्रमुग्ध की तरह आगे बढ़ रहे हैं।

बचपन की अधिकतर बातें शिवनाथ भूल चुका है। पर आज पैंतीस-छतीस साल बीत जाने पर भी उस घटना की अक्सर याद आ जाती है। शिवनाथ के पिता नीति-धर्म के साक्षात अवतार थे, इलाके के लोग उनका लगभग देवता की तरह सम्मान करते थे। शिवनाथ की नजरों में भी वे जीवंत देवता थे। कोई पाप, कोई कमजोरी, कोई प्रलोभन उनका कभी स्पर्श नहीं कर सकता—शिवनाथ की यही धारणा थी। वैसे मनुष्य को औरत के नग्न अंग की तरफ ललचाई नजरों से देखते हुए शिवनाथ ने देख लिया। पल भर के लिए उसे लगा मानो भूचाल के कारण धरती घूम गई हो। शिवनाथ आज भी महसूस करता है कि इस छोटी-सी घटना का उसके जीवन और विचारधारा पर गहरा प्रभाव पड़ा।

आज बहुत दिनों के बाद शिवनाथ ने कल्पना में औरत के प्रति कमजोरी महसूस की। इसके साथ ही पिता से संबंधित वह घटना याद आई। हमेशा ऐसा ही होता है। जब भी वह अपने मन को भटकते हुए पाता है (जो बहुत कम ही होता है) तब अपने पिता की गुप्त कमजोरी की याद कर स्वयं को ढाढस बंधाता है। उनकी तरह धर्मात्मा और संयमी पुरुष जब काम रिपु को पूरी तरह जीत नहीं पाए, तब शिवनाथ का क्षणिक स्खलन कभी गंभीर दोष नहीं हो सकता। इसके अलावा, अध्ययनशील शिवनाथ शास्त्रों के माध्यम से भी स्वयं को ढाढस बंधाने की कोशिश करता है। महाभारत में ययाति की जो कहानी है, वृद्ध ययाति जिस तरह बेटों से विनती करता है, 'मेरे बेटो, मेरी सहायता करो, मैं बूढ़ा होना नहीं चाहता, मैं चिर-तरुण रहकर सुंदर युवतियों का भोग करना चाहता हूं'—इस आर्तनाद के बीच मानव हृदय की एक चिरंतन गुप्त आकांक्षा और समस्या को व्यक्त किया गया है। वैसे शिवनाथ ने खुद को याद दिलाया—ययाति क्या चाहता था, इसे याद न रखकर आखिरकार उसे क्या मिला, यह याद रखना चाहिए। ययाति को आखिरकार यह ज्ञान मिला—'संभोग-वासना की तृप्ति कभी संभव नहीं। घी डालने से होम की आग तेज ही होती है, उसी तरह संभोग से वासना भी तेज ही होती है। समस्त पृथ्वी, पृथ्वी की समस्त संपत्ति, पशु, औरत—इन सब पर तुम कब्जा कर लो और भोग करो, देखोगे तब भी तुम्हारे भोग की आकांक्षा खत्म नहीं होगी। मनुष्य जब किसी चीज की आकांक्षा नहीं रखता, तभी वह ब्रह्म की तरह शुद्ध और पवित्र बनता है।'

इस तरह की अनेक अच्छी बातें सोचते हुए शिवनाथ ने अपने मन को फिर पवित्र होते हुए महसूस किया और कुछ देर पहले पत्नी के प्रति किए गए अन्याय का प्रायश्चित करने के लिए सहानुभूतिपूर्ण कोमल स्वर में बोला, "कब तक सूत कातोगी ? जाओ, सो जाओ। काफी रात हो चुकी है। शरीर को कितना कष्ट देती हो ?"

शिवनाथ की स्नेह-सनी बोली सुनकर पत्नी ने सिर्फ मन पर ही नहीं, समूचे

शरीर पर कोमल और ऊष्म हथेली को फिरते हुए महसूस किया। कृतज्ञता के भाव से वह अभिभूत हो उठी। पिछले आधे घंटे के दौरान पास बैठा पति अतीत की यात्रा कर लौट चुका है और एक सुंदर युवती के साथ मानसिक रमण में लीन रह चुका है—यह बात समझ नहीं पाई। यह अज्ञता ही जीवन की एक मात्र निर्भरता है, एक मात्र सुरक्षित शरणस्थली है।

3

शिवनाथ की पत्नी चरखा उठाने ही वाली थी। तभी बाहर से किसी के पैरों की आहट सुनाई पड़ी। दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा। उनके कान खड़े हो गए। तभी दरवाजे पर धक्का देकर किसी ने पुकारा, 'मां, मां !'

शिवनाथ की पत्नी खुशी के मारे चिल्ला पड़ी, 'बड़ा बापू।'

वह लगभग दौड़ती हुई दरवाजा खोलने गई। उत्तेजनावश जल्दबाजी करने के कारण उसकी चादर जमीन पर घिसटती हुई गई, उसे पता ही नहीं चला। दरवाजा खुलने पर मुस्कराते हुए बड़ा लड़का भीतर आया। कालेज की पढ़ाई करने के लिए प्रथम लड़का बड़ा बापू यानी गौरीनाथ काफी दिनों से घर से दूर था, मां उसे पकड़कर चूम लेना चाहती थी। पर वह इतना जवान हो चुका है कि उसके कद के सामने मां उसके सीने के बराबर ही पहुंच पाती है। बहुत तकलीफ के साथ वह इस इच्छा को रोक पाई। किंकर्तव्यविमूढ़ होकर कुछ देर तक स्नेह भरी नजरों से वह बेटे को देखती रही। मां की बेचैन नजरों के सामने स्वयं को सहज न पाकर गौरीनाथ दो कदम आगे बढ़ा और पिता की तरफ देखकर बोला, "पिताजी, रस्सी बटना शुरू कर चुके हैं ?"

अब तक शिवनाथ अपनी जगह पर ही बैठा था, पर मन ही मन वह भी व्याकुल हो उठा था। बेटे के साथ पहले कैसे बातचीत करेगा, वह ठीक से सोच नहीं पा रहा था। गौरीनाथ का प्रश्न सुनकर उसे राहत मिली।

"बटना शुरू नहीं करूं ? बिहू के कितने दिन बचे हैं ?" फिर पत्नी की तरफ देखकर बोला, "तुम क्या देख रही हो ? बड़े बापू के हाथ-पैर धोने के लिए पानी गर्म कर क्यों नहीं ला देती ?"

पति की आवाज सुनकर उसका ध्यान टूटा।

"तू सामान उतारकर पिताजी के पास ही कुछ देर बैठ, मैं अभी पानी गर्म कर ला देती हूं।"

वह भीतर चली गई।

बड़ा बापू सामान रखकर उसी तख्ते पर बैठ गया, जहां बैठकर उसकी मां

अब तक चरखा चला रही थी। शिवनाथ ने पूछा, "तुझे इतनी रात कैसे हो गई ? अब तो बारह बज चुके होंगे।"

कलाई की घड़ी की तरफ देखकर बड़ा बापू बोला, "अभी बारह नहीं बजे हैं। ग्यारह बजकर दस मिनट हुए हैं। मैं बस से उतरकर जब घाट पर पहुंचा तो नाव जा चुकी थी। थोड़ी देर के लिए नाव मिस हो गई। नदी पारकर घर पहुंच सकूंगा, यह आशा ही नहीं थी। तभी एक-एक कर कई मिरि लोग जुटे, जिन्हें इस पार आना था। सबने मिलकर किराए पर एक नाव ली। जब नाव चली तब सूरज डूब चुका था। आजकल जानते ही हैं—ब्रह्मपुत्र में चारों तरफ बालूचर होने के कारण घुमा-फिरा कर नाव खेना पड़ता है। इस पार के घाट तक पहुंचते-पहुचते आठ बज गए। साथ के मिरि लोग मुझे रात मे घर आने नहीं दे रहे थे। सब कह रहे थे—इस रात के वक्त दस-बारह मील जंगली रास्ते पर तुम अकेले कैसे जाओगे ?...पर मैंने उनकी बात नहीं मानी। घर पहुंचने को मन बेचैन था। इस दस मील की दूरी में क्यों किसी के घर मे रात गुजारता पर उन लोगों ने जबर्दस्ती अपने घर ले जाकर मुझे कुछ खिलाया तभी छोड़ा। वहीं आधे घंटे की देर हो गई।"

"कुछ खिलाया—मतलब क्या ? आपंग तो नहीं पिलाया ?" बेटे का चेहरा देखे बगैर शिवनाथ ने पूछा।

'नहीं पीता आपांग'—यह कहकर गौरीनाथ झूठ बोलना चाहता था। पर अगले ही पल उसने विचार बदल डाला। यूं ही वह कपास के गोले को हाथ में थामकर देखने लगा।

बेटे की मानसिकता समझते हुए शिवनाथ ने विषय बदलने के लिए फिर पूछा, "तू सचमुच इस जंगल के बीच से अकेला आया है ?"

अपनी हिम्मत और वीरता पर पिता के शक को देखते हुए गौरीनाथ को बहुत गुस्सा आया। दर्प के साथ उसने जवाब दिया, "आप समझते हैं, मैं झूठ बोलकर डींग हाक रहा हूं ? इस रात के वक्त और भला कौन मोहधूलि गांव आ सकता है ? आप खुद कल जाकर देउबर-चूक मिरि गांव के कुबांग, कलीया, लभीराम से पूछ लें, मेरे साथ कोई और आया था क्या ?"

शिवनाथ बेटे के मन की चोट दूर करने के लिए कुछ कहना चाहता था, तभी उसकी मां एक बाल्टी गर्म पानी, लोटा और गमछा लेकर आ गई। गौरीनाथ ने लगभग उछलते हुए मां के हाथ से बाल्टी ले ली और बाहर चला गया। अब तक शिवनाथ सोने के लिए जा चुका होता, पर बेटे के आने के कारण उसकी मां उसके लिए खाना बनाएगी। गौरीनाथ खाना खाएगा, इसीलिए उसने और कुछ देर तक रस्सी बनाने का निश्चय किया। बेटे के दिल को ठेस पहुंचाने की बात सोचकर उसे तकलीफ हुई। पहली संतान होने के नाते गौरीनाथ स्वाभिमानी और संवेदनशील है। मामूली बात सुनकर भी उसका चेहरा स्वाभिमान के कारण फूलकर कुप्पा हो जाता है। बचपन

में उसके रूठने पर मनाने के लिए मां-बाप को कितनी कोशिश करनी पड़ती थी—उसका कोई हिसाब नहीं। बड़ा होने के बाद भी उसके स्वभाव में खास बदलाव नहीं हुआ है। वैसे आज उसके क्षुब्ध होने के पीछे पर्याप्त तर्क हैं, शिवनाथ ने खुद को याद दिलाया। उसने जिस तरह उससे सवाल पूछा—उसका एक मात्र अर्थ यही था कि वह झूठ बोल रहा था। शिवनाथ ने मन ही मन तय किया कि आज नही तो कल अपनी गलती को सुधार लेगा, यानी बेटे की जो प्रशंसा होनी चाहिए, वह करेगा। सचमुच उसने कम जीवट का काम नहीं किया है। ब्रह्मपुत्र के घाट से लेकर मोहधूलि गांव तक दस मील के रास्ते के दोनों तरफ घने जंगल हैं। बीच-बीच में दो-चार घर मिरि लोगों के ही नजर आते हैं। रात तो दूर की बात है, कभी-कभी दिन में भी रास्ते पर बाघ निकल आता है। शिवनाथ ने बचपन में पिता से किस्सा सुना था कि मूंगे के बीज तलाशने या अन्य किसी काम से लोग उस रास्ते से दक्षिण किनारे जाने पर पांच-छह लोगों का दल बनाकर ही जाते थे। कोई अकेले जाने की बात सोच भी नहीं सकता था। जाने से पहले सभी बत्तख मारकर भात खाकर घर से विदाई लेकर जाते थे। वैसे अब पहले जैसे स्थिति नहीं है। तीस मील लंबा और दस मील चौड़ा जंगल देखते-देखते सिमटता गया है। दक्षिण किनारे के बहुत सारे लोगों ने जंगल के बीच-बीच में खेती शुरू कर दी है। कुछ साल पहले रात के वक्त जिस रास्ते से जाते समय जंगल की डरावनी खामोशी और हिंसक निशाचर जंतुओं की वास्तविक या काल्पनिक आहट के सिवा कुछ सुनाई नहीं देती थी, आज उस रास्ते पर कुत्तों के भौंकने या खेतिहर लोगों की सीटी की आवाज बीच-बीच में सुनाई देती है।

फिर भी आज ऐसी स्थिति नहीं बनी है कि रात के दस-ग्यारह बजे कोई अकेले उस रास्ते को पार करे। बड़े बापू ने सचमुच जीवट का काम कर दिखाया है। बेटे के प्रति गर्व की भावना से शिवनाथ का मन कुछ प्रफुल्लित हो गया। वैसे एक-दो साल बाद मोहधूलि के लोगों को इस तरह का साहस दिखाने का मौका नहीं मिलेगा। देश की स्वाधीन सरकार इस बीच ब्रह्मपुत्र घाट से मोहधूलि तक सड़क का निर्माण शुरू कर चुकी है। दो महीने पहले हुए आम चुनाव से पहले ही सड़क बनाने का काम शुरू हुआ। शिवनाथ के पिता के जमाने में दिन के वक्त भी पांच-छह लोगों को समूह बनाकर उस रास्ते से जाना पडता था। हजारों साल से, यानी उस इलाके में लोगों की बस्तियां बसने के समय से वही व्यवस्था रही होगी। शिवनाथ के जमाने में लोग रात में न सही, दिन में अकेले उस रास्ते को पार कर सकते थे। अब शिवनाथ के लड़के ने आधीरात को उस रास्ते को अकेले पार करके दिखा दिया है। निश्चित रूप से मोहधूलि के जीवन में अरण्य का आधिपत्य तेजी से कम होता जा रहा है। सरकार जो सड़क बना रही है, अगर वह अगले साल तक तैयार हो जाएगी तब एक दो साल मे उस सड़क पर बस-लारी और जीप आदि वाहनों का आवागमन भी शुरू हो जाएगा। तब तो एक छोटा लड़का भी उस सड़क को दिन में दस-बारह

बार पार कर पाएगा। शिवनाथ ने पल भर पलकें मूंदकर उस दृश्य की कल्पना करने की कोशिश की। मन ही मन उसने एक रोमांचक सिहरन महसूस की। अरण्य की गोद में हजारों साल तक चुपचाप सो रहा मोहधूलि आखिरकार मोटरगाड़ी के इंजन के गर्जन से जागकर आधुनिक युग के सवेरे में आंखें खोलेगा। जिस अरण्य से बाघों के गर्जन के सिवा कोई तेज आवाज सुनाई नहीं देती थी अब उस अरण्य की खामोशी मोटरगाड़ियों के शोर से हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी। उसने महसूस किया कि जीवन की अधेड़ावस्था में वह एक नए युग की दहलीज पर कदम रख चुका है। इस आकस्मिक परिवर्तन की वजह से मोहधूलि के शांत एवं एकरस जीवन में क्या नई चीज आएगी और क्या पुरांनी चीजें खो जाएंगी, कुछ कहा नहीं जा सकता।

जो भी हो रहा है, सब कुछ निश्चित रूप से अच्छाई के लिए ही हो रहा है। उसने मन ही मन सोचा, आज उसका लड़का कालेज की छुट्टी में घर आते समय हिंसक जानवरों से भरपूर जंगल को पारकर आधीरात में भूखा-प्यासा आया है। दो साल बाद यह स्थिति नहीं रहेगी। घाट पर पहुंचते ही बस में सवार होकर वह आधे घंटे में दिन के उजाले में ही घर पहुंच जाएगा। इससे अच्छी बात और क्या होगी ? फिर भी जैसे जीवन का एक पुराना छंद हमेशा के लिए खो रहा है—जिसके लिए उसका मन हाहाकार कर उठा। बचपन में शहर देखने की इच्छा लिए अपने पिता के साथ महकमा सदर तक पैदल गया था। घर लौटते वक्त लंबे जंगली रास्ते में जिस मधुर कल्पना ने रास्ते की तकलीफ को अद्‌भुत आनंद में बदल डाला था—वह कल्पना थी कि लंबे सफर के अंत में घर के दरवाजे पर खड़ी व्याकुल मां को बांहें फैलाए देख सकेगा। लंबी प्रतीक्षा के बाद मिलन का वह पल अत्यंत मधुर और ललचानेवाला बन गया था। पर अब कोई किसी के लिए प्रतीक्षा नहीं करेगा। चूंकि मोटरगाड़ी एक दिन के रास्ते को एक घंटे में तय कर घड़ी की सूई के हिसाब से ठीक समय पर मुसाफिरों को सुरक्षित मंजिल तक पहुंचा देगी।

दिन भर लंबे रास्ते को तय कर घर लौट रहे मुसाफिर की आंखों में स्नेह भरे घर का जो मधुर सपना अंकित रहता है, वह जीवन से सदा के लिए खत्म हो जाएगा, चूंकि एक दिन का रास्ता मोटरगाड़ी में बैठकर एक घंटे में तय करते हुए सपना देखने का वक्त नहीं मिलेगा। अनजाने में ही उसके भीतर से एक लंबी सांस बाहर निकल पड़ी...।

4

गोरू बिहू जिस दिन होता है, उसी रात से गांव के लोग बिहू की 'हुंसुरी' गाना शुरू कर देते हैं। शिवनाथ का घर, गांव के बीच में स्थित है। फिर भी गांव के एक

छोर से शुरू न करके शिवनाथ के घर से हुंसुरी गाने की शुरुआत की जाती है, इलाके के सबसे धनी और प्रतिष्ठित परिवार होने के कारण पीढ़ियों से यही परंपरा चलती आ रही है। उस दिन भी हुंसुरी के लिए पान-तांबूल के पात्र, रुपए-पैसे और नए फूलदार गमछे आदि लेकर शिवनाथ के घर के लोग तैयार थे। बहुत जल्दी खाना खाकर शिवनाथ अपनी पत्नी के साथ बरामदे में बैठा हुंसुरी की प्रतीक्षा कर रहा था, छोटे बच्चे घर और आंगन के बीच भागदौड़ करते हुए शोरगुल मचा रहे थे। किसी भी पल हुंसुरी गानेवाला दल पहुंचनेवाला था। तभी शिवनाथ का सारा परिवार चकित रह गया जब गांव के किसी दूसरे आदमी के आंगन से ढोल की थाप के साथ हुंसुरी गाने की आवाज सुनाई पड़ी।

पहले तो शिवनाथ को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। अवाक होकर कुछ पल वह कान लगाकर सुनता रहा। कोई शक नहीं, उसके घर से पूरब की ओर पांच-छह घर हैं, उनमें से किसी घर में हुंसुरी गाई जा रही है, "कृष्णर मूररे बकुल फूल एपाहि, नियर पाई मुकलि हल एइ गोविंदाई राम।"

आराम की मुद्रा छोड़कर शिवनाथ तनकर बैठ गया। शेर का शिकार अगर गीदड़ छीनकर खा ले तो शेर पर क्या गुजरेगी, कुछ वैसी ही अनुभूति शिवनाथ को हो रही थी। पुरखों के दिनों से ही शिवनाथ के परिवार को गांव की हरेक बात मे प्राथमिकता मिलती रही है। नामघर में बड़ा उत्सव, चरवाहा उत्सव या अन्य उत्सव होने पर प्रसाद का पहला हिस्सा शिवनाथ के परिवार के लिए पहुंचाया जाता रहा है। गांव के सभी तिथि-पर्व के लिए चंदा वसूलने की शुरुआत उसी के घर से होती है। स्कूली लड़के जब सरस्वती की प्रतिमा लेकर शहर भ्रमण करने निकलते हैं तो सबसे पहले प्रतिमा शिवनाथ के दालान पर ही रखी जाती है। इसी तरह हुंसुरी गाने की शुरुआत उसी के आंगन से होती है। गांव के समाज में हर मामले में पहला स्थान पाना शिवनाथ अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता रहा है। सूरज के पूरब में उगने की तरह या नदी का ऊंचाई से नीचे की तरफ बहने की तरह इस अधिकार को भी वह अत्यंत स्वाभाविक समझता रहा है, किसी दिन इसमें कोई परिवर्तन भी हो सकता है, इस बात की कल्पना उसने आज तक नहीं की थी। पर आज...

आज यह अनहोनी कैसे हो गई ?

क्यों हुई ?...

शिवनाथ मन ही मन यह सब बातें सोच रहा था, तब तक उधर हुंसुरी का एक दौर खत्म हो चुका था और युवकगण बिहू गीत गाना शुरू कर चुके थे। ढोल, खोल, ताल और भैंसे के सींग से बनाए एक पेंपा की सम्मिलित आवाज तीव्र गति से ऊंचाई की तरफ बढ़ रही थी। और समय होता तो पेंपा से निकल रहे बिहू गीत के सुर को सुनकर उसके अधेड़ शरीर में भी प्रथम यौवन का उन्माद जाग गया होता, पर आज हुंसुरी की आवाज उसके कानों में कांटे की तरह चुभ रही थी। उसने

सोचा—मानो हुंसुरी नहीं गाई जा रही हो, बल्कि गांव के सारे लोग सुरक्षित दूरी पर खड़े होकर एक साथ उसका मजाक उड़ा रहे हों।

बहुत देर के बाद लंबी और तकलीफदेह खामोशी तोड़ते हुए वह बोला, "सुनती हो ?"

ठीक यही सवाल शिवनाथ से पूछने के लिए शिवनाथ की पत्नी काफी देर से बेचैन थी। पर पति को काफी उत्तेजित जैसा देखकर वह खामोश थी।

"सुन तो रही हूं—" वह बोलीं, "पर माजरा क्या है ? आज हुंसुरी देवेश्वर के घर से शुरू हुई है। पहले जैसे मनपुर के मौजादार को मिला था, क्या हमारे देवेश्वर को भी राय साहब का खिताब मिल गया है ?"

गौरीनाथ कहीं घूमने के लिए चला गया था, उसी वक्त वह भी लौटकर आंगन पहुंचा। मां की आधी बात सुनकर उसने आवाज लगाई, "किसे राय साहब का खिताब मिलने की बात मां कह रही है ? वैसे खिताब तो अंग्रेजों के साथ ही चले गए। आजकल हमारी स्वाधीन सरकार राय साहब, राय बहादुर—यह सब खिताब नहीं देती।"

"दूसरों को न दे, पर देवेश्वर को जरूर दिया है"—आवाज में कड़वाहट घोलकर गौरीनाथ की मां बोली, "नहीं तो पुरखों से चली आ रही परंपरा को तोड़कर गांव वाले उसी नासपीटे के घर से हुंसुरी गाने की शुरुआत क्यों करते ?" मां की बात का अर्थ समझने में गौरीनाथ को थोड़ा समय लगा। कुछ देर चुप रहकर उसने हंसकर कहा, "ओह, समझ गया, इस साल हुंसुरी हमारे घर से शुरू न होकर देवेश्वर के घर से शुरू हुई है, इसीलिए तू नाराज हो रही है। पर देवेश्वर के घर से हुंसुरी शुरू होने की वजह उसे राय साहब का खिताब मिलना नहीं है। कल शाम गांव के लोगों ने नामघर में बैठक करके तय किया कि आजकल के जमाने में छोटे-बड़े का भेद करना ठीक नहीं, सभी बराबर हैं, इसीलिए बीच में स्थित हमारे घर से हुंसुरी शुरू न कर गांव के एक सिरे से हुंसुरी शुरू करने का फैसला लिया गया।"

काफी देर की चुप्पी तोड़ते हुए शिवनाथ ने पूछा, "पहले यह प्रस्ताव किसने रखा था ?"

"गोलोक पंडित ने ही पहले प्रस्ताव रखा था। बाद में पता चला कि गांव के नौजवान पहले ही आपस में विचार कर तय करके आए थे।"

शिवनाथ ने फिर पूछा, "इस प्रस्ताव पर गांव के किसी भी आदमी ने एतराज नहीं किया ?"

"किया था।" गौरीनाथ ने जवाब दिया, "भोला बायन ने एतराज किया था। उसने कहा, तीन-चार पीढ़ियों से जनता, गौरीनाथ के पिता के घर से ही हुंसुरी गाने की शुरुआत करती रही है। जब तक वे जीवित हैं, तब तक इस नियम को तोड़ना नहीं चाहिए था। पर नौजवानों ने बायन की बात को स्वीकार नहीं किया। जितना मैं समझ पाया हूं, रेब महाजन ने उन्हें उकसाया था।"

"वह अफीम का व्यापारी ? और गांव के लोगों ने उसी की बात मान ली ?" शिवनाथ की आवाज में अविश्वास, यंत्रणा और व्यंग्य के भाव घुले हुए थे।

गौरीनाथ ने भी व्यंग्यात्मक हंसी के साथ जवाब दिया, "आजकल रेब महाजन को अफीम का व्यापारी कौन कहता है ? आजकल वही गांव का नेता है। मौजा कांग्रेस का अध्यक्ष है। सुना है, कोई रूरल पंचायत बनेगी, उसका अध्यक्ष भी वही होगा। इसके लिए अभी से वह गांव के नौजवानों को दावत दे रहा है।"

"मगर पंचायत के अध्यक्ष पद के लिए केशव मंडल खड़ा होगा, ऐसा सुना था। फिर रेब महाजन का नाम कैसे उछला है ?"

"पिताजी, आप गांव मे रहकर भी गांव की राजनीति से अनजान हैं। मैं छुट्टी में दो दिन के लिए घर आया और सब कुछ समझ गया। आजकल केशव मंडल और रेब महाजन में गहरी छन रही है। पंचायत के चुनाव में खड़ा होने के लिए केशव मंडल के पास पैसे नहीं हैं। दूसरी तरफ, रेब महाजन के पास पैसे तो हैं, मगर समाज में इज्जत नहीं है। इसीलिए दोनों ने मिलकर तय किया है कि इस बार रेब महाजन रूरल पंचायत का अध्यक्ष बनेगा और केशव मडल उपाध्यक्ष बनेगा। पर अगली बार रेब महाजन मंडल के लिए अध्यक्ष पद छोड़ देगा।"

कुछ देर तक आश्चर्यचकित रहने के बाद शिवनाथ बोला, "सरकारी नौकरी छोड़कर देश की आजादी के लिए जेल जाने वाले केशव मंडल ने अब अफीम के व्यापारी रेब महाजन के साथ दोस्ती कर ली ? ज्यादा दिन नहीं हुए, यही रेब मंडल पुलिस का जासूस बना हुआ था और वालंटियरों को गिरफ्तार करवाता रहा था—यह बात मंडल इतनी जल्दी भूल गया ?...मगर, मगर रेब महाजन की ताकत इतनी कैसे हो गई ?"

"पिताजी, समाज में रहने पर समाज की खबर रखनी चाहिए। आप अपने चारों तरफ आभिजात्य की ऊंची दीवार खड़ी कर अपनी दुनिया में अकेले रहते हैं, आपके चारों तरफ हर पल क्या घट रहा है, आप खबर नहीं रखते। आपको जीवन में और भी कई ठेस लगेंगी।...रेब महाजन की ताकत इतनी कैसे हो गई, आप नहीं जानते ? देश आजाद होने के बाद हमारे इलाके के जितने लोग कांग्रेस में शामिल हुए, उनमें रेब महाजन पहला आदमी था। अभी जो आम चुनाव हुआ, उसमें भी हमारे नए एम. एल. ए. विश्व हजारिका के लिए सबसे ज्यादा रुपए रेब महाजन ने खर्च किए। अब क्या रेब महाजन अहसान का बदला नहीं मांगेगा ? अपने मुनाफे की चिंता किए बगैर व्यापारी को रुपए खर्च करते हुए आपने कहीं देखा है ? पिताजी, समाज में आप जैसे लोगों के दिन लद गए, अब रेब महाजन का जमाना आ रहा है।" कहकर गौरीनाथ भीतर चला गया।

कुछ देर तक शिवनाथ स्तब्ध होकर बैठा रहा। इस बीच हुंसुरी गानेवाले देवेश्वर के घर से निकलकर भद्रकांत के आंगन में हुंसुरी गाना शुरू कर चुके हैं। अंधेरे में

पत्नी की तरफ देखते हुए शिवनाथ ने गंभीर स्वर में कहा, ''भीतर चलो। हुंसुरी गाने वाले आएंगे तब हमारे घर से कोई नहीं निकलेगा। मंझले, मुन्नी और छोटे से भी सो जाने के लिए कह दो। एक रुपए के साथ तांबूल-पान का पात्र नकुल को दे दो, और उससे कह दो, हुंसुरी गाने वालों का स्वागत कर वही विदा भी कर देगा।'' शिवनाथ भीतर जाने के लिए खड़ा हो गया।

बैठी हुई पत्नी हिचकिचाई, ''ऐसा करना ठीक रहेगा क्या ? नौकर के जरिए हुंसुरी को विदा करने पर लोग मानेंगे ? शोरगुल मचाएंगे।''

''शोरगुल होने के लिए बचा ही क्या है ?'' शिवनाथ ने लगभग गरजते हुए कहा, ''जिस समाज में रेब महाजन ही नेता हो, उस समाज के साथ मेरा कोई संबंध नहीं है। भीतर चलकर चुपचाप सो जाओ।''

5

निचली तरफ के सारे घरों में हुंसुरी गाने के बाद आखिरकार वह दल शिवनाथ के आंगन में पहुंचा। शिवनाथ बिस्तर पर लेट गया, मगर आंखों में नींद नहीं थी। कान खड़े कर वह चुपचाप पड़ा हुआ है, पास ही दूसरे बिस्तर पर पत्नी करवटें बदल रही है। दोनों जैसे चुपचाप जागते हुए एक भयंकर मुसीबत की राह देख रहे हैं। बाहर आंगन में हुंसुरी दल ने पदघोषा गाकर खत्म किया और बिहू गीत शुरू करने से पहले कुछ देर खामोश रहा।

शायद नकुल बरामदे में खड़ा था। किसी ने उससे पूछा था, ''अरे नकुल, तुम्हारे घर के लोग आज नहीं हैं क्या ?''

नकुल भी शिवनाथ के मन की बात अब तक समझ चुका है, इसीलिए उसने अपने मालिक की अनुभूति को प्रतिध्वनित करते हुए शुष्क आवाज में जवाब दिया, ''रहेंगे क्यों नहीं ? सोने का वक्त है, इसीलिए सो रहे हैं।''

किसी दूसरे ने कहा, ''सो रहे हैं, समझ गया। पर हुंसुरी की तेज आवाज सुनकर भी उनकी नींद नहीं टूटी क्या ?''

नकुल ने इस सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। कोई और कुछ कहने लगा था, मगर बिहू के नशे में उतावले हो चुके नौजवान इन बातों में वक्त बर्बाद किए बगैर समवेत स्वर में बिहू गीत गाने लगे, और ढोल-मंजीरे की आवाज में सारी बातें दब गईं।

युवाओं का दल बिहू के जोश में भले ही बौराया हुआ था, मगर हुंसुरी के बुजुर्ग सदस्यों ने इस बात को सहजता से नहीं लिया। मान लिया जाए, घर के बड़े सदस्य नींद की वजह से बिस्तर पर सो रहे हैं (हालांकि ऐसी घटना कभी नहीं घटी),

पर छोटे बच्चों को तो अब तक बाहर निकलना चाहिए था। हुंसुरी दल आंगन में पहुंचकर पहली बार ढोल पर थाप मारे और बच्चे बिस्तर से कूदकर बाहर न निकलें—ऐसी घटना आज तक कहीं नहीं घटी। वे लोग आपस में फुसफुसाकर कुछ कहने लगे। तब तक युवाओं का बिहू गीत खत्म हो चुका था। तब भी शिवनाथ के घर से किसी को बाहर निकलते न देख युवक चिंतित हो उठे।

एक युवक फिर बिहू गीत गाना शुरू कर रहा था, तभी दूसरे युवक ने उसे मना किया "अरे चुप रह। क्या एक ही घर में बिहू गाकर रात खत्म कर देने से काम चलेगा ? कहिए बायन दादा, अब क्या करें ? बड़े आदमी का दर्शन पाने के लिए यहीं बैठे रहेंगे या दूसरे घरों में भी जाएंगे ?"

"भाइयो, आशीर्वाद देने के लिए अब बैठना पड़ेगा।"

आपस में बतिया रहे लोगों ने घूमकर आश्चर्य के साथ देखा, तांबूल-पान का पात्र थामे हुंसुरी का आशीर्वाद लेने के लिए घुटनो के बल नकुल झुका था। शिवनाथ का नौकर नकुल। कुछ देर तक किसी के मुंह से कोई आवाज नहीं निकली। सभी आश्चर्य और अविश्वास के साथ उसकी तरफ देख रहे थे। फिर पके बांस की गांठ फटने की तरह लोगों के बीच से कुछ सुनाई पड़ा। उसी बीच एक युवक गुस्से से चीख उठा, "देखा, देखा, सालाना बिहू के दिन अब नौकर के हाथों गांव की हुंसुरी पार्टी को विदा किया जा रहा है। भाइयो, मैं अभी आप लोगों से कह देता हूं—बड़े आदमी का यह बड़ा अहंकार हमें तोड़ना पड़ेगा, नहीं तो हम नौजवान आप लोगों को छोड़ेगे नहीं। उफ, इतनी हिम्मत !"

दूसरा युवक बोला, "हाथोंहाथ इस बात का फैसला हो जाना चाहिए। बाद में सोचने की कोई जरूरत नहीं। इन लोगों का आज से हम लोग बहिष्कार करेंगे, जनता यह बात यहीं कह दे।"

युवकों के पीछे अंधेरे में भोला बायन अकेले खड़ा था। शिवनाथ द्वारा हुंसुरी पार्टी का अपमान और उसके बाद सजा के तौर पर उसके बहिष्कार की बात भोला बायन के जीवन की एक बड़ी घटना थी, मोहधूलि के इतिहास में ऐसी घटना शायद ही घटी हो। गुस्सैल युवकों ने बात को जितना मामूली समझ लिया है, भोला बायन उसे इतनी सहजता से मामूली नहीं समझ पा रहा। भूकंप का पहला हल्का झटका महसूस कर उसके बाद के झटके के लिए सतर्क और भयभीत आदमी की तरह भोला बायन कुछ देर ठिठका रहा। फिर उसने कमजोर स्वर में कहा, "चलो लड़को, अभी चलो। जो करना होगा, कल नामघर में जनता जुटकर तय करेगी।"

शिवनाथ, गौरीनाथ, शिवनाथ की पत्नी—सभी ने अपने-अपने बिस्तर पर जागते हुए सुना—उनके आंगन से निकलते हुए हुंसुरी दल के नौजवान उनके बारे में अश्लील और गंदी भाषा में कुछ ऐसी टिप्पणी कर रहे हैं—जिसे सुनने की उन्होंने जीवन में कभी कल्पना भी नहीं की थी। गांव के नौजवानों के दिल में उनके प्रति कितनी

जबर्दस्त घृणा है–पहली बार शिवनाथ एवं उसके परिवार को अहसास हुआ। सभी ने मन ही मन महसूस किया–आज की रात के साथ ही उनके परिवार के इतिहास का एक युग खत्म हो गया, इसके बाद कुछ भी पहले जैसा रह नहीं पाएगा।

6

घर के बरामदे में जिस निर्धारित जगह पर जिस कुर्सी पर शिवनाथ हमेशा बैठता है, बैठे-बैठे रास्ते से गुजरते लोगों को देखता है, कभी झुंड बनाकर घोंसले की तरफ लौटते हुए कौए-बगुलों को देखता है, कभी अनंत में दृष्टि गड़ा देता है–ठीक उसी कुर्सी पर वह उस दिन भी शाम के वक्त बैठा था। उस दिन उसकी नजर राहगीर, पंछी, अनंत–किसी चीज पर टिकी नहीं थी, उस दिन उसकी दृष्टि अपने हृदय पर ही टिकी हुई थी।

"दादा, क्या कर रहे हैं ?"

शिवनाथ लगभग चौंक पड़ा। नींद से हड़बड़ाकर जागनेवाले मनुष्य की तरह सिर उठाकर उसने देखा–पीले और गंदे दांत निपोड़कर उसके सामने विनोद खड़ा है। उसे देखकर शिवनाथ को आश्चर्य हुआ। उसे पता है कि शिवनाथ उसे नापसंद करता है। उससे बुरी तरह नफरत करता है। इसीलिए हमेशा वह शिवनाथ की नजरों से बचता रहा है। बहुत दिन हुए–शायद एक साल से भी ज्यादा हुआ–उसने उसे करीब से देखा नही था। आखिरी बार वह शायद बंटाई के लिए खेत मांगने आया था। उसने जवाब दिया था कि भले ही खेत परती रह जाए, फिर भी वह उसे बंटाई करने के लिए खेत नहीं देनेवाला है। वह विनोद फिर कभी उसके घर की तरफ आएगा, शिवनाथ सोच भी नहीं सकता था। शुष्क स्वर में उसने पूछा, "अरे विनोद तू, क्यों आया है ?"

पास ही बेंच पर बैठकर विनोद जोर से हस पड़ा। कोई भी बात कहने से पहले विचित्र हंसी हंसने की उसे आदत है। ऊपरी दांत की पंक्ति में से सामने के दो दांत हिल रहे हैं, वह मुंह खोलकर हंसता है तो दांत नाचने लगते हैं। यह दृश्य देखकर शिवनाथ को इतना बुरा लगा कि वह विनोद की तरफ से मुंह फेरकर दूसरी तरफ देखने लगा। हंसना बंदकर विनोद बोला, "दादा, मैं पहले ही जानता था, कोई भला आदमी इन लुच्चों, लफंगों के साथ कैसे रह सकता है ? जो भी हुआ, अच्छा ही हुआ, दादा ! आप जरा भी अफसोस नहीं कीजिएगा। इन पांखडियों के साथ रहने की जगह अकेला रहना हजार गुना बेहतर है।" शिवनाथ को पहले विनोद की बातें पहेली जैसी लगीं। बेसिर-पैर की बातें। पागल की तरह यह क्या बक रहा है? पर पहेली को समझने में उसे अधिक समय नहीं लगा। वह फौरन समझ गया कि

आज नामघर में लोगों ने सभा की थी और सभा में उसके बहिष्कार का निर्णय पक्का हो चुका है। हंसते हुए उसे यह समाचार देने के लिए एक साल बाद उसके घर विनोद के आने की एक वजह भी है। छह महीनों से लोग विनोद का भी बहिष्कार कर रहे हैं।

आखिरकार विनोद और शिवनाथ एक ही नाव में सवार हैं। विनोद शिवनाथ से चार साल छोटा होगा। बारह साल की उम्र में ही उसके सिर से बाप का साया उठ गया था, और विधवा मां की इकलौती औलाद होने के नाते घर चलाने और खेती करने की जिम्मेवारी उसके कंधों पर आ गई थी। बचपन से ही उसके शरीर में असुरों जैसी ताकत थी और स्वभाव भी असुरों जैसा ही था। वह जिधर भी जाता, किसी न किसी को छेड़कर जानबूझकर झगड़ा मोल लिए बगैर उसके मन को शांति नहीं मिलती थी। किसी से झगड़ा नहीं कर पाने पर वह मां के साथ ही झगडा शुरू कर देता और हाथ में जो भी चीज आ जाती, उसी से मा को पीटना शुरू कर देता था। संसार में वह किसी से डरता नहीं, न ही किसी के प्रति उसके मन में श्रद्धा है। नदी के उस पार घने जंगल में बाघ के डर से लोग दिन में जाते हुए भी डरते है, उस जंगल में खेती करते हुए वह रातें भी अकेले गुजार देता है। जब वह जवान हुआ तो गांव की जवान लड़कियो के लिए आतंक का पर्याय बन गया। रास्ते से कोई अकेली लड़की जा रही हो या लड़कियो का झुंड जा रहा हो—वह अश्लील वातें कहकर उन्हें छेड़ना अपना कर्तव्य समझता था। नदी के घाट पर अकेली नहाती लड़की या खेत मे अकेली लडकी को धान काटती देखकर वह उसके कपड़े खींचतान करता ही था। ऐसा नहीं कि लड़कियों के भाई उसकी पिटाई नहीं करते थे, पर वह जितनी मार खाता था, उससे दोगुना वह दूसरे को भी पीट डालता था। एक ऐसे आदमी की संगत किसी को भी पसंद नहीं होना स्वाभाविक बात थी। पर विनोद के भीतर कुछ ऐसी खूबियां थीं, जिनकी वजह से वह गाव में लोकप्रिय था।

पहली खूबी थी उसकी अभिनय प्रतिभा। खेत में बैठकर वह भावना के पद सुर के साथ गाता रहता था। एक दिन भोला बायन ने उसे गाते सुना तो मुग्ध हो उठा। उसी महीने गांव में आयोजित होने वाले भावना कार्यक्रम के लिए उसने विनोद को नामघर में बुलाकर एक महिला का साधारण किरदार निभाने के लिए कहा। तब विनोद सोलह साल का था। शानदार अभिनय कर उसने उस दिन गाव के लोगों का दिल जीत लिया। उसके बाद गांव के भावना कार्यक्रमों में रुक्मिणी, द्रौपदी, सीता, पार्वती आदि प्रमुख स्त्री भूमिकाओं में विनोद अभिनय करता रहा। आठ सालों तक गांव के रंगमंच पर प्रमुख नायिका का अभिनय करते रहने के बाद उसने नारी की भूमिका निभानी बंद कर दी। फिर उसके अभिनय जीवन का दूसरा अध्याय शुरू हुआ। भीम, वृत्रासुर, श्रीरामचंद्र, कार्तवीर्यार्जुन, कर्ण आदि की भूमिकाएं वह निभाने लगा। विनोद के दुश्मन भी इस बात को मानते थे कि वैसा कलाकार

पहले कभी मोहधूलि में पैदा नहीं हुआ था। भविष्य में भी शायद ही पैदा होगा। श्रीरामचंद्र की भूमिका में विनोद जब सीता के विरह में व्याकुल होकर विलाप करना शुरू करता या कर्ण की भूमिका में ऊंचे स्वर में वीरतापूर्ण पदों को गाना शुरू करता—गांव के लड़के-बूढ़े, औरत-मर्द सबके सब आश्चर्य के साथ अभिभूत हो जाते—गुरु भगवान को न माननेवाला यह असुर जैसा आदमी उनकी आंखों के सामने कैसे एक अलग आदमी बन जाता था ! हृदय के किस अदृश्य उत्स से उसकी आवाज में वैसी करुणा भर जाती, प्रचंड वीरता का भाव भर जाता ? असली विनोद को पूरी तरह भूलकर लोग भावना के प्रेमी विनोद को, वीर विनोद को अपने दिल में गहरे आवेग के साथ बिठा लेते थे।

विनोद की दूसरी खूबी थी उसका मजाकिया स्वभाव। बात-बात पर झगड़ा करना जिस आदमी की आदत हो, मारपीट करते समय जो पशु की तरह हिंसक हो जाता था, वह स्वाभाविक स्थिति में मजाक के बगैर कोई बात नहीं कहता था। उसका मुंह खुलते ही लोगों का हंसते-हंसते बुरा हाल हो जाता था। एक ही आदमी के स्वभाव में ऐसा विरोधाभास कम ही दिखाई देता है।

विनोद बीस साल का भी नहीं हुआ था तभी पास के गांव की एक लड़की को भगाकर ले आया था। अपना परिवार बसने पर विनोद ने मनोरंजन के लिए एक नया खेल शुरू किया। वह खेल था, पत्नी के ऊपर पाशविक अत्याचार। औरत को पिटाई का हकदार माननेवाले गांव के अधिकतर लोग किसी भी वजह से पत्नी के ऊपर वीरता जाहिर किए बिना नहीं रहते। बीच-बीच में पति का थप्पड़-घूंसा या लात का वार नहीं झेलनेवाली एक भी औरत गांव में नहीं मिलेगी। जो मर्द साल में एक बार भी अपनी पत्नी को नहीं पीटता, उस मर्द को दूसरी औरतें 'बीवी का गुलाम', 'बीवी का नौकर' आदि विशेषणों से पुकार कर मजाक उड़ाती थीं। पर विनोद का मामला बिल्कुल अलग था। पत्नी को पीटने के लिए उसे किसी कारण की जरूरत नहीं पड़ती थी। कुछ लोग जैसे यूं ही बैठे-बैठे ऊब जाने पर कीर्तन गाना या भावना का पद गाना शुरू कर देते हैं या कुदाल लेकर आसपास का जंगल साफ करना शुरू कर देते हैं, विनोद भी साल भर पुरानी किसी बात का आरोप लगाकर पत्नी को पीटना शुरू कर देता है। पिटाई भी मामूली थप्पड़-घूंसे तक सीमित नहीं रहती, अच्छी तरह हथियार का इंतजाम कर ठीक से सोच-विचारकर पत्नी के शरीर के अंगों को लक्ष्य बनाकर आधे घंटे तक वह पीटने का क्रम जारी रखता है। पत्नी यंत्रणा से अधमरी हो जाए या चीख-चीखकर आसमान सिर पर उठा ले, फिर भी उसके चेहरे का भाव जरा भी नहीं बदलता, न ही पिटाई की रफ्तार कम होती है। महीने में कोई ऐसा दिन नहीं गुजरता जिस दिन किसी न किसी बहाने वह पत्नी के ऊपर पाशविक अत्याचार न करता हो। पत्नी को पीट-पीटकर अधमरा कर वह बाजार की तरफ चला जाता, जहां किसी के साथ हंसी-मजाक शुरू कर देता। पिटाई के

कारण उसकी पत्नी कई बार भागकर मैके जा चुकी थी, पर हरेक बार वह श्वसुर के पैर पकड़कर या पुलिस को बुलाने की धौंस जमाकर पत्नी को वापस बुला लाता था। इस तरह लाने पर वह दो दिनों तक पत्नी के शरीर को हाथ नही लगाता था। पड़ोसी यह सोचकर कि शायद अब यह अभागी औरत पिट-पिटकर मरने से बच जाएगी, सभी राहत की सांस लेते थे। पर दो दिन गुजरते ही विनोद का पाशविक अत्याचार और उसकी पत्नी की करुण चीख-पुकार का सिलसिला फिर शुरू हो जाता था। बाद में लोगों ने मान लिया कि पूर्व-जन्म के पापो का फल उस औरत को मिल रहा है और लोगों ने उसके बारे में सोचना छोड़ दिया।

पत्नी के साथ अत्याचार विनोद का एकमात्र खेल था, यह बात भी नहीं थी। कम उम्र में विनोद जिस तरह किसी को भी छेड़कर झगड़ा करके खुश होता था, बड़ा होने पर उसी तरह वह पूरे समाज को छेड़ने लगा। एक दिन नामघर के वार्षिक समारोह के लिए गांव के लोग उससे चंदा मागने आए। उसने जली-कटी सुनाकर लोगों को चंदा दिए बगैर ही खदेड दिया। उसी दिन लोगो ने सभा करके उसका ब्रहिष्कार क्रर दिया। दो महीने तक अलग-थलग रहने के बाद आख़िरकार एक दिन वह तांबूल-पान का पात्र हाथ में लेकर जनता के सामने घुटनों के बल झुक गया, समाज ने उसे स्वीकार कर लिया। छह महीने शांतिपूर्वक गुजारे। फिर उसके सिर पर न जाने क्या भूत सवार हुआ, एक दिन भावना का अभ्यास करते समय किसी से विवाद होने पर नामघर से भागवत को लात मार फेंक देने की धमकी देकर वह चला गया। फिर उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। इस तरह कोई भी साल ऐसा नहीं गुजरता था जिस साल किसी न किसी कारणवश उसे समाज से बहिष्कृत न होना पड़े। जितने दिनों तक वह समाज से बहिष्कृत रहता, गांव वाले उससे ठीक से बात नही करते, उस दौरान वह पत्नी पर अत्याचार तेज कर देता था। घर से झगड़ा कर बाहर निकलकर कहीं ढेर सारी दारू पीकर जंगल के बीच भावना के पद या कीर्तन के बोल गाते-गाते सो जाता था। अकेलापन जब बर्दाश्त नहीं कर पाता तब समाज में वापस लौट जाता था। जो बच्चे बहुत दुलारे होते हैं, वे मां के प्यार की परीक्षा लेने के लिए जैसे तरह-तरह की शरारतें करके मां को परेशान करते रहते हैं और मां से जितनी फटकार या पिटाई बदले में उसे मिलती है, उतनी ही उनकी शरारतें और बढ़ जाती हैं, विनोद भी ठीक उसी तरह मानो समाज के प्यार की परीक्षा लेने के लिए मान-अभिमान का खेल खेलता रहता है। पर उसकी उन अनुभूतियों को समझने लायक क्षमता समाज नामक जड़ वस्तु के पास नहीं है, उसे समझने की जरूरत भी नहीं है। समाज की नजरों में वह एक विकृत दिमाग वाला पागल है या दुष्ट प्रवृत्ति का दुराचारी व्यक्ति है।

पिछले छह महीनों से विनोद फिर बहिष्कृत होकर रह रहा है। इस बार उसके बहिष्कृत होने की वजह कुछ अलग थी। फजलअली नामक एक मुसलमान युवक

ने शहर से लौटकर मोहधूलि में पान-तांबूल की एक दुकान खोली है। मगर दिन के उजाले में ही वह पान-तांबूल बेचता है, रात होते ही अवैध शराब बेचता है। शुरू से ही विनोद के साथ उसकी गहरी दोस्ती रही है। एक दिन गांव के कुछ युवकों ने चारों तरफ प्रचारित किया कि उन्होंने विनोद को फजल के घर में उसके द्वारा बनाए गए मुर्गी के गोश्त के साथ शराब पीते हुए देखा है। इस किस्म की बात का अंदाजा गाव के लोग काफी दिनों से लगा रहे थे, मगर सबूत न होने या स्पष्ट रूप से किसी के द्वारा आरोप न लगाए जाने के कारण चुप बैठे थे। पर कुछ लोगों ने जब प्रत्यक्षदर्शी होने का दावा किया, तब मामले की उपेक्षा करना मुश्किल हो गया। वैसे यह बात भी सच है कि फजल की दुकान में शराब न पीने वाला गांव में एक भी लड़का नहीं है। शहर के साथ मोहधूलि को जोड़ने वाली लोकल बोर्ड की सड़क की मरम्मत कर सरकारी लोक निर्माण विभाग ने उसकी दशा सुधारी (मोहधूलि की जनता को स्वधीनता का पहला उपहार), तभी शहर से एक-दो व्यापारी मोहधूलि में आकर दुकान खोलने लगे। सैकड़ों साल पुराने पीपल और बरगद के पेड़ों के नीचे जहां गांव का साप्ताहिक हाट लगता था, शाम होते ही जो जगह कृष्णपक्ष के अंधेरे मे डूब जाती थी और शुक्लपक्ष में पत्तों से छनकर आती चांदनी रहस्यमयी लगती थी, जमुनीया महाजन की दुकान के बरामदे में लटकी लालटेन की धुंधली रोशनी के सिवा जहां कोई रोशनी दिखाई नहीं पड़ती थी, वह जगह अचानक एक दिन पैट्रोमेक्स की तेज रोशनी से नहा उठी। पहले एक चाय की दुकान बनी। उसके बाद पान की दुकान, फिर एक और पान की दुकान, फिर मनिहारी की दुकान...

एक-एक कर पैट्रोमेक्स की संख्या भी बढ़ती चली गई। पैट्रोमेक्स की रोशनी से सिर्फ अंधेरा ही दूर नहीं हुआ, उसके साथ ही जैसे मोहधूलि गांव की सदियों पुरानी जीवनधारा भी कहीं चली गई। इस पैट्रोमेक्स क्रांति से पहले बाजार की जगह का उपयोग गांववासी खास उद्देश्यों के लिए करते थे। गर्मी के दिनों में गांव के मर्द हवाखोरी करने के लिए शाम के वक्त वहां आते थे और बरगद की जड़ पर बैठकर कंधे पर रखे गमछे से मच्छर और गर्मी से बचाव करते हुए अतीत की स्मृतियां दुहारते हुए गांव की खेती, शादी, सुख-दुख आदि विभिन्न विषयों पर बात करते थे। बातचीत खत्म होने पर बुजुर्ग पास ही स्थित नामघर में जाकर नाम-कीर्तन करते थे, नौजवान किसी दुकान में बैठकर ट्वेंटी-नाइन खेलते थे। संगीत में रुचि रखने वाले और रंगमंच से जुड़े नौजवान गांव के संगीत शिक्षक एवं साईकिल दुकानदार मुहीराम की दुकान में बैठकर देर रात तक साधना करते थे। और कुछ लोग गांव में कई पुश्तों से चल रहे गोला जमुनीया महाजन की दुकान में जमा होते थे। दिन भर खेत-खलिहान में काम कर शाम के वक्त लोग जमुनीया की दुकान से तेल खरीदने के लिए आते थे और उसी बहाने महाजन से मुफ्त में मिली बंदर छाप बीड़ी पीकर दिन की थकान दूर करते थे, साथ ही अपना हिसाब भी समझ लेते थे।

गांव के अधिकतर लोग खेती करके समय-समय पर महाजन को धान, दाल, सरसों दे देते हैं और साल भर उससे रोजमर्रा की जरूरत की चीजें लेते हैं। मगर जब से शहर से व्यापारी आकर बस गए हैं, तब से सारा सिलसिला ही बदल गया है। सिर्फ पैट्रोमेक्स की आंखें चुंधियाने वाली रोशनी ने ही पेड़ के नीचे बैठकर गप्पें हांकने वाले लोगों को खदेड़ दिया हो, यह बात नहीं, शहर से आए व्यापारियों ने जब चाय और पान की दुकानें खोलीं तो उनके साथ ही अवैध शराब की दुकान भी खुल गई। गांव के युवकों ने धीरे-धीरे शराब पीनी शुरू कर दी। शराब पीनेवालों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती ही गई। इसके साथ ही जुए का खेल भी शुरू हो गया। जहां शराब और जुआ एक साथ हों, वहां बीच-बीच में झगड़ा होना स्वाभाविक बात है। इसी बीच एक-दो दुकानदारों ने शहरी माहौल तैयार करने के लिए एंप्लीफायर वाला रेडियो बजाना शुरू कर दिया। देखते-देखते घने अंधेरे में डूबी रहने वाली जगह पैट्रोमेक्स की रोशनी में नहाने लगी। हमेशा शांत रहने वाली जगह शराबियों, जुआरियों और हिन्दी गानों के विकट शोर-शराबे का केंद्र बन गई। अलादीन के जादुई चिराग घिसने से जैसे रातोंरात मोहधूलि के बीच एक लघु शहर उग आया, जिसका मायावी आकर्षण गांव के युवाओ को अपनी तरफ तेजी से खींचने लगा। शाम होते ही युवकों ने घर में रहना छोड़ दिया। बाप-दादाओं के जमाने की पोशाक फेंककर वे पतलून और कमीज पहनकर इस नवीन शहर रूपी मोहिनी का दिल जीतने के लिए सड़क पर टहलने लगे। उनके रवैए के कारण गांव के बुजुर्गों ने पेड़ के नीचे सुस्ताने की आदत ही नहीं छोड़ी, बल्कि उस तरफ भूलकर आना भी छोड़ दिया। और तो और, उनके लिए नामघर में बैठकर कुछ देर कीर्तन करना भी दुश्वार हो गया, चूकि नामघर के भोरताल की आवाज भी शराबियों की चीख और रेडियो पर बज रहे हिन्दी फिल्मी गीतों के भीषण शोर में दबने लगी।

यह सब कुछ काफी सामान्य रूप से शुरू होकर धीरे-धीरे बढ़ता गया हो, यह बात भी नहीं। जब तक गाव वाले समझ पाएं कि क्या हो रहा है, तब तक सब कुछ तेजी से बदल गया। ग्रामीण समाज ने जैसे चारों तरफ सदियों पुराने परंपरागत विश्वास, आदर्श और अनुशासन का ऊंचा बांध बनाकर रखा था जो अब तक तमाम दुष्प्रभावों को फैलने से रोकता था। मगर अचानक एक दिन उस बाध का एक हिस्सा ढह गया और पलक झपकते ही नए युग की अपरिचित जीवनधारा प्रचंड बाढ़ बनकर भीतर चली आई और चारों तरफ फैल गई। असहाय दर्शक की तरह देखते रहने के सिवा कुछ करने के लिए गांववासियों के पास न समय था, न कोई रास्ता ही था।

गांव के नौजवान जात-पात का ख्याल न कर जहां-तहां शराब पीकर उत्पात करें, यह दूसरी बात है; पर विनोद जैसा उम्रदराज आदमी वैसा करे, यह अलग बात है। दुष्ट हो या पागल ही क्यों न हो, अब वह तीन-चार बच्चों का बाप है, एक

जिम्मेदार आदमी है। गांव की भावना का मुख्य चरित्र आज भी वही निभाता है। वैसी स्थिति में फजल के घर में उसने फजल के बर्तन में भूनी गई मुर्गी का गोश्त शराब के साथ खाया और इस बात के लिए उसे कोई सजा न मिले तो गांव के समाज की जो भी प्रतिष्ठा बची हुई है, वह खत्म हो जाएगी। गांव के लोगों ने उसे बुलाकर आरोप के संबंध में उससे कैफियत मांगी। वह बौराया इंसान भले ही है, मगर लोग मामले को ज्यादा तूल नहीं देते तो वह चुप रह गया होता। आत्मपीड़ा की भीषण यंत्रणा का शिकार विनोद कह उठा, "खाया तो खाया, क्या बिगड़ गया ? तेरे बेटे फजल का बर्तन चाटकर घर लौटते हैं और तेरे साथ भात खाते हैं तब कोई पाप नहीं होता। फजल के घर में मैंने खाया तो गुनाह हो गया, है न ? पहले अपने बेटों से प्रायश्चित करवाकर अपना उद्धार कर, फिर मुझसे सवाल करना।"

एक बार फिर विनोद समाज से बहिष्कृत हो गया।

गदे और पीले दात निपोड़कर विनोद कुछ देर शिवनाथ के चेहरे की तरफ देखता रहा। शिवनाथ को भीतर ही भीतर काफी गुस्सा आ रहा था, पर चेहरे पर गुस्से का भाव जाहिर किए बगैर वह स्थिर और शांत दृष्टि से विनोद की आंखों की तरफ देख रहा था। धीरे-धीरे विनोद के चेहरे से हंसी का भाव गायब हो गया। वह कुछ झेंप गया और इधर-उधर देखने लगा।

विनोद की पहले की बात की उपेक्षा कर शिवनाथ ने पूछा, "किसी खास काम से आया था क्या ?" विनोद के जवाब की प्रतीक्षा किए बगैर उसने तेजी से कहा, "अगर खास काम से आया हो तो फिर दूसरे दिन आना। आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है। बात नहीं कर सकूंगा।"

विनोद के जाने के बाद उसके सामने असली समस्या खड़ी हो गई। मोहधूलि गांव के लोग शिवनाथ का बहिष्कार करेंगे—यह बात आज से पांच या दस साल पहले क्या कोई सपने में भी सोच सकता था ? शिवनाथ का परिवार गाव के समाज की रीढ की हड्डी की तरह रहा है। गांव के अधिकतर लोग दो-तीन पीढ़ी पहले शिवनाथ के परिवार के नौकर-चाकर, हलवाहे-चरवाहे की संतान के रूप में जाने जाते हे, आज भी गांव के आधे लोग उसके खेत में बंटाई करते हैं। कल तक जो आदमी गांव का मुखिया था, नामघर के कार्यक्रम में वह जाए या न जाए, प्रसाद का पहला भाग उसी के हिस्से का होता था—उस आदमी को एक मामूली-सी बात के लिए लोगों ने बहिष्कृत कर दिया ?

शिवनाथ इस बात पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। उसे लगा जैसे वह कोई बुरा सपना देख रहा हो। पर यह सब सोचकर खुद को झूठी दिलासा देने से कोई फायदा नहीं होगा। कल रात हुंसुरी दल को अपने आंगन में धमकी देकर जाते हुए उसने स्वयं सुना था। उसके बाद आज विनोद, यह समाचार सुना गया। आंखें मूंदकर शिवनाथ नए सिरे से समूची घटना के बारे में शरू से अंत तक सोचने लगा। काफी

देर बाद उसने महसूस किया कि समाज में एक नई किस्म की हवा बह रही है। छोटे-बड़े का भेद खत्मकर सभी बराबर बनने की कोशिश कर रहे हैं। उसके घर से हुंसुरी गायन की शुरुआत करने की जो पुरखों से चली आ रही परंपरा थी, पहली बार उस परंपरा को तोड़कर नौजवान उसे सतर्क कर गए हैं। विरोध करने का दंड भी उसे हाथोंहाथ मिल गया, एक ही झटके में गांव की नई शक्ति ने उसे बहिष्कृत कर दिया। इसके बाद वह क्या करेगा ? जब आंधी आती है तब घास झुककर उधर मुड़ जाती है जिधर आंधी बढ़ती है, इस तरह घास का कोई नुकसान नहीं होता। मगर बड़े-बड़े पेड़ आंधी के खिलाफ तनकर खड़े रहने की कोशिश करते हैं, नतीजा यह निकलता है कि आंधी उनकी डालियां तोड़ देती है या जड़ उखाड़कर फेंक देती है। इस छोटी घटना से शिवनाथ अच्छी तरह समझ गया कि यह घटना ईशान दिशा से आने वाली मेघ की घरघराहट ही है, कुछ देर बाद भयंकर आंधी आएगी। वह अगर खुद ही खुद को लघु नहीं बना देता, नम्र होकर झुक नहीं जाता, विशालता के दर्प के साथ उसके खिलाफ सिर उठाएगा तो आंधी उसकी डालियां तहस-नहस कर उसे अपाहिज बनाकर चली जाएगी।

वह अब क्या करेगा ?

जिस आदमी को हमेशा उंचे आसन पर बैठने की आदत हो, वह आदत आसानी से अपने आप नहीं छोड़ी जा सकती। वह आदत बाद में नशे की तरह बन जाती है। गांव के समाज से शिवनाथ के परिवार को बहिष्कृत किए हुए सात दिन गुजर गए, इन सात दिनों तक शिवनाथ बैठे-बैठे एक ही बात सोचता रहा है। बाहर से उसके चेहरे का भाव शांत और निर्विकार नजर आता है, पर उसकी पत्नी अच्छी तरह समझ रही है कि यह घटना उसके हृदय में नश्तर की तरह चुभ रही है। क्या करे, न करे—यही चिंता उसे भीतर ही भीतर खाए जा रही है। तर्क के आधार पर विचार कर शिवनाथ समझ गया कि समाज में बड़े-छोटे का कोई भेद नहीं होना चाहिए—ऐसा नियम बनाना ही उचित है।

पूरे समाज की तुलना में वह अकेले कभी बड़ा नही हो सकता। वह सब सोचते-सोचते कभी-कभी वह अतीत की यादों में डूब जाता है। उसे याद आता है—जवानी की शुरुआत में बंगला भाषा में रचित योगींद्र रचनावली में बिशप विल्वरफोस हंपडेन आदि मानव मुक्ति योद्धाओं की जीवनी पढ़कर किस तरह उसके भीतर साम्य, मुक्ति और भाईचारे का आदर्श पनपा था, फ्रांसीसी क्राति के इतिहास ने किस तरह उसके भीतर एक महाकाव्यिक आवेग पैदा कर दिया था, अपने प्रिय कवि चंद्रकुमार अग्रवाल की कविता पढ़कर वह किस तरह ऊंच-नीच के भेद से परे एक आदर्श मानव समाज की महान कल्पना से अभिभूत हो उठा था :

उंगली हिला सकता तो आज खींच दिया होता
हिमालय शिखर को डुबाया होता काले पानी में,

आकाश से लाखों सितारे नोच डालता
चांद सूरज ग्रह फेंक चुका होता एक-एक कर।
पाप की धरती सागर के नीचे डुबाई होती,
ब्रह्मांड की पहचान के नाम पर बचता सिर्फ समुद्र का जल
मान-अपमान पृथ्वी से नष्ट हो जाएं
नव सृजन की अरुण किरण सबको करे पवित्र।

पर किताब में जिस आदर्श समाज की कल्पना पढ़कर अच्छा लगता है, वही जब हकीकत बन जाता है तो मन मे कड़वाहट का भाव क्यों पैदा होता है ? यह सब सोचते हुए शिवनाथ का सामना इस कड़वे सच से हुआ। समाज में साम्य और मुक्ति की स्थापना हो, उसे इस बात पर कोई आपत्ति नही। पर जैसे उसका मन यह चाहता है कि वह अपने विशेष आसन से जरा भी हिले-डुले नहीं, उसे और उसके बच्चों को खुद हल जोतकर खेती करके पेट भरने का अपमान बर्दाश्त नहीं करना पड़े। समाज अगर यह शर्त मान ले तो समूचे मानव समाज के लिए एक आदर्श और शोषणविहीन समान-व्यवस्था लागू करने में उसे कोई आपत्ति नहीं होगी।

शिवनाथ तर्क के जरिए सारी बातें समझ गया, पर तर्कों से जीवन नहीं चलता। यह सब सोचते-सोचते बीच-बीच में उसे गांव के आवारा लड़कों की फब्तियां और अपने आंगन में दी गई धमकी का स्वर सुनाई देता रहा। उसके खेत में बंटाई के आधार पर फसल न उपजाने से जिन लोगों को दो वक्त का भोजन मिलना दुश्वार हो जाएगा, उसके घर आने पर जिन लोगों को मामूली तख्ते पर बैठना पड़ता है, वैसे कीड़े-मकोड़े सरीखे लोगों की इतनी हिम्मत ? वे लोग उसका बहिष्कार करेंगे ? ठीक है, उनकी औकात ही क्या है, देखा जाएगा। इस बार गांव में बंटाई के लिए खेत लेने वालों की कोई कमी नहीं है। वह अलग-थलग ही रहेगा, मगर इन कीड़े-मकोड़े सरीखे लोगों के सामने सिर नहीं झुकाएगा।

दिन गुजरते गए। एक मानसिक बेचैनी के अलावा बहिष्कृत होकर जीते हुए शिवनाथ के जीवन में कोई बाधा दिखाई नहीं पड़ी। वह गांव के लोगों पर जितना निर्भर करता है, उसके अनुपात में गांव के लोग उस पर ज्यादा निर्भर करते हैं। कुछ दिनों के बाद ही खेती का समय आ जाएगा। तब गांव के आधे लोग उससे बंटाई के लिए खेत मांगने आएंगे। तब वह उन लोगों की हिम्मत देख लेगा। पर दिन गुजरने के साथ ही शिवनाथ ने महसूस किया कि खुद को दिलासा देने के लिए वह भले ही हौसला नहीं खो रहा है, मगर उसका मन धीरे-धीरे कमजोर होता जा रहा है। एक अद्भुत अकेलेपन की अनुभूति उसे चारों तरफ से निगल रही है। इससे पहले भी वह कोई विशेष आवश्यकता न होने पर किसी गांववासी के घर नहीं जाता था। पर न जाने पर भी वह महसूस करता था कि जन्म से लेकर मृत्यु तक गांववासी माला में गुंथे फूलों की तरह आत्मीयता के अटूट धागे में गुंथे हुए हैं, उस माला

का सबसे बड़ा और कीमती फूल वही है, इसके बावजूद वह उस माला का एक अंश ही है। अब अचानक धागा काटकर उसे निकाल फेंका गया। गांव के समाज से बहिष्कृत होकर जीने की यंत्रणा कितनी भयावह हो सकती है, समय गुजरने के साथ ही धीरे-धीरे उसे इस बात का अहसास होने लगा। सुबह-शाम जब वह सड़क से होकर नदी किनारे घूमने जाता है, उम्रदराज लोग उसे देखते ही मुंह फेर लेते हैं या सड़क से नीचे उतर जाते हैं। नौजवान उसे सुनाकर फब्तियां कसते हैं। शाम के वक्त उसके पास सुख-दुख की बातें करने के लिए पहले की तरह कोई आदमी नहीं आता। जैसे-जैसे गांव वालों को उसकी जिद और घमंड बढ़ने का अहसास होता गया, उसी अनुपात में उसके खिलाफ एक मानसिकता भी मजबूत होती गई। किसी की आंखों में देखे बगैर या किसी की फब्ती सुने बगैर शिवनाथ अपनी देह के रोम-रोम में गांव के सारे लोगों की मूक घृणा और शत्रुता का सर्द स्पर्श महसूस करने लगा। इसी बीच देउबर के घर मे एक शादी हुई। गांव के सारे लोग उसके घर में इकट्ठे हुए, सिर्फ शिवनाथ के घर के सारे लोगों ने घर के भीतर चुपचाप बैठे-बैठे पास से आ रहे ढोल-मंजीरे की आवाज सुनीं। विवाह-गीत के बोल सुने, खुशी से शोरगुल मचा रहे बच्चों की आवाजे सुनीं। अकेलेपन के पत्थर की जो दीवार इतने दिनों से उनके इर्द-गिर्द खड़ी हो रही थी, उस दिन जैसे वह पूरी तरह तैयार हो गई। उसके बीच अजीब-सी खामोशी और अंधेरे ने शिवनाथ के कलेजे को हिलाकर रख दिया। समाज का साथ कभी उसके लिए सांस की तरह सहज था। इसीलिए वह उसकी कीमत समझ नहीं पाया था। आज उस साथ से वंचित होकर दम घुट रहे आदमी की तरह वह छटपटा उठा। शिवनाथ ने जीवन में पहली बार महसूस किया कि मानव जीवन में एकाकीपन से बढ़कर दूसरा कोई अभिशाप नहीं।

इस संबंध में शिवनाथ की पत्नी इतने दिनों तक कुछ नहीं बोली थी, पर देउबर के घर में जिस रात शादी हुई, उसी रात उसने पति से कहा, "क्या इस तरह रहा जा सकता है ? आज नहीं तो कल, हमारे घर मे भी शादी होगी ही, तब आप लोगों के बगैर कैसे काम चलाएंगे ? मुझे कुछ हो जाए और आज रात ही मैं मर जाऊं तो आप किसके पास जाएंगे ? जिद छोड़िए। लोगों से मेल करने का कोई उपाय कीजिए।"

पत्नी की बात का शिवनाथ ने कोई जवाब नहीं दिया, पर लगभग रात भर जागकर वह तरह-तरह की बातें सोचता रहा। लोगों के सामने घुटने टेकने का अर्थ होगा उसके अहंकार का चूर-चूर हो जाना। समाज में उसके लिए जो विशेष आसन था, उसे हमेशा के लिए खो बैठना। पर क्या उसका एकमात्र विकल्प एकाकीपन और निर्वासन नहीं है ? और जिसे वह विशेष आसन मानता है, जिसकी बुनियाद कभी समाज के सारे लोगो का स्वतः स्फूर्त भय और श्रद्धा का भाव था, वह आसन आज कितना मजबूत और सुरक्षित रह गया है ? नदी की धारा जैसे भीतर ही भीतर

मिट्टी बहाकर एक दिन किनारा तोड़ देती है, उसी तरह समाज के नए भाव की धारा ने क्या उसके विशेष आसन के नीचे की बुनियाद का धीरे-धीरे कटाव करना शुरू नहीं कर दिया है ? यह सब सोचते हुए शिवनाथ को नींद आ गई। उसने सपना देखा—एक ऊंची जगह पर कुर्सी पर बैठा वह ध्यान से एक किताब पढ़ रहा है—योगवशिष्ठ रामायण। चारों तरफ शांति और सन्नाटा है, तभी उसके पैर के नीचे से अजीब आवाज सुनाई देती है, जब तक वह कुछ समझ पाए, अगले ही पल वह कुर्सी समेत नदी की धारा में डूबने लगता है।

अगले ही दिन शिवनाथ ने नामघर में गांव के लोगों के सामने घुटने टेक दिए।

7

आषाढ़ के तीन दिन बीते हैं। गांव के लोगों को इन दिनों जरा भी फुरसत नहीं। सभी आहू धान बोने में जुटे हैं। गांव के अधिकतर लोगों के पास शाली धान की खेती करने लायक जमीन नहीं है। जो लोग थोड़ा-बहुत शाली धान उपजाते भी हैं, वे शिवनाथ की जमीन बंटाई पर लेकर उपजा पाते हैं। और सबके सब नदी किनारे जंगल साफ कर खेती करते हैं। आहू धान की बुवाई ठीक से न की जाए तो लोग बाद में सिर पीटते हैं। भादो-आश्विन से ही सबके धान के भंडार खाली हो जाएंगे, तब लोग जमुनिया महाजन से माघ-फागुन में सरसों देने का वादा करके धान खरीदने के लिए अग्रिम रुपए लेंगे। इस मौके का फायदा उठाते हुए जमुनिया दस रुपए प्रति मन सरसों का भाव तय करेगा। पर वह उसी सरसों को बीस-तीस रुपए मन के हिसाब से बेचेगा। लोग सरसों बेचकर ही बदले में मिले रुपए से घर के लिए तेल-नमक, कपड़े, जमीन का कर और बच्चों की पढ़ाई का खर्च जुटाते हैं, पर सरसों का मूल्य धान खरीदने के लिए अग्रिम ले लेने के कारण खर्च हो जाता है और साल भर के लिए लोगों के पास फूटी कौड़ी भी नहीं बचती। तब लोग एक-एक कर गाय-बैल बेचना शुरू कर देंगे। घर के जेवर, थाली-बर्तन एक-एक कर महाजन की दुकान में पहुंच जाएंगे। एक साथ आहू धान की खेती खराब होने पर लोग जिस तरह कर्ज के बोझ तले दब जाते हैं, उससे निजात पाने के लिए चार-पांच साल का समय लग जाता है। वह कर्ज खत्म होते ही नई मुसीबत शुरू हो जाती है। इसी बीच अगर किसी के घर में कोई शादी हो या श्राद्ध हो तब तो कहना ही क्या ! कर्ज के बोझ से उबरने के लिए लोग आशा ही छोड़ देते हैं। आहू धान जब पकने लगता है तब प्रार्थना करते हैं—हे दयामय, इस बार किसी तरह बचा लो प्रभु, हमें आहू धान की कटाई कर लेने दो, फिर मारना हो या काटना हो, कर लेना।

सुबह उठकर शिवनाथ बरामदे में बैठा ही था, तभी उसने गांव के बिहूराम

को तेजी से अपनी तरफ आते हुए देखा। जैसे वह प्राण बचाने के लिए उसके पास आ रहा हो, वैसा आतंक उसके चेहरे से जाहिर हो रहा था। शिवनाथ को आश्चर्य हुआ। सुबह-सुबह इसे क्या हो गया ? शिवनाथ के करीब पहुंचकर बिहूराम ने दो बार तेज सांस लेने के बाद कहा, "दादा, मेरी तो मौत आ गई है, आप दया कर नहीं बचाएंगे तो मैं बरबाद हो जाऊंगा।"

शिवनाथ ने महसूस किया, रुलाई रोकने की कोशिश में उसका गला रुंध रहा है, किसी तरह वह आसुंओं को नियंत्रित कर रहा है। पास ही बेंच पर धम्म से बैठकर बिहूराम तेज सांस लेने लगा।

शिवनाथ ने स्नेहपूर्ण स्वर में पूछा, "तुम्हें क्या हुआ है, बिहूराम ? लगता है, तुम पर कोई मुसीबत आई है, नहीं तो तुम ऐसा हरगिज नहीं करते। क्या बात है, बताओ। मैं जितना कर सकता हूं, तुम्हारी मदद करूंगा।"

शिवनाथ का स्नेहपूर्ण स्वर सुनकर बिहूराम के चेहरे से आतंक का भाव कुछ कम हुआ। सिर पर बंधे गमछे को खोलकर उससे चेहरे का पसीना पोंछकर कुछ स्थिर होकर उसने कहा, "दादा, बड़ी मुसीबत आई है। कल रात भर में पानी इतना बढ़ा कि खेत सागर बन गया है। बाढ़ के साथ खेलते-खेलते आधी उम्र बीत चुकी है, पर देखते-देखते इस तरह पानी का बढ़कर समुद्र जैसा बन जाना कभी नहीं देखा था। कल दिन भर औरत-मर्द मिलकर खाना-पीना छोड़कर हमने कुछ धान की कटाई की। रात पानी बढ़ने की खबर पाकर फिर भोर में ही हमलोग निकल पड़े। सोचा था—कल काटे गए धान को अगर पानी ने बहाया न हो तो वही ले आएं और किसी तरह कुछ धान की कटाई भी कर लें। पर नदी किनारे पहुंचकर देखा—मेरी नाव नहीं थी। या तो रात में पानी बढ़ने के साथ नाव का बंधन टूट गया और वह बहकर चलती गई या गांव का ही कोई आदमी धान काटने के लिए रात में ही नाव लेकर उस पार चला गया। जब सब पर बराबर मुसीबत आई हो तो कौन किसकी तरफ देखता है ?...नदी के घाट पर अभी एक भी नाव नहीं है। इधर हमारी दशा ठीक नहीं। पानी में धान नष्ट हो जाए, इससे पहले कुछ कटाई न कर सके तो साल भर हम क्या खाएंगे ? इस बार धान कितना अच्छा हुआ था, क्या बताऊं, दादा ! वह धान अब मछलियां खा रही हैं। सिर पीटते हुए घर में बैठा था, तभी याद आया, दादा के पास एक नाव है जो भंडार के नीचे यूं ही रखी हुई है। याद आते ही एक ही झटके में आपके पास आ गया। दो दिन के लिए नाव देकर मेरे परिवार की जान बचाइए दादा, पके हुए धान को पानी में सड़ते हुए या मछली का आहार बनते देख मैं कैसे जीता रहूंगा ?"

शिवनाथ ने कहा, "यह कोई बड़ी बात नहीं। नाव तो तुम खा नहीं जाओगे। पर गाय की खातिर घास काटने के लिए नाव की जरूरत मुझे भी पड़ेगी। परसों तक नाव मुझे लौटा देना।" जैसे बिहूराम की जान बच गई हो, ऐसा भाव उसके

चेहरे पर आया। सात बार उसने शिवनाथ को प्रणाम किया और तेजी से चला गया और दस मिनट बाद ही दो बैल लाकर उनकी मदद से नाव खींचकर ले गया।

हमेशा सुबह-शाम नदी किनारे घूमने जाना शिवनाथ की आदत है। मोहधूलि में नदी किनारे खड़े होकर सूर्योदय और सूर्यास्त न देखने और नदी के ठंडे पानी से एक बार मुंह नहीं धोने से शिवनाथ का दिन ठीक से नहीं गुजरता, न ही रात में ठीक से नींद ही आती है। कहीं जाकर रात बितानी पड़े, ऐसे भ्रमण में शिवनाथ कभी नहीं जाता। कभी-कभार बहुत जरूरी होने पर कहीं जाना पड़े तो घर के प्रति दिल जितना वेचैन रहता है, उससे भी ज्यादा बेचैन मोहधूलि नदी के लिए रहता है। चूंकि घर में उसे जो भी आदर-सत्कार मिलता है, वही आदर-सत्कार उसे बाहर जाने पर भी मिल सकता है, उतना न मिले तो मामूली अंतर ही हो सकता है। पर मोहधूलि नदी के किनारे उसे जो चीज मिलती है वह उसे पृथ्वी पर कहीं नहीं मिल सकती। मोहधूलि नदी सिर्फ ब्रह्मपुत्र से निकलकर गांव, खेत, मैदान, जंगल से होकर स्वर्णशिरि नदी में जाकर मिलती ही नहीं है, वह तो उसके जन्म से लेकर बचपन, जवानी और प्रौढ़ावस्था के बीच से होकर उसकी मृत्यु की घड़ी तक बह रही है। जब वह छोटा था तब मोहधूलि नदी उसके लिए मां की तरह थी। छोटे बच्चे जिस तरह दुलार या खुशी व्यक्त करने के लिए बार-बार मां के सीने से लग जाते हैं, मां के साथ शरारतें कर खुश होते हैं, मां का स्नेह बार-बार पाना चाहते है, शिवनाथ भी उसी तरह बचपन में रोज मोहधूलि नदी में कूदता था और उसमें तैरते हुए अद्‌भुत आनंद का अनुभव करता था। जवान होने के साथ ही नदी उसकी प्रियतमा, सपने की नायिका बन गई। पल-पल, मौसम-मौसम में नदी का अलग-अलग रूप है, उस रूप की सुधा का पान करके भी उसकी प्यास नहीं मिटती, मन के भीतर वह नई तृष्णा जगा देती है सुबह नदी में नहाने के लिए जाता तो रेत के ऊंचे टीले पर बैठकर नदी का अद्‌भुत सौंदर्य देखता रहता, गहराई तक पारदर्शी पानी में चमकीली रूपहली मछलियां झुंड बनाकर घूमती रहतीं, किनारे पर और नदी के बालूचर में माछरोका, गंगाचीलनी और पानीकाउरी--ये पंछी मछली का शिकार करने की ताक में बैठे रहते, बीच-बीच में हवा का झोंका किनारे के सरकंडों के जंगल में यौवन की उदास लंबी सांस की तरह आवाज पैदा कर गुजर जाता...और नदी धूप सेंकती हुई एक मधुर अलसाई तरंगित भंगिमा के साथ अकारण खुशी के स्वर बिखेरती हुई सोई रहती।

शाम के वक्त शिवनाथ हमेशा एक बार नदी किनारे घूमने जाता है। अपने पैर पानी में डालकर किनारे से बंधी नाव पर तन्मय होकर बैठा रहता है। किनारे के ऊंचे पेड़ों की छाया से नदी तब एक गंभीर रूप धारण कर लेती है, जैसे प्रेमिका के मुखड़े पर लंबी प्रतीक्षा के कारण चिंता और उदासी का भाव हो। जंगल का हृदय छूकर आई हवा अपने साथ तरह-तरह की घास और वनफूलों की सुगंध लेकर

आती है, बहुत दूर से खेत में काम कर रहे लोगों के गाए वनगीत का स्वर सुनाई देता है, नदी किनारे सुनहरे रेत पर जलचर पंछी झुंड बनाकर धूप सेंकते रहते हैं ...और इन तमाम शांति, खामोशी और वीरानी का समान भागीदार बनकर बैठे शिवनाथ की आंखों के सामने धीरे-धीरे एक अपार्थिव दृश्य प्रगट होने लगता है।

डूब रहे सूरज की सुनहरी रोशनी अचानक एक बार समूची नदी को सुनहरी बना देती है, एक सिरे से पानी की गहराई से एक विशाल सुनहरा स्तंभ आकाश की तरफ सिर उठाता हुआ नजर आता है, अचानक दूर कहीं एक अकेली नाव बढ़ती हुई नजर आती है, सुनहरी नदी में सुनहरी नाव खेकर आ रहा वह अकेला मांझी जैसे सपनों के देश का मुसाफिर हो...एक अद्भुत आकांक्षा, अपार्थिव विषाद, अकेलापन शिवनाथ को निर्ममतापूर्वक घेर लेते हैं। शिवनाथ के यौवन के वे सपनीले दिन बीत चुके हैं। अब मोहधूलि नदी उसके लिए लबे अर्से से विवाहिता पत्नी की तरह दुख-सुख की समान भागीदार सहधर्मिणी की तरह है। वह जिस तरह बाहर से घूम-फिरकर पसीने से लथपथ होकर घर लौटता है तो पत्नी पंखा झल देती है, उसे परेशान देखकर पत्नी जिस तरह उसकी परेशानी बांटने की कोशिश करती है, ठीक उसी तरह मोहधूलि नदी भी स्निग्ध, स्नेहिल, अमृतमय स्पर्श से उसके तन-मन की थकान दूर कर देती है। उदास होने पर वह मोहधूलि के किनारे बैठकर देर तक नदी के साथ बातें करता रहता है। जब वह वृद्ध हो जाएगा तब नदी उसके लिए मा बन जाएगी और मृत्यु के बाद नदी मां की तरह स्नेह के साथ उसे अपनी गोद मे समेट लेगी। मोहधूलि नदी के किनारे सरकंडे के वन से घिरा मरघट ही गांव के सारे लोगों की अंतिम मंजिल है।

मोहधूलि नदी में बाढ़ आई है, पर शिवनाथ को इस बात का अंदाजा नहीं। इसकी भी वजह है। गांव से बहिष्कृत होने के बाद नामघर में जनता के सामने घुटने टेकने की घटना ने शिवनाथ के मन पर ऐसी चोट की, जिसके कारण उस दिन से शिवनाथ ने घर से बाहर निकलना बंद कर दिया। पर आज जब बिहूराम ने मोहधूलि में बाढ़ आने की सूचना दी तो वह अपने आपको रोक नहीं पाया। दिल की तकलीफ और स्वाभिमान भूलकर वह नदी की तरफ रवाना हो गया।

बहुत दिनों के बाद गांव की सड़क पर चलते हुए उसने महसूस किया, चारों तरफ जबर्दस्त अफरा-तफरी मची हुई है। औरत-मर्दों का समूह आतंकित होकर नदी की तरफ बढ़ रहा है। खेत में पके धान को बाढ़ तबाह कर रही है, बाढ़ के प्रकोप से थोड़ा धान भी बचाकर नहीं ला पाए तो उन्हें भूखों मरना पड़ेगा। बाजार के करीब पहुंचकर शिवनाथ ने देखा, पानी मुख्य सड़क के पास आ चुका था। पहले जहां घाट था, वह अभी नदी के बीच में है। जहां भी नजर जाती है पानी नजर आता है। दूसरे किनारे के खेतों में फूस की झाड़ियों का सिर्फ ऊपरी हिस्सा पानी के ऊपर कांपता हुआ नजर आ रहा है। बाजार के पास अब जहां नया घाट है वहां शोर-शराबे

का माहौल है। पूरे गांव में बाजार का हिस्सा ही सबसे ऊंचा है, गांव के सारे मवेशियों को वहां रखा गया है। गांव के सारे दुकानदार, बच्चे और निठल्ले लोग बाढ़ का मंजर देखने के लिए सड़क पर उमड़ पड़े हैं। खेतों में पानी के बीच स्त्री-पुरुषों का समूह बेचैनी के साथ फसल बचाने की कोशिश करते हुए नजर आ रहा है। मर्दों के हाथों में हंसुआ है, औरतों के हाथों में कैंची, थैला और राख की गठरी है। आहूधान के खेत में जोंक ही जोंक हैं, पानी उतरने के साथ ही चारों तरफ से जोंक हमला कर देते हैं। जोंक के हमले से बचने के लिए लोग घुटनों तक थैला लपेट लेते हैं। इसके बावजूद जोंक हमला करते हैं। खाली हाथों से जोंक को शरीर से अलग कर पाना मुश्किल होता है। लोग हाथ से राख मलकर जोंक खींचकर उसे राख की गठरी में डाल देते हैं। इसके बावजूद जोंक उनका खून चूस ही लेते हैं। लोग जब दिन-दुनिया को भूलकर धान की कटाई में जुट जाते हैं, तब ये जोंक खून चूसकर फूलकर स्वयं ही शरीर से अलग होकर गिर पड़ते हैं। आहू धान की कटाई और शालि धान की बुवाई के समय गांव के औरत-मर्दों के हाथ-पैर जोंक के खून चूसने के कारण जख्मों से भर जाते हैं। शिवनाथ भीड़ से अलग हटकर बाढ़ का दृश्य देखने लगा और लोगों की बातें सुनने की कोशिश करने लगा। खेत जाने के लिए जो स्त्री-पुरुष घर से आए हैं, वे परेशान हैं, चूंकि उस पार जाने के लिए नाव नहीं है। इस बीच लोगों को लेकर उस पार गई नाव जब लौटेगी, तभी वे जा पाएंगे। लौट रही नाव को देखने की आशा के साथ बेचैनी से वे नदी के दूसरे किनारे की तरफ देख रहे हैं, और बीच-बीच में तरह-तरह की बातें कर वक्त गुजारने और अपनी बेचैनी को दूर करने की कोशिश भी कर रहे हैं। जिन नावों के मालिकों से पूछे बगैर लोग दूसरे किनारे नाव लेकर गए उन नावों के मालिक गाली-गलौज कर रहे हैं। कुछ लोग धान की कटाई की आशा क्षीण देखकर अपनी किस्मत को कोस रहे हैं, वहीं सख्त दिल वाले कुछ लोग वर्तमान संकट के प्रति निर्विकार होकर अतीत की किसी बाढ़ के समय नाव मे बैठकर बाढ़ में बहकर आ रहे हिरण का शिकार किस तरह किया था, उसी का ब्यौरा सुना रहे हैं...।

तभी बूंदाबांदी की जगह मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई। सामने क्षितिज तक फैले नदी के पानी में तेज वर्षा की बूंदें गिरने लगीं। जिससे नदी का हृदय धुंधला होता गया। उस किनारे जो बहुत दूर अस्पष्ट जंगल का अक्स दिखाई देता था वह भी अदृश्य हो गया। वर्षा की परवाह किए बगैर लोग वहीं खड़े रहे और वर्षा की धारा उनको सिर से पैर तक भिगोने लगी—जैसे वह पेड़ की डालियों और पत्तों को भिगोकर खंगाल देती है, उसी तरह।

8

शाम के वक्त शिवनाथ अपने बरामदे में चुपचाप बैठा हुआ है। दिन भर बारिश होती रही है। बीच-बीच में उत्तर की दिशा से तेज हवा भी बहती रही है। पानी बढ़ने का लक्षण है। दिन भर सड़क से लोगों का आना-जाना जारी रहा है, सबके कदम बेचैनी के साथ बढ़ते रहे हैं। बीच-बीच में शिवनाथ वहीं से चिल्लाकर सड़क से गुजरनेवालों से पूछता है, "ओ भाई, पानी कितना बढ़ गया है ?" दूसरा दिन होता, तो लोग ठिठककर शिवनाथ के प्रश्न का जवाब देते, पर आज किसी के पास रुकने का समय नहीं है। तेजी से आगे बढ़ते हुए लोग चिल्लाकर जवाब देते हैं, "रास्ते पर घुटनों तक पानी जमा हो चुका है। आज, लगता है, रास्ता टूट जाएगा।" रास्ता टूटने की बात सुनकर शिवनाथ का कलेजा भी कांप गया। बहुत सालों से मोहधूलि में ऐसी बाढ़ नहीं आई है, जिससे लोगों के घर डूब जाएं। सन् 1937 की बाढ़ में सारा गांव डूब गया था। कई लोगों के घरों के छप्पर पानी में बह गए थे। छह-सात दिनों तक लोगों के घरबार पानी में डूबे रहने से कैसी नारकीय परिस्थिति पैदा हो सकती है, यह सोचकर शिवनाथ आतंकित हो उठा।

रात-दिन का भेद न रखने वाले बरसात के मौसम में कब शाम ढल गई, शिवनाथ को पता ही नहीं चला। नामघर में ढोल बजने की आवाज सुनकर ही उसे शाम ढलने का आभास हुआ। नामघर की तरफ हाथ जोड़कर, प्रणामकर उसने ईश्वर का नाम लिया। उसी समय पानी के बहाव की तेज आवाज और लोगो की चीख-पुकार सुनकर वह चौंक उठा। वह समझ गया, बाढ़ के पानी ने अभी-अभी रास्ते को तोड़ डाला है। बाढ़ देखने गए लोग रास्ते को टूटते देख सामूहिक रूप से चीख उठे हैं। इस बार गांव नहीं बचेगा। रात भर में ही पूरा गांव पानी में डूब जाएगा। आहू धान की फसल तो तबाह हुई ही, शाली धान की फसल भी बच नहीं पाएगी। जहां-जहां लोगों ने शाली धान की खेती की थी, उन जगहों पर पानी भर जाएगा और सप्ताह भर पानी में डूबे रहने के बाद शाली धान की फसल सड़-गल कर नष्ट हो जाएगी। गांव के सामने मंडरा रहे बुरे वक्त की तस्वीर की कल्पना कर शिवनाथ एक ही स्थान पर स्तब्ध होकर बैठा रहा।

गहरे अंधेरे में एक हाथ की दूरी पर भी कुछ दिखाई नहीं देता। पर आंखों से कुछ देखे बगैर शिवनाथ ने कानों से सुनकर समझ लिया—गांव भर में अचानक जबरदस्त अफरा-तफरी मच गई है। लोग इधर-उधर तेजी से आ-जा रहे हैं। एक घर के लोग दूसरे घर के लोगों से चिल्ला-चिल्लाकर बातें कर रहे हैं। लकड़ी-बांस काटने की आवाज आ रही है। रास्ता सचमुच टूट जाएगा, गांव के लोगों ने ऐसा सोचा भी नहीं था। अब सड़क टूटने के बाद अचानक गांव पर दुश्मन के धावा बोलने की तरह विकट स्थिति पैदा हो गई है, और लोग-बाग बहुत कम समय में

उसका सामना करने के लिए तैयारी कर रहे हैं। शिवनाथ पानी के बहाव की आवाज और गांववासियों का शोर सुनने की कोशिश कर रहा था, तभी किसी ने उसके बिल्कुल करीब पहुंकर कहा, "दादा !"

शिवनाथ ने चौंककर पूछा, "कौन ?"

"मैं दुर्लभ हूं। आपके बगीचे से कुछ केले के पेड़ काटना चाहता हूं।"

शिवनाथ पूछना चाहता था कि रात में केले के पेड़ की क्या जरूरत है ? पर अगले ही पल उसे याद आया—अगले दो घंटों में अगर किसी के घर में पानी घुस जाएगा तब केले के पेड़ों से डोंगी बनाकर उसे घर के भीतर डालकर उसी पर चूल्हा रखकर खाना पकाना पड़ेगा। उसके घर की बुनियाद कुछ ऊंची है। पूरा गांव जब डूब जाएगा, तभी उसका घर डूब पाएगा। सन् 1937 में उसके घर के भीतर डेढ़ हाथ तक पानी जमा हो गया था और पचास मन की नाव घर के भीतर तक समाई थी। उसकी आंखों के सामने सन् 1937 का मजर कौंध गया। उसने फौरन जवाब दिया, "जाओ बोपाई, जितने पेड़ काटने हों, काटकर ले जाओ। हमारे नकुल से भी कह दो, हमारे लिए एक डोंगी बनाकर रख ले। इस बार मुसीबत सब पर आई है।"

सुबह जागने के बाद बरामदे में आकर शिवनाथ ने देखा—आंगन में घुटनों तक पानी जमा हो चुका था। चार उंगल और ऊपर पानी बढ़ने के बाद बुनियाद डूब जाएगी। पड़ोस के केरकन, भदीया और गोपाल के घरों की बुनियाद डूब चुकी है। बाढ़ के पानी में दूसरे किनारे से गोबर, कूड़े और विष्ठा घुलकर आंगन में बहकर आए हैं, उसी पानी में केरकन के छोटे बच्चे तैरते हुए खेल रहे हैं। भदीया के घर की दो बहुएं केले के पेड़ की डोंगी पर बैठकर कहीं जा रही हैं, शायद शौचादि क्रिया निपटाने के लिए। आकाश में सितारे चमक रहे थे, तभी मर्द घर से बाहर निकल पड़े। उन्हें आज बहुत काम करना था। मवेशियों के चरने के लिए कोई जगह नहीं है, मवेशियों को लोगों ने सड़क के उस किनारे छोड़ दिया, जहां पानी जमा नहीं हुआ था। नाव पर चढ़कर लोग घास काटकर लाएंगे और मवेशियों को दिन भर खिलाएंगे। कुछ लोगों को लकड़ी काटने जाना पड़ेगा। बरसात के मौसम में यह बड़ा काम है, लोग दूर जंगल के बड़े पेड़ काटकर, गट्ठर बनाकर उसे पानी में बहाकर ले आते हैं और साल भर के लिए लकड़ी का इंतजाम कर लेते हैं। इस बार घरों में पानी घुसने से लोगों को लकड़ियों का गट्ठर आंगन तक ला पाने में आसानी होगी। कुछ लोग बेंत काटने गए हैं। सिर्फ औरतों के पास कोई काम नहीं है। पानी में डूबे घर में धान कूटने, घर की सफाई करने—इन सारे कामों से उन्हें छुट्टी मिल गई है। पर यह निठल्लापन उनके लिए कड़ी सजा की तरह है। लगातार कई दिनों तक उन्हें बिस्तर पर या केले के पेड़ की डोंगी पर निश्चल होकर बैठे रहना पड़ता है, चूंकि पानी में चलने से घर की बुनियाद कीचड़ बनकर ढहने लगती है। जल का जमाव खत्म होने पर बुनियाद पोंछकर समतल बनाना मुश्किल का काम हो जाता

है कई दिन तक एक ही जगह पड़े रहने से उनकी देह अकड़ जाती है, शारीरिक थकान और निठल्लेपन के अवसाद से वे तंग हो जाती हैं। गांव में आगन या बुनियाद के पानी में डूबने पर सिर्फ छोटे बच्चों और बत्तखों को खुशी मिलती है। बच्चे आंगन को नदी बनते देख दिन भर तैरते रहते हैं, उछलते रहते है। उसी तरह बत्तखों को भी छक कर तैरने और केंचुओं की दावत उड़ाने का सुनहरा मौका मिल जाता है।

शिवनाथ बरामदे में खड़े होकर सागर की तरह जलमग्न इलाके को देख रहा था, तभी केरकन के घर से बत्तखों का झुंड 'टेक-टेक' की आवाज करते हुए उसके आंगन में केंचुए खाने के लिए आ गया। जलमग्न होने के बाद जमीन के नीचे से केंचुए बहकर ऊपर आ गए हैं। उसके आंगन में एक हाथ पानी जमा है, जिसमें सैकडों केंचुए तैर रहे हैं, जिससे आंगन काला नजर आ रहा है। कुछ देर बाद केंचुए मर जाएंगे। इतने सारे केंचुओ को बत्तख खा नहीं सकते। लोगों के चलने से केंचुए कुचले जाएंगे और कीचड़ बन जाएंगे। जब पानी सूखने लगेगा, तब लाखों मृत केंचुओं से मिश्रित कीचड़ से ऐसी बदबू निकलेगी, जिससे काफी दिनों तक गांव की हवा बदबूदार बनी रहेगी, ठीक से सांस ले पाना भी दूभर हो जाएगा। गध-सचेतन शिवनाथ इस स्थिति की कल्पना कर इस कदर परेशान हो उठा कि उसके पेट में अंतड़ियां ऐंठने लगीं और उल्टी करने का जी चाहने लगा।

एक नाव के जरिए क्रिया से निवृत्त होकर शिवनाथ दुबारा बरामदे पर आकर बैठ गया। पल-पल पानी का स्तर बढ़ रहा है। इसी रफ्तार से पानी बढ़ता रहा तो आज दोपहर तक उसका घर भी डूब जाएगा। प्रकृति के सामने चुपचाप आत्म-समर्पण करने के सिवा अब किसी के पास कोई रास्ता नहीं है। शिवनाथ ने गौर से जल-जमाव के दृश्य को देखने की कोशिश की। केरकन के घर के बच्चे पानी से खेलना छोड़कर एक गमछे की मदद से मछली पकड़ने लगे। वे पल-पल मछली बटोर रहे हैं। आंगन में इतनी सारी मछलियां पाने की वजह से उनकी खुशी का ठिकाना नहीं है। शिवनाथ ने अपने आंगन के पानी की तरफ देखा—कहीं कोई मछली दिखाई नहीं दे रही थी। केरकन के आंगन में इतनी सारी मछलियां कहां से आ गई, यह सोचकर वह हैरान रह गया। अपने कौतूहल को वश में न रख पाने के कारण उसने बच्चों के समूह को संबोधित किया, "अरे पुतूकन, कैसी मछलियां पकड़ी हैं, जरा दिखा तो।"

बच्चे अपनी अभूतपूर्व सफलता का नमूना दिखाने की खुशी से दौड़ते हुए उसके पास आए। उसने टोकरी में देखा—छोटी मछलियां समझकर बच्चों ने लालुक को बटोर लिया था। काले, लिजलिजे लालुकों को देखकर घृणा के कारण उल्टी करने का जी चाहा। थूक फेंक कर वह चीख उठा, "छी छी ! ये मछलियां नहीं, लालुक हैं। फेंक दे, फेंक दे।"

फूंक मारकर बुझाए गए दीपक की तरह बच्चों के चेहरे भी पलक झपकते ही स्याह हो गए।

दोपहर में केले के पेड़ की डोंगी खेते हुए कतीया उसके घर आया। दरवाजे के पास डोंगी रोककर वह उस पर बैठ गया। वहीं से शिवनाथ का अभिवादन करते हुए बोला, "बाबूजी, कल से घर में चूल्हा नहीं जला है। आप नहीं बचाएंगे तो हमें बचाने वाला कोई दूसरा नहीं है।"

शिवनाथ ने कतीया की बात समझकर भी न समझने की भंगिमा में पूछा, "क्या हुआ तुझे ?"

"क्या होगा बाबूजी, सिर्फ मेरे घर में ही नहीं, पूरे गांव में लोगों के पास अन्न का दाना नहीं है। नदी किनारे रहने वाले हमारे जैसे लोगों के लिए मछली ही आहार है, मछली ही जीवन है। पर बाढ़ के पानी में मछली कहां मिलेगी ? मौसम का रुख बदलते देख केंचा महाजन ने भी चावल की कीमत एक रुपए की जगह दो रुपए कर दी है। वह भी उधार नहीं देता, नगद ही देता है। जो एक-दो लोग किसी तरह पानी के बीच से आहू धान काटकर ले आए थे, वे भी धान कूटे बगैर चावल कैसे तैयार कर सकते हैं ? वैसे ही पानी में भीगा धान कच्चा है, नीचे भी पानी है, ऊपर भी पानी है। धान सुखाया कहां जाएगा ? कूटा कहां जाएगा ? कल रात एक कटहल खाकर ही हमलोगों ने भूख मिटाई। पर कटहल खाकर कब तक जिंदा रहा जा सकता है ? सुबह से ही भूखे बच्चे रो-रो कर बेहाल हो रहे हैं। एक वक्त के लायक चावल दे दीजिए बाबूजी, नहीं तो बच्चों की आह आपको लगेगी।"

शिवनाथ ने कहा, "दोपहर के लिए तुझे चावल दे दूं, फिर उसके बाद तू क्या करेगा ? रात में क्या खाएगा ? कल क्या खाएगा ?"

कतीया ने कहा, "एक वक्त जुगाड़ हो जाए तो उसके बाद क्या होगा, हम जैसे लोग नहीं सोचते, बाबूजी ! एक वक्त भर पेट खा लेने पर तीन दिन तक भूखों रहने की ताकत भी मिलेगी न बाबूजी ! आज बाजार में एक नई बात सुनकर आया हूं। रेब महाजन और दूसरे लोगों ने मीटिंग की है, इस बार जिन लोगों की फसल बाढ़ में तबाह हुई है और जिनके पास खाने के लिए कुछ नहीं है, उन्हें सरकारी रिलीफ दिया जाएगा। अभी समझ पाया हूं बाबूजी, आप जैसे बड़े लोग क्यों 'स्वराज चाहिए, स्वराज चाहिए' का नारा लगाते थे, वालंटियर क्यों जेल में गए थे। अगर सरकार इसी तरह मुसीबत में गरीबों की मदद करती है तो स्वराज का आना अच्छा ही रहा, बाबूजी !"

अगले तीन दिनों तक मांगने वालों की वजह से शिवनाथ परेशान हो गया। अधिकतर कैवर्त गांव के लोग थे। कुछ उसके गांव के लोग थे—जो दिन भर मजूरी कर दो वक्त के भोजन का इंतजाम करते थे, जो आहू धान की कटाई करने के बाद ही किसी तरह साल भर पेट भर पाते थे, जो विधवा थी, जिनके घरों में कमर तक पानी जमा हो चुका था। सबको चावल दे पाना शिवनाथ के लिए संभव नहीं था। पता नहीं कब तक बारिश जारी रहे, अनिश्चित भविष्य के लिए स्वयं भी तैयार

रहना पड़ेगा। फिर भी उसने सबकी हर संभव सहायता की। मांगने वालों की लंबी कतार देखकर वह समझ गया, मौजा भर के अधिकतर लोग एक वक्त खाकर एक वक्त भूखा रह रहे हैं और कई दिनों भात के बगैर ही गुजारा कर रहे हैं। असमय आई बारिश ने चारों तरफ तबाही मचा दी। फिर भी राहत की बात यही है—शिवनाथ ने अपनी बेबसी और विवेक की चुभन को दबाने की कोशिश की—आजाद देश की सरकार जनता की विपत्ति की घड़ी में चुप नहीं बैठी है। रिलीफ मिलने से जनता को सचमुच काफी राहत मिलेगी।

कुछ दिन बाद एक दिन बरामदे में बैठे शिवनाथ ने देखा—उसके घर के सामने से लोगों की लंबी कतार आगे बढ़ रही थी। सबके हाथ में एक-एक खाली थैला था। शिवनाथ ने अंदाजा लगाया—शायद रिलीफ का चावल आ गया है, जिसका वितरण शुरू हो चुका है।

पर शाम के वक्त वह हैरान रह गया, जब उसने खाली थैले लेकर गए लोगों को बाजार से खाली थैले लिए ही लौटते हुए देखा। दोपहर लोगों की चाल में जो तेजी थी, चेहरे पर आशा का भाव था, अब वह भाव नहीं था, किसी तरह बेजान शरीर को घसीटते हुए वे घर लौट रहे थे। क्या बात हुई ? आज चावल नहीं आया क्या ? अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए उसने एक आदमी से पूछा, "जरा इधर आना।"

कमजोर कदमों के साथ फटिक उसके करीब आया। शिवनाथ ने देखा—धूप में झुलसकर उसका सूखा चेहरा राख की तरह काला हो चुका है, धंसी हुई आंखें राख मे दबी चिनगारी की तरह सुलग रही हैं। उसका शरीर भी रह-रहकर कांप उठता है। फटिक की दशा देखकर पहले तो उससे कुछ भी पूछने की हिम्मत नहीं हुई। बरामदे के बेंच पर बैठकर फटिक ने शुष्क स्वर में कहा, "बाबूजी, पानी पीऊंगा।"

पानी पीकर फटिक बरामदे की भीगी मिट्टी की तरफ कुछ देर खामोश नजरों से देखता रहा। कनखियों से उसकी तरफ देखकर शिवनाथ ने महसूस किया, भयंकर क्रोध की आग जैसे चुपचाप जल रही है, जिसकी गर्मी उस तक पहुंच रही है। वह कुछ देर प्रतीक्षा करता रहा। फिर मौका देखकर पूछा, "क्या हुआ, फटिक ? रिलीफ का चावल नहीं मिला क्या ?"

"रिलीफ का चावल भला हमें कैसे मिलेगा ?" शिवनाथ को हैरत में डालते हुए फटिक अचानक पिटने वाले कुत्ते की तरह भुनभुना उठा, "वह चावल हम जैसे गरीबों के लिए थोड़े ही लाया गया है ? एक मौजे की लाखों प्रजा के लिए सिर्फ एक सौ मन चावल लाया गया है। सोचा था—हमारे जैसे एक वक्त खाकर सात दिन तक अन्न का मुंह न देखने वालों को ही एक मुट्ठी चावल देंगे। इसी आशा के चलते, बाबूजी, दिन का काम-काज छोड़कर, दोपहर से लेकर शाम तक राह देखता रहा। पर हम चावल के करीब भी नहीं पहुंच पाए। हमारी आंखों के सामने घर के

भडारों में धान भर कर रखने वाले लोग भी बोरे में चावल भरकर ले गए। मैंने अपनी आंखों से देखा है, बाबूजी—आपके गाव के भवकांत के पिताजी को भी चावल मिला। दोनों बेटों को भी चावल मिला, जबकि उनके भडार में आज भी कम से कम छह महीने तक गुजारा करने लायक धान जमा है। पूरे मौजे में अन्न के लिए मोहताज कंगालों का गांव है हमारा कैवर्त गांव—पर हमारे गांव के किसी भी आदमी को चबाकर खाने लायक भी एक मुट्ठी चावल नहीं मिला। हमारे लोगों ने जब एतराज किया तो रेव महाजन ने क्या जवाब दिया, जानते हैं ? घर में अन्न नहीं होने पर रिलीफ का चावल मिलेगा ही, ऐसा कोई कानून नहीं है। वर्षा के दौरान जो लोग धान सुखाकर कूट नहीं पाए हैं, उन लोगों को भी चावल देने का कानून है ?"

"सरकारी चावल बांटने के मामले में रेब महाजन बोलनेवाला कौन होता है ?" शिवनाथ ने सवाल किया।

"आप भी खूब हैं, बाबूजी,"—न चाहते हुए भी फटिक की आवाज में क्रोध और क्षोभ का भाव घुल गया, "आपने सारा जीवन इसी बरामदे पर बैठे-बैठे गुजार दिया, दुनिया में कहां क्या हो रहा है, आपको खबर ही नहीं है। अभी तो रेब महाजन ही समूचे मौजे का असली मालिक है। पहले आपलोगों को देखकर एक सौ हाथ की दूरी से ही जमीन छूकर नमस्कार करने वाला और दारोगा के कहने पर उठक-बैठक करने वाला रेब महाजन अब पहले जैसा नहीं रहा। अब रेब महाजन कांग्रेस का अध्यक्ष है। पंचायत अध्यक्ष है। उसके कहने पर ही पूरे मोहधूलि में सरकार चलती है। रिलीफ का चावल बांटने का काम रूरल पंचायत को सौंपा गया है। इसीलिए चावल बांटने के मामले में रेब महाजन टांग नहीं अडाएगा तो दूसरा कौन अड़ाएगा ? ...बाजार में लोगों को कहते सुना—पंचायत के पिछले इलेक्शन में जिन लोगों ने रेब महाजन और केशव मंडल को वोट दिया था उन लोगों को ही चावल दिया गया है। बाकी लोगों को नहीं। आज ही समझ पाया बाबूजी, गरीबों की जान बचाने के लिए रिलीफ का चावल नहीं है, असल में यह वोट देने के बदले में पुरस्कार है।"

फटिक के मुंह से केशव मंडल का नाम सुनते ही फौरन शिवनाथ की आंखों के सामने अतीत का एक धुंधला-सा चित्र कौध गया। कारागार जाने से पहले उससे विदा लेने के लिए आधीरात में उसके घर आया वह क्रांतिकारी देशभक्त—एक मंगलमय सुंदर प्रभात के ब्रह्ममुहूर्त में जिसे वह एक नए जीवन के द्वार तक छोड़ आया था, आज बहुत दिन हुए, उस आदमी से उसकी मुलाकात नहीं हुई। शिवनाथ ने सुना है, इन दिनों केशव मंडल अत्यधिक व्यस्त रहता है। जनता के एक सौ एक कार्यक्रमों का वह अध्यक्ष, उपाध्यक्ष बनता है, भीषण संकट स्वीकार कर उसने जिस देश को आजाद करवाया, उस देश के पुनर्गठन के कार्य में वह दिन-रात व्यस्त रहता है। सिर्फ एक बात से शिवनाथ को हैरानी होती है कि कभी अफीम का धंधा करने

वाला (अभी भी सुना है। यह धंधा छोड़ा नहीं) और वालंटियरों का कट्टर दुश्मन रेब महाजन आजकल केशव मंडल का घनिष्ठ सहकर्मी है। मौजा कांग्रेस और पंचायत का अध्यक्ष रेब महाजन ही है, केशव मंडल तो सिर्फ उपाध्यक्ष है। रेब महाजन केशव मंडल के परिवार के सारे खर्च की व्यवस्था करता है, जिसके बदले में केशव मंडल ने महाजन के लिए मोहधूलि गांव की सार्वजनिक संस्थाओं का नेतृत्व छोड़ दिया है।

अंग्रेजों के शासनकाल में रेब महाजन ने दारोगा-हाकिम की मदद से धन-दौलत का ढेर इकट्ठा किया। आज स्वदेशी सरकार के शासनकाल में वह केशव मंडल जैसे लोगों की मदद से मान-सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहा है। कुछ दिन पहले नव-निर्वाचित विधायक मोहधूलि के दौरे पर आया था। जेल में वह केशव मंडल के साथ ही था, इसी वजह से वह केशव मंडल के घर रुकने का मन बनाकर आया था, पर रेब महाजन ने जिद पकड़ ली कि विधायक महोदय उसके घर ही ठहरेंगे। विधायक को अपने घर में ठहराकर रेब महाजन सामाजिक प्रतिष्ठा की सीढ़ी पर और एक कदम ऊपर उठ पाएगा। गांव के युवाओं के विरोध के बावजूद केशव मंडल ने रेब महाजन के घर में ही विधायक के ठहरने की व्यवस्था की। इस वजह से दारोगा, डाक्टर, आबकारी इंस्पेक्टर आदि सरकारी कर्मचारियों की नजर में रेब महाजन पहले की तुलना में अधिक आतंक और धौंस का पर्याय बन गया। शिवनाथ यह सब बातें दूर से ही सुनता रहता है और मन ही मन सोचता है—स्वाधीनता के भोज की पहली पत्तल रेब महाजन के हिस्से में ही आई, जबकि देश की आजादी की लड़ाई में करोड़ों लोगों का आह्वान करते हुए कुछ और ही वादा किया गया था। विचारों की धारा को रोकते हुए शिवनाथ ने फटिक से पूछा, "चावल बांटते समय केशव मंडल भी मौजूद था क्या ?"

"आप भी कैसी बातें करते हैं, बाबूजी ?", हैरान होकर फटिक ने उल्टे सवाल किया, "केशव मंडल ही तो रिलीफ के सर्वेसर्वा मालिक हैं, उनके बिना काम कैसे चलेगा ? चावल बांटते समय उनके रवैए को देखकर ऐसा लग रहा था—मानो उनके बाप के घर का ही चावल हो, सरकार से कह-सुनकर उन्होंने ही चावल मंगवाया है, इसीलिए किसे कितना चावल देना है, इसका निर्णय वही करेंगे, इसमें कोई दखलअंदाजी नहीं कर सकता। बाबूजी, सुनकर आप विश्वास नहीं करेंगे—जनता के नाम पर जो रिलीफ का चावल आया, उसमें से रातोंरात दो बोरियां मंडल के घर पहुंच गईं। रेब महाजन की बैलगाड़ी से मंडल के घर चावल पहुंचाते हुए गांव के नौजवानों ने अपनी आंखों से देखा है। कुछ नौजवानों ने सब-डिप्टी हाकिम से शिकायत भी की थी। पर हाकिम ने जांच करने की जगह नौजवानों को डांट दिया। डांटेगा क्यों नहीं बाबूजी, लोग कहते हैं न—समय बड़ा बलवान होता है, हिरण भी बाघ का गाल चाहता है, ऐसे ही एक सब डिप्टी के नीचे केशव मंडल एक दिन मंडल

थे, पर आज उसी केशव मंडल को सब-डिप्टी हजारों बार सलाम करते हुए नहीं थकता।"

"इसमें बुरा ही क्या है, फटिक ?", शिवनाथ ने विश्वास की शक्ति गंवा चुकी आवाज में कहा, "आजाद देश में जनता ही राजा है, वैसी स्थिति में हाकिम-अफसर अगर किसी जनता के नेता को सलाम करते हैं तो वह जनता को ही सलाम करने की तरह नहीं हुआ ? देश की आजादी की लड़ाई के समय लोग नारे लगाते थे—नौकरशाही खत्म हो। आज नौकरशाही खत्म हुई है, इससे तो जनता को खुशी होनी चाहिए।"

"बाबूजी, हम यह सब बड़ी-बड़ी बातें समझ नहीं पाते। जनता को अभी राजा बनते कहां देख रहे हैं ? जनता के नाम पर रेब महाजन, केशव मंडल—ये लोग ही राजा बन गए हैं। पहले देश में कानून का कोई मतलब था। मगर आज केशव मंडल, रेब मंडल की जुबान ही कानून है। आज की बात लीजिए—सैकड़ों जनता पेट पर गमछा बांधे एक मुट्ठी चावल के लिए दोपहर से शाम तक चिलचिलाती धूप में बाट जोहती रही, पर केशव मंडल ने खाकर अघाए हुए लोगों को ही जी भरकर चावल दिया। सात दिन सात रात तक भूखों रहने वालों को कुत्ते-बिल्ली की तरह फटकार कर भगा दिया। सरकारी हाकिम से शिकायत करने पर उसने शिकायत करने वाले को डांट दिया। ऐसी हालत में जनता किसके पास न्याय मांगने जाएगी ? मंत्री, विधायक—ये सभी केशव मंडल के कहने पर ही उठते-बैठते हैं। हमारे लोग तो खुलकर कहने लगे है बाबूजी—अंग्रेजों का समय ही ठीक था। स्वराज के बाद हम गर्म कड़ाही से सुलगते अंगारे पर फिसल गए हैं।"

आजादी मिले पांच साल भी पूरे नहीं हुए, अभी से लोग आजादी से तंग हो रहे हैं।

मगर...मगर...

शिवनाथ ने दस साल पहले की एक भावुकतापूर्ण रात की बात याद करने की कोशिश की—क्या केशव मंडल इस तरह जनता का राजा बनने की आशा में एक दिन सुरक्षित जीवन का आराम और चैन त्याग कर अनिश्चित अंधकार के बीच कूद पड़ा था ? जेल की तरफ कदम बढ़ाते हुए उस दिन उसके मन में क्या आज के विलास-वैभव और शक्ति का स्वप्न था ? तो क्या आदर्शवाद मानव मन की क्षणिक उत्तेजना का नाम है ? स्वार्थ और क्षमता-लिप्सा ही मानव मन का एकमात्र स्थायी लक्ष्य और प्रेरणा है ?

"पर केशव मंडल जनता के मुंह से कौर छीनकर दो बोरियां चावल अपने घर क्यों ले गया ?" शिवनाथ ने फटिक से पूछा, "अपने लालच पर वह काबू नहीं रख पाया क्या ?"

"आप भी खूब बात कहते है, बाबूजी ?"—एक मामूली बात को समझ न

पाने की शिवनाथ की आदत से फटिक नाराज हो गया, "इस तरह जनता का हक नहीं छीनेगा तो केशव मंडल खाएगा क्या ? खुद तो दिन भर मीटिंग-सभा करते हुए घूमते-फिरते घर का काम करने के लिए उसे समय ही नहीं मिलता, दो लड़कों को शहर के बोर्डिंग स्कूल में पढा रहा है, बड़ा आदमी होने के नाते दिन-रात घर में मेहमानों का तांता लगा रहता है, ऐसी हालत में चोरी-चकारी नहीं करेगा तो गुजारा कैसे चलेगा ? इसीलिए हमारे लोग कहते हैं, जितने भी लोग पहले वालंटियर थे, अब वे सभी चोर बन चुके हैं। जीवन भर वालंटियर बने रहने के कारण वे काम करने की आदत भूल गए। अब मजबूर होकर वे बैठे-बैठे खाने के लिए जालसाजी-चोरी जैसे आसान तरीके अपना रहे हैं। उनका मानना है—हमने इतनी तकलीफ झेलकर, जेल में रहकर तुमलोगों को आजाद करवाया, तुमलोग हमें बैठे-बैठे क्यों नहीं खिलाओगे ?"

फटिक से बाते करते हुए कब शाम ढलकर रात हो गई—शिवनाथ को पता ही नहीं चला। जिस तरह बाजीगर जादू के बल पर तांबे को सोना बनाता है और सोने को लोहा बना देता है, ठीक उसी तरह किसी अदृश्य बाजीगर ने एक समय के त्यागी, आदर्शवादी और देशभक्त केशव मंडल को धीरे-धीरे हजारों दर्शकों के सामने चोर, फरेबी और झूठा बना दिया है। एक समय के देशद्रोही और समाज के लिए उपहास के पात्र रेब महाजन को समाज का सर्वोच्च ताकतवर नायक बना दिया है। मन ही मन मनुष्य के ऐसे आश्चर्यजनक रूपातर के बारे में, जादू के बारे में सोचकर शिवनाथ खामोश रहा। तभी तेजी से बिजली चमकी जिसने अंधेरे को चीरकर पल भर के लिए समूचे आकाश को रौशन कर दिया। अगले पल ही भयंकर गर्जन की आवाज सुनाई पड़ी, जिससे चौंककर फटिक और शिवनाथ लगभग चीखते हुए उछलकर खड़े हो गए। फटिक बोला, इस बार जनता बेमौत मारी जाएगी, बाबूजी ! अभी पानी सूखा ही नहीं, फिर वर्षा शुरू हो रही है। इस बार पहले से भी तेज वर्षा होगी, मौसम के लक्षण देखकर ही मैं समझ गया हूं। अब मैं चलता हूं, बाबूजी ! तेज वर्षा से पहले घर पहुंचना ठीक रहेगा।" ...दवे स्वर में स्वगत कथन की तरह फटिक ने फिर कहा, "घर जाकर ही क्या फायदा होगा बाबूजी, घर जाकर देखूंगा बाहर आसमान से बरसते पानी को और भीतर आंसुओं की बरसात को। बच्चे पेट पर गमछा बांधे मेरे लौटने की राह देख रहे होंगे—पिताजी आएंगे, रिलीफ का चावल लाएंगे...। पर जब मैं खाली हाथ घर पहुंचूंगा...ठीक है, अब चलता ही हूं, बाबूजी !"

इस बीच वर्षा शुरू हो गई थी। बारिश के बीच ही फटिक घर के लिए रवाना हुआ। वह आंगन से बाहर निकला ही था कि मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई। पहुंचते-पहुचते वह पूरी तरह भीग जाएगा—शिवनाथ ने सोचा।

उसके बाद वह बिना कुछ सोचे बारिश की झर-झर की आवाज, हवा की

सरसराहट और बीच-बीच में बादल के गरजने की आवाज ध्यान से सुनने की कोशिश करने लगा—मानो वह हवा, बारिश और बादल की सम्मिलित आवाज न हो—जैसे गहरे अंधेरे के बीच विश्व के विराट मंच पर प्रकृति का एक महान और भयंकर कार्यक्रम चल रहा हो, जिसका एकमात्र श्रोता शिवनाथ है।

तृतीय पर्व

1

अगहन महीने की अपराह्न। गांव में पूरी तरह खामोशी थी, क्योंकि गांव की सभी औरतें खेतों मे धान काटने में और पुरुषगण गट्ठर लाने में व्यस्त थे। स्कूली बच्चों के लौटने का तब भी समय नहीं हुआ था। दोपहर भोजन कर कुछ देर सुस्ताने के बाद शिवनाथ भंडार में धान रखने के लिए घुसा था। यह काम हमेशा वह स्वयं ही करता है। गांव में सिर्फ उसी के घर में धान का गट्ठर कंधे पर लादकर न लाकर बैलगाड़ी से लाया जाता है। प्रतिदिन धान को अलग-अलग सजाकर नहीं रखने से नए गट्ठर को भीतर डालने में परेशानी होती है। पके धान की मादक खुशबू महसूस करते हुए धान रखने के काम में शिवनाथ को बहुत आनंद मिलता है। इसके अलावा, धान रखते समय वह जिस तरह सोच-विचार कर रखता है–पुराने जोहा, नल सिटिकी, शोलपोना और आमपाखी धान को पहले व्यवहार करने के लिए ऊपर रखकर नए धान को नीचे रखता है, बड़ और बाउ धान को बेचने के लिए और बड़ा धान नाश्ते के लिए अलग से रखता है, पुराने आहू धान को मछली के बदले देने के लिए और मांगने वालों को देने के लिए एक तरफ रखता है–ऐसे काम की जिम्मेवारी नौकरों पर नहीं छोड़ी जा सकती। धान रखते हुए शिवनाथ मन ही मन तरह-तरह की बातें सोचता रहता है। उसका मन तृप्ति से पूर्ण है। कारण, इस बार उसके खेतों में पिछले कई सालों की तुलना में अच्छी उपज हुई है। धान की कटाई के लिए पहले वह दस-बारह महिलाओं को तैनात करता था, पर इस बार बाईस महिलाओं को तैनात किया है। महिलाओ के साथ शिवनाथ की पत्नी भी हमेशा खेत में जाती है। वह चाहे तो धान काटने नहीं भी जा सकती है। पर घर का कोई सदस्य साथ न होने पर मजदूरिनें मन लगाकर कार्य नहीं करतीं। तांबूल खाने या रबाब फल खाने के बहाने बैठकर वे घंटों यूं ही गुजार देती हैं। वैसे अच्छी उपज हुई है, इसीलिए बाईस महिलाओं को तैनात न करने से भी काम चल सकता था। पंद्रह-सोलह महिलाओं को रखने से भी काम हो जाता। पर इस बार कैवर्त गांव की दशा इतनी बुरी है कि गांव के सारे लोग उसके घर के सामने जुट गए। सभी धान की कटाई करना चाहते थे। पचास के भूकंप में नदी-तालाब भर जाने के कारण मछली पकड़ने का काम बंद होने से कैवर्त गांव के लोगों की स्थिति शोचनीय हो गई है। मछली पकड़ने

लायक कहीं एक बूंद पानी नहीं, वही खेत के नाम पर खड़े होने लायक जमीन भी नहीं। परती क्षेत्र के जंगल साफ कर और लोगों से बैल मांगकर बीच-बीच में थोड़ी-बहुत खेती करने की कोशिश करते हैं। वहां आहू धान के सिवा कुछ भी नहीं उपजता। पर वह भी ठीक से कर पाएं, उससे पहले बाढ़ सब कुछ बहाकर ले जाती है। इस बार उनकी स्थिति इस तरह शोचनीय हो गई है कि नाले में वर्षा का पानी सूखने के बाद गर्म कीचड़ में छटपटाने वाली छोटी मछलियों की तरह उनके प्राण भी कंठ तक पहुंच गए हैं। शिवनाथ ने हिसाब लगाया कि सोलह की जगह बाईस महिलाओं को तैनात करने से कोई नुकसान नहीं होगा (चूंकि पहले मजूरी के रूप में दो दोन धान दिया जाता था, अब डेढ़ दोन धान मजूरी देने पर महिलाएं कटाई के लिए तत्पर है), बल्कि अभाव में फंसे लोगों को संकट में मदद कर उन्हें कृतज्ञता के बंधन में बांधकर रखने के अलावा धान झरने से पहले भंडार में सुरक्षित हो जाएगा, जो फायदेमंद ही साबित होगा। कुल मिलाकर चारों तरफ इस बार शिवनाथ के लिए खुशहाली है, इसीलिए वह मन ही मन तृप्त है।

शाम होने तक धान रखने का काम पूरा हुआ और शिवनाथ आगन के बाहर निकल आया। चारों तरफ हेमंत ऋतु की शाम की शांत खामोशी। बीच में रास्ते से धान का गट्ठर लादकर ले जा रहे एक आदमी की गहरी सांस और गट्ठर के हिलने की आवाज ने उस खामोशी को भंग किया। शिवनाथ ने तृप्ति और सुकून भरी नजरों से चारों तरफ की प्रकृति को निहारा। सड़क पर कुछ छोटी लड़कियां पीठ पर बच्चों को बांधकर एड़ा पेड़ के बीज से खेल रही थीं, दो लड़कियां सड़क किनारे जंगली करेले के पौधों के बीच करेला तलाश रही थीं। शाम को खेत से मां और दीदी के लौटने तक वे वहीं बेचैनी से उनकी बाट जोहती रहेंगी। केरकन के घर के सामने बाड़ी में केरकन की वृद्धा मां बैठकर प्याज की जड़ कुरेद रही है और रात के भोजन के लिए लाई-लफा साग बटोर रही है। लाई साग तोड़ने से निकली गंध शिवनाथ तक पहुंची, उसने स्निग्ध तृप्ति का अनुभव किया। अगहन महीने के डूब रहे सूरज की कमजोर पीली धूप हरी बाड़ी पर करुण रूप से फैली है और उसी के बीच चुपचाप आत्ममग्न होकर बैठी अस्सी-वर्षीया वृद्धा शीत के मूर्त प्रतीक के रूप में चमक रही है। कुछ देर बाद आकाश में पश्चिम की तरफ लौटता हुआ बगुलों का झुंड दिखाई दिया। सूरज की सुनहरी धूप ने उनके सफेद पंखों को भी सुनहरा बना डाला है। शिवनाथ ने एक बार सड़क पर खेल रही लड़कियों को, एक बार साग की बाड़ी में बैठी वृद्धा और एक बार आकाश में उड़ते बगुलों के झुंड की तरफ देखा। चारों तरफ मानो लौट आने और लौटाकर पाने की एक करुण व्याकुलता जाग उठी है—शिवनाथ ने धीरे-धीरे मन में ऐसा अनुभव किया और सूरज डूब गया और देहाती हेमंती शाम का धूसर अंधेरा चारों तरफ फैल गया।

कुछ देर बाद दूर से गाय के रंभाने की आवाज सुनाई पड़ी—शिवनाथ ने उसी

तरफ देखा। धुंधले अंधेरे में देखा—रास्ते पर गायों का झुंड आ रहा है और उनके पैरों के नीचे से उड़ रही धूल ने रास्ते को धुंधला बना डाला है। पल भर में ही गांव की हवा ओस में भीगी गाय की गंध और धूल की गंध से भर गई। रास्ते पर खेल रही लड़कियां रास्ते के एक किनारे खड़ी हो गईं और आपस में खुशी जाहिर करने लगीं। शिवनाथ ने उनकी दृष्टि का अनुसरण कर देखा—दूर गायों के बीच महिलाएं भी नजर आ रही हैं। अंधेरे में उनके चेहरों को पहचाना नहीं जा सकता। मगर धीरे-धीरे थके कदमों से आ रही उनकी छाया को पहचानने में गलती नहीं हो सकती। सिर्फ छोटी लड़कियां ही नहीं—शिवनाथ ने भी अपने मन में प्रतीक्षा की व्याकुलता का अनुभव किया। धान की कटाई के दिनों में जब पत्नी दिन भर घर में नहीं रहती, तब वह सिर्फ घर में ही नहीं, मन के भीतर भी एक खालीपन का अनुभव करता है। कब शाम होगी, कब वह घर लौटेगी—उसी के लिए उसके मन का कोई कोना शांत प्रतीक्षा करता रहता है। अब महिलाओं को लौटते देख उनके बीच पत्नी को भी देखने के लिए शिवनाथ अंधेरे में तीक्ष्ण दृष्टि से देखने लगा।

आखिरकार लंबी प्रतीक्षा खत्म हुई। गायों के बीच धक्का देती हुई शिवनाथ की पत्नी आंगन के बाहर आ गई और पति को सामने खड़ा देखकर उसने कमर पर दोनों हाथ रखकर थकान जताने के लिए जम्हाई ली। फिर पति की तरफ देखकर उसने पूछा, "क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं—" मन के आवेग को छुपाने के लिए शिवनाथ ने ठंडे स्वर में कहा, "आज जराटेंगानीपुखरी के किनारे नल सिटिकी धान की कटाई पूरी हो गई न ?"

"हो गई किसी तरह। उस काम को पूरा करने के लिए ही तो इतनी देर हो गई। मजदूरिनों से काम करवाना टेढ़ी खीर है, शाम होने से पहले ही वे घर लौटने के लिए अफरा-तफरी शुरू कर देती हैं..."

पत्नी की बात पूरी होने से पहले शिवनाथ को बाहर की तरफ कदम बढ़ाते देखकर पत्नी ने फिर पूछा "शाम के वक्त आप कहां जा रहे हैं ?"

"तुम चलो—" शिवनाथ ने आगे बढ़ते हुए कहा, "मैं गांव की तरफ जा रहा हूं, पता करूंगा, मछली मिल सकती है शायद।"

बड़ी शोल मछली लेकर जब शिवनाथ घर लौटा, तब तक अलाव जलाकर पत्नी देह की थकान और सर्दी दूर करने में जुट गई थी। पास ही चाय की केतली में पानी उबल रहा था। चारों बच्चे अलाव के इर्द-गिर्द बैठे पीठा खाते हुए मां से गप्प लड़ा रहे थे। शिवनाथ के लिए निर्धारित स्थान पर कटहल की लकड़ी की पीढ़ी प्रतीक्षा कर रही है। लाल रंग की बड़ी शोल मछली को देखते ही लड़के खुशी के मारे उछल पड़े। बड़े लड़के ने कहा, "मां मां, तुमने एक दिन जिस तरह शोल मछली के साथ लाई साग का व्यंजन बनाया था, आज भी वैसा ही बनाना पड़ेगा। मुझे

बहुत पसंद है।''

मंझले ने कहा, ''क्यों बनेगा लाई के साग का व्यंजन ? मुझे अच्छी तरह याद है, सरसों के साग के साथ व्यंजन बना था। वह मुझे बहुत पसंद है।'' शिवनाथ ने अपनी जगह पर बैठते हुए कहा, ''ठीक है, जैसा उचित समझेगी वैसा ही बनाकर देगी। अब तुमलोग जाकर पढ़ो। नकुल कहां गया ? उससे मछली काटने के लिए कहो।''

अगहन महीने की शाम आग की गर्मी छोड़कर कौन लड़का ठंड से कांपते हुए पढ़ने के लिए जाना पसंद करेगा ? बड़ा और मंझला जाएं-न जाएं, सोचते हुए अनमने भाव से पढ़ने के लिए बाहर निकल गए। चाय पीकर शिवनाथ की पत्नी भी उठ गई। दिन भर खेत में काम करके आई है, पर आग के पास आराम करने से काम नहीं चलेगा। खाना बनाने के लिए रसोई में जाना पड़ेगा। शिवनाथ की पत्नी ने रसोई में जाने से पहले शिवनाथ से कहा, ''नकुल मछली काटकर बांस के सांचे में बड़ा चावल डाल देगा। आप यहीं बैठकर चावल भूनते रहिए। कई दिनों से लड़के भुने हुए चावल के लिए तंग कर रहे हैं।''

अलाव के पास शिवनाथ अकेला रह गया। वह चुपचाप बैठे-बैठे आग की गर्मी और सुखी गृहस्थी की शांति की तृप्ति का अनुभव करता रहा। कभी-कभी इस समय पड़ोस के एक दो नौजवान-बूढ़े—खासकर देउबर और नोमल बूढ़ा—अलाव के पास बैठकर सुख-दुख की बातें करने आते हैं। कभी-कभी बातों का सिलसिला खत्म होने का नाम ही नहीं लेता और वे शिवनाथ के घर में ही खाना खाकर देर रात को अपने घर लौटते हैं। पर आज कोई नहीं आया। शिवनाथ को अच्छा ही लगा। कभी-कभी खुद से बातें करना उसे अच्छा लगता है। अपने आप में मग्न रहते हुए अचानक एक बार उसने महसूस किया मानो पृथ्वी पूरी तरह खामोश हो चुकी है, अलाव बुझ चुका है। उसने हड़बड़ाकर सूखी लकड़ियां अलाव में डाल दीं। पट-पट की आवाज के साथ आग की लपटें फौरन उठने लगीं। तभी नकुल बांस के सांचे में चावल डालकर उसके पास रख गया। कोई काम पाकर उसे अच्छा लगा। कुछ देर बाद बांस के झुलसे कच्चे बांस की प्यारी गंध उसने महसूस की, वह गंध उसे एक मधुर स्मृति जगत में ले गई। पृथ्वी की खामोशी भी जैसे खत्म हो गई। गांववासी अक्सर सुबह ही ढेकी से धान कूटते हैं और दिन के लिए सुबह ही चावल तैयार कर लेते हैं। पर अगहन-पूस महीने में धान की कटाई होने के कारण सबको सुबह के वक्त खेतों में जाना पड़ता है, इसीलिए शाम के वक्त ही धान कूटने का काम किया जाता है। युवतियां और बहुएं खेतों से लौटकर अलाव के पास कुछ देर सुस्ताने के बाद ढेकी से धान कूटना प्रारंभ कर देती हैं। ढेकी की आवाज ने आलस्य के नशे से ऊंघ रहे शिवनाथ के मन में एक कर्मव्यस्त जीवन का चंचल छंद पैदा कर दिया, और वह बेमतलब चिंतन की धारा में बहने की जगह सतर्क होकर विभिन्न

कार्यो के बारे में सोचने लगा।

पत्नी कई दिनों से नवान्न भोज की व्यवस्था करने के लिए उससे कहती रही है। आलस के चलते उसने इस बारे में ध्यान नहीं दिया है। संभव हुआ तो कल एक बड़ी मछली की तलाश में नकुल को काबैमारी तालाब की तरफ भेजना होगा। बूढ़े काले बैल के घाव में कीड़े नजर आने लगे हैं, उसे भी सुबह अस्पताल ले जाना पड़ेगा। लगता है, इस बार यह बैल नहीं बचेगा। यह बात सोचते ही शिवनाथ के सीने से एक अस्फुट लंबी आह निकल पड़ी—मानो बैल नहीं, परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु की आशंका सामने हो। बैल की उम्र काफी हो चुकी है। पिछले दो सालों से उसे हल जोतने के काम मे नहीं लगाया गया। इसीलिए बैल के मर जाने से उसे कोई आर्थिक क्षति होने जैसी बात नहीं है। परंतु शिवनाथ के लिए (प्रत्येक ग्रामीण किसान के लिए) गाय-बैल सिर्फ संपत्ति ही नहीं हैं, बल्कि उनके लिए अपनी संतान की तरह परिवार के अभिन्न अंग की तरह है। वह अभी अलाव के पास आराम से बैठा है और इसी समय बेचारा बूढ़ा बैल किस तरह कीड़ों के दंश से मवेशीघर में छटपटा रहा है, यह सोचकर शिवनाथ रुआंसा हो उठा।

भोजन के बाद बच्चे सोने के लिए चले गए। शिवनाथ और उसकी पत्नी अलाव के पास बैठकर तरह-तरह की बेसिर-पैर की बातें करते रहे। शिवनाथ के लिए यह समय अत्यंत मधुर समय है। आग की गर्मी, बेफिक्र होकर आराम करने की गर्मी, पत्नी के साहचर्य की गर्मी—ये सभी गर्मी मिलकर मानो संसार के तमाम जटिल बंधनों को एक-एक कर काटना शुरू कर देती हैं, और शिवनाथ का तन-मन हल्का होकर नींद की गोद में आत्म-समर्पित होने के लिए तैयार हो जाता है। कुछ देर बाद वह बिस्तर में होगा, रजाई से मुंह छिपाकर जब वह सोएगा तब नाक में गंदी रजाई की परिचित गंध समाएगी। पास में सोए बच्चों के धूल-धूसरित शरीर की गंध समाएगी। पास ही सो रही पत्नी के शरीर से खेत की घास-फूस और हवा की गंध, बचपन की सुनहरी स्मृति की गंध, यौवन की प्रथम राशियों की मोहक मदिर गंध समाएगी....

2

नींद से हड़बड़ाकर जागने की तरह शिवनाथ की तंद्रा टूटी। वह अपने दिवा-स्वप्न जगत से जाग उठा। कुछ पल वह तय नहीं कर पाया कि वह सपना था या वास्तव। धीरे-धीरे उसकी चेतना लौट आई। उसने अनुभव किया कि अब तक वह अतीत की स्मृतियों के जगत की सैर कर रहा था। पर स्मृतियां खत्म होने के साथ-साथ वह यथार्थ की ठोस जमीन पर औंधे मुंह गिर पड़ा है और एक असह्य यंत्रणा ने तन-मन को पंगु बना डाला है।

यह सब कई साल पहले की बातें हैं। पर इतने दिनों में ही संसार का रूप आश्चर्यजनक रूप से बदलता गया है। उसने मन ही मन अनुभव किया—जीवन के नाटक का आधा से ज्यादा हिस्सा थका देने लायक लंबा और नीरस था। चिरपरिचित एवं चिरप्रत्याशित घटनावली से भरपूर वे दृश्य थे—जहां कोई नयापन नहीं, नाटकीयता नहीं, किसी प्रकार का रहस्य, उत्कंठा या कौतूहल का उपकरण नहीं—वे दृश्य इस तरह धीरे-धीरे गुजर रहे थे मानो वे कभी खत्म नहीं होंगे। सोते-बैठते, जम्हाई लेते, अन्यमनस्क होकर निश्चितता के साथ देखते रहने में दर्शक को कोई परेशानी नहीं थी। पर अचानक, अप्रत्याशित रूप से, नाटक के बीच एक विपत्ति की घड़ी आ गई और उस घड़ी के बाद तेजी के साथ नाटक के दृश्य बदलने लगे।

सिर्फ इतना ही नहीं, प्रत्येक नए दृश्य ने ऐसी अद्भुत घटनाओं की सूचनाएं दीं जिनके लिए नाटक के प्रथमार्ध में कोई तैयारी नहीं थी, न ही कोई संकेत था। आराम की भंगिमा त्यागकर शिवनाथ सीधे और सतर्क होकर बैठने के लिए विवश हो गया, वह एक यंत्रणामय उत्तेजना का अनुभव करने लगा।

यंत्रणा—चूंकि वह इस नाटक का दर्शक नहीं था, बल्कि स्वयं एक अभिनेता था, चूंकि यह महज नाटक नहीं था, यह उसका जीवन था।

एक-एक कर वैशाख के पंद्रह दिन बीत गए। हर दिन शिवनाथ आशा करता कि आज लोग आएंगे। आसपास के गांवों के आधे से ज्यादा लोग भूमिहीन हैं। कैवर्त गांवों में तो किसी के पास भी खेती लायक थोड़ी-सी जमीन भी नहीं है। इन भूमिहीन किसानों में से बीस-पच्चीस घर के लोग हमेशा शिवनाथ से बंटाई के आधार पर खेत लेते हैं। सामान्यतया वैशाख बिहू के दिन से ही बंटाई के लिए खेती मांगने के लिए लोगों का हुजूम इकट्ठा हो जाता है। सभी कोई उपहार लेकर शिवनाथ को बिहू की बधाई देने आते हैं, और साथ ही साथ शालि धान की खेती के लिए मामला भी तय कर लेते हैं। पर इस बार वैशाख बिहू के दिन तो कोई आया ही नहीं, आज वैशाख के पंद्रह दिन बीत जाने पर भी बंटाई के लिए खेत मांगनेवाला कोई भी किसान उसके घर नहीं आया। एक ऐसी संभावना के लिए महीनों पहले से ही शिवनाथ मन ही मन तैयार हो चुका था।

गांव में शालि धान के लिए उपयोगी अधिकतर खेतों का मालिक शिवनाथ है। और जिन एक-दो लोगों के पास वैसे खेत हैं, उनकी उपज साल भर के गुजारे के लिए पर्याप्त नहीं होती। वे लोग भी शिवनाथ के पास बंटाई के लिए मिन्नत करने पहुंच जाते हैं। मोहधूलि नदी के दूसरे किनारे पर एक परती क्षेत्र है। हर साल ग्रामीण वहां जंगल साफकर सरसों एवं साग उपजाते हैं। पर वर्षाकाल में समूचा परती क्षेत्र समुद्र बन जाता है। तब वहां खेती कर पाना संभव नहीं होता। पर पिछले साल से ही सरकार ने उस क्षेत्र को बाढ़ से बचाकर शालि धान की खेती के लिए उपयोगी बनाने के लिए एक बांध का निर्माण शुरू किया था। इस साल चैत महीने

के अंत में बांध का निर्माण कार्य पूरा हो गया। बांध का निर्माण शुरू होते ही शिवनाथ आशंकित हो उठा था कि उसके दबदबे का युग शायद खत्म हो चुका है। जैसे ही वह परती क्षेत्र बाढ़ के खतरे से मुक्त होकर धान की उपज के लिए उपयोगी हो जाएगा उसकी जमीन पर बंटाई करने वालों की तादाद लगभग खत्म हो जाएगी, चूंकि सभी परती क्षेत्र में खेती करना शुरू कर देंगे। फिर भी मन ही मन उसने एक क्षीण आशा बनाए रखी थी कि पहले की तरह बीस-पच्चीस घर के लोग न सही, चार-पांच घर के लोग बंटाई के लिए खेत मांगने जरूर आएंगे। हो सकता है, इस बार सौदेबाजी अलग ढंग से हो, इस बार वह जो शर्तें रखेगा, लोग उन शर्तों को नहीं मानेंगे। पहले की तरह उपज के चार हिस्से में से एक हिस्से की जगह तीन हिस्से में एक हिस्सा या फिर आधे हिस्से की मांग करेंगे। पर नीतिशास्त्र में कहा गया है—सर्वनाश समुत्पन्ने अर्ध त्याजति पंडितः—सर्वनाश सम्मुख आने पर ज्ञानी लोग आधे हिस्से का त्याग कर देते हैं। शिवनाथ वही करेगा। बंटाई की खेती में आधा हिस्सा छोड़ देने पर भी जो बचेगा उससे शिवनाथ के परिवार का गुजारा हो सकेगा। फिर भी चार-पांच घर के लोग शिवनाथ के पास खेत मांगने आएं तो सही।

पर वैशाख के पंद्रह दिन बीत जाने के बाद भी जब शिवनाथ के पास खेत मांगने कोई नहीं आया, वह मन ही मन वजह तलाशने लगा। शिवनाथ के घर में सात पीढ़ियों में ऐसी घटना नहीं घटी थी।

अब रास्ता क्या है ? इस तरह बैठे रहने से काम नहीं चलेगा। पैदा होने के बाद से लेकर शिवनाथ के आधे जीवन का अधिकाश हिस्सा बैठे-बैठे ही गुजर गया। वह पूरी तरह निश्चित था कि बाकी जीवन भी इसी तरह बैठे-बैठे गुजार देगा। औरों की मेहनत पर निर्भर रहकर खाते हुए वह कोई अन्याय कर रहा है—ऐसा विचार कभी भी मन में नहीं आया। वह हमेशा सरल मन के साथ विश्वास करता रहा है कि यह एक सुनिश्चित और योजनाबद्ध विश्व-विधान है—जहां प्रत्येक मनुष्य का जीवन, स्थान और कर्तव्य भाग्य द्वारा निर्धारित किया हुआ है। प्रकृति के नियम की तरह शुद्ध और चिरंतन है यह विश्व-विधान—जहां, कभी भी कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। पर अब अगर कोई उसके पास बंटाई के लिए खेत मांगने नहीं आएगा या मासिक मजूरी के बदले वह कोई हलवाहा तलाश नहीं पाएगा, तब तो एक ही दिन में उसके जीवन का सात पुश्तों का महल ढह जाएगा। जीवन की इस संध्या बेला में क्या उसे हल जोतने के लिए खेत में जाना होगा ? एक अज्ञात भय के कारण वह कांप उठा।

डरने के लिए कई कारण हैं। युवावस्था के निश्चिंत शांत दिन धीरे-धीर खत्म हो गए, अब बच्चों के बड़े होने के साथ ही परिवार की समस्याएं भी बढ़ गई हैं। शिवनाथ का बड़ा लड़का गौरीनाथ इस साल इंजीनियरिंग कालेज में चौथे वर्ष का छात्र है। उसे प्रति माह डेढ़ सौ रुपए भेजने पड़ते हैं। मंझला लड़का कालीनाथ होस्टल

में रहकर शहर के सरकारी स्कूल में पढ़ता है। मोहधूलि में सरकारी सहायता-प्राप्त एक हाई स्कूल है, पर उपयुक्त शिक्षक की कमी के कारण स्कूल का परिणाम आज तक संतोषजनक नहीं रहा है, हेडमास्टर स्कूल के कार्यों की जगह स्थानीय राजनीति में ज्यादा रुचि लेता है, इसीलिए शिवनाथ ने कालीनाथ को शहर के सरकारी स्कूल में दाखिला दिलवा दिया है। उसे प्रतिमाह पचास-साठ रुपए भेजने पड़ते हैं। खेती के अलावा शिवनाथ के पास कमाई का दूसरा जरिया नहीं है। किसी तरह दो वक्त का भोजन जुटाना ही होता तो कोई बड़ी समस्या नहीं थी, मगर खेत के धान से ही दोनों लड़कों की पढ़ाई का खर्च भी निकालना होगा। खेती बंद हो जाए या उसका परिमाण घट जाए तो फिर लड़कों को पढ़ाने का खर्च कैसे जुटा पाएगा—इस बारे में सोचकर जीवन में पहली बार शिवनाथ का दिल डूबने लगा।

शिवनाथ की समस्या यहीं पर खत्म नहीं होती। उसके दोनों बड़े लड़के अब तक पढ़ाई में तेज रहे हैं मगर सबसे छोटा लड़का लक्ष्मीनाथ पढ़ाई के मामले में फिसड्डी था। कई कक्षाओं में एक साल-दो साल ठहर कर इस बार किसी तरह हाई स्कूल की पांचवीं कक्षा में पहुंच पाया है। वह सिर्फ पढ़ाई के मामले में ही फिसड्डी था, यह बात नहीं थी, बचपन से ही उसकी मति-गति और चाल-चलन देखकर शिवनाथ काफी चितित रहने लगा था। घर में वह मां-बाप की बात नहीं सुनता, बाहर भी वह अपने साथियों के साथ लड़ता-झगड़ता रहता है। और तो और, एक दिन स्कूल में भी शिक्षक ने जब उससे कोई प्रश्न पूछा और वह जवाब नहीं दे पाया तब शिक्षक ने दो बार बेंत की छड़ी से उसकी पिटाई की। लक्ष्मीनाथ ने शिक्षक के हाथ से छड़ी छीनकर उल्टे शिक्षक की पिटाई कर डाली। उस अपराध के चलते हेडमास्टर उसे स्कूल से निकाल देना चाहता था। शिवनाथ ने हेडमास्टर से काफी अनुनय-विनय कर ऐसा न करने के लिए मना लिया। घर में उसने लक्ष्मीनाथ की बेंत की छड़ी से पिटाई की। गुस्से से घर में तांडव करते हुए वह बोला, "इस घर में आज से नहीं रहूंगा।" वह बाहर निकल गया। शिवनाथ और उसकी पत्नी ने सोचा कि गुस्सा शांत होने पर वह रात में घर लौट आएगा। शाम हुई, फिर रात हुई। खाने का समय हो गया, मगर लक्ष्मीनाथ लौटकर नहीं आया। शिवनाथ ने गुस्से के समय तय किया था कि उसे तलाश करने नहीं जाएगा और चुपचाप घर में बैठा रहा था, मगर रात अधिक होने के साथ उसकी पत्नी ने रोना-धोना शुरू कर दिया। लाचार होकर शिवनाथ लाठी और लालटेन लेकर बेटे की तलाश मे निकल पड़ा। मगर आधीरात तक गाय तलाशने की तरह काफी भटकने पर भी बेटे को तलाश नहीं पाया। बारह साल का छोटा लड़का गायब हो गया, उस रात घर में किसी ने खाना नहीं खाया, न ही कोई सो सका। लड़के की मां और दोनों लड़कियां सुबह तक रोती रहीं। सुबह होने पर नए सिरे से लक्ष्मीनाथ की तलाश शुरू हो गई। आखिरकार गांव के कुछ लड़कों ने उसे जंगल में एक पेड़ के पास खोज निकाला। बारह साल के छोटे लड़के ने

घने जंगल में एक पेड़ पर अकेले पूरी रात गुजार दी। उसकी हिम्मत देखकर खुश होने की जगह शिवनाथ काफी चिंतित हो उठा। उस दिन के अनुभव के बाद शिवनाथ ने लक्ष्मीनाथ को डांटने का भी साहस दुबारा नहीं किया। लक्ष्मीनाथ पिता की कमजोरी समझ गया और उस दिन से उसकी उच्छृंखलता बढ़ती चली गई। शिवनाथ के मन में कोई संदेह नहीं रहा कि उसका सबसे छोटा बेटा लक्ष्मीनाथ एक गुंडा बनने की राह पर तेजी से आगे बढ़ रहा है।

शिवनाथ की दो लड़कियां हैं। बड़ी लड़की का नाम रंभा है और छोटी लड़की का नाम सावित्री है। रंभा के लिए वह सदैव चिंतित रहता था, अव चिंता ने आतंक का रूप धारण कर लिया है। बचपन में देखने मे वह काफी सुंदर थी। परंतु पांच वर्ष की उम्र में चेचक होने के कारण उसका चेहरा चेचक के दागों से भर गया और एक आंख भी जाती रही। विवाह के समय वह एक गंभीर समस्या बनेगी–शिवनाथ को हमेशा यही डर सताता था। मगर वक्त आने पर देखा जाएगा, यह सोचकर वह डर को दबाता रहा था। मगर अब धीरे-धीरे रंभा विवाह योग्य होती जा रही है। जो लड़की कानी हो और चेहरे पर चेचक के दाग हों–उस लड़की के लिए आसानी से वर नहीं मिलेगा, इस बारे में शिवनाथ को कोई संदेह नहीं था। भाग्यवश कोई मिल भी जाएगा तो वह जरूर बदसूरत कन्या के बदले मुआवजे के रूप में भारी मात्रा में दहेज की मांग करेगा। यानी पैसे देकर शिवनाथ को एक वर खरीदना पड़ेगा। इसका मतलब, उधर भी खर्च का ही मार्ग है। पिछले कुछ दिनों से शिवनाथ प्रतिदिन बेटी के विवाह के बारे में सोचता रहा है, मगर ऐसी बदसूरत लड़की के लिए किसी से रिश्ता की बात चलाने की हिम्मत न कर पाने के कारण चिंता का दंश वह सहन कर रहा है।

बंटाई के लिए खेत मांगने वालों के आने का शिवनाथ ने और कुछ दिन इंतजार किया। मगर वैशाख के बीस दिन गुजर जाने पर भी जब कोई उसके पास नहीं आया। तब शिवनाथ समझ गया कि इस तरह बैठे रहने से काम नहीं चलेगा। स्वयं को बचाए रखने के लिए उसे इस बार जीवन में कभी नहीं किया गया काम भी करना पड़ेगा। पहले खेत मांगने के लिए आने वालों को खदेड़ना पड़ता था। इस बार बंटाई के लिए खेत देने के लिए उसे दूसरों के सामने हाथ जोड़ना पड़ेगा।

एक दिन दोपहर का भोजन करने के बाद काफी दिनों के अंतराल पर वह बाहर निकाला। इस तरह गर्जमंद बनकर बंटाई के लिए दूसरों से मिन्नत करने की स्थिति से शिवनाथ मन ही मन जिस अपमान का अनुभव कर रहा था वह भुक्तभोगी के सिवा दूसरा अनुभव नहीं कर सकता। मगर जब जान बचानी हो तब शर्म और इज्जत धरी की धरी रह जाती है। अपने गांव के जो लोग उसके खेत में बंटाई करते थे वह पहले उनके घरों में गया। जीवन में कभी उसे उन लोगों के घर किसी काम से जाना नहीं पड़ा था। एक प्रचंड अभिमान और संकोच की भावना उसके कदमों

को आगे नहीं बढ़ने देती थी।

भकतराम के घर के सामने खड़े होकर शिवनाथ ने देखा—वह भंडार के सामने मचान पर बैठा एक हल की धार तेज कर रहा है। वहीं से शिवनाथ ने पुकारा, "अरे ओ भकत, इस बार बिहू में हमारे घर चेहरा दिखाने भी नहीं आया।"

भकतराम ने आवाज सुनकर सिर उठाया और घर के सामने शिवनाथ को देखकर अपना काम छोड़कर फौरन खड़ा हो गया और तेजी से शिवनाथ के पास पहुंचा। सिर से गमछा खोलकर कंधे पर रखते हुए उसने कहा, "ददाई देउ, इस दोपहर के समय किधर निकले हैं ?"

जीवन में शिवनाथ ने बहुत कम झूठ बोला है। मगर उस पल सत्य बोलने की जगह आभिजात्य का अभिमान उसके मन पर ज्यादा हावी हो रहा था। हालांकि वह भकतराम से मिलने ही आया था, मगर उस बात को स्वीकार करना उसे असंभव लग रहा था। झूठ बोलने के कारण होने वाली हिचक को काफी प्रयास से छिपाते हुए वह बोला, "एक जगह जा रहा हूं भकत, खास काम है। तुझे देखा तो सोचा, हालचाल पूछता चलूं। इस बार बिहू के दिन हमारे घर की तरफ नहीं आया। इस बार खेती नहीं करेगा क्या ?"

भकतराम के चेहरे पर विनम्रतापूर्ण मुस्कान कौंधी। वह बोला, "मालिक, बिहू के दिन आपके घर सिर्फ खेत मांगने के लिए थोड़े जाते हैं ? यूं ही आपका आशीर्वाद लेने के लिए जाते हैं। पर इस बार क्या हुआ, जानते हैं मालिक, घर की बहू ने बिहू में मैके जाने की जिद पकड़ ली। औरत जात, जो एक बार कहेगी वही करेगी, हजारों बार धमकाएं, समझाएं, उनकी इच्छा बदली नही जा सकती। बात इतनी ही है मालिक, इस बार बिहू में मैं घर में था ही नहीं, औरत अपनी बात मनवाकर ही मानी और मैके पहुंच गई।...खेती-बारी के बारे में क्या कहूं मालिक, इस बार तो मेढक की पीठ पर रोएं उगते नजर आ रहे है। सरकार ने उधर ब्रह्मपुत्र और इधर मोहधूलि नदी पर बांध बना दिया है, इसीलिए जनता ने परती इलाके में शाली धान की खेती करने का फैसला किया है। उनकी देखादेखी मैंने भी परती जमीन पर धान बोने के बारे में सोचा है। इसीलिए इस बार मालिक के पास खेत मांगने नहीं जा पाया। मगर एक बात है मालिक, सरकार ब्रह्मपुत्र को बांधकर रख पाएगी, इसकी उम्मीद हमे कम ही नजर आती है। देउबर चौक पर मिरि लोगों को कहते सुना है—ब्रह्मपुत्र के किनारे बांध के ठेकेदार ने उन जंगली इलाकों में मिट्टी से बांध नहीं बनाया है। जहां लोगों का आना-जाना कम होता है, बांध में मिट्टी की जगह केले के पेड़ काटकर डाल दिए गए हैं, ऊपर से मिट्टी डाल दी गई है। इस तरह बनाया गया बांध कितने दिन टिक पाएगा ? एक ही बार बाढ़ आएगी तो बांध टूट-फूटकर बिखर जाएगा। तब तो एकमात्र सहारा मालिक के सामने ही हम सभी को दंडवत करना पड़ेगा। फिर भी इस साल देख लेते हैं, क्या होता है। गरीब की तरफ शायद

भगवान की नजर फिर जाए।"

भकतराम को वहीं छोड़कर शिवनाथ आगे बढ़ गया। बांध टूट भी सकता है—भकतराम की बात सुनकर शिवनाथ का दिल कुछ देर के लिए हल्का हो गया। पर अगले ही पल उसने तीव्र अपराध-बोध का अनुभव किया। सैकड़ों सालों से जलमग्न रहने वाले इस इलाके की भूमि धान की खेती के लिए अनुपयोगी थी, जिसके कारण आस-पास के चार-पांच गांवों के लोग बंटाई आदि करके बहुत कष्टपूर्ण जीवनयापन करते रहे थे। परती भूमि अनुपयोगी होने के कारण ही शिवनाथ जैसे दो-चार लोग दूसरों की मेहनत का फल उपभोग करते हुए बैठे-बैठे गुलछर्रे उड़ाते रहे थे। दूसरी तरफ, बंटाई करनेवाले कठिन परिश्रम करके भी सालभर लायक अनाज प्राप्त न कर आधा पेट खाकर गुजर-वसर करते थे और महाजन के कर्ज के बोझ से दवे रहते थे। आज बांध बनने पर परती क्षेत्र धान की खेती के लिए उपयोगी हो गया है, जिससे चार-पांच गावो के सैकड़ों लोगों के जीवन में दुख की रात खत्म हो जाएगी और नए दिन का सूर्योदय होगा। वैसी स्थिति में बांध के टूटने के बारे में सोचकर शिवनाथ ने बड़ा पाप नहीं किया है क्या ? मगर बांध जिस तरह भकतराम जैसे लोगों के लिए नव-जीवन का सूर्योदय है उसी तरह उसके लिए सर्वनाश का सूत्रपात है। ऐसी स्थिति में शिवनाथ अपने दिवास्वप्न के जगत में तय नहीं कर पाया कि बाध टूटने देगा या नही। वह बुरी तरह परेशान हो उठा है। वह किसी का अहित नहीं सोच सकता। गरीबों की तकलीफ मिटने से उसे खुशी होगी। मगर इसके लिए जीवन की संध्यावेला में आजन्म भोग किए गए आराम और स्वच्छदता का विसर्जन करने के लिए भी उसका मन तैयार नहीं है। तरह-तरह के विचारों में डूबा वह आगे बढ़ता रहा। एक समय उसका अंतर्द्वंद्व खत्म हुआ। भकतराम की बात अगर सच होती है, बांध अगर पहली बाढ़ में बह जाता है—तब शिवनाथ बहुत खुश होगा। बदसूरत आदमी जिस तरह आईने में अपनी सूरत देखकर गोपन दुख का अनुभव करता है, उसी तरह शिवनाथ भी अपना यह घिनौना स्वरूप देखकर अत्यंत लज्जित हो उठा। मगर इसके साथ-साथ उसने यह भी अनुभव किया कि उसकी स्वार्थ बुद्धि के सामने, उसकी आर्थिक सुरक्षा और संभ्रम रक्षा के विचार के सामने समस्त विवेक एवं मंगलबोध ने पराजय स्वीकार कर ली है।

भकतराम के घर से निकलकर शिवनाथ शर्म-हिचक छोड़कर कई पुराने बंटाईदारों के घर गया। सव एक ही बात कहते थे—बांध बंध जाने के कारण परती भूमि में शालि धान की खेती की जा सकती है। इसीलिए वे इस बार अपने भाग्य की परीक्षा वहीं करेंगे। हताश होकर शिवनाथ घर की तरफ लौटा। एक तर्कहीन क्रोध से उसका मन सुलग उठा। भकतराम के कहे अनुसार अगर बांध टूट जाए, तो अगले साल ये लोग ही आम पर मंडराने वाली मक्खी की तरह खेत मांगने उसके घर हुजूम बांधकर आएंगे। तब वह उन लोगों को देख लेगा। घर के प्रवेशद्वार के पास पहुंचकर थोड़ा

ठिठक कर उसने कुछ सोचा। फिर घर में न घुसकर बाहर-बाहर से ही कैवर्त गांव की तरफ रवाना हो गया। लोग बंटाई पर खेती करना नहीं चाहते, इसका मतलब यह नहीं कि वह खेती न करे। दो कैवर्त हलवाहों का इंतजाम करना पड़ेगा। परती भूमि को शाली धान की खेती के लिए उपयोगी पाकर कैवर्त गांव के लोग भी उत्साहित हो उठे हैं। वे लोग जीवन में पहली बार अपनी भूमि पर शाली धान की खेती कर सकेंगे। फिर भी शिवनाथ तीन हलवाहों का इंतजाम कर पाया। परती भूमि में उनके भी थोड़े-से खेत हैं, पर उनके पास हल जोतने के लिए बैल नहीं हैं। पैसे देकर भी कहीं से वे बैल का इंतजाम नहीं कर पाए। शिवनाथ को संकट में पाकर उन्होने अपनी अच्छी कीमत वसूल की। अक्सर दो बीघा पके धान के बदले में एक खेती के लिए एक हलवाहा मिलता है। मगर उन लोगों ने पूरी तरह एक-एक "पूरा" खेत की मांग की। मुसीबत का मारा शिवनाथ इसके लिए भी तैयार हो गया। वह समझ गया कि देश की स्वतंत्रता ऐसे लोगों के लिए पूरी तरह बेकार साबित नहीं हुई है। सैकड़ों वर्षो की भयंकर गरीबी और आर्थिक गुलामी के बाद देश आजाद होने के दस साल के भीतर उनके जीवन में भी नया परिवर्तन आने लगा है। दूसरी तरफ, शिवनाथ जैसे लोगों को खुद ही ऊंचे आसन से उतरकर जमीन पर आना पड़ा है। शिवनाथ ने एक अनिश्चित भविष्य का सामना करने के लिए अपने मन को तत्पर करने का प्रयास किया।

उस साल शिवनाथ के कई खेत यूं ही पड़े रहे। सिर्फ तीन हलवाहे कितनी जमीन पर खेती कर सकते थे ? फिर भी जो हुआ वही फसल ठीक से हो जाए तो किसी तरह शिवनाथ का गुजारा हो जाएगा। इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने में गौरीनाथ को लगभग और डेढ़ साल लगेगा। वह पढ़ाई पूरी कर नौकरी करने लगे तो शिवनाथ के कंधे का बोझ काफी कम हो जाएगा। तब उसे पढ़ाई का खर्च नहीं देना पड़ेगा, उल्टे वह कालीनाथ की पढ़ाई का खर्च दे पाएगा। किसी तरह यह डेढ़ साल गुजर जाए तो बेहतर।

गौरीनाथ के संबंध में शिवनाथ भविष्य का एक मधुर सपना देख रहा था। वह एक आदर्शवान लड़का है, पढ़ाई-लिखाई में तेज, स्वभाव-चरित्र शुद्ध, माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी। वह पढ़ाई पूरी कर अपना कर्म-जीवन शुरू कर दे, शिवनाथ दुनिया में किसी की परवाह नहीं करेगा, उसके हवाले गृहस्थी सौंपकर जीवन के बचे हुए दिन धर्म-चर्चा करते हुए गुजारेगा। मगर जिस साल बंटाई खेती करने वालों की कमी के कारण उसके खेत बिना जोते रह गए, उसी साल उसे गौरीनाथ से भी जीवन में प्रथम बार गंभीर आघात हुआ। उसका मधुर सपना एक ही दिन में टूट गया।

गौरीनाथ गर्मी की छुट्टी में घर आया। उसके घर आने के कुछ दिन बाद की बात है। शाम के वक्त शिवनाथ बरामदे में अपनी निर्धारित कुर्सी पर बैठा हुआ विचारमग्न था। गौरीनाथ की मां हाथ में एक कागज थामे गंभीर मुखमुद्रा के साथ

पति के पास आकर खड़ी हो गई। पति की तरफ कागज बढ़ाते हुए उसने कांपते स्वर में कहा, "इस कागज को पढ़िए तो!" शिवनाथ पत्नी के चेहरे का रंग उड़ा देखकर हैरान हो गया। उसने पूछा, "कैसा कागज है ? तुमने इस तरह मुंह क्यों बना रखा है ?"

पत्नी गुस्से के साथ बोली, "खुद पढ़ क्यो नहीं लेते ? देखिए अपने बड़े लाड़ले का कारनामा !" शिवनाथ कुर्सी से दोनों पैर उताकर तनकर बैठ गया और कागज ले लिया। एक बार सरसरी निगाह डालकर वह समझ गया—वह एक पत्र था। पत्र के प्रारंभ में ही 'प्राणप्रिय गौरी' संबोधन देखकर उसका सारा शरीर सिहर उठा। तेजी से उसने पत्र के नीचे लिखा नाम पढ़ा। वहां लिखा था—'जन्म-जन्म से तुम्हारी ही—उर्मिला।'

जैसे वज्रपात हो गया हो, उसी अंदाज में शिवनाथ ने एक ही सांस में पूरा पत्र पढ़ लिया। उसका दिमाग इस कदर शून्य हो गया था कि पहली बार पत्र पढने पर एक भी बात वह ठीक से समझ नहीं पाया। उसने दूसरी बार पढ़ा, तीसरी बार पढ़ा। उसने अनुभव किया, अचानक किसी अति प्रिय व्यक्ति के मरने की खबर मिलने की तरह उसका चेहरा पीला हो गया है। तीसरी बार पत्र पढ़ने के बाद पत्र को मुट्ठी में भींचकर उसने पत्नी से शुष्क आवाज में पूछा, "तुम्हें यह पत्र कहां मिला ?"

पत्नी बोली, "कुछ देर पहले रभा, भैया का सूटकेस खोलकर कुछ तलाश रही थी। क्या तलाश रही थी, मैंने उससे पूछा नहीं। सूटकेस के कोने में यह पत्र देखकर उसने निकाल लिया—लिफाफे पर उसने अपने भैया का नाम देखा। भैया को किसने पत्र लिखा है, यह जानने के लिए उसने पत्र निकालकर पढ़ लिया। हमारा बड़ा बेटा, जिसके दूध के दांत नहीं टूटे हैं, इस उम्र मे प्रेम-पत्र लिख रहा है, वह भला कैसे सोच सकती थी !"

काफी देर तक शिवनाथ स्तब्ध रहा। पत्नी भी बुत की तरह एक ही जगह खड़ी रही। अचानक एक बार चुप्पी तोड़कर शिवनाथ बोला, "बेटे से कह देना—मैंने उसे पढ़ने के लिए गुवाहाटी भेजा है, प्रेम करने के लिए नहीं भेजा। विवाह करने लायक उसकी उम्र नहीं हुई है। विवाह करेगा तो माता-पिता की पसंद की लड़की से ही विवाह कर पाएगा। प्रेम-पत्र लिखने वाली बाजारू लड़की से विवाह नहीं हो सकता। उसे यह भी कह देना—अगर अपना व्यभिचार वह तत्काल बंद नहीं कर देता तो मैं उसकी पढ़ाई का खर्च देना बंद कर दूंगा, मैं उसे त्याज्य पुत्र घोषित कर दूंगा।"

शिवनाथ की आखिरी बात सुनकर पत्नी का शरीर हल्का-सा कांप उठा। पच्चीस साल के वैवाहिक जीवन के अनुभव से वह जानती है, पति की बात पत्थर की लकीर है। पूरब का सूरज पश्चिम से निकल सकता है, पर उसकी बात फिर नहीं सकती। भविष्य की विपत्ति की आशंका से वह उदास हो उठी।

शाम ढलने तक शिवनाथ एक ही जगह गंभीर होकर बैठा रहा। गौरीनाथ कहीं

घूमने गया था, शाम होते-होते वह घर लौट आया। पिता के करीब से वह घर के भीतर चला गया। अंधेरे में वह पिता का चिंताग्रस्त चेहरा देख नहीं पाया। मगर कुछ पल बाद बैठे-बैठे शिवनाथ ने सुना—गौरीनाथ गुस्से से चीख रहा है, "मां, ओ मां, मेरा सूटकेस किसने खोला था ?"

गौरीनाथ के प्रश्न का किसी ने जवाब नहीं दिया। गौरीनाथ ने फिर चीखकर कहा, "ए रंभा, बताती क्यों नहीं—मेरा सूटकेस किसने खोला था ?"

गौरीनाथ की चीख-पुकार तेज होने पर उसकी मां ने कुछ पल बाद शांत स्वर में कहा, "तू कैसे समझ गया कि तेरा सूटकेस किसी ने खोला था ?"

गौरीनाथ ने गुस्से के साथ कहा, "सूटकेस में मेरे कई जरूरी कागजात थे। शाम जब मैं घूमने गया था तब तक ठीक ही था। अभी वे कागज नहीं हैं। किसने छुआ था मेरा सूटकेस, जल्दी बता। अभी निकाल दे मेरे कागज। मूर्ख देहाती लोग, दूसरों के कागज नहीं देखना चाहिए—इतनी-सी बात भी तुमलोग नहीं जानते। अभी निकाल दे मेरे कागज। नहीं तो आज मैं—"

"हम मूर्ख देहाती लोग हैं, यह सही बात है, बापू—" मां ने तनिक भी उत्तेजित हुए बगैर कहा, "इसीलिए हर महीने सौ-सौ रुपए फूंककर तुझे शहर में विद्वान बनाने के लिए भेजा है। मगर तू जैसी सभ्यता का नमूना दिखा रहा है—वैसा शहरी विद्वान होने से अच्छा है देहाती मूर्ख होना। तेरे सूटकेस से कैसे कागज गुम हुए हैं ? सूटकेस से निकला पत्र तेरे पिताजी के पास है। अगर तू वही तलाश रहा है तो पिताजी से मांग ले। हम पर रौब झाड़ने की कोई जरूरत नहीं है।" यह कहकर मां रसोई में चली गई।

इसके बाद गौरीनाथ क्या करेगा या क्या कहेगा, यह जानने के लिए शिवनाथ काफी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करता रहा। कुछ देर तक घर में गंभीर किस्म का सन्नाटा रहा। कुछ पल के बाद शिवनाथ ने सुना—गौरीनाथ रंभा को डांटते हुए गुस्से के साथ चीख रहा था, "मैं जानता हूं, और किसी ने नहीं, तूने ही मेरा सूटकेस खोला था। कानी भूतनी कहीं की ! देहाती मूर्ख, दूसरे की चिट्ठी छूना या पढ़ना गलत है, यह बात आज तक तू सीख नहीं पाई ? आज तेरा थोबड़ा बिगाड़ कर रख दूंगा, ठहर !"

रंभा चीख-चीखकर रोने लगी।

शिवनाथ ने मन ही मन तय कर रखा था कि वह गौरीनाथ के प्रेम-पत्र के संबंध में उससे आमने-सामने कोई बात नहीं करेगा। एक ऐसे मामले को लेकर अपने बेटे के साथ बहस करना उसके अनुसार अशोभनीय बात है। पर गौरीनाथ ने जब रंभा को पीटा और उसकी शारीरिक विकृति का मजाक उड़ाने लगा जिससे रंभा के दिल को ठेस पहुंची, तब वह अपने आपको रोक नहीं पाया। बीमारी की वजह से रंभा जिस शारीरिक विकृति का अभिशाप भोग रही है, उसके प्रति हमेशा उसका हृदय करुणा का भाव महसूस करता रहा है। संसार के अपमान और अवहेलना से

वह उसे हमेशा बचाकर रखना चाहता है, बाहरी व्यक्ति के समक्ष वह उसे निकलने नहीं देता। उसके हृदय में रंभा के लिए एक कोना सुरक्षित है, जहां किसी और का प्रवेश नहीं हो सकता। बीच-बीच में मन में ऐसे विचार भी आते हैं कि रंभा का विवाह करवा पाना संभव नहीं होगा, तब जीवन भर अविवाहित होकर उसे गौरीनाथ के पास ही रहना पड़ेगा। माता-पिता के न होने पर रंभा के साथ गौरीनाथ और उसकी पत्नी का बर्ताव कैसा होगा, यह सब सोचते हुए भी बीच-बीच में उसका मन बेचैन हो उठता है। इसीलिए वह सोचता रहा था कि गौरीनाथ के लिए काफी जांच-परखकर ऐसी बहू तलाश कर लाएगा जिसके हवाले रंभा की जिम्मेवारी सौंपकर वह निश्चिंत हो सके। पर आज की घटना ने उसकी सारी आशाओं और कल्पनाओं को बिखेर दिया। गौरीनाथ की होने वाली पत्नी की बात तो दूर की है, उसने स्वयं ही अपनी बहन को कानी-भूतनी कहकर अपमानित करते हुए तनिक भी संकोच का अनुभव नहीं किया। एक मामूली बात के लिए अगर वह अपनी बहन के प्रति इतना निष्ठुर बन सकता है, तो भविष्य में उससे और कैसे व्यवहार की आशा की जा सकती है ?...वह उठा और भीतर आ गया। शिवनाथ की खड़ाऊं की आवाज पूरे घर पर शासन करती है, खड़ाऊ की धीर-गंभीर खट-खट की आवाज सुनकर ही घर के लोग समझ जाते हैं कि शिवनाथ आ रहा है। और फौरन शोरगुल थम जाता है, घर का माहौल शांत हो जाता है। मगर आज शिवनाथ की खड़ाऊं की आवाज सुनने के बावजूद गौरीनाथ ने उसकी परवाह करने की जरूरत नहीं समझी। शिवनाथ समझ गया—घर में उसके एकछत्र साम्राज्य के खिलाफ यह गौरीनाथ की पहली स्पष्ट चुनौती है। जिस कमरे में गौरीनाथ रंभा को डांट रहा था, उसमें प्रवेश कर शिवनाथ ने गंभीर स्वर में पुकारा, "बड़े बापू !" गौरीनाथ ने मुड़कर पिता को देखा। केरोसिन तेल से जल रही लालटेन की कमजोर पीली रोशनी में भी शिवनाथ ने देखा—भयंकर क्रोध और उत्तेजना के कारण उसका चेहरा हिंसक हो उठा है।

शिवनाथ ने चेहरे पर क्रोध का भाव लाए बिना गंभीर स्वर में फिर कहा, "रंभा को आज तूने कानी कहा, इसके बाद मेरे जीते जी अगर तूने ऐसी बात कही, तो इस घर में तेरे लिए जगह नहीं होगी। और सुन, यह चिट्ठी तेरे सूटकेस से निकली है। मैं देहाती मूर्ख आदमी हूं, तेरी तरह अंग्रेजी जानने वाला शहरी बाबू नहीं हूं। इसीलिए तुझसे पूछे बगैर मैंने चिट्ठी पढ़ ली। तू इस चिट्ठी को अभी अपने हाथों से जला दे और भविष्य में ऐसी हरकत न करने की कसम खा ले। मैं तुझे माफ कर दूंगा।"

कहा-सुनी सुनकर शिवनाथ की पत्नी भी इस बीच रसोईघर से निकलकर दरवाजे के पास खड़ी हो गई थी।

गौरीनाथ ने तीखी नजरों से एक बार पिता की तरफ देखा, फिर चुपचाप सिर झुकाए खड़ा रहा।

कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद शिवनाथ ने फिर कहा, "मैं तेरा पिता हूं। जीवन में आज तक तूने मेरी आज्ञा की अवहेलना नहीं की। तेरी भलाई के सिवा मैं कुछ नहीं सोचता। तू मेरे सामने ही चिट्ठी जला दे, और कसम खा—जीवन में ऐसा काम कभी नहीं करेगा।"

पिता के बढ़े हुए हाथ से चिट्ठी झपटकर गौरीनाथ ने जेब के हवाले किया और बोला, "मैं आज आपको कोई वचन नहीं दे सकता। मुझे सोचने के लिए वक्त चाहिए। समय आने पर आपको बता दूंगा।" झटके के साथ गौरीनाथ बाहर चला गया।

काफी रात बीतने पर गौरीनाथ घर लौटा और बगैर खाना खाए ही सो गया। लक्ष्मीनाथ और सावित्री को छोड़कर उस रात किसी ने नहीं खाया।

देर रात तक शिवनाथ को नींद नहीं आई। तरह-तरह की चिंताएं उसे सताती रहीं। गौरीनाथ के स्वभाव को वह अच्छी तरह जानता है, वह बिल्कुल उसी की तरह है। आज उसके चेहरे की भगिमा देखकर ही वह समझ गया कि शिवनाथ की बात मानकर वह प्रेम-व्रेम का चक्कर छोड़ने वाला नहीं है। अगर ऐसा होता है तो अपने प्रिय बड़े पुत्र के साथ उसका रिश्ता समाप्त हो जाएगा। यह सोचते ही शिवनाथ का दिल डूबने लगा। अगर गौरीनाथ उसकी बात नहीं मानता, इस उम्र में ही वह मनमर्जी रवैया अपनाता है तो उससे रिश्ता तोड़ने के सिवा रास्ता ही क्या है ? जीवन भर दूसरों पर शासन करते-करते शिवनाथ इस कदर अभ्यस्त हो चुका है कि आज्ञा पालन नहीं करना उसकी नजरो मे सबसे बड़ा अपराध है। घर में उसकी इच्छा ही कानून है। जिस लघु समाज में वह रहता है, वहां भी उसके सामने उसकी बात का विरोध करने वाला कोई नहीं है। लोगों से वह जिस चीज की आशा सबसे अधिक करता है—वह प्रेम नहीं है, स्नेह नहीं है, मित्रता नहीं है—वह है सम्मान एवं आज्ञा-पालन। आज उसका अपना ही बेटा उसका कहा नहीं मानेगा, जीवन में इससे बड़ा आघात और क्या हो सकता है ?

यौवन काल तक मनुष्य भविष्य के बारे में कई सपने देखता है, अपने लिए एक दिवास्वप्न भी रचता है। पर उम्र बढ़ने के साथ-साथ मनुष्य भविष्य के बारे में सपने देखना या कल्पना करना छोड़ देता है। भविष्य के सपनों की जगह ले लेती हैं अतीत की स्मृतियां। पिछले कई सालों से शिवनाथ भविष्य के सपने देखना छोड़ चुका था। मगर गौरीनाथ के जवान होने के साथ उसने फिर से उसके बारे में बीच-बीच में दिवास्वप्न देखना शुरू कर दिया था। उसका प्रिय दिवास्वप्न था—गौरीनाथ का विवाह, उसकी पत्नी, बच्चे। गौरीनाथ इंजीनियरिंग पास कर ऊंची नौकरी करेगा। कितने सभ्रांत अभिजात लोग उसके लिए रिश्ता लेकर आएंगे और उसके सामने गिड़गिड़ाएंगे, वैवाहिक संबंध के जरिए ही एक शहरी अभिजात परिवार के साथ शिवनाथ की आत्मीयता बढ़ेगी। एक दिन शिवनाथ के पोते होगे। बीच-बीच में उसका पूरा परिवार गाड़ी में बैठकर शहर से शिवनाथ से मिलने आएगा। बहू, पोते-पोती के

शोरगुल से शिवनाथ का घर मुखरित हो उठेगा। बीच-बीच में शिवनाथ भी शहर जाकर बेटे-बहू के पास दो-तीन महीने रहेगा। बहू के सामने, पोते-पोती के सामने शिवनाथ पुरखों की गौरव गाथा, अपनी अतीत स्मृति, गांव की कई मधुर कहानियां सुनाएगा...यह सब था शिवनाथ का मीठा दिवास्वप्न, उसके एकरस समय को गुजारने का आधार। मगर ताश के पत्तों के घर की तरह आज उसका स्वप्न-संसार पलक झपकते ही बिखर गया। शिवनाथ की बात सुनकर गौरीनाथ ने एक बार सिर उठाकर तीखी नजरों से देखा था, उस दृष्टि को देखकर ही वह समझ गया था कि उसका संकल्प वज्र की तरह कठोर है। शिवनाथ हजार बाधाएं डालकर भी उसे डिगा नहीं पाएगा।

शिवनाथ बहुत रात तक जागते हुए, काफी सोचते हुए बहुत कोशिश करने के बावजूद गौरीनाथ को माफ करने के लिए कोई तर्क जुटा नही पाया। उसके मन का दृढ़ विश्वास है कि प्रेम नाटक-उपन्यास की चीज है, वास्तविक जीवन में उसकी कोई जगह नहीं है। चरित्रहीन लंपट को छोड़कर कोई भी प्रेम कर विवाह नही कर सकता और वैसे विवाह का नतीजा भी कभी सुखद नहीं हो सकता। विवाह मात्र एक व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला नहीं होता, बहुत लोगों से संबंधित एक सांसारिक दायित्व है, इसीलिए बहुत सोच-विचार कर ऐसी लड़की से विवाह करना चाहिए-जो लड़की सही अर्थो में अपने पति की सहधर्मिणी बन सकती है, यानी संसार धर्म निभाने में पति की सहायता कर सकती है। परंतु यौवन के जोश और मोहावेश में आकर चंचल चित्त युवक अपने सारे दायित्वों को याद रखकर जीवन-साथी चुनने के मामले में कभी शुद्ध निर्णय नहीं ले सकता। शिवनाथ का दृढ़ विश्वास है कि भारतवर्ष में समाज-सभ्यता की बुनियाद हजारों वर्षो से मजबूत होने का प्रमुख कारण है गृहस्थ धर्म के प्रति भारतीय समाज की गहरी आस्था। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त जो युवक-युवती अपने अभिभावकों की मर्जी के खिलाफ प्रेम करके विवाह करना सीख रहे हैं, वे इस समाज की बुनियाद हिला कर रख देंगे। शिवनाथ को अपनी बात याद आई। प्रेम कर विवाह करने की बात तो दूर है—माता-पिता द्वारा तय की गई लड़की को पसंद करने की कल्पना भी क्या वह कर सकता था ? पत्नी का चेहरा वह विवाह की रात ही देख पाया था। काफी शर्म और संकोच का सामना करते हुए जब वह अपने शयनकक्ष में गया, तो उसने देखा—नवविवाहिता पत्नी लगभग सीने तक घूंघट लटकाए बिस्तर के नीचे जमीन पर बैठी हुई है। उसके सामने तांबूल-पान का पात्र है। शिवनाथ के पैरों की आहट सुनकर पत्थर की मूर्ति की तरह बैठी नारी मूर्ति के शरीर में जैसे प्राण का संचार हुआ। पात्र थामकर कुछ आगे बढ़कर उसने शिवनाथ का चरण स्पर्श किया। तभी पहली बार घूंघट उठाकर शिवनाथ ने पत्नी का चेहरा देखा। सच्ची बात तो यह है कि शिवनाथ उस दिन कुछ निराश भी हुआ। उसने पत्नी के जिस रूप की कल्पना की थी, वास्तव के साथ उसका कोई मेल नहीं था। पत्नी देखने में सुंदर नहीं थी। कुछ बदसूरत ही थी। उस पल से लेकर आज तक

पच्चीस साल बीत चुके हैं। हिंदू शास्त्र में पत्नी को अर्द्धांगिनी माना गया है, शिवनाथ की पत्नी सच्चे अर्थों में उसकी अर्द्धांगिनी साबित हुई है। स्नेह, ममता, सेवा एवं साहचर्य के साथ पत्नी ने उसके जीवन को सुधामय बना दिया। अगर पुनर्जन्म जैसी कोई बात होती है तो अगले जन्म में भी वह इसी स्त्री को पत्नी के रूप में पाना चाहेगा, किसी रूपवती अप्सरा को नहीं। उम्र बढ़ने के साथ-साथ कभी-कभी वह मृत्यु के बारे में सोचता है, तब मन में सिर्फ एक ही चिंता होती है। अगले जन्म में अगर यह पत्नी न मिली तो उसकी क्या हालत होगी ?

...कुछ देर के लिए वह गौरीनाथ का मामला भूल गया और पत्नी के बारे में ही सोचता रहा। उसकी कुंडली में लिखा हुआ है, उससे पहले उसकी पत्नी गुजर जाएगी। पत्नी के बिना बुढापे का एकाकी जीवन वह कैसे गुजार पाएगा, यह सोचकर कुछ पल के लिए वह बेचैन हो उठा। बहुओं, नाती-पोतों के साथ अंतिम दिन गुजार पाएगा—शायद उसकी भी उम्मीद नहीं। जैसा वक्त आ गया है, पुराने सांसारिक बंधन जिस तरह टूट रहे हैं, बहुओं-नातियों के साथ की उम्मीद भी नहीं रखनी चाहिए। भविष्य के करुण एकाकीपन की कल्पना कर शिवनाथ भयभीत हो गया। अधिक देर तक उन सब बातों के बारे में न सोचकर भगवान का नाम जपते हुए उसने सो जाने की कोशिश की।

3

गर्मी की छुट्टियां खत्म होने के बाद गौरीनाथ वापस कालेज चला गया। जब तक वह घर में रहा, बहुत चाहकर भी उसकी मां उससे कोई वचन नहीं ले पाई। बार-बार वह एक ही बात कहता रहा—गुवाहाटी पहुंचकर अच्छी तरह सोच-विचार करने के बाद अपने फैसले के बारे में माता-पिता को सूचित करेगा। बेटे के रवैए से शिवनाथ को इतनी तकलीफ हुई कि जब तक वह घर में रहा, उसने बेटे से बातचीत बंद रखी। और तो और, जब वह घर से जा रहा था, तब भी उससे कुछ नहीं कहा।

गुवाहाटी जाने के दो सप्ताह बाद गौरीनाथ ने शिवनाथ को एक पत्र भेजा। पत्र में लिखा है :

पिताजी,

...जीवन में मैंने आपसे जो बातें सीखी हैं—उनमें से एक है सत्य कहने का साहस। अगर मैं चाहता तो आपसे झूठ बोलकर और दो सालों तक आपके साथ अपना संबंध ठीक बनाए रख सकता था। मगर वैसा करने के लिए मेरे विवेक ने मुझे रोका। उर्मिला के साथ मेरे रिश्ते के बारे में आपलोग जान

नहीं गए होते, तो शायद मैं अभी उसके बारे में आपलोगों को नहीं बताता। मगर समय से पहले आप जान गए, ठीक ही हुआ। इतनी बड़ी बात छिपाने के अपराध-बोध से मैं मुक्त हो गया।

आपलोगो की आज्ञा या पसंद की प्रतीक्षा किए बगैर स्वयं अपनी भावी पत्नी को चुन लिया जिसके कारण आपलोग मुझसे नाराज हो गए हैं, मुझे त्याज्य पुत्र घोषित करने की धमकी दे रहे हैं। परंतु पिताजी, उससे भी बड़े आघात को सहन करने के लिए आपलोग तैयार हो जाएं। मैंने जिस लड़की को विवाह के लिए चुना है और जिसे वचन भी दे चुका हूं, वह कैवर्त लड़की है। आपलोगों की नजरों में शायद इससे बड़ा अपराध और कुछ नहीं हो सकता। मैं कभी उम्मीद नहीं करता कि एक कैवर्त लड़की को आप वहू के रूप में स्वीकार करेगे। मैंने समाज के कई बड़े-बड़े नेताओं को देखा है—जो मुंह से जाति प्रथा न मानने की बात करते हैं, सभा-समितियों में जातिभेद और छुआछूत के खिलाफ लंबे-चौड़े भाषण देते हैं, परंतु व्यावहारिक जीवन में कैवर्त आदि तथाकथित छोटी जातियों के साथ वैवाहिक संबंध कायम करने के बारे में कल्पना तक नहीं कर सकते। मैं जानता हूं, आपका हृदय बहुत उदार है। गांव के परंपरावादी समाज में जन्म लेकर और उसी समाज में जीवन भर रहकर भी आप अपनी सामान्य विद्या-बुद्धि की सहायता से आधुनिक विचारधारा के साथ संपर्क बनाए रखने की कोशिश करते रहे हैं। मैं जब छोटा था—हमारे घर में बड़े-बडे लोग आते थे, जिनके साथ घंटों आपकी बातचीत चलती थी। और मैं कभी आपके पास बैठकर, कभी खिड़की के पास खड़ा होकर आपलोगों की बातें सुनता था। आपने तब शायद सोचा भी नहीं होगा—अभी भी यह बात नहीं जानते होंगे कि दस-बारह साल का छोटा लड़का आपलोगों की बातचीत ध्यान से सुनने की कोशिश करता था। आपको जरूर याद होगा—उसी दौरान गड़मुरीया सत्राधिकार हमारे मोहधूलि गांव में आए थे। नामघर में उनका वक्तव्य सुनने के बाद आप घर लौटकर अपने मित्रों के साथ देर तक बातें करते रहे थे। गड़मुरीया सत्राधिकार ने नामघर में जातिप्रथा और छुआछूत के खिलाफ विचार व्यक्त किया था, क्योंकि आप लोग घर लौटकर इसी विषय पर बातें कर रहे थे और सत्राधिकार के विचारों का समर्थन कर रहे थे। मुझे याद है, सिर्फ प्रभात के पिता ने सत्राधिकार के विचारों का विरोध जताते हुए समालोचना की थी। आपने सत्राधिकार का पक्ष लेते हुए गुस्से के साथ बहस शुरू कर दी, तब प्रभात के पिता ने आपसे पूछा था, "शिव, तुम जो इस तरह जाति-प्रथा और छुआछूत न मानने का ढिंढोरा पीट रहे हो, तुम जरा अपने सीने पर हाथ रखकर मुझे बताओ तो—क्या तुम्हारा बेटा एक कैवर्त लड़की से विवाह कर सकता है ?' आपने क्या उत्तर दिया था, याद है आपको ?

चाहे हृदय से कहा हो या बहस जीतने के लिए कहा हो, आपने एक पल भी विचार किए बगैर कहा था, 'क्यों नहीं कर सकता है', जरूर कर सकता है। लड़की अगर हर तरह से अच्छी हो, पढ़ी-लिखी हो, शीलवती हो, तो कैवर्त होने से कोई फर्क नहीं पड़नेवाला। क्या व्यासदेव की माता कैवर्त नहीं थी ?—' इत्यादि।

...पिताजी ! आप विश्वास करें, आपकी परीक्षा लेने के लिए मैं कैवर्त लड़की से विवाह नहीं कर रहा हूं। परंतु भाग्य का ऐसा चक्कर चला कि जिस लडकी के विभिन्न गुणों के कारण (यहां आपको बता दूं कि उर्मिला अत्यधिक रूपवती नहीं है) आकर्षित होकर मैंने विवाह करने का फैसला किया—वह कैवर्त परिवार की कन्या है। उसके साथ संबंध घनिष्ठ होने के बाद ही एक दिन अचानक मुझे वर्षों पुरानी कही गई आपकी बात याद आई, और इतना बताना ही काफी है कि वह बात याद आते ही मेरे लिए फैसला लेना आसान हो गया।

फिर भी मैंने जो ऊपर लिखा है—एक कैवर्त लड़की को बहू के रूप में आप स्वीकार करेंगे, इसकी कोई उम्मीद नहीं—इसकी वजह है। मैंने अपनी कम उम्र के अनुभव से जाना है कि अपने देश में लोगों की कथनी और करनी अलग-अलग होती है। आधुनिकता का आकर्षण हो या ताली सुनने का मोह हो; लोग कहते कुछ हैं, परंतु परंपरागत संस्कारों के विपरीत न जा पाने या परंपरावादी समाज के डर से करते कुछ और हैं। इन दोनों के बीच तालमेल कायम करने के लिए हमारे देश के अधिकतर लोग पाखंड का सहारा लेते हैं। आप उनसे अलग होंगे, ऐसी आशा मैं नहीं करता। अगर अलग होंगे, तो मेरे लिए जीवन मे इससे अधिक सुख और गौरव की बात दूसरी नहीं हो सकती। जो भी हो, आपने स्वयं एक दिन कहा था कि आपका लड़का कैवर्त लड़की से विवाह कर ले तो आपको कोई आपत्ति नहीं हो सकती, परंतु लड़की का योग्य होना आवश्यक है। उर्मिला की जाति को छोड़कर आप कोई अवगुण तलाश पाएंगे, ऐसा मैं नहीं मानता। इसीलिए उर्मिला के साथ अपने विवाह के फैसले को आपके आदर्शवाद के समक्ष एक बड़ी चुनौती के रूप में मैं पेश कर रहा हूं।

जरूरी समझकर ऐसा लंबा पत्र आपको लिख रहा हूं। अगर कुछ ऐसी बातें लिख गया हूं जो नहीं लिखना चाहिए तो माफ कीजिएगा। आखिर में एक बात और कहना चाहता हूं। घर में रहते वक्त मैंने सुना था कि अगर मैं उर्मिला से विवाह करूंगा तो आप मुझे त्याज्य पुत्र घोषित कर देंगे। हमारे समाज में त्याज्य पुत्र घोषित करने का अर्थ है पैतृक संपत्ति के अधिकार से पुत्र को वंचित करना। यानी पिता जब स्नेह या तर्क से अपने पुत्र पर आदेश

चला नहीं पता तब वह अंतिम हथियार के रूप में आर्थिक क्षमता का प्रयोग करता है। पिता के निरंकुश शासन को कायम रखने या कुलीनता के दुर्ग की रक्षा करने के लिए पिता का यही सबसे बड़ा हथियार है। परंतु पिताजी, पुराने सामंतवादी समाज में भले ही यह हथियार कारगर था, मगर आधुनिक युग में वह बेकार हो चुका है। आप जानते हैं कि मैं आपके खेत में फसल पैदा करने के लिए गांव लौटने वाला नही हूं, डेढ़ साल बाद ही मैं इंजीनियर बनकर नौकरी करूंगा और स्वावलंबी बन जाऊंगा। इसीलिए पैतृक संपत्ति से वंचित होने के डर से मैं कभी अपने विवेक या आदर्श के खिलाफ कोई काम नहीं करूंगा। साथ ही यह बात भी सच है कि आप मुंह से मुझे त्याज्य पुत्र घोषित कर देंगे तब भी आप मेरे पिता रहेंगे, मेरी रगों में जो आपका खून बह रहा है—वह स्नेह और भक्ति के अटूट बंधन से जीवन भर मुझे आपके साथ बांधकर रखेगा।

उर्मिला के साथ मेरे विवाह के फैसले के कारण ही यदि आप मेरे साथ कोई संबंध रखना नहीं चाहते तो फिर आपको मेरी पढ़ाई का खर्च भेजने की जरूरत नहीं है। छात्रवृत्ति और दूसरे तरीके से मैं डेढ़ साल तक गुजारा कर लूंगा। मेरे मन में सदैव यह विश्वास बना रहेगा कि एक दिन आप अवश्य मुझे माफ कर देंगे और मुझे फिर गले से लगा लेगे।

मेरा शतकोटि प्रणाम ग्रहण करेंगे।

आपका अपना
बड़ा बापू

शिवनाथ पत्र पढ़कर काफी देर तक स्तब्ध होकर बैठा रहा। पिता-पुत्र के बीच संबंध कितना मधुर, घनिष्ठ और प्रेममय हो सकता है, गौरीनाथ के साथ उसका संबंध उससे भी कुछ अधिक गहरा था। जीवन में कभी भी बेटे ने उसको कोई ठेस नहीं पहुंचाई थी। बल्कि गौरीनाथ के स्वभाव की मधुरता और नम्रता ने दिनोंदिन पिता के स्नेह को और अधिक बढ़ा दिया था। वही गौरीनाथ उसके खिलाफ इस तरह बगावत की घोषणा करेगा और उसके साथ तर्क-युद्ध शुरू करेगा—इसकी कल्पना शिवनाथ ने सपने में भी नहीं की थी। एक जबर्दस्त ठेस के कारण शिवनाथ का दिमाग जड़-सा हो गया। बगैर कुछ सोचे शिवनाथ बुत की तरह बैठा रहा।

शिवनाथ की पत्नी घर के भीतर चिउड़ा में से धान निकाल रही थी। सावित्री ने जाकर मां को खबर दी, ''पिताजी को एक चिट्ठी मिली है, दूर से लिखावट देखकर समझ गई—भैया की चिट्ठी है। चिट्ठी पढ़ने के बाद पिताजी का चेहरा मुर्दे की तरह सफेद हो गया है।'' शिवनाथ की पत्नी चिउड़ा छोड़कर फौरन बाहर निकल आई और पति से पूछा, ''बड़े बापू की चिट्ठी आई है क्या ? आपको क्या हो गया है,

कोई बुरी खबर आई है क्या ?"

शिवनाथ ने पत्नी को पत्र सौंपकर बेजान आवाज में कहा, "आज से समझ लेना, तुम्हारा बड़ा बेटा मर गया।"

शिवनाथ की बात सुनकर उसकी पत्नी के पैरों तले की जमीन खिसक गई। वह धम्म से गिरने ही वाली थी, बहुत कोशिश कर खुद को खड़ी रख पाई। वह समझ गई कि यूं ही विचलित न होने वाले धीर-गंभीर शिवनाथ के मुंह से ऐसी बात निकली है, इसका मतलब है कि बेटे ने चिट्ठी में कोई ऐसी भयंकर बात जरूर लिखी है। ठीक उसी पल उसने सारा स्नेह और हमदर्दी पति के प्रति अनुभव किया। चिट्ठी तभी पढ़ने के लिए उसकी कोई इच्छा नहीं हुई। वेदना से घायल पति को अकेले छोड़कर जाने की जगह वह वहीं बैठ गई। मौन यंत्रणा के बीच पति-पत्नी देर तक स्तब्ध होकर बैठे रहे।

इसके बाद कुछ दिनों तक घर में जैसे किसी की मृत्यु हो गई हो, वैसी ही करुण उदासी और खामोशी का माहौल बना रहा। शिवनाथ से कुछ कहने की किसी की हिम्मत नहीं हुई। सभी उसका चेहरा देखकर ही समझ जाते थे कि उसके भीतर कोई खूनी अंतर्द्वंद्व चल रहा है। सबका अंदाजा सही था। प्रथम आघात के वार को झेलने के बाद सचमुच उसके मन में एक भयंकर अंतर्द्वंद्व शुरू हो गया। अपने जीवन की तरह प्रिय बड़े बेटे को इस तरह गंवाने की स्थिति में उसका हृदय क्षत-विक्षत हो उठा। मगर इस बारे में वह जितना सोचता, उतना ही महसूस करता कि समाज से निर्वासित हुए बगैर कैवर्त कुल की बहू को अपने घर में जगह देने का कोई उपाय नहीं है। शहर में आदमी समाज के बगैर भी जी सकता है या किसी न किसी तरह एक समाज खुद ही तैयार कर सकता है। मगर गांव में कोई रास्ता नहीं है। गांव में समाज का बधन एक जीवंत वास्तविकता है, जिसे अस्वीकार करने का नतीजा भयंकर एकाकीपन है। उस एकाकीपन का दंश किस कदर तकलीफदेह हो सकता है, उसका स्वाद शिवनाथ जीवन में एक बार चख चुका है। गांव का समाज कितना निर्मम और कठोर होकर अपना शासन मनवाने के लिए सबको विवश करता है, इसका एक उदाहरण उसे याद आया।

कुछ साल पहले की बात है। मोहधूलि के पास स्थित जालभारी गांव का हरकांत नामक युवक शिलांग में किरानी की नौकरी करता था। अचानक एक दिन खबर आई कि उसने एक क्रिश्चियन लड़की से विवाह कर लिया है, हालांकि विवाह से पहले लड़की ने आर्य समाज की पद्धति के अनुसार हिंदू धर्म की दीक्षा ले ली है। हरकांत ने घर खबर भेजी कि वह अपनी पत्नी के साथ गांव आना चाहता है और नाम-कीर्तन करके पत्नी को गांव के समाज के योग्य बनाना चाहता है। अपने परिवार में एकमात्र हरकांत ही जीविकोपार्जन करने वाला सदस्य था, हर महीने वह जो रुपए घर भेजता था, उनसे परिवार वाले वंचित होने की हिम्मत या इच्छा नहीं रखते थे।

उन्होंने हरकांत की पत्नी को सामाजिक स्वीकृति दिलाने के लिए नाम-कीर्तन करने का निश्चय किया और लोगों को बुलाने के लिए गए। इस घटना के चलते मोहधूलि के आसपास समूचे मौजे के लिए एक अभूतपूर्व संघर्ष की पृष्ठभूमि तैयार हुई। समाज दो भागों में बंट गया। एक तरफ थे हरकांत के सगे-संबंधी, रिश्तेदार और कुछ उदारवादी महापुरुषिया वैष्णव, दूसरी तरफ सारा समाज। कई दिनों तक मोहधूलि मौजे का समाज विवाद की उत्तेजना के कारण भूचाल आने की तरह कांपता रहा। जहां दो बुजुर्ग इकट्ठे होते थे वहीं यह बहस छिड़ जाती थी—जैसे इस विषय के निदान पर ही पृथ्वी का भविष्य निर्भर करता हो। शिवनाथ के गांव के लोगों ने नामघर में बैठक कर निर्देश जारी किया कि गांव का कोई भी व्यक्ति हरकांत के नाम-कीर्तन में भाग नहीं ले सकता। मगर गांव में हरकांत की एक बहन ब्याही गई थी जिसे बीच-बीच में हरकांत शहर से उपहार भी भेजता रहता था। गांव के निर्देश की अवहेलना कर वे लोग हरकांत के नाम-कीर्तन में शामिल हुए। इस अपराध के लिए गांव के समाज ने उनका बहिष्कार कर दिया। इसी तरह जो भी व्यक्ति नाम-कीर्तन में शामिल हुए, वे अपने गांव के समाज में अल्पसंख्यक बन गए और सबको बहिष्कृत होना पड़ा। नाम-कीर्तन करने के बाद हरकांत तो शहर लौट गया। मगर अपने पीछे गुटबंदी, कड़वाहट और टकराव का माहौल छोड़ गया। प्रत्येक गांव में हरकांत के समर्थक बहिष्कृत लोगों ने एकजुट होकर अलग समाज बनाने की कोशिश की, मगर अधिक दिनों तक उनका मनोबल कायम नहीं रह सका। जो भी हो, दस गांव के दस या बीस घरों के लोग किसी अवसर विशेष पर साल में एक या दो दिन एकजुट हो जाएं यह अलग बात है, वहीं एक ही गांव के सारे लोगों का उठना-बैठना, खाना-पीना एक साथ होना दूसरी बात है। गांव के किसी घर में विवाह होने पर सारा गांव इकट्ठा हो जाता था। बच जाता था सिर्फ हरकांत की बहन का परिवार। नामघर में वार्षिक भावना कार्यक्रम हुआ, गांव के सारे लोग उत्सव की खुशी में बौराकर चींटी की तरह नामघर में इकट्ठे हुए। बहिष्कृत होने की शर्म और यंत्रणा के कारण घर की चार दीवारों में ही हरकांत की बहन का परिवार दुबका रहा। गांव के लोग जब पुराने घर की मरम्मत करते हैं या नया घर बनाते हैं तो उन्हें मजूरी देकर मजदूर तैनात करने की जरूरत महसूस नहीं होती, तांबूल-पान देकर गांव के लोगों को बुलाने से सारे लोग मिलकर घर का निर्माण कर देते हैं। हरकांत की बहन के परिवार के भंडारगृह की मरम्मत का समय आया तब उनके पास मजदूर तैनात करने के लिए पैसे नहीं थे, गांव के लोगों को बुलाने का भी कोई रास्ता नहीं था। इस तरह कुछ दिनों के बाद उन्होंने अनुभव किया कि गांव के समाज के बंधन में रहने से वह बंधन एक सुरक्षित आश्रय की तरह होता है। पर उससे बाहर रहने पर वही बंधन फन फैलाए नाग-सांप की तरह बन जाता है। एक दिन या दो दिन तक उस सांप की फुफकार की उपेक्षा की जा सकती है, मगर हमेशा उपेक्षा कर पाना संभव नहीं है। समाज

के खिलाफ बगावत कर बहिष्कृत होने वाले सारे लोग आखिरकार पराजय स्वीकार कर एक-एक कर समाज के भीतर लौट आए।

गांव का समाज विद्रोह सहन नहीं करता। समाजच्युत होकर अकेले रहने का डर हमेशा आदर्श को परास्त कर देता है। शिवनाथ ने कई दिनों तक गंभीरतापूर्वक चिंतन कर महसूस किया कि वह गौरीनाथ को त्याग सकता है, मगर समाज का त्याग हरगिज नहीं कर सकता।

महीने के अंत में शिवनाथ ने बेटे को मनीआर्डर भेजा। मगर कुछ दिनों बाद ही मनीआर्डर के रुपए लौट आए। उस रात शिवनाथ सबकी नजरों से बचकर अकेला रोता रहा।

4

फसल के उस मौसम में मोहधूलि के आस-पास के गांवों में उत्सव का माहौल था, सिर्फ शिवनाथ के घर में उदासी छाई थी। बांध के कारण पहली बार परती क्षेत्र की उर्वर भूमि में शालि धान की फसल अच्छी हुई थी। धान की ऐसी फसल मोहधूलि गांव के लोगों ने बहुत दिनों से नहीं देखी थी। लोगों की बातचीत में, व्यवहार में अभूतपूर्व उत्साह का भाव नजर आने लगा था। दूसरी तरफ, शिवनाथ के आधे खेत मजदूरों की किल्लत के कारण यूं ही पड़े रह गए। वक्त की उल्टी चाल देखकर वह सिर पकड़कर बैठ गया।

सावन के मध्य भाग में बाढ़ आई थी। लोग आशंकित होकर तबाही की राह देख रहे थे। मगर ईश्वर के अभय हाथ की तरह बांध की उपस्थिति के कारण पानी आगे नहीं बढ़ सका। बांध के ऊपर पहुंचकर भी पानी का स्तर नीचे चला गया। जब तक बाढ़ रही, गांव के लोग दम साधे भागवान का नाम रटते रहे। गांव में एक आतंक का माहौल तैयार हो गया था। मगर दो दिन बाद बरसात थमी और तीखी धूप फैल गई। बाढ़ का पानी भी पीछे हटती सेना की तरह पीछे की तरफ बढ़ता चला गया। दम साधे लोगों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। लोग खुशी से नाच उठे।

परंतु लोगों का वह आनंद अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सका। भादो के आखिरी हिस्से में जब लोगों ने बुवाई का काम लगभग खत्म कर लिया था, तब फिर बाढ़ आ गई। इस बार बाढ़ पराजित सेना की तरह पिछली हार का बदला लेने के लिए दोगुनी शक्ति के साथ आई थी। खेती की चिंता से रात में ठीक से न सोने वाले लोगों ने आधीरात को तोप के गोले फटने जैसी एक भयंकर आवाज सुनी। सभी चौंककर बिस्तर पर उठकर बैठ गए। दो युवक लालटेन लेकर बांध देखने

के लिए दौडे गए। अब तक लोग जिस बात से डर रहे थे वही हुआ। मोहधूलि गांव के पास एक जगह नहीं, तीन-तीन जगह बांध टूटा था और परती का क्षेत्र समुद्र जैसा बन गया था। आंखों के सामने उस समुद्र ने गांववासियों की आंखों में नए सुनहरे स्वप्न जगाने वाले परती क्षेत्र के धान के पौधों को लील किया था।

सुबह शिवनाथ ने घर के बरामदे में बैठे-बैठे गौर किया—सड़क से होकर गांववासी तेजी से आ-जा रहे थे, परंतु उनकी व्यस्तता में कोई उत्साह का भाव नहीं था, सिर्फ आतंकपूर्ण बेचैनी थी। शिवनाथ के मन में जो पहली प्रतिक्रिया हुई, वह एक निर्मम उल्लास के रूप में प्रकट हुई। यह बांध ही उसके जीवन की तबाही का प्रतीक बन गया था, इसी बांध की वजह से उसके सात पुरखों की गुलामी करने वाले लोग घायल बूढ़े बाघ की तरह उसकी अवहेलना करने लगे थे। अब उन लोगों को अच्छी सीख मिलेगी। क्षणिक स्वर्ग से गिरकर पुनर्मूषक बनने वाले लोगों को जरूर उसके पैरों पर आकर गिरना पड़ेगा। प्रतिशोध के उल्लास की भावना में वह देर तक डूबा रहा। मगर उसी समय उसके सामने जीवंत विवेक की तरह मोहन गांवबूढ़ा आ गया। गांवबूढ़ा शायद इधर कई दिनों से नहीं आया था। शिवनाथ ने उसे काफी दिनों से नहीं देखा था। उस दिन मोहन गांवबूढा कधे पर अपना पुराना थैला लटकाए, सिर पर टकौपत्ते की जापी पहने और हाथ मे लाठी थामे तेज कदमों से सड़क से होकर कहीं जा रहा था। शिवनाथ के घर के सामने कमर पर हाथ रखकर वह कुछ पल के लिए ठिठक गया। शिवनाथ ने चिल्लाकर आवाज दी, "सुबह-सुबह किधर जा रहे हैं ? बहुत दिनों बाद आपको देखा है। आइए, जरा बैठिए।"

मोहन गांवबूढ़ा बेवजह किसी के घर नहीं जाता। बाहर से ही उसने चिल्लाकर जवाब दिया—

फुकनदेव कर रहे हार्दिक स्वागत—
जानते हैं हम, क्या कहें हम,
सोच रहे हैं क्या मन ही मन।
गांव में आया है सर्वनाश
चारों तरफ महात्रास,
आप तो जरूर अबकी बार
कर उठेंगे अट्टहास।

पाप करते वक्त रंगे हाथों पकड़े गए अपराधी की तरह मोहन गांवबूढ़ा की बात सुनकर शिवनाथ का चेहरा गर्म हो गया। गुस्से से वह गांवबूढ़ा को डपटना चाहता था, मगर उसी पल उसका विवेक जाग गया। मोहन गांवबूढ़ा के साथ उलझने से कोई फायदा नहीं। बात का बतगड़ बन जाएगा, केंचुआ खोदने की कोशिश में सांप निकल आएगा। मोहन गांवबूढ़ा सचमुच विवेक का प्रतीक है। विवेक के कारण ही उसके मुंह से जो बाते निकलती हैं—उसे रोकने वाला कोई नहीं है। शिवनाथ ने अपने

गुस्से पर काबू पाते हुए कहा, "गांवबूढ़ा, आपकी पहेली समझने की योग्यता मुझमें नहीं है। क्या कहना चाहते हैं, जरा समझाकर कहिए न।"

मोहन गांवबूढ़ा ने शिवनाथ के निमंत्रण पर ध्यान नहीं दिया और अपनी राह पर आगे बढ़ता गया। जाते हुए स्वगतोक्ति की तरह वह गाता गया—

कनक दर्जी बन गया ठेकेदार,
एम. एल. ए. बना विश्व वालंटियर।
एम. एल. ए. ठेकेदार ने मिलकर
डाला चारा, जनता ने निगला।
लोहित को बालू से बांधेंगे ?
धन्य ठेकेदार, धन्य नेता।
बांध टूटेगा, निकलेगा फिर ठेका
इधर कमर टूटे जनता की।
ठेकेदार, एम. एल. ए. धन लूटेंगे
गरीबों की आएगी आफत।
गरीबों का मांस, गरीब का खून
सांप बनकर डंसते, वैद्य बनकर झाड़ते।

मोहन गांवबूढ़ा शिशुराम के घर के पास बांसवन के पीछे ओझल हो गया, पर उसके मुंह से निकली कई छंदबद्ध बातें देर तक शिवनाथ के कानों में बजती रहीं। उसने अपने मन में अचानक विवेक का दश अनुभव किया। बाढ़ ने बांध तोड़कर जनता की कमर तोड़ दी है, लोगों के वर्ष भर का आहार रातोंरात कीचड़ में तब्दील हो गया है, फिर भी शिवनाथ दुख और सहानुभूति अनुभव करने की जगह बदले का आनंद अनुभव कर रहा है। अपने पाप-कलुषित मन का ऐसा नग्न परिचय पाकर शिवनाथ भयभीत होकर सिहर उठा। उसने बेचैन होकर कई बार भगवान का स्मरण किया, अपने पाप चिंतन के लिए भगवान से क्षमा मांगी। उसने स्वयं को समझाने का प्रयास किया—जागते समय प्रत्येक पल मनुष्य के मन में कई अच्छे-बुरे, बेसिर-पैर के विचार पैदा होते रहते हैं। विचारों के उस अविराम प्रवाह को रोकने की क्षमता किसमें है ? मनुष्य के मन में सत्य एवं असत्य का, धर्म एवं अधर्म का एक चिरंतन कुरुक्षेत्र जारी रहता है, अधर्म को जीतने नहीं देने पर, अर्थात मन के पाप-चिंतन को आचरण में लागू नहीं करने पर मनुष्य के धर्म की रक्षा होती है। शिवनाथ इस बुढ़ापे में भी कभी-कभी, एक पल के एक अंश के लिए ही सही, वर्जित काम-भाव अनुभव करता है। परंतु उसने कभी भी उस काम-भाव को आचरण में लागू करने की बात नहीं सोची, बल्कि वासना के विचार पैदा होते ही वह फौरन उनको कुचल देता है, पश्चाताप से झुलसते हुए पाप का प्रायश्चित करता है। अभी भी वह वैसा ही करेगा। उसने फिर आंखें बंदकर भगवान का स्मरण करने की कोशिश की।

काफी देर बाद शिवनाथ ने आंखें खोलीं तो उसने देखा—भकतराम रास्ते से होकर जा रहा था। शिवनाथ के घर के सामने पहुंचकर उसने कनखियों से उधर देखा, पर शिवनाथ की आंखों से आंखें मिलते ही फौरन उसने आंखें फेर लीं और तेज कदमों से आगे बढ़ने लगा। शिवनाथ ने सोचा—भकतराम उसके सामने आने में संकोच कर रहा है। हमेशा उसके खेत में बंटाई कर गुजारा करने वाले भकतराम ने बांध पर भरोसा कर शिवनाथ की दी हुई जमीन को लेना स्वीकार नहीं किया। मगर बाढ़ ने बांध तोड़कर उसके गर्व और आशा को ठेस पहुंचाई है। इसीलिए शर्म के कारण वह शिवनाथ की आंखों में देख नहीं पाया है, जल्दी-जल्दी वह उनके सामने से भागने की कोशिश कर रहा है। वह शिशुराम के घर के पास बांसवन के पीछे ओझल होने ही वाला था, तभी शिवनाथ ने चिल्लाकर कहा, "भकत, ओ भकत, जरा इधर आ तो। एक बात पूछनी है।"

भकतराम मोहन गांवबूढ़ा नहीं है। शिवनाथ के ऐसे स्पष्ट निमंत्रण को ठुकराने का कोई रास्ता उसके पास नहीं है। बाहर से ही चिल्लाते हुए वह शिवनाथ के घर की तरफ आने लगा, "ददाईदेव, झूठ नहीं बोलता। आपको देखकर भी न देखने का ढोंग कर मैं भागना चाहता था। क्या मुंह लेकर आपके पास आऊं ? जब तक आपकी जमीन की फसल खाता था, साल भर न सही, छह महीने तक गुजारा तो हो जाता था। इस बार बांध के धोखे में बेमौत मारा गया, ददाईदेव ! गांव भर में सबकी जुबान पर यही बात है—जनता का वध करने के लिए ही इस बार सरकार ने बांध रूपी जाल फैलाया था—"

भकतराम जब बैठ गया तब शिवनाथ ने पूछा, "बात क्या है, भकतराम ? कुछ देर पहले इधर से मोहन गावबूढ़ा गए। वह पद्य गाकर कह रहे थे—हमारे कनक दर्जी और विश्व एम. एल. ए. ने साजिश रचकर बांध तोड़ डाला है। क्या यह सच है ?"

भकतराम ने व्यंग्यात्मक मुस्कान होठों पर लाते हुए कहा, "कनक दर्जी क्यो कहते हैं, ददाईदेव ? वैसे आप कहें तो कोई रोष नहीं होगा। पर हमारी तरह घाटीराम-वाटीराम अगर उसे दर्जी कह दें तो फिर हमारी खैर नहीं। जान लेने के लिए दौड़ पड़ेगा। आजकल कनक दर्जी नहीं है ददाईदेव, कनक ठेकेदार है। कनक का बाप लालुवा बूढ़ा कभी आपका हलवाहा था न ? टूटे हुए घर में एक नए बांस का खूंटा तक लगाने की उसकी औकात नहीं थी। जीवन भर उसी टूटे-फूटे घर में गुजारा करता रहा। यह भी कितने दिन पहले की बात है ! आपने कनक ठेकेदार का नया घर देखा है क्या ? नहीं देखा ? देखने लायक घर है, ददाईदेव ! पूरे मोहधूलि मौजे में ऐसा शानदार घर दूसरा नहीं है। टीन की छत वाला पक्का मकान, दूर से देखने पर राजा की हवेली की तरह दिखाई देता है। और उसने जो जीप खरीदी है, यह तो जानते ही होंगे। आजकल कनक ठेकेदार शौच करने के लिए भी जीप में बैठकर जाता है...।"

भकतराम की बातों के प्रवाह को बीच में ही रोकते हुए शिवनाथ ने कहा, ''कनक की जीप मैंने देखी है। मेरे घर के सामने से कई बार धूल उड़ाते हुए गई है। मगर एक बात है, कहानी ही पढ़ी थी कि अलादीन ने जादुई चिराग की मदद से रातोंरात महल बना लिया था। कनक दर्जी को यह सब करने के लिए कहां से सोने की अशर्फियां मिलीं ?''

कनक-पुराण छिड़ते ही भकतराम को जैसे बातों का नशा चढ़ गया। परम उत्साह के साथ वह कहने लगा, ''ददाईदेव, आप तो दिन-रात घर में ही घुसे रहते हैं, संसार में कहां क्या नया हो रहा है, कुछ खबर नहीं रखते। संसार बहुत बदल गया है, ददाईदेव ! राजा भिखारी बन गए, भिखारी राजा बन गए। लालुवा बूढ़ा का बेटा हाईस्कूल की दो कक्षाएं पढ़कर परीक्षा मे फेल हो गया और सतराम दर्जी की दुकान में सिलाई का काम सीखने लगा। बाद में सतराम से एक पुरानी मशीन खरीदकर उसने अपनी सिलाई की दुकान भी खोल ली। हाथ में दो पैसे आने लगे, नामी शराबी-गुंडा बन गया। उसके डर से गांव के लोगों का जीना मुहाल हो गया। तभी इलेक्शन आ गया। वोट मांगने के लिए विश्व एम. एल. ए. मोहधूलि में आया। कनक के पास और कुछ हो या न हो, यह तो मानना पड़ेगा कि उसके पास बुद्धि है। वह विश्व के साथ हो गया। न जाने दोनों में कैसे इतनी घनिष्ठता हो गई, विश्व एम. एल. ए. कनक को हमेशा साथ लिए घूमने लगा। इलेक्शन से एक महीना पहले से कनक विश्व के लिए दिन-रात एक कर प्रचार का काम करता रहा। लोगों को कहते ही सुना है, ददाई देव ! अपनी आंखो से नहीं देखा है। विश्व एम. एल. ए. ने खुद इंजीनियर को हुक्म दिया कि बांध का ठेका कनक को दिया जाए। एक कहावत है न—अल्लाह मेहरबान तो गधा पहलवान। जिसकी मुट्ठी में स्वयं एम. एल. ए. हो तो उसे और क्या चाहिए ? लोगों को फुसफुसाकर कहते सुनता हूं, कनक के ठेके के धन में एम. एल. ए. का आधा हिस्सा है। कनक की जो जीप आपने देखी है वह विश्व एम. एल. ए. ने ही दी है। इलेक्शन के लिए पार्टी ने जो जीप-गाड़ियां खरीदी थीं, उनमें से एक कौड़ियों के भाव विश्व ने कनक को खरीदकर दी है। फिर कभी जीप आपके घर के सामने से गुजरे तो गौर कीजिएगा—अक्सर विश्व एम. एल. ए. दिखाई देगा।''

''आजकल रेब महाजन और केशव मडल के हालचाल कैसे हैं ?'' शिवनाथ ने पूछा, ''उन लोगों का दबदबा पहले से कुछ कम हो गया है क्या ?''

''कहां, हमने तो कम होते नहीं देखा है, बल्कि पहले से भी अधिक बढ़ गया है। रूरल पंचायत का अध्यक्ष बनकर केशव मंडल ने जनता का काम किया हो या न किया हो, अपना काम ठीक से पूरा कर लिया है। मंडल की पुरानी फूस की झोंपड़ी नहीं रही, टीन की छत वाला चमकता पक्का मकान बन गया है। कुआं खोदने और सड़क बनाने के लिए पंचायत के पास जो धन आया था, उसमें से आधे से भी

अधिक धन केशव मंडल की जेब में चला गया। लोगों की कही हुई बातों को अगर छोड़ भी दें, अपनी आंखों से जो देखा वही बता रहा हूं। समूवा गांव के नामघर से हाबूंगीया खेत तक कच्ची सड़क आपने देखी है, जरूर देखी होगी, ददाईदेव ? एक दिन किसी काम से मुझे समूवा गांव के धनेश्वर के घर में जाना था, इसीलिए उसी कच्ची सड़क से रवाना हुआ। देखा, एक आदमी कुदाल लेकर कच्ची सड़क पर मिट्टी डाल रहा था। कच्ची सड़क पर मिट्टी डालने का क्या अर्थ हो सकता था ? जब उस आदमी से पूछा तो उसने बताया—पंचायत कच्ची सडक पर मिट्टी डालकर अच्छी सड़क बनाएगी, सड़क न होने की वजह से समूवा गांव के छोटे बच्चों को वर्षा-काल में स्कूल जाने के लिए एक मील का लंबा रास्ता घूमकर तय करना पड़ता है। मैंने कहा—अच्छी बात है। मगर क्या सिर्फ एक आदमी कुदाल से कुछ मिट्टी डालकर कच्ची सड़क को वर्षाकाल में चलने लायक बना सकता है ? विश्वास करेंगे, ददाईदेव ? उस दिन जो थोड़ी-सी मिट्टी उस कच्ची सड़क पर डाली गई, उसके बाद उस पर कोई फूस डालने भी नहीं गया, आज भी वर्षा-काल में कच्ची सड़क पर कमर तक पानी जमा हो जाता है और सड़क नदी जैसी बन जाती है, आज भी समूवा गांव के छह-सात साल के बच्चे एक मील घूमकर नाहरनि गाव के स्कूल मे पढ़ने के लिए जाते है। मगर पंचायत के हिसाब के खाते में देखिएगा, उसमे लिखा है कि कच्ची सडक को ऊंची बनाने के लिए पांच सौ रुपए खर्च किए गए।''

भकतराम अचानक अर्थपूर्ण ढंग से चुप हो गया।

भकतराम के फिर बोलने के लिए शिवनाथ कुछ देर प्रतीक्षा करता रहा। मगर उसे बोलते न पाकर शिवनाथ ने पूछा, ''पांच सौ रुपए कहां गए ?'' शिवनाथ के प्रश्न में ऐसा विस्मय और कौतूहल की झलक देखने की आशा से ही भकतराम इतनी देर तक चुप था, शिवनाथ का प्रश्न सुनते ही वह नाटकीय अंदाज में कहने लगा, ''यही तो प्रश्न है ददाईदेव, पांच सौ रुपए कहां गए ? हम बुद्धू भले ही है, मगर दुनिया की खबर हम भी रखते हैं, ददाईदेव ! भीतरी खबर जानने वालों के मुंह से सुना है—पांच सौ रुपए में से दो सौ रुपए पंचायत के अध्यक्ष होने के नाते केशव मडल की जेब में गए, बाकी बचे तीन सौ रुपए ठेकेदार, ओवरसियर और पंचायत के दो मेंबरों ने बांट लिए। जब से पंचायत बनी है, तबसे यही सब चल रहा है, ददाईदेव ! जनता के नाम पर लाए गए रुपए से ही पंचायत अध्यक्ष, मेंबर, ठेकेदार के पक्के घर बनते गए हैं; जनता सब कुछ देखकर भी चुप रहने के लिए मजबूर है।''

''क्यों ?'' शिवनाथ ने निर्विकार भाव से प्रश्न किया।

''जनता और कर भी क्या सकती है, ददाईदेव ?'' भकतराम ने एक लंबी आह छोड़ते हुए कहा, ''मान लीजिए, जनता एस. डी. ओ. से जाकर शिकायत करे कि पंचायत अध्यक्ष ने रुपए हजम कर लिए हैं, तो एस. डी. ओ. जांच करने का वादा करेगा। जांच की बात सुनते ही पंचायत अध्यक्ष एम. एल. ए. के पास दौड़ा

जाएगा। एम. एल. ए. को सिर्फ इशारे करने की जरूरत पड़ेगी, एस. डी. ओ. जनता की शिकायत को फौरन कूड़ेदान में फेंक देगा। गांव के कुछ जोशीले युवक बीच में एक बार शिलांग गए थे, मंत्री से शिकायत करने के लिए। मंत्री ने यह करेंगे, वह करेंगे जैसे वादे करके युवकों को वापस भेज दिया था। मगर जांच का आदेश आज तक नहीं दे सका। युवकों के शिलांग जाने की खबर पाकर एम. एल. ए. भी पीछे-पीछे मंत्री से मिलने चला गया। मंत्री एम. एल. ए. की बात सुनता या मोहधूलि गांव के ऐरे-गैरे नौजवानों की बात सुनता ? यही है देश का हाल, ददाईदेव ! ऊपर से लेकर नीचे तक सारे लोग जनता के खिलाफ मोर्चा बांधे हुए हैं। मंत्री, एम. एल. ए., पंचायत अध्यक्ष, एस. डी. ओ.—सभी एक ही कंपनी के भागीदार हैं। जनता किसके पास क्या कहने जाएगी ?''

दोनों अपने-अपने भावों में खोकर कुछ देर खामोश रहे। कुछ देर बाद जैसे कुछ याद आया हो, शिवनाथ ने पूछा, ''भकत, बांध कैसे टूट गया ? तुमने मुझे एक बार बताया था, बांध में मिट्टी डालने की जगह कूड़े और केले के पेड़ डालकर ऊपर से मिट्टी डाली गई है, तब मैंने इस बात पर ठीक से विश्वास नहीं किया था। अब देखता हूं, तुम्हारी बात सच थी।''

अपनी भविष्यवाणी सच होने के गर्व से प्रसन्न होकर भकतराम बोला, ''मैंने आपको तभी नहीं कहा था, ददाईदेव ? देखा आपने—किस तरह मेरी एक-एक बात सही साबित हुई। अभी फिर एक नई बात सुन रहा हूं। लोग कह रहे हैं—देउबरचूक मिरि गांव के पास जो भी हुआ हो, हमारे मोहधूलि के पास बांध अपने आप नहीं टूटा है। ठेकेदार और ओवरसियर ने साजिश रचकर अपने आदमी तैनात कर रातों-रात बांध तोड़ डाला है।''

''तोड़ डाला है ? क्यों ?'' आश्चर्यचकित होकर शिवनाथ ने पूछा।

''ददाईदेव, आप ज्ञानी-मानी बड़े आदमी भले ही हैं, दुनिया की बहुत-सी बातें आप अभी भी नही जानते। बांध अगर नहीं टूटेगा और अटल-अमर बना रहेगा तो कनक ठेकेदार या गौरांग ओवरसियर अगले साल कैसे अपनी रोजी-रोटी का जुगाड़ कर पाएंगे ? नया ठेका कहां मिलेगा ? इनके लिए बांध कामधेनु गाय की तरह है, उसी को दूहते-दूहते ये लोग जीवन भर गुजारा करते रहेंगे। बाढ़ नहीं तोड़ेगी तो ठेकेदार-ओवरसियर बांध तोड़ते रहेंगे। तभी तो कातिक-अगहन महीने में नया ठेका मिलेगा। ऐसा करके ही तो हांहचरा गांव का धन ठेकेदार, कपहुवा गांव का नवीन ठेकेदार लखपति बन चुके हैं, ददाईदेव ! माघ महीने में ही ठेके का आर्डर पाकर मजदूर नहीं मिलने का बहाना कर वे वैशाख-जेठ महीने तक बांध का काम शुरू नहीं करेंगे, तभी बाढ़ आ जाएगी। बाढ़ खत्म होने पर वे कहेंगे—बांध तो बनाया था, मगर बाढ़ में बह गया तो हम क्या कर सकते हैं ? यह कहकर पिछले साल खोदे गए गड्ढों को दिखाकर ओवरसियर को जमीन नापने के लिए कहेंगे। ओवरसियर

भी अपने तरीके से नापेगा, क्योंकि पाप की कमाई का वह भी हिस्सेदार है ! ऐसा करते हुए ही ये लोग देश को हजम कर गए, ददाईदेव ! जनता को बाढ़ से बचाने के लिए सरकार बांध बनाने के नाम पर लाखों रुपए खर्च कर रही है, मगर सारा पैसा ठेकेदार, एम. एल. ए., मंत्री के पेट में जा रहा है। आप एक बार चारो मौजे घूमकर देख लें। देखेंगे, गांव-गांव में सफेद पक्के मकान चमक रहे हैं। दूर से देखने पर ऐसा लगेगा—स्वराज पाकर सचमुच गांव का चेहरा बदल गया है। मगर हकीकत में कुछ नहीं बदला है, ददाईदेव ! गरीब पहले किसी तरह एक वक्त खाकर जीते थे तो आज उन्हें ठीक से एक वक्त का खाना भी नसीब नहीं हो रहा। सिर्फ ठेकेदार ही अमीर बने हैं, जीप में बैठ रहे हैं, पक्के मकान बना रहे हैं। वालंटियरों ने अपने विश्वासपात्रों को चुन-चुनकर ठेकेदार बनाया है, ठेकेदार धन मुहैया करवाकर वालंटियरों को मंत्री-एम.एल.ए. बना रहे हैं। दोनों साजिश रचकर जनता का खून चूस रहे हैं।"

"भकत !" चकित मुद्रा में शिवनाथ बोला, "तुम बाहर से भोले-भाले दिखाई देते हो, मगर भीतर ही भीतर सब कुछ जानते हो। मगर इतनी सारी बातें अगर जानते ही हो, तो देख-सुनकर भी इतना अन्याय क्यों बर्दाश्त कर रहे हो ? कुछ करते क्यों नहीं ?"

"मैं क्या कर सकता हूं, ददाईदेव ?" भकतराम ने फिर एक लबी सांस छोड़ी, "अपने पेट के लिए एक मुट्ठी भात के बारे में सोचूगा या जनता की तरफ से लड़ने के लिए जाऊंगा ? खुद को सिर्फ यही कहकर ढाढस बंधाता हूं—ये समाजद्रोही दो दिन की क्षमता पाकर भले ही नाचते रहें, ऊपरवाला सबकुछ देख रहा है। एक न एक दिन भगवान को इस महापाप का फैसला जरूर करना पड़ेगा...मैं चलता हूं ददाईदेव, बहुत देर बक-बक करता रहा हूं। मगर जाने से पहले आपसे कह देता हूं ददाईदेव, अगले साल बंटाई के लिए एक पूरा खेत मुझे देना ही होगा। हाथ की चीज छोड़कर रास्ते की चीज लेने गया तो अच्छी सीख मिल गई। अब बांध पर और भरोसा नहीं करूंगा। हमारे लिए तो एक मात्र आप ही का सहारा है।"

शिवनाथ के पैरों की तरफ लक्ष्य कर दूर से ही प्रणाम कर भकतराम ने शिवनाथ से जाने की अनुमति ले ली।

5

शिवनाथ ने सोचा था कि भकतराम के जाते ही कनक ठेकेदार का किस्सा खत्म हो गया, उसे फिर कभी उसके बारे में सोचकर परेशान नहीं होना पड़ेगा। मगर वैसा नहीं हुआ। दो महीने के बाद फिर अप्रत्याशित रूप से कनक ठेकेदार का प्रसंग उसके जीवन में लौट आया।

बड़े बेटे गौरीनाथ से संबंध खत्म होने के बाद शिवनाथ रंभा का विवाह करवाने के लिए व्यस्त हो गया था। अब तक वह सोचता रहा था कि पढ़-लिखकर बेटा अच्छी नौकरी करेगा और उस पर परिवार की जिम्मेवारी सौंपकर वह निश्चिंत हो जाएगा। मन ही मन उसे यह भी आशा थी कि गौरीनाथ अपने पद की मर्यादा और प्रभाव के जरिए बहन के लिए एक योग्य वर तलाश लेगा। मगर जब वह आशा व्यर्थ साबित हुई, तब रंभा का विवाह उसके जीवन की मुख्य समस्या का दूसरा नाम बन गया। कानी और चेचक के दागों वाली बदसूरत रंभा के साथ कौन आसानी से विवाह करना चाहेगा ? आदमी का जीवन कच्चू पत्ते पर ठहरे पानी की तरह है, काल की हवा कब उसे नीचे गिरा देगी, इसका कोई ठिकाना नहीं। गौरीनाथ प्रकरण के बाद शिवनाथ स्वयं को इन दिनों इस कदर कमजोर, बेवस और अकेला अनुभव करने लगा है कि बीच-बीच में उसे अनुभव होता है—मरने में उसे अधिक समय नहीं लगेगा। तीन महीने के दौरान ही जैसे उसके जीवन के तीस साल गुजर गए। बाहर से देखने पर उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, मगर मन के भीतर वह सड़-गल चुका था। पत्नी की स्थिति से उसकी मानसिक यंत्रणा हजार गुना अधिक बढ़ गई है। बेटे वाले मामले के बाद वह भीषण आघात से लकवाग्रस्त होने वाले मनुष्य की तरह पूरी तरह बेजान हो गई। देखने से लगता जैसे मृत शरीर को वह किसी तरह घसीट रही है। पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे के दुख और यंत्रणा को समझते, मगर एक-दूसरे को तकलीफ न हो, इसीलिए बाहरी तौर पर स्वाभाविक रहने की कोशिश करते। मगर शिवनाथ अच्छी तरह जानता है, कुछ भी हो, वह पुरुष है, पुत्र से अलगाव की यंत्रणा सहन करने की उसकी क्षमता पत्नी से अधिक है, दिन में भले ही शिवनाथ की पत्नी लोगों को दिखाने के लिए स्वाभाविक बनी रहती, रात होते ही यंत्रणावश वह पागल जैसी हो जाती। लगभग रातभर वह जागती हुई चुपचाप रोती रहती। सुबह जागकर शिवनाथ कनखियों से पत्नी का चेहरा देखता—रातभर की अनिद्रा, चिंता और खामोश रुलाई ने उसकी उम्र काफी कम कर दी, उस चेहरे में जीवित रहने की आशा-आकांक्षा के चिह्न नहीं बचे।

पत्नी की शोचनीय स्थिति देखकर शिवनाथ मन ही मन काफी घबरा गया। समय रहते अगर वह रंभा के विवाह की व्यवस्था न कर सका, तो एक दिन उसे पता चलेगा कि बेटी के विवाह होने की कोई गुंजाइश नहीं बची। तब लक्ष्मीनाथ के कंधे पर कुंआरी बेटी का बोझ छोड़कर उन्हें चला जाना पड़ेगा। लक्ष्मीनाथ भविष्य में क्या रूप धारण करेगा, कौन जानता है ? इस बात में कोई शक नहीं कि अगर रंभा को हमेशा कुंआरी रहना पड़े तो भविष्य में भाइयों के परिवार में उसकी जगह एक आश्रिता दासी जैसी होगी, अपनी प्यारी बड़ी बेटी के वैसे भविष्य की कल्पना करते ही शिवनाथ का गला सूखने लगता है। सारी बातें सोच-विचारकर शिवनाथ रंभा के लिए वर तलाशने लगा।

आसपास के इलाके में शिवनाथ को वर मिलने वाला नहीं था। पहली बात तो यह थी कि इलाके में शिवनाथ की बराबरी का कोई परिवार नहीं था। दूसरी बात यह थी कि इलाके के सारे लोग रंभा के कानी और बदसूरत होने के बारे में जानते थे। उसने जाल को कुछ ज्यादा फैलाया। शिवनाथ के पास और कुछ न हो, नाम, यश और खानदान की प्रतिष्ठा थी। इसी कारण जेठ से कातिक महीने के बीच दूर-दूर से तीन जगहों से लोग लड़की देखने के लिए आए। मगर आते हुए उनमें शिवनाथ के परिवार के साथ वैवाहिक संपर्क करने की जैसी ललक थी, लड़की को देखने के बाद किसी की ललक बनी नहीं रही। शिवनाथ के घर से रवाना होते हुए सभी ने शालीनता के साथ कहा—वे घर लौटकर परिवार के लोगों से विचार-विमर्श करने के बाद अपने निर्णय की सूचना देंगे। शिवनाथ उनके पत्र की आशा में बेकरारी के साथ राह देखता रहा, मगर ऐसा कोई पत्र कभी नहीं आया।

रंभा के विवाह के बारे में सोचते हुए एक दिन शिवनाथ ने आतंकित होकर अनुभव किया कि वह स्वयं रंभा के विवाह के बारे में पूरी तरह निश्चिंत नहीं है, एक गुप्त निराशा और भय का भाव उसके मन में काफी दिनों से बना हुआ है। तीन जगह रिश्ते की बात टूटने के बाद नए सिरे से कोशिश करने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। रंभा का कभी विवाह नहीं हो पाएगा—यह चिंता गौरीनाथ के बिछोह के दर्द से भी अधिक उसके मन को क्षत-विक्षत करने लगी। यही सब बातें सोचते हुए एक दिन कातिक महीने की शाम उदास होकर बैठा हुआ है, बारिश के बाद टूटे-फूटे भंडार की बगल में जिका फूलों पर ढलते सूरज की वरुण पीली धूप फैली है जो अपार्थिव उदासी का माहौल तैयार कर रही है, बीच-बीच में शिवनाथ की नजर उधर जाती है, तब शिवनाथ का मन किसी सहारे की तलाश में अतीत की यादों में खो जाता है, तभी उसकी पत्नी भीतर से निकलकर उसके पास खड़ी हो जाती है। पत्नी के चेहरे की मुद्रा देखकर शिवनाथ समझ गया कि वह कोई जरूरी बात कहना चाहती है। पत्नी की तरफ देखकर शिवनाथ ने पूछा, "क्या हुआ ?"

पत्नी एक मोढ़ा खींचकर बैठ गई और कुछ देर तक अर्थपूर्ण ढंग से चुप रही। शिवनाथ पत्नी की इस मुद्रा से अच्छी तरह परिचित है। कोई महत्वपूर्ण बात कहनी हो तो वह चुप्पी के रूप में भूमिका बांधती है। शिवनाथ ने कौतूहल दबाकर धीरज बनाए रखा। कुछ देर बाद पत्नी बोली, "आज ठानुराम की मां हमारे घर आई थी।"

ठानुराम की मां का आना कैसे एक महत्वपूर्ण खबर है, कुछ समझ न पाने के कारण शिवनाथ प्रश्नपूर्ण दृष्टि से पत्नी को देखता रहा।

पत्नी फिर कहने लगी, "रंभा के लिए वह एक रिश्ते की बात करने आई थी।"

शिवनाथ का निर्विकार मनोभाव तत्काल बदल गया। जिज्ञासा के साथ उसने पूछा, "रिश्ते की बात ? किस घर से ?"

पत्नी हिचकिचाती हुई बोली, "उस घर का नाम सुनकर आपको अच्छा नहीं

लगेगा। परंतु आदमी को हालत देखकर काम करना चाहिए। हमारी बेटी कैसी है—यह भी तो देखना पड़ेगा। अभी अच्छे-बुरे की चिंता छोड़कर हमें यह सोचना चाहिए कि कैसे लड़की को किसी घर में भेजा जा सके।"

शिवनाथ धीरज खो बैठा। कुछ नाराज होकर बोला, "तुम यह सब बातें छोड़ो भी। किसके घर से रिश्ते की बात आई है, पहले यह बताओ तो, हमारे घर में ठानुराम की मां रिश्ते की बात लेकर आई, ऐसा आदमी इस इलाके में कौन है ?"

"देखिए, मेरे कुछ कहने से पहले ही आप नाराज हो गए न !" पत्नी के स्वर में भी क्रोध का भाव था, "नाराज नहीं होइए, धीरज रखकर सुनिए। लालुवा बूढ़े का बेटा कनक आजकल सुना है बड़ा ठेकेदार बन गया है। एक जीप भी खरीदी है। वही कनक हमारी रंभा से विवाह करना चाहता है।"

पत्नी की बात पूरी होने तक शिवनाथ ने किसी तरह धीरज बनाए रखा था। पत्नी की बात पूरी होते ही उसने एक पैर कुर्सी से नीचे रखा और सीधी तरह बैठकर गुस्से से चिल्ला उठा , "तुम, तुम पागल हो गई हो क्या ? अकाल पड़ने का मतलब यह तो नहीं कि आदमी गाय खाना शुरू कर दे ? ऐसी बात आज जो बोली सो बोली, और कभी तुम्हारे मुंह से ऐसी बात मै नहीं सुनना चाहूंगा। कनक ठेकेदार के साथ अपनी बेटी का विवाह करने की जगह उसके दो टुकड़े कर मोहधूलि नदी में बहा डालूंगा।"

शिवनाथ की पत्नी के चेहरे का भाव देखकर ऐसा लगा—मानो वह पति के इस तरह क्रुद्ध होने का पहले से ही अनुमान लगा चुकी थी। कुछ देर चुप रहने के बाद वह बोली, "आदमी तो इसी तरह छोटा से बड़ा बनता है। पैदाइशी तो कोई राजा या बड़ा आदमी नहीं होता। आज कनक ठेकेदार के पास क्या नहीं है ? लोग कहावत कहते हैं—कभी वृंदावन भी सूख जाता है। आज जैसा समय है, पुराने बड़े आदमी आज छोटे हो गए हैं, छोटे आदमी बड़े हो गए हैं। मोहधूलि में अब लोग कनक ठेकेदार को ही आपसे बड़ा आदमी मानते हैं। पहले शहर से कोई बड़ा आदमी आता था, तो सीधे आपके घर में आता था। आज क्या कोई आता है ? सारे लोग अब कनक ठेकेदार या रेब महाजन के घर में ठहरते हैं। आप इस बारे में अच्छी तरह सोचकर देखिए। लड़की हमेशा बिन ब्याही रहे, इससे अच्छा है कि कनक ठेकेदार से उसका विवाह हो जाए। इसमें मैं कोई बुराई नहीं समझती। और कुछ हो न हो, उसके पास धन-दौलत की कमी नहीं है, लड़की सुख से रहेगी।"

शिवनाथ ने गुस्से पर काबू रखते हुए कहा, "मैं फिर वही बात कहता हूं—अकाल पड़ने का मतलब यह तो नहीं कि आदमी गाय खाना शुरू कर दे। तुम आज यह बात कह पाई हो, क्योंकि कनक का बाप लालुवा जब इस घर में नौकर था, तब तुम इस घर की बहू बनकर नहीं आई थीं। हल जोतकर लालुवा जब दोपहर में घर लौटता था तब बाहर बरामदे में बैठकर खाता था और अपना बर्तन कुएं के पानी

से खुद ही धोता था—वह दृश्य तुमने नहीं देखा। आज जरूर सुनता हूं—बेटे के बल पर लालुवा बूढ़ा भी बड़ा आदमी बन गया है। पैरों में कैनवस के जूते पहनकर कंधे पर चादर लटकाकर अभिजात व्यक्ति की तरह घूमता है। क्या तुम यही चाहती हो कि वह जूते पहनकर हमारे घर आए और मेरे सामने पैर पर पैर चढ़ाकर बराबरी में बैठकर बात करे ? युग का धर्म मानकर, काफी बातें आंख-कान बंदकर, बर्दाश्त कर रहा हूं, मगर जब तक मैं जिंदा हूं, लालुवा बूढ़ा को समधी बनाकर अपने बराबर बिठाकर बात नहीं कर सकता। मुझसे ऐसी आशा कभी नहीं करना। भले ही मेरी लड़की बिन ब्याही ही रह जाए। वैसे, कनक जैसा नव-धनाढ्य फिट-फाट नौजवान क्यों हमारी बेटी से विवाह करना चाहता है, इसके बारे में तुमने सोचा है ? उसके पास दौलत इकट्ठी हो गई है, अब इज्जत चाहिए। मेरी बेटी से विवाह कर वह इज्जत हासिल करना चाहता है। दौलत के नशे में चूर लालुवा बूढ़ा भी चाहता है—जिस घर में वह एक गुलाम था, जिस घर में उसकी जगह जमीन पर थी, उस घर में उसे बराबरी की जगह मिल जाए। वैसा मैं कभी नहीं होने दूंगा। भले ही मैं अच्छे घर के किसी कंगाल के साथ बेटी का विवाह करवा दूं, फिर भी अपने गुलाम को लखपति होने के नाते समधी बनाने वाला नहीं हूं। मुझसे फिर कभी इस बारे में तुम बात नहीं करोगी।"

शिवनाथ की पत्नी समझ गई, पूरब का सूरज पश्चिम से निकल सकता है, पर उसका पति जिद नहीं छोड़ सकता। उसके मन में बड़ी आशा थी कि कनक के साथ लड़की का विवाह हो जाएगा, चाहने पर भी कोई रिश्ता नहीं आ रहा, जबकि कनक ने आगे बढ़कर रिश्ते की बात चलाई है। रंभा के लिए ऐसा वर कहां मिल पाएगा ? वह समझ गई कि हमेशा बिन ब्याही रहने के सिवा रंभा के सामने दूसरा रास्ता नहीं है। वह धीरे-धीरे भीतर चली गई और दरवाजे के पास खड़ी होकर चुपचाप आंसू पोंछने लगी।

शिवनाथ एक ही जगह स्तब्ध होकर बैठा रहा। पत्नी जब उठ रही थी तब उसकी एक मर्मभेदी लंबी आह सुनाई पड़ी थी, शिवनाथ ने अनुमान लगाया कि वह दरवाजे के पीछे चुपचाप रो रही है। जो भी हो, स्त्री का हृदय है, मान-प्रतिष्ठा या खानदान की इज्जत की तुलना में अपनी संतान के सुख और भविष्य उसके लिए ज्यादा अहमियत रखते हैं। पत्नी के दुख के कारण शिवनाथ ने अपने हृदय को भी टूटता हुआ अनुभव किया, परंतु पत्नी के प्रस्ताव को मान लेने के लिए किसी तरह वह अपने मन को तैयार नहीं कर सका। दुनिया में अलग-अलग आदमी अलग-अलग चीजों को पसंद करते हैं। कोई धन चाहता है, कोई इज्जत चाहता है, कोई शक्ति चाहता है, कोई शांति चाहता है। शिवनाथ जीवन भर मोहधूलि की लघु दुनिया में मान-मर्यादा के उच्चतम शिखर पर अकेले बैठा रहा है, उस ऊंचाई पर वह अकेला है, उसके लिए वह मर्यादा जीवन का प्रमुख लक्ष्य और सार्थकता है। उस मर्यादा

के बिना जीवन खोखला और निरर्थक है। अपने या परिवार के सुख-चैन के बदले भी वह उस मर्यादा को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है।

शिवनाथ अपने भावों में गंभीरतापूर्वक खोया हुआ था, तभी अपने करीब रंभा की आवाज सुनकर चौंक उठा। वह पिता के हाथ-पैर धोने के लिए गर्म पानी लेकर आई थी। पानी की बाल्टी जमीन पर रखकर उसने गमछा पिता के कंधे पर डाल दिया और बोली, ''पिताजी, हाथ-पैर धो लीजिए। आपका पूजाघर में जाने का समय हो गया है।''

पानी रखकर रंभा भीतर जाना चाहती थी, तभी शिवनाथ ने आवाज दी, ''बेटी !''

रंभा ठिठक गई।

शिवनाथ की आवाज नाटकीय और भावुकतापूर्ण थी, जिसे सुनकर वह स्वयं चौंक पड़ा। शायद रंभा भी चौंकी।

शिवनाथ के पास कहने के लिए कुछ नहीं था। दुर्भाग्य का दंश झेलने वाली सदा के लिए अभिशप्त लड़की—जिसके विवाह की एकमात्र संभावना को भी उसने आज खत्म कर दिया, जिसकी वजह से उसके सिर पर थोप दिया चिर-एकाकीपन का अभिशाप--उसे सीने में भरकर एक बार दुलार करने का जी चाहा। कुछ दिनों से वह समझने लगी है कि वह माता-पिता के लिए चिंता का कारण और बोझ बनी हुई है। इसीलिए आजकल वह काफी संकुचित होकर घूमती है, स्वयं को माता-पिता की आंखो से ओझल रखने की कोशिश करती है। शिवनाथ का 'पिता का हृदय' ये सारी बातें समझता है। अंधेरे में ही वह बेटी की तरफ कुछ पल देखता रहा। पलक झपकते ही उसकी आंखों के सामने उसका सारा अतीत कौंध गया।

पांच साल की उम्र तक वह गुड़िया की तरह सुंदर प्यारी बच्ची थी, जिसे राहगीर देखते ही गोद में भरकर स्नेह से दुलार कर आगे बढ़ते थे। उसके बाद उसे वह जानलेवा बीमारी हुई, जिसके कारण उसकी जान तो नहीं गई मगर वह जीवन भर के लिए कुरूप और वीभत्स बन गई ! जब वह बड़ी हुई तो शिवनाथ ने कई बार चुपके से गौर किया—स्कूल या कहीं और जाने के लिए वह तैयार होती तो आईने के सामने वालों में कंघी फेरते हुए उदास होकर ठिठक जाती, कुरूप होने की अनुभूति के कारण उसके चेहरे पर विषाद की छाया फैल जाती। एक गुप्त आह उसके भीतर से निकल पड़ती, जो आग की लौ की तरह उसे भी छूकर गुजर जाती। इस पल भी उसने उसी तरह आग की लौ के स्पर्श का अनुभव किया, उसके कलेजे का कोई अंश झुलसने की पीड़ा से छटपटा उठा। शिवनाथ को कुछ कहते न देख रंभा ने पूछा, ''मुझसे कुछ कहना चाहते थे, पिताजी ?''

''कुछ नहीं री, तुम भीतर चलो। बहुत गर्मी है, कुछ देर बाद मैं पूजाघर में जाऊंगा।''

रंभा भीतर चली गई।

शाम का अंधेरा गहरा होता गया। कुछ देर बाद ही गांव के नामघर से ढोल बजने की आवाज सुनाई पड़ी। नामघर के ढोल की आवाज सुनते ही हाथ जोड़कर ईश्वर का नाम लेने की उसकी आदत रही है। मगर उस दिन ढोल की आवाज जैसे उसने नहीं सुनी। रंभा की चिंता में ही उसका मन पूरी तरह डूबा रहा। क्या मैंने यह ठीक किया ?—शिवनाथ ने खुद से ही सवाल पूछा—हमेशा बिन ब्याही रहने की तुलना में कनक से उसका विवाह हो जाता तो क्या गलत हो जाता ? कनक का स्वास्थ्य अच्छा है, देखने में अच्छा है, रंभा की तुलना में वह सुंदर युवक है। इसके अलावा संसार में उसकी समृद्धि बढ़ते रहने की आशा है, मामूली हालत से सिर्फ अपनी बुद्धि और कोशिश के जरिए इस छोटी उम्र में ही वह समाज का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति बन चुका है। आम हालत में रंभा जैसी एक कुरूप और विकलांग लड़की कनक को स्वामी के रूप में पाने की बात कल्पना में भी नहीं सोच सकती थी। कनक निश्चित रूप से रंभा की तुलना में हजार गुना सुंदर कन्या पाने के योग्य पात्र है। मगर रुकावट एक ही है। कनक को सिर्फ एक पत्नी की जरूरत नहीं है, उसे समाज में मर्यादा प्राप्त करने के लिए एक सीढ़ी की जरूरत है। जिस शिवनाथ के घर में कनक का बाप कभी गुलाम था, उसी शिवनाथ की बेटी से विवाह कर वह शिवनाथ से प्रतिशोध लेना चाहता है।

"मगर मैं क्या चाहता हूं ?"—शिवनाथ ने स्वयं से पूछा—अपनी अभिशप्त विकलांग बेटी के विवाह होने के एकमात्र अवसर को खोकर मैं क्या पाना चाहता हूं ? मैं अपनी मर्यादा कायम रखना चाहता हूं, मैं अपनी मर्यादा की वेदी पर अपनी बेटी के सुख-चैन और भविष्य की बलि देना चाहता हूं। अचानक शिवनाथ ने अनुभव किया—कनक और उसके बीच और मामले में बहुत असमानताएं हो सकती हैं, मगर एक मामले में दोनों के बीच काफी समानता है, मर्यादा के निष्ठुर देवता की वेदी पर दोनों बराबर बैठकर जीवन की अनेक संपदाओं और सुख-शांति की बलि देने के लिए तैयार हैं।

शिवनाथ की पत्नी भीतर से निकलकर दरवाजे के सामने खड़ी हो गई और बोली, "आज आपको क्या हो गया है ? शाम ढलकर रात होनेवाली है, पूजाघर में नहीं जाना है ?"

शिवनाथ ने पत्नी को कोई जवाब नहीं दिया। पूजाघर जाने के लिए भी मन में कोई आग्रह अनुभव नहीं किया। सिर्फ एक निर्मम अनुभूति के साथ वह स्तब्ध होकर बैठा रहा कि जीवन भर वह सिर्फ एक ही देवता की पूजा करता रहा है, जिस देवता का नाम मर्यादा है।

चतुर्थ पर्व

1

जीवन भर शिवनाथ एक ही काम करता रहा है, वह काम है अपने घर के बरामदे में कुर्सी पर बैठे रहना। मानो वह जीवन-नाटक का एक पात्र न हो, बल्कि सिर्फ एक दर्शक ही हो। सुबह बरामदे में निर्धारित कुर्सी पर बैठने के साथ-साथ पूर्व दिशा में सूरज उगता है, जिसके साथ-साथ धरती रूपी रंगमंच का विशाल परदा उठने लगता है। उसके बाद, एक के बाद एक दृश्य नजर आने लगते हैं, सुबह की नर्म कोमल धूप धीरे-धीरे तीखी और रूपहली होती जाती है, मवेशीघर से बैल खेतों की तरफ बढ़ जाते हैं, सामने की सड़क पर गांव के परिचित लोगों की आवाजाही शुरू हो जाती है, कभी आकाश को बादल ढक देता है, कभी मूसलाधार बरसात होती है। जेठ-आषाढ़ महीने में शालि धान के पौधे खाने के लिए एजार पेड़ों पर भाटो पंछी आते हैं, झुलसती खामोश दोपहर में छत पर बैठकर कौवे प्यासे स्वर में कांव-कांव करते रहते हैं। आश्विन-कातिक महीने में उसके आंगन में बालिमाही पंछी फुदकते रहते हैं। कभी उसके घर के सामने की राह से कोई तेज कदमों से उसके घर में आता है या कोई रास्ते से ही चिल्लाकर उससे बात कर चला जाता है। धूप की तपिश धीरे-धीरे कम होती जाती है, शाम होती है। पिछवाड़े बांस के झुरमुट से एक हुदू पंछी करुण उदास स्वर में हुदू-हुदू करने लगता है, उसके सामने आकाश में पंछियों का झुंड पश्चिम की तरह लौटने लगता है। धीरे-धीरे मवेशीघर में गाय-बैल एक-एककर लौटने लगते हैं और उनके कदमों से धूल-धूसरित हुए गांव के रास्तों से धीरे-धीरे जानी-पहचानी गोधूलि बढ़ती जाती है। पृथ्वी के सारे लोग काम करने के लिए निकल पड़ते हैं या काम करके लौट आते हैं। उत्सव में शामिल होते हैं, झगड़ते हैं। समाज के काम से घूमते हैं, उत्तेजना की खोज में घूमते हैं, परंतु शिवनाथ यह सब नहीं करता। वह सिर्फ बैठा रहता है और अपनी आंखों से क्षितिज के दायरे में फैले लघु जगत के चिर-परिचित नाटक के दृश्यों का देखता रहता है। कभी-कभी बहुत दिनों तक एक ही दृश्य का पुनराभिनय होता है, तब वह ऊबकर लंबी जम्हाइयां लेता है या आंखें बंदकर कुछ सोचने या किताब पढ़ने की कोशिश करता है। परंतु कभी-कभी जीवन अंतहीन, थका देने वाली एकरूपता के बीच अचानक सामान्य नयापन पैदा कर देता है। उसके घर के सामने के रास्ते से उमंग के साथ नाचते-गाते

बाराती जाते हैं, कभी दर्द भरी-रुलाई के साथ शवयात्रा गुजरती है। कभी हवा में पेड़ का एक पत्ता तक नहीं कांपता और प्रकृति स्थिर एवं निस्तब्ध बनी रहती है, कभी आंधी के जरिए जंगल को उजाड़ती प्रकृति उन्मादिनी का रूप धारण कर लेती है। अभ्यस्तता की क्लांति और ऊब दूर करने वाली कोई भी नवीनता शिवनाथ को प्रफुल्लित कर देती है, जीवित रहने के लिए वह नवीन आनंद-उत्तेजना तलाश पाता है।

एक जैसे परिचित दृश्यों को देखते रहने से ऊब जाने पर वह कुछ देर तक आंखें बंदकर अतीत की स्मृतियों के जगत की सैर कर लेता है, नाक से कोई गंध महसूस करने की कोशिश करता है, कानों से सुनना चाहता है अपनी पसंद की कुछ आवाजें। शिवनाथ गंध-विलासी है, परंतु आवाज भी उसे पसंद हैं। दृश्य से ऊब जाने पर आंखें बंद कर वह कुछ मधुर परिचित आवाजों को सुनने की कोशिश करता है—पिछवाड़े के खेतों से गाय के रंभाने की आवाज, भैंस के गले की घंटी की आवाज, जेठ की दोपहर में बासों की करकराहट की आवाज, नदी किनारे हवा के झोंके से फूसवन या सरकंडों से आती सरसराहट की आवाज—या फिर कभी अतीत से बहकर आती चरवाहे के पेंपा की आवाज, मांझी के गाए वन, गीत की लंबी सीटी, पहली बारिश के बाद रात भर खेत में मेढकों के टर्राने की आवाज।

दिन भर एक स्थान पर बैठे रहकर शाम होते ही शिवनाथ जिस आवाज की मधुर प्रतीक्षा करता है, वह है गांव के नामघर से आती ढोल की आवाज। जहां तक उसे याद है, जीवन की लगभग अर्द्ध-शताब्दी काल की उसकी दिनचर्या में कभी कोई खास बदलाव नहीं आया। नामघर में ढोल बजने के साथ-साथ पूरे गांव में एक शीत चुप्पी पसर जाती है, निशाचर कीट-पतंगों की आवाज और किसी-किसी घर में बच्चों की रुलाई की आवाज छोड़कर और कोई आवाज इस चुप्पी को भंग नहीं करती।

परंतु पिछले कुछ सालों से गांव के इस चिरपरिचित और अपरिवर्तनीय परिवेश में कुछ अभूतपूर्व और आकस्मिक परिवर्तन होने लगे हैं। शाम होते ही अब भी नामघर से ढोल की थाप सुनाई देती है, मगर ढोल की आवाज को दबाकर एक सौ गुना अधिक जोर से माइक से रेडियो के हिन्दी फिल्मी गीत बजने लगते हैं और उससे भी अधिक जोर से सुनााई देती है बाजार में जुटे पियक्कड़ों के शोरगुल और झगड़े की आवाज। कुछ साल पहले मोहधूलि और महकमा के सदर शहर के बीच एक नई सरकारी सड़क बनी, उसी सड़क से बस और दूसरे वाहनों की आवाजाही शुरू हो गई। इसके साथ ही बाहर से काफी लोग मोहधूलि में आ गए और वह एक छोटा शहर ही बन गया। लगभग दस साल पहले मोहधूलि बाजार क्षेत्र में दुकान के नाम पर तीन मारवाड़ियों के गोले और स्थानीय ग्रामीण लोगों की चार-पांच तेल-नमक-बीड़ी-माचिस की छोटी दुकानें थी। मगर अब उसी मोहधूलि में शहरी फैशन

के तर्ज पर बीस-पच्चीस पान-सिगरेट की दुकानें हैं। मोहधूलि मे जहां सुनसान हाट थी, आज वहां भीड़ में आगे बढ़ने के लिए रास्ता नहीं मिलता—दुकान के ऊपर दुकान, घर के ऊपर घर। गांव के हाई स्कूल में अधकचरी पढ़ाई करने वाले अधिकतर युवकों ने खेती छोड़कर बाजार में पान की दुकान या मनिहारी की दुकान खोल ली है, और हाथ में कुछ पैसे आते ही छड़ी खरीदकर, शर्ट-पैंट पहनकर 'बाबू' बनने की कोशिश कर रहे हैं। गांव के जो लड़के पढ़ाई-लिखाई में अच्छे थे—वे जितना संभव हो सके उतनी ऊंची शिक्षा प्राप्त कर शहर जाकर छोटी-बड़ी नौकरी करने लगे हैं। जो पढ़ाई-लिखाई जारी नहीं रख पाए, वे हल छोड़कर मोहधूलि में ही दुकान खोलकर बाबूगिरी का स्वाद चखने की कोशिश कर रहे हैं। और, उन्होंने किसी तरह समझ लिया है कि शराब बाबूगिरी का प्रमुख उपकरण है। सिर्फ दस-बारह साल पहले विनोद ने फजल की दुकान में शराब पी थी, जिसके कारण गांववासियों ने उसका बहिष्कार किया था। मगर इन दस सालो में ब्रह्मपुत्र की भीषण बाढ़ की तरह आकस्मिक परिर्वतन की प्रचंड धारा में गांव के सारे सदियों पुराने नियम और संस्कारों की बुनियादें टूट गई और ऐसा माहौल बन गया कि आज अगर किसी को शराब पीने के जुर्म में बहिष्कृत किया जाए तो गांव का कोई अस्तित्व ही नहीं बचेगा।

आज गांव में ऐसा कोई युवक नहीं जो शराब न पीता हो, ऐसा कोई परिवार नहीं जिसमे पियक्कड़ के अत्याचार की ताडव-लीला दिखाई न देती हो। पहले गांव के युवक शाम होते ही नामघर में जाकर भावना की तैयारी करते थे या वादक के साथ बैठकर गाना-बजाना सीखते थे, कुछ लड़के किसी घर में बैठकर गप्पें लड़ाते थे। अब शाम होते ही गांव के सारे लड़के फिट-फाट बाबू की तरह कपड़े पहनकर झुंड बनाकर बाजार पहुंचते हैं, जहां शराब और जुए के अड्डे की रौनक बढ़ जाती है। कतारबद्ध पैट्रोमेक्स की रोशनी, माइक से विकट स्वर में बज रहे फिल्मी गीत, बहुभाषी विभिन्न लोगों की बातों का रहस्यमय शोर—यह सब मिलकर उनकी चेतना को इस कदर उत्तेजित कर देते हैं कि आज भी असली शहर का भ्रूण न बनने वाले मोहधूलि में वे महानगर के माहौल की उत्तेजना महसूस करने लगते हैं। गांव के जो लड़के कभी वनघोषा और बिहू गीत गाते थे, भावना के वचन और विलाप भूल जाने पर मुंहजबानी उनकी रचना कर पद को पूरा कर देते थे—उनकी वह सृजनात्मक शक्ति अब नहीं बची है, हमेशा के लिए वह खो गई है। आज उनके होठों पर सिर्फ फिल्मी गीत हैं।

जीवन के बहुत वर्षो तक शिवनाथ के लिए जिस शाम की प्रतीक्षा मधुर और पवित्र थी, आज कुछ सालों से वह भयंकर यंत्रणादायक बन चुकी है। इसकी वजह सिर्फ यह नहीं है कि शाम होते ही वह नामघर के ढोल की आवाज की जगह माइक से फिल्मी गीत या पियक्कड़ों की चीख-पुकार सुनता है। उससे भी बड़ी वजह यह है कि शाम होते ही बाजार के सारे पियक्कड़ों की चीख को दबाकर जिसकी चीख

पूरे गांव में सुनाई देती है—वह होती है उसके छोटे बेटे लक्ष्मीनाथ की चीख।

पिछले कुछ सालों में लक्ष्मीनाथ मोहधूलि का सबसे बड़ा पियक्कड़ और गुंडा बन चुका है। हाईस्कूल की छठी कक्षा में तीन साल तक उत्तीर्ण न होने पर उसने पढ़ाई छोड़ दी। उसी छोटी उम्र में वह शराब पीने लगा था। जब शिवनाथ को पता चला तो उसने कड़ाई करने की कोशिश की, मगर वह अधिक अनुशासनहीन और उद्दंड होता गया। बचपन में वह पिता की पिटाई के डर से कई बार तीन-चार दिनों तक घर नहीं आता था। शुरुआत में शिवनाथ उसे गाय की तलाश करने की तरह तलाश कर घर लाता था। मगर बाद मे ऐसी घटना जब रोजमर्रा की बात बन गई तब तंग होकर शिवनाथ ने उसे तलाशना बंद कर दिया। भगोड़े लक्ष्मीनाथ को आश्रय देने वालों की कमी नहीं थी। मुफ्त ही उसे शराब और भात मुहैया कराने वालों की भी कमी नही थी। जिस शिवनाथ का परिवार अब तक समाज का सबसे प्रतिष्ठित परिवार था और जो परिवार आभिजात्य के दर्प के कारण स्वयं को गांव के दूसरे परिवारों से जानबूझकर दूर रखता था—उसी परिवार के एक लड़के को बरबादी के रास्ते पर धकेल कर शिवनाथ से बदला लेने का मौका पाकर गांव के कई लोग प्रफुल्लित हो उठे। विशेष रूप से कनक ठेकेदार ने इस मौके का पूरा फायदा उठाया। लक्ष्मीनाथ को एक शराबी गुंडा बनाकर शिवनाथ के आभिजात्य को धूल में मिला देगा—यही उसके जीवन का प्रमुख लक्ष्य बन गया।

वह दिन-रात लक्ष्मीनाथ के कान में यही मंत्र फूंकने लगा कि शिवनाथ के तीन बेटों में दो बड़े बेटे उच्च शिक्षा प्राप्त कर बड़ी नौकरी करेंगे और शहर में रहेंगे। गांव में रहकर खेती-बारी करने के लिए शिवनाथ को एक लड़के की जरूरत है, इसीलिए जानबूझकर शिवनाथ ने लक्ष्मीनाथ की पढ़ाई-लिखाई पर विशेष ध्यान नहीं दिया। पिता के खिलाफ उसके दिमाग में जहर भरकर कनक ने लक्ष्मीनाथ को पूरी तरह विद्रोही बना दिया। लक्ष्मीनाथ ने भी अपनी समस्त निरर्थकता और अयोग्यता की वजह पाकर कनक की बात पर विश्वास कर लिया। कनक ने लक्ष्मीनाथ को यह भी प्रलोभन दिया कि वह उसे ठेके का काम सिखाकर ठेकेदार बना देगा। मगर उसके मन मे असली उद्देश्य था कि ठेका सिखाने के नाम पर लक्ष्मीनाथ का इस्तेमाल अपने अधीनस्थ कर्मचारी के रूप में करना। जिस शिवनाथ के घर में कभी कनक का बाप नौकर था और जिस अपराध के कारण शिवनाथ की विकलांग लड़की से विवाह करने के लिए कनक को योग्य नहीं समझा गया—उसी शिवनाथ के बेटे को अपना नौकर बनाने से बड़ा प्रतिशोध और क्या हो सकता है ?

लक्ष्मीनाथ शिवनाथ का बेटा है—जो शिवनाथ मोहधूलि के प्राचीन आभिजात्य का प्रतीक है। लक्ष्मीनाथ कनक का दोस्त है—जो कनक मोहधूलि की नई अर्थिक शक्ति और क्षमता का प्रतीक है। इन दो दुर्लभ गुणों से युक्त होकर लक्ष्मीनाथ मोहधूलि की नवगठित गुंडा वाहिनी की रीढ बन गया। और तो और, थाने का दारोगा भी

उसके साथ बैठकर शराब पीना अपना सौभाग्य समझने लगा। इस सबका नतीजा यह निकला कि लक्ष्मीनाथ ने शराब के नशे में चूर होकर पिता के डर से घर में चुपके से आने की जगह एक दिन जमकर शराब पीकर वीरदर्प के साथ शिवनाथ के सामने खड़े होकर उसे तर्क-युद्ध करने के लिए ललकारा।

यह आज से लगभग दो साल पहले की घटना है। उसके बाद एक भी दिन ऐसा नहीं गुजरा जिस दिन लक्ष्मीनाथ ने शराब के नशे में चूर होकर घर आकर लंका कांड का दृश्य नहीं दिखाया हो। वह कभी भात खाने या रात गुजारने के लिए घर नहीं आता, आता है सिर्फ शिवनाथ के साथ झगड़ा करने—कभी दोपहर में तो कभी शाम में। और तो और, कभी-कभी आधीरात में भी नशे में डूबा हुआ घर आता है और शिवनाथ के सामने खड़ा होकर उंगली हिला-हिलाकर पिता को अश्लील और भद्दी गालियां देता है। मोहधूलि के सबसे अधिक धनी व्यक्ति के रूप में शिवनाथ ने जरूर काफी धन-सोना इकट्ठा कर रखा है, और लक्ष्मीनाथ को वंचित कर सब कुछ दोनों बड़े बेटों में बांटने की साजिश रच रहा है। मगर पैतृक संपत्ति में वह भी बराबर का हिस्सेदार है और इसीलिए अभी उसका हिस्सा देकर उसे अलग कर देना चाहिए—दिन-रात उसकी यही एकमात्र मांग होती है। शिवनाथ अपनी गंभीरता और मर्यादा की रक्षा करते हुए अक्सर लक्ष्मीनाथ की बातों का कोई उत्तर नही देता। मगर बीच में मामूली धैर्य छूट जाने पर वह कुछ बोलता है तो लक्ष्मीनाथ विकराल रूप धारण कर लेता है। लहू की गंध पाने वाले बाघ की तरह वह निर्मम हिंसक रूप धारण कर विकट चीत्कार के साथ पिता को जब गाली देना शुरू कर देता है तो खून-खराबे की आशंका से आस-पास के काफी लोग शिवनाथ के आंगन में इकट्ठे हो जाते हैं। दर्शकों की उपस्थिति से लक्ष्मीनाथ और अधिक उत्साहित और उत्तेजित हो जाता है। सारे लोगों के सामने वह पिता को अशलीलतम भाषा में गालियां देकर शिवनाथ के सारे अहंकार और मर्यादा को धूल में मिला देता है। पत्थर की मूर्ति की तरह निश्चल और निष्कंप होकर बैठा शिवनाथ तब मन ही मन सोचता है—'यह अपमान सहने के लिए मुझे क्यों जीवित रखा है, प्रभु ? किस पाप के कारण मुझे ऐसी नारकीय यंत्रणा दे रहे हो ? इसी पल धरती फट जाती और मैं जीते जी उसमें समा जाता, क्या इतना भी तुम नहीं कर सकते ?'

शिवनाथ के दिन पहले जैसे नही रहे। पूरे जीवन की आदत के अनुसार वह आज भी सुबह बरामदे में अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है, परंतु प्रत्येक पल वह जिसकी प्रतीक्षा करता है, दिन-रात का परिचित वह कालानुवर्तन नहीं होता, सामने सड़क पर जीवन के चलंत दृश्य नहीं होते, उसकी कोई प्रिय गंध या आवाज की प्रतीक्षा नहीं होती, अतीत की सुखद स्मृति की याद नहीं होती—डरे हुए हृदय के साथ वह किसी भी पल लक्ष्मीनाथ के आगमन की प्रतीक्षा करता रहता है और उसके क्षमाहीन दयाहीन, निष्ठुर आघातों को झेलने की प्रतीक्षा करता रहता है। जीवन की ऐसी निर्मम

परिणति होगी, कुछ साल पहले तक शिवनाथ ने सपने में भी नहीं सोचा था।

2

तीन दिनों से लक्ष्मीनाथ घर नहीं आया है। और तो और, शाम होते ही उसकी जो चीख मोहधूलि के आकाश में फैल जाती थी, वह चीख भी इन दिनों लोगों ने नहीं सुनी है। पहले दिन लक्ष्मीनाथ घर नहीं आया तो शिवनाथ ने सोचा कि वह मोहधूलि के बाहर किसी काम से, या घूमने गया होगा। वह शिवनाथ के नौकर लालुवा बूढ़े के बेटे कनक ठेकेदार की लारी का हेंडीमैन बन गया है–यह खबर उसे इस बीच मिल चुकी है। जो भी हो, कम से कम दो दिन बेटे के अत्याचार से बचाव होगा, यह सोचकर शिवनाथ ने मन ही मन मामूली राहत महसूस की। मगर अगले दिन सवेरे ही उसने जो खबर सुनी, उसे सुनकर मामूली राहत का भाव भी काफूर हो गया। अब राहत की जगह एक नए आतक ने ले ली।

सुबह कैवर्त गांव का मेमेरा कुछ जीवित कूढ़ी मछली लेकर उसके घर आया। उसे उम्मीद है कि शालि धान की खेती के लिए इस बार शिवनाथ उसे वंटाई के लिए खेत देगा, इसीलिए जाल फेंककर या जैसे-तैसे मछली पकड़कर शिवनाथ के घर में पहुंचाना वह कभी नहीं भूलता। चूंकि शिवनाथ घर में ही घुसा रहता है, इसीलिए घर में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के साथ वह आग्रह के साथ बातें करता है, और उन्ही बातों के जरिए वह मोहधूलि के लघु जगत की खबर रखता है। मगर उसी शिवनाथ ने कुछ दिनों से लोगों से बातचीत लगभग बंद कर रखी है। वाचाल मेमेरा ने शिवनाथ के मुंह से कुछ सुनने के लिए तरह-तरह की बातें छेड़ीं, मगर उसने अन्यमनस्क भाव से एक-दो बार 'हूं-हां' कहा, और कुछ नहीं बोला। आखिरकार जैसे कुछ याद आया हो, उसी अंदाज में मेमेरा ने शिवनाथ से कहा, "एक बात है न मालिक–कल रात जो घटना घटी, उसके बाद क्या छोटे बाबू को मोहधूलि में रहने देना उचित होगा ? हम ठहरे मूर्ख, हमारे हिसाब से मालिक उनको गुवाहटी या डिब्रूगढ़ कहीं भेजने की व्यवस्था करें। वहां वे कोई बड़ी नौकरी करें या कोई बड़ा कारोबार करें। कुछ भी न करें तो भी वहीं बैठे-बैठे खाते रहें। मालिक हर महीने रुपए भेजते रहेंगे। मालिक को रुपए की क्या कमी है ! फिर भी छोटे बाबू का मोहधूलि में रहना उचित नहीं होगा। यह जगह खराब हो चुकी है, मालिक ! इज्जतदार की इज्जत का ख्याल अब नहीं रखा जाता। जैसा वक्त आ गया है मालिक–कहावत है न–अतामुली तामुली बना, मुंह से बहाया गुड़, अपत्नी पत्नी बनी, दोपहर चढ़ी मुंडेर पर।"

'कल रात जो घटना घटी ! क्या घटना घटी कल रात ?' इसमें शक नहीं,

कि लक्ष्मीनाथ ने कल रात कोई बड़ा कांड किया है। शिवनाथ के मन मे स्वाभाविक रूप में जबर्दस्त जिज्ञासा पैदा हुई। मगर मेमेरा से उसके बारे में पूछे या न पूछे, यह तय न कर पाने के कारण वह देर तक दुविधाग्रस्त और खामोश रहा। इधर मेमेरा तरह-तरह की बातें कहता ही रहा। उसकी एक भी बात शिवनाथ को सुनाई नहीं दे रही। काफी देर बाद उसने काफी भावहीन और उदासीन स्वर में मेमेरा से पूछा, "कल रात क्या घटना घटी थी ?"

शिवनाथ के मुंह से आवाज निकलवाने की खुशी में मेमेरा का चेहरा चमक उठा। अति उत्साह के साथ वह बोला, "क्यों, मालिक नहीं जानते क्या ? कल रात एक मुट्ठी बीड़ी लाने के लिए मैं बाजार गया था। तभी नंदेश्वर की चाय की दुकान पर शोर-शराबा सुनकर और बहुत लोगो के साथ मैं भी वहां जाकर खडा हो गया। जाकर जो कांड देखा—ऐसा कांड जीवन में कभी नहीं देखा था, मालिक ! कई नौजवान वहां ताश खेल रहे थे। झूठ क्या बताऊं मालिक, वास्तव में वे जुआ खेल रहे थे। उनमें अपने छोटे बाबू भी थे। मैं जैसे ही वहां जाकर खडा हुआ, मैंने देखा—चार नौजवान छोटे बाबू को मारने के लिए उनकी तरफ झपट रहे थे, तभी छोटे बाबू ने बिजली-सी फुर्ती के साथ जेब से एक चाकू निकाला और आपके गांव के सहदेव के बेटे भाषीराम पर वार कर दिया। किस्मत अच्छी थी जो चाकू सीने या पीठ में न लगकर बांह में लगा। फिर भी तेजी से खून बहने लगा और भाषीराम वही लुढ़क गया। छोटे बाबू बिजली की फुर्ती के साथ वहां से कूदकर कहीं गायब हो गए। बाद मे लोगों की बातों से पता चला—जुए के खेल में ताश के पत्तों की गडबड़ी को लेकर दो पक्षों मे झगड़ा हो गया था। जो भी हो, छोटे बाबू कल रात भाषीराम को चाकू मारकर किसी तरह भाग गए। लोगों का कहना है कि कनक ठेकेदार ने रातोंरात उन्हें अपनी जीप में बिठाकर कहीं दूर भेज दिया है। इधर भाषीराम के दल ने कल रात आग छूकर शपथ खाई है कि छोटे बाबू से बदला लिए बगैर वे शांत नहीं रहेंगे। अगर जान का डर होगा तो कभी वे मोहधूलि लौटकर नहीं आएंगे, आने पर वे लोग उनके टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। यह बात मैं खुद सुनकर आया हूं ! मालिक, इसीलिए कह रहा हू—आप छोटे बाबू को नौकरी या कारोबार करने के लिए कहीं दूर भेजने की व्यवस्था कीजिए।"

शिवनाथ भावहीन होकर कुछ देर चुप रहा, फिर उसने मेमेरा से पूछा, "मेमेरा, लोगों को कहते सुना है, तुम्हारे गांव के नामघर की बड़ी महिमा है। वहां एक शराई रखकर जो भी मन में संकल्प लेता है, वह संकल्प सिद्ध हो जाता है। क्या यह सच है ?"

शिवनाथ से अपने गांव के नामघर की तारीफ सुनकर मेमेरा खुश हो गया। परम उत्साह के साथ वह कहने लगा, "कैवर्त गांव का नामघर है तो क्या हुआ मालिक, ऐसी महिमा वाला नामघर पूरे जिले में दूसरा नहीं है। हमने अपनी आंखों से देखा

है मालिक, हमारे गांव के महेंद्र के बेटे वेजीया ने अघोना की विधवा की बेटी को बर्बाद कर दिया तब उसने, नामघर में एक शराई देकर कहा कि वेजीया को बीमारी हो जाए। बाद में तो देखा ही मालिक, एक दिन बेजीया मछली पकड़ने गया तभी पैर के तलवे में पानी के नीचे बांस से खरोच लग गई, वह घाव फिर ठीक नहीं हुआ। भयंकर रोग की तरह उसका पैर एक तरफ से सड़ रहा है। बड़ी महिमा है नामघर की, मालिक ! इसीलिए कहता हूं मालिक—छोटे बाबू को ईश्वर सही राह दिखाएं, ऐसी प्रार्थना के साथ मालिक हमारे गांव के नामघर में एक शराई भेंट करें। आप देखते रहेंगे...''

मेमेरा की बात पूरी हो, इससे पहले शिवनाथ ने कहा, ''मेमेरा सुन, मैं तुझे साक्षी रखकर प्रार्थना करता हूं, जिस दिन ईश्वर मेरे इस कुल के कलंक बेटे की जान ले लेगा, उसी दिन मैं तेरे गांव के नामघर में एक शराई भेंट करूंगा और पूरे गांव को भोज दूंगा।''

मेमेरा को अपने कान पर विश्वास नहीं हुआ और वह शिवनाथ के चेहरे की तरफ भौंचक होकर देखता रहा।

3

बरामदे की कुर्सी पर शिवनाथ चुपचाप बैठा था। उसका तन-मन काफी कमजोर हो चुका था। जिस दिन से लक्ष्मीनाथ भाषीराम को चाकू मारकर मोहधूलि से भागा था, उस दिन से उसकी मां खाना-पीना छोड़कर रोती-धोती हुई बिस्तर पकड़ चुकी थी। घर में खाने-पीने का कोई ठिकाना नही है। गहरे अवसाद के कारण शिवनाथ का तन-मन इस कदर टूट चुका है कि वह इन दिनों मन ही मन सिर्फ मृत्यु की कामना करता रहा है। उसके मरने पर घर की क्या हालत होगी, इसके बारे में वह कल्पना कर रहा था। तभी नामघर से ढोल की थाप सुनाई पड़ी। पुरानी आदत होने के नाते शिवनाथ ने यांत्रिक तरीके से हाथ जोड़कर भगवान के नाम का स्मरण किया। मगर अगले ही पल उसने अनुभव किया कि उसकी प्रार्थना में जरा भी विश्वास नहीं है, वह जैसे धीरे-धीरे भगवान के प्रति विश्वास खोता चला जा रहा है।

ठीक उसी पल शिवनाथ ने अपने प्रवेश-द्वार का फाटक खोलने की आवाज सुनी। कोई उसके घर में आ रहा है। वह कौन है, शिवनाथ अंधेरे में पहचान नहीं पाया। मगर उसे अच्छा लगा। अपने मन के अंधेरे में भटकते आदमी की तरह घुटते रहने की अपेक्षा किसी के साथ सुख-दुख की दो बातें करना उसे ज्यादा अच्छा लगेगा। आदमी ने आंगन में आकर पुकारा, ''देउताकन, घर में हैं क्या ?''

शिवनाथ को आज भी बचपन के संबोधन 'देउताकन' कहकर पुकारनेवाला

गांव में सिर्फ एक ही आदमी है। वह है देवेरा बूढ़ा। दो-तीन महीने के अंतराल पर वह अचानक शिवनाथ के पास आकर जी भर कर बातें करके चला जाता है। देवेरा बूढ़ा की आवाज सुनकर शिवनाथ प्रसन्न हुआ। काफी आग्रह के साथ उसने जवाब दिया, "देबेरा भाई हो क्या ? आओ, आओ, बहुत दिनों से तुम्हारा मुंह नहीं देखा।"

"मुंह देखना चाहते हो तो एक दिया लाने के लिए कहो—" रसिकता के साथ बूढ़े ने कहा, "नहीं तो इस घने अंधेरे में तुम मेरा मुंह कैसे देखोगे ?"

देबेरा बूढ़ा शिवनाथ के पास एक कुर्सी पर बैठकर कुछ देर तक हांफता रहा। जब सांसों पर काबू पा सका तब बोला, "बहुत कमजोर हो गया हूं, देउताकन ! जिस रास्ते पर एक तांबूल खाकर खत्म नहीं किया जा सकता, उस रास्ते पर चलकर आने से ही हांफने लगता हूं। अब ईश्वर को हमें जिंदा नहीं रखना चाहिए। घिसट-घिसटकर घूमते रहने की अपेक्षा ईश्वर हमें उठा ले, वही अच्छा होगा। वैसे तुम्हारा हाल-चाल ठीक है न ?"

"हालचाल क्या कहूंगा देबेराकाई, अव यह सब सोचने के दिन नहीं रहे—" शिवनाथ के अनजाने में एक मर्मभेदी लंबी आह निकल पड़ी, "खैर, यह सब बातें छोड़ो। लड़का चिट्ठी भेजता है न ?" देबेरा बूढ़े के 'लड़के' का इतिहास लंबा है। शिवनाथ के मुह से अनजाने में ही अचानक यह सवाल निकल गया। अक्सर लोग देवेरा बूढ़े के सामने उसके बेटे का जिक्र करने से बचते हैं। देबेरा बूढ़े के तीन लड़के हैं, दो लड़कियां है। उसका बडा लड़का बचपन से ही पढ़ाई में काफी तेज था। उस पर देबेरा बूढ़े को काफी गर्व था। प्रवेशिका परीक्षा में विश्वविद्यालय मे दसवां स्थान पाकर उसे छात्रवृत्ति मिल गई। देहाती क्षेत्र मोहधूलि में ऐसी घटना पहले कभी नहीं घटी थी। बेटे की सफलता पर इतराते देवेरा बूढ़े के कदम जमीन पर नहीं पडते थे। रास्ते में, बाजार में, हाट में, जहां भी जिससे मिलता, सबसे देबेरा बूढ़ा अपने बेटे के गुणों की ही बात करता। दूसरो की भलाई नहीं देखने वाले गांव के लोग देबेरा बूढ़े से अपने बेटे की बड़ाई सुनकर खुश होने की जगह ईर्ष्या भाव से भीतर ही भीतर जल-भुन जाते थे।

मगर देबेरा बूढ़े की खुशी अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सकी। जब बूढ़े के बेटे नवीन के कालेज जाने का प्रश्न उठा, तब बूढ़े ने हिसाब लगाकर देखा कि हर महीने खर्च भेजकर बेटे को पढ़ाना तो दूर की बात है, कालेज में दाखिला करवाने की क्षमता भी उसके पास नहीं है। उधर नवीन पिता की असमर्थता को धिक्कारते हुए रो-धोकर पागल होने लगा। नवीन के कालेज में पढ़ने की संभावना खत्म होते देख आस-पास के लोग खुशी से झूम उठे। सरकारी प्रतियोगिता पर आधारित छात्रवृत्ति पाकर भी जब नवीन उच्च शिक्षा की आशा छोड़कर मन ही मन आत्महत्या करने का संकल्प लेकर घर में बैठा था, तभी एक दिन हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक ने देबेरा बूढ़े के पास आकर कहा, "नवीन जैसा लड़का सिर्फ पैसे न होने के कारण

कालेज में न पढ़े—ऐसा हो ही नहीं सकता। उसने मेरे स्कूल का नाम रौशन किया है, उसी के बल पर आज मैं नए यश का अधिकारी बना हूं। इसीलिए उसके प्रति मेरा भी एक कर्तव्य बनता है। आप एक काम करें। किसी तरह कालेज में दाखिला लेने लायक पैसे का इंतजाम कर उसे गुवाहाटी भेज दीजिए। इसके बाद कोई इंतजाम होने तक दो-तीन महीने उसके कालेज का खर्च मैं भेजता रहूंगा। इस बीच उसके खर्च का स्थाई इंतजाम करने के लिए मै हर संभव प्रयास करूगा।''

प्रधानाध्यापक की भलमनसाहत देखकर देबेरा बूढे के मन को नई शक्ति मिली और उसने एक पूरा जमीन में से दो बीघा जमीन बंधक रखकर दो सौ रुपए का इंतजाम किया, वह रकम नवीन को देकर उसे कालेज भेज दिया। इस बीच प्रधानाध्यापक ने अपने एक शहरी दानशील धनी मित्र को नवीन की पढ़ाई का दायित्व लेने के लिए तैयार कर लिया। देबेरा बूढ़े के बेजान चेहरे पर फिर मुस्कान लौट आई। फिर वह राहगीरों को घेरकर बेटे की बड़ाई सुनाने लगा। उसके मुंह से ऐसी बात भी निकलती कि स्वयं प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू नवीन के ज्ञान और प्रतिभा के बारे में सुनकर चकित और मुग्ध हो गए हैं, इसीलिए वे प्रति माह दो सौ रुपए वृत्ति के रूप में दे रहे हैं। जो भी हो, दुश्मनो की छाती पर मूंग दलते हुए नवीन ने यथासमय श्रेष्ठ अंकों के साथ बी. ए. पास किया, और कुछ महीने गांव के स्कूल में अध्यापन करने के बाद साल बीतते न बीतते प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेकर ई. ए. सी. के पद को पाने में सफल रहा।

एक वक्त खाकर एक वक्त निराहार रहने वाले देबेरा बूढे ने विभन्न सुखों की संभावना से युक्त दिवास्वप्नों को देखना शुरू कर दिया। बेटे के प्रताप से एक दिन उसकी टूटी-फूटी झोंपड़ी की जगह पक्का मकान बनेगा, लोग 'यह नवीन हाकिम का घर है न' पूछते हुए उसके पास आकर डरते-डरते नमस्कार करेंगे, बीच-बीच में वह शहर के वकील या हाकिम के घर विवाह की दावत में शामिल होने जाएगा तो राजा की तरह आदर-सत्कार पाएगा, एक दिन उसके घर के सामने एक चमचमाती नई मोटरगाड़ी आकर खड़ी हो जाएगी और उससे राजकन्या की तरह उसकी बहू उतरेगी, उसके इस सौभाग्य को देखकर गांव के लोग ईर्ष्या से जल-भुन जाएंगे—ऐसे दिवास्वप्नों मे देबेरा बूढ़ा एक साल तक खोया रहा। वैसे इस दौरान बीच-बीच में उसे शुष्क यथार्थ का भी सामना करना पड़ता था। राह चलते लोग उससे पूछते, ''ददाईदेव (या ककाईदेव, मोमाइदेव—जो जैसा संबोधन करता), हाकिम ने पैसा-वैसा भेजा है या नहीं ? आपने अभी तक नई कमीज नहीं सिलाई है ? हाकिम के पिता होकर इस तरह फटेहाल घूमना आपको शोभा नहीं देता।''

बूढ़ा तब दिवास्वप्न से जागकर स्मरण करता—सच है, एक साल गुजर गया, बेटे ने रुपए भेजना तो दूर की बात, आज तक पत्र नहीं लिखा। उसका मन किसी अज्ञात आशंका से कांप उठता। मगर ऊपरी तौर पर निर्विकार भाव प्रदर्शित करते

हुए वह लोगों से कहता, "एक बात है न वोपाई, उसे नौकरी करते हुए कितने दिन हुए हैं ? जो रुपए मिल रहे हैं—उससे उसका घर चलाना संभव नहीं हो रहा है। इसके अलावा पढ़ाई के दिनों का काफी कर्ज भी चुकाना है न !"

इतना कहकर बूढ़ा पल भर के लिए ठिठक जाता। मन ही मन शायद वह सोचता—बातें अधिक विश्वसनीय नहीं हो पाई। इसीलिए अनजाने में उसके मुंह से झूठी बात निकल आती है, "फिर भी जब पूछा है तो सुनो बोपाई—मुझे अभी रुपए भेजेगा या कर्ज चुकाकर बाद में रुपए भेजता रहेगा—नवीन ने पत्र लिखकर मुझसे पूछा था। मैंने लिख दिया—अभी रुपए भेजने की कोई जरूरत नहीं है। साग-सब्जी खाकर जिंदगी गुजर गई—अब घी-शक्कर खाने के लिए जल्दबाजी क्यों करूं ?"

देखते-देखते एक साल बीतने के बाद दूसरा साल भी बीतने लगा। नवीन की कोई खबर नहीं मिली थी। घर आना तो दूर की वात थी, पैसा भेजना भी दूर की बात थी, उससे एक पत्र तक पाना देबेरा बूढ़े के नसीब में नहीं था। उसकी एक पूरा जमीन मे से दो बीघा जमीन नवीन के कालेज मे दाखिला करवाने के लिए बंधक में चली गई। मात्र दो बीघा जमीन में खेती कर उसके लिए दो वक्त के भोजन का इंतजाम करना कठिन हो गया। उसे आशा थी कि नवीन को अच्छी नौकरी मिल गई है, इसीलिए अब उसे चिंता करने की जरूरत नहीं है; बंधक में रखा दो बीघा खेत तो छुड़ाएगा ही, साथ ही एक पूरा जमीन खरीदने की व्यवस्था करनी पड़ेगी। मगर जब नवीन को नौकरी करते हुए दो साल हो गए और रुपए की बात तो दूर है—जब उसकी चिट्ठी भी नहीं आई तो देबेरा बूढ़ा मन ही मन परेशान हो उठा। इसके साथ ही उसके सामने कई समस्याए खड़ी हो गई। जीवन भर तकलीफ झेलनेवाले बूढ़े का बेटा हाकिम बना तो उसकी इच्छा ठीक से खाने-पीने की हुई और एक दिन उसने मारवाड़ी महान के गोले पर जाकर कहा, "बाबूजी, आपने सुना नहीं, मेरा बड़ा लड़का हाकिम वन गया है ? फिलहाल वह मुझे हर महीने पचास रुपए भेजेगा। वैसे आज-कल में नहीं, कुछ महीने के वाद, जब वह ठीक से जम जाएगा। मगर मैं इस महीने से आपकी दुकान से उधार लेना शुरू करूंगा। हाकिम जब रुपए भेजेगा तो एक साथ आपको सारा बकाया मिल जाएगा।"

देबेरा बूढ़े का बेटा नवीन ई. ए. सी. हाकिम बना है, यह बात पूरनमल महाजन जानता था। मोहधूलि के लिए यह एक जबर्दस्त खबर थी। इस जगह के और भी दो-चार लोग इससे पहले ऊंचे पदों पर पहुंचे थे, मगर नवीन से पहले मोहधूलि में कोई भी ई. ए. सी. हाकिम नहीं बन पाया था। देबेरा बूढ़ा दुकान पर आता तो पूरनमल महाजन हमेशा उसे एक बीड़ी पीने के लिए देता था, मगर उस दिन कैप्स्टन सिगरेट का नया पैकेट और पान मसाले का पात्र देबेरा की तरफ बढ़ाकर पूरनमल खुशामदी अंदाज में मुस्कराया और बोला, "यह भी कोई कहने की बात है, ककाई ! आपका बेटा हाकिम बना है, यह तो पूरे मोहधूलि के लिए खुशखबरी है। अब तो

आप पहले की तरह नहीं रह पाएंगे। हाकिम बेटे की इज्जत रखते हुए आपको बहुत बातें बदलनी पड़ेंगी। मैं आपसे कहता हूं ककाई, आप आज से यह फटी धोती और फटी कमीज पहनना छोड़ दें। आप आज ही दो जोड़ी नई धोती ले जाइए।''

देबेरा बूढ़े ने पूरनमल महाजन की दुकान से उधार लेना शुरू कर दिया। बच्चों को बेहतर कपड़े बनवाए, खुद भी दो जोड़ी पोशाक खरीदी, इसके अलावा कई महीने तक दुकान से चावल उधार लाकर खाना पड़ा। छह महीने बाद जब 200 रुपए का कर्ज हो गया, एक दिन पूरनमल महाजन ने काफी शालीनता के साथ देबेरा से पूछा, ''काकई, हाकिम ने रुपए नहीं भेजे है क्या ?''

उस दिन देबेरा बूढ़े के उत्तर से पूरनमल पूरी तरह संतुष्ट हो गया। इसके अलावा एक हाकिम के लिए दो सौ रुपए की क्या बिसात है—हाथ का मैल भर है। पूरनमल को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।

एक साल बाद कर्ज लगभग पांच सौ रुपए हो गया। पूरे गांव की एक-एक बात की खबर रखनेवाले पूरनमल को खबर मिल चुकी थी कि नवीन ने अपने बाप को एक कौड़ी तो क्या, एक पत्र तक नहीं भेजा है। डाकघर के डाकिए से पूछकर इस बात की सत्यता की उसने जांच भी कर ली। देबेरा बूढ़े के आशातीत सौभाग्य से जले-भुने गांव के कुछ लोगों ने गांव में कहना शुरू कर दिया था कि नवीन ने शहर में किसी दूसरी जाति की लड़की के साथ विवाह कर अपने बाप से नाता तोड लिया है। यह सब बातें भी पूरनमल सुन चुका था।

एक साल गुजरने के बाद जब कर्ज पांच सौ रुपए से भी अधिक हो गया, तब एक दिन पूरनमल की दुकान पर देबेरा बूढ़ा के जाने पर पूरनमल ने कैप्स्टन सिगरेट पेश करने की जगह एक मुट्ठी बीड़ी उसकी तरफ फेंकते हुए कहा, ''देबेराकाई, काफी रुपए हो गए। नहीं देंगे क्या ? एक साल से हाकिम ने रुपए नहीं भेजे, कब भेजेगा ?''

बहुत लोगों के सामने पूरनमल को ऐसा कहते पाकर देबेरा बूढ़ा लज्जित हुआ। उसने कहा, ''बहुत रुपए हुए, कह रहे हो, कितने रुपए हो गए ? पांच सौ रुपए ? मेरे बेटे का एक महीने का वेतन इससे भी ज्यादा है। चिंता नहीं करना, एक महीने के भीतर रुपए मिल जाएंगे। उसने पत्र लिखा है।''

किसी और बात से क्षुब्ध पूरनमल का दिमाग उस दिन गर्म था—देबेरा की झूठी बात सुनकर उसका गुस्सा तेज हो गया। व्यंग्यात्मक मुद्रा में होठ सिकोड़ते हुए उसने कहा, ''कब पत्र मिला, देबेराकाई ? तुम्हारा लड़का हाकिम है, शायद इसलिए हेलीकाप्टर से तुम्हें पत्र भेजता होगा। हम आर्डिनरी लोगों की तरह डाकघर में नहीं आता। डाकघर के मास्टर बाबू ने मुझे क्या कहा है, जानते हो ? जब से तुम्हारा बेटा हाकिम बना है, एक साल से तुम्हें एक भी पत्र नहीं भेजा है। सच्ची बात को कब तक छिपाओगे, देबेराकाई ? मेरे रुपए जल्दी दे दो।''

सच्ची बात सचमुच अधिक दिनों तक छिपी नहीं रह सकी। दो सालों में बेटे का एक भी पत्र न पाकर और सबकी जुबान से उसके किसी दूसरी जाति की लड़की से विवाह की बात सुनकर बूढ़े ने एक दिन बड़ी मुश्किल से चालीस रुपए का जुगाड़ किया और बेटे से मिलने के लिए रवाना हो गया। बेटे के घर में जाकर उसने देखा, लोगों की बात सच थी। बेटे-बहू ने उसके साथ अच्छा बर्ताव ही किया, मगर देबेरा बूढ़े का हृदय पूरी तरह टूट गया। उसके जीवन की सारी आशाओं-आकांक्षाओं का केंद्र और वंश के गौरव बड़े बेटे ने विवाह के समय उसे सूचना देने की जरूरत भी नहीं समझी। उस बेटे से अब कोई आशा करना व्यर्थ है—यह बात वह अच्छी तरह समझ गया। रात भर जागकर आंसू से तकिया भिगोने के बाद तड़के ही वह अपने घर की तरफ रवाना हो गया।

यह आज से लगभग छह साल पहले की घटना थी। अब मोहधूलि में सभी जानते हैं कि देबेरा बूढ़े के बेटे नवीन ने हाकिम बनने के बाद बाप से नाता तोड़ लिया। बेटा हाकिम है, मगर बाप सत्तर साल की उम्र में भी हल चलाकर जीविका का इतजाम करता है। मोहधूलि में यह सब बातें बच्चा-बच्चा जानता है। मगर देबेरा बूढ़ा का मानना है कि लोग यह सब बातें आज भी नहीं जानते। वह सारी तकलीफों को बर्दाश्त कर सकता है, मगर लोग उसके गर्व और स्नेह के प्रतीक बड़े बेटे को निष्ठुर और नीच समझें—यह बात वह बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसीलिए पिछले छह सालों से वह एक अजीब फिल्म का अभिनय कर रहा है। कोई जब उससे सवाल नहीं पूछता, तो भी खुद ही आगे बढ़कर कहता है, "आज मेरा मन ठीक नही है, समझे। कल बेटे का पत्र आया है। लिखा है, तबीयत ठीक नहीं है।" खुद खाए बगैर बाड़ी के तांबूल ले जाकर बाजार में बेच देता और उस पैसे से मछली खरीदते हुए सबको सुनाकर कहता, "कल लड़के का एक मनीआर्डर आया है। सोचा, उसी की खुशी में आज मछली खाऊं।" इत्यादि। बूढ़े के पीठ फेरते ही सारे लोग उसका मजाक उड़ाते हैं, मगर कोई उसके मुंह के सामने उसके झूठ की कलई नहीं खोलता। बल्कि सभी उसके अभिनय में शामिल हो जाते हैं।

"लड़के का कोई पत्र मिला है ?—" सवाल पूछने के साथ ही शिवनाथ ने दांतों तले जीभ दबा ली। अनजाने में ही उसके मुंह से यह सवाल निकल गया था। अब पता नहीं, देबेरा बूढ़ा से बेसिर-पैर की कितनी झूठी बातें सुननी पड़ेंगी। परंतु शिवनाथ को आहत और विस्मित करते हुए देबेरा बूढ़ा ने एक लंबी आह भरकर कहा, "यह सब पूछकर मन को तकलीफ मत दो देउताकन, खुद अपने गिरेबान में एक बार झांककर क्यों नहीं देखते ? तुमने भी तो बहुत आशा के साथ बड़े बापू को पाला-पोसा था, तुमने जरूर सोचा होगा कि गुणी बेटे के सहारे बुढ़ापे में राजा की तरह पैर पर पैर रखकर गुजारा कर लोगे। पर क्या कर पाए ? बेटा न जाने कहां अकेले राज-पाट भोग रहा है—तुम्हें तो कोई खबर भी नहीं मिलती। इसीलिए

कहता हू, कुत्ते की पूंछ लबी होगी तो वह उस पर खुद ही सोएगा, दूसरे के लिए क्या करेगा ? गांव में क्या सिर्फ तुम्हारी या मेरी ही यह दशा हुई है ? घर-घर का यही हाल है, जिस घर से कोई अच्छा लड़का निकला—बढ़िया नौकरी पकड़कर शहर का ही हो गया। बाप ने खुद न खाकर, जमीन-जायदाद बंधक रखकर लड़के को पढ़ा-लिखाकर बड़ा आदमी बनाया, मगर अब बूढ़े बाप की तरफ देखने की भी फुर्सत बेटे के पास नही है। वे जो कमाते हैं उससे मेमसाहब बनी बीवियों के खर्च ही पूरे नहीं होते, बाप को क्या देगे वे ? मनथिर का बेटा दारोगा बन गया, गेरेला का बेटा मलेरिया इंस्पेक्टर है, कांहीराम का बेटा कचहरी का किरानी है। कहने के लिए जरूर हो गया है—मेरा लड़का ऐसा-वैसा-तैसा हो गया है। मगर उनके घर में जाकर देखोगे, एक वक्त चूल्हा जलता है। एक वक्त चूल्हा ठंडा रहता है। गांव के अच्छे लड़के बड़ी नौकरी पकडकर शहरी वन गए, कम पढ़े-लिखे लड़के बाजार में पान की दुकान खोलकर या दलाली करते हुए शराबी-जुआरी वन चुके हैं और खेती करना छोड़ चुके हैं। सिर्फ अधमरे बूढ़े पेट की भूख मिटाने के लिए बूढ़े बैलों और टूटे हल के पीछे घूम रहे हैं। हमारे मोहधूलि का यही विकास हुआ है। क्या करोगे देउताकन, इसे ही युग धर्म कहते हैं। उस दिन मनथिर के घर गया था। तीन महीने से बीमार होकर बिस्तर पर पड़ा हुआ है। बेटा दारोगा है, मगर डाक्टर को बुलाने के लिए मनथिर के पास पैसे नहीं हैं। मै जब गया तब मनथिर ने रोते-रोते कहा—

चाले नाराखे, बारे नाराखे, नाराखे त्रिदशर देउ।
गुरु-भकते नाराखे माने रखोंता नाई केउ।।*

एक ही सांस में काफी बातें कहने के कारण देबेरा बूढ़ा थक गया था। कुछ देर तक वह चुप रहा। शिवनाथ भी चुप था। देबेरा बूढ़े ने उसके पुराने जख्म को कुरेद दिया था, जिसकी यंत्रणा के कारण कुछ देर तक बोल पाने में वह असमर्थ हो गया था। इस बीच बाजार से रेडियो के गीत और शराबियों का शोरगुल सुनाई देने लगा था। शिवनाथ के मन में इत्मीनान का भाव था कि आज भी उन शराबियों के बीच लक्ष्मीनाथ नहीं है, किसी भी पल रौद्र मूर्ति बनकर कठोर वाक्य बाणों से उसे क्षत-विक्षत करने की आशंका नहीं है।

मगर जिस पल उसने यह बात सोची, उसी पल सड़क से लक्ष्मीनाथ की विकट और भयंकर चीख सुनाई पड़ी, "देखता हूं, कौन माई का लाल आज मुझे पुलिस के हवाले करेगा ! मैं तो पहले से ही पापी हूं, आज मैं पितृ-वध का पाप करूंगा। कौन कहां है ? आ जा, आज शिवनाथ बूढ़े को मुझसे बचाकर देख ले।" फाटक का एक तख्ता तेज आवाज के साथ तोड़कर उसने फेंक दिया और घर की तरफ बढ़ा।

---

* कोई भी सहारा नहीं होता, अपने भी बेगाने होते है, तीनों दिशाओं के देवता भी सहारा नहीं बनते। अगर गुरु-भक्त का सहारा न बने तो बचाने वाला कोई नहीं होता।

शिवनाथ ने महसूस किया—जैसे उसका बेटा न हो, एक निर्दय जल्लाद निष्ठुर संकल्प के साथ उसकी तरफ बढ़ रहा हो। लक्ष्मीनाथ की चीख सुनकर जैसे उसके दिल की धड़कन कुछ पल के लिए थम गई। माथे पर पसीना छलछला आया, ऐसा उसने अनुभव किया। कुछ घंटे तक उसके घर में जो नारकीय दृश्य उत्पन्न होगा—उसकी कल्पना करते ही अवर्णनीय भय के कारण उसका सारा शरीर बेजान हो गया। सूखे होंटों पर जीभ फेरते हुए उसने किसी तहर देबेरा बूढ़े से कहा, ''देबेराकाई, तुम घर जाओ। यह पागल अभी जो कांड करेगा, तुम सहन नहीं कर पाओगे।''

लक्ष्मीनाथ की चीख सुनकर इस बीच शिवनाथ की पत्नी-बेटी बाहर निकलकर दरवाजे के सामने खडी हो गई थीं। आस-पास के घरों के लोग भी उसके आंगन में इकट्ठे हो गए थे।

लक्ष्मीनाथ आंगन में खड़ा होकर कुछ पल नाटकीय रूप से खामोश रहा। शराब के नशे में उसका शरीर हिल रहा था। कमरे से आती लालटेन की क्षीण रोशनी मे दिखाई पड़ा—उसके शरीर के कपड़े फटे हुए थे और वह पूरी तरह कीचड़ में सराबोर था। देखने से ही कहा जा सकता था कि अभी-अभी किसी से हाथापाई करके आया है। परदा हवा में हिल रहा था, जिससे लालटेन की रोशनी एक बार लक्ष्मीनाथ के चेहरे पर पड़ती थी, एक बार उसका चेहरा अंधेरे में छिप जाता था। रोशनी में दिखाई देता था—सांप की तरह स्थिर निर्मम दृष्टि से वह शिवनाथ की तरफ देख रहा था। वह महसूस कर रहा था कि उसके आने से सारे लोग डरकर गूंगे हो गए हैं। उस दृश्य का उसने कुछ देर तक चुपचाप मजा लिया। उसके बाद अचानक हिंसापूर्ण कठोर स्वर में वह गरज उठा, ''देउता, तुमने मेरे पीछे पुलिस क्यों भेजी थी ?''

उसका झूठा आरोप सुनकर शिवनाथ को कोई आश्चर्य नहीं हुआ। लंबे अनुभव से वह जानता था कि जब वह शिवनाथ से लड़ाई करने आता है, हमेशा कोई झूठा आरोप लगाकर वह लड़ाई की शुरुआत करता है। किसी भी बहाने शिवनाथ को लड़ाई के लिए उकसाना ही उसका असली मकसद होता है, वैसा न कर पाने पर उसे चैन नहीं मिलता। शिवनाथ यह बात अच्छी तरह जानता है, इसीलिए फौरन बेटे की किसी भी बात का जवाब नहीं देता।

''अब चुप क्यों हो ?'' हिंसक मूर्ति बनकर लक्ष्मीनाथ एक कदम आगे बढ़ा, ''तुम हमेशा चुप रहकर ही सोचते हो कि जंग जीत जाओगे ? आज मै सारा हिसाब-किताब ठीक करके ही छोड़ूंगा। सुनो, तुमने तीन बेटों को पैदा किया। उनमें से दो को पढ़ा-लिखाकर बड़ा आदमी बनाया, सिर्फ मुझे अनपढ़ हलवाहा बनाकर रखा।...''

तभी देबेरा बूढ़े ने कहा, ''तू यह सब कया कह रहे हो, कन बापू ? तेरे पिता ने तेरे बड़े भाइयों के लिए जितना खर्च किया, उतना ही तुझ पर भी खर्च किया।

मगर तू गधा होने की वजह से या पढ़ाई-लिखाई में ध्यान नहीं होने की वजह से ज्यादा पढ़ नहीं पाया, इसके लिए तेरे पिता का क्या दोष हो सकता है ? फूटी गगरी में चाहे जितना पानी डालो, क्या उसमे पानी ठहर सकता है ?''

''इस टटपुंजिए भिखमंगे बूढ़े को यहां किसने बुलाया है ?'' लक्ष्मीनाथ देबेरा बूढ़े की तरफ देखकर गुर्राया, ''लोगों के घरों के अंदरूनी मामले मे दखल देने की जरूरत नहीं है। मैं बड़ा-छोटा-गुरु-गोसाई कुछ नहीं मानता। ज्यादा बक-बक करोगे तो नतीजा अच्छा नहीं होगा।''

''यह भी कहने की जरूरत है, बोपाई ?'' देबेरा बूढ़े ने लक्ष्मीनाथ की धमकी से जरा भी डरे बगैर कहा, ''जो बेटा अपने बाप पर हाथ उठा सकता है वह हमें क्यों छोड़ देगा ? हे भगवान ! देखते-देखते क्या वक्त आ गया ! यह कितने साल पहले की बात है, जब रामेश्वर ने एक बार अपने बाप से झगड़ा करते हुए गुस्से में बाप को मारने के लिए खदेड़ा था, उसी अपराध में गांव के समाज ने उसका बहिष्कार कर दिया। बाद में दंड देकर नामघर मे एक शरई भेंट करने के बाद ही लोगों ने उसे माफ किया। आजकल लडके बात-बात पर मां-बाप को मारने के लिए दौड़ते हैं, एक-दो ने तो दारू पीकर अपने बाप को पीटा भी है, फिर भी आज का समाज कुछ कर पा रहा है ? ऐसा बदल गया है वक्त। ब्रह्मपुत्र की बाढ भी रेत से बने बांध को इस तरह नही तोड़ती जिस तरह नए युग के विकास की लहर ने समाज की नींव तोड़ डाली है। मगर वोपाई, दारू के नशे में या जवानी के जोश में इतनी उद्दंडता ठीक नहीं। बूढ़ो की कही बात याद रखना—

अंत करिबा हरक-तरक त'त करिबा कि ?
रांड़ेकर बातरि तिलेके योगाब, यतना भुंजाब नि।।*

लक्ष्मीनाथ अब तक असीम धैर्य के साथ देबेरा बूढ़े की बात सुनता रहा। उसकी बात पूरी हुई कि बाघ की तरह गरज उठा, जिससे वहां मौजूद सारे लोग डर गए।

''चुप रह, बूढ़े !'' वह चीख उठा, ''मेरे सामने यह सब लेक्चर देने की जरूरत नहीं, अपने बड़े बेटे को देना लेक्चर। तेरे ऐसे वाहियात स्वभाव के कारण ही बेटे ने तुझे छोड़ दिया है। फिर भी तुझे शर्म नहीं आती।...देउता, सुनो—तुम्हारे साथ बकवास करने के लिए मेरे पास वक्त नही है। आज मैं अपनी संपत्ति का हिस्सा लेने के लिए आया हूं। वह मुझे देकर जल्दी विदा करो। जमीन का हिस्सा बाद में लूंगा। आज मुझे रुपए और गहने में बराबर का हिस्सा देना पड़ेगा।''

देबेरा बूढ़ा उम्र में शिवनाथ से भी पांच साल अधिक बड़ा था। वैसे बुजुर्ग

---

* यहां भले ही इतरा लो, वहां क्या करोगे ? एक-एक चीज की खबर रखी जाएगी और नरक की यंत्रणा दी जाएगी।

को जब लक्ष्मीनाथ ने बुरी तरह जली-कटी सुनाई तो रंभा गुस्से से सुलग उठी। मौका मिलते ही वह बोली, "संपत्ति के हिस्से के नाम पर पांच-छह सालों से तू एक-एक चीज छीनकर ले जाता रहा है, उन चीजों का तूने क्या किया, हम नहीं जानते क्या ? सब कुछ दारू और जुए में झोक चुका है। अब संपत्ति के नाम पर घर के जो खूंटे बचे हैं, वह भी ले जा—और दो दिन दारू का इंतजाम करके बाद में कुत्ते की तरह घर-घर जूठन चाटता फिर। बेशरम पापी कही का ! अंधा भगवान इसे उठा क्यों नहीं लेता ?"

"क्या बोली तू, कानी भूतनी ?" लक्ष्मीनाथ ने कड़ी दृष्टि से रंभा को देखते हुए चीखकर कहा, "अंधा भगवान किसे उठाएगा ? मुझे या तुझे ? घर पर बोझ तू बनी हुई है, अब मुझसे ऐसी बात कहते हुए तुझे शर्म नहीं आती ? तेरी किस्मत अच्छी थी जो कनक ठेकेदार ने अपनी मर्जी से तेरे साथ विवाह करने की बात चलाई थी। मेरी बहन समझकर वह तुझसे विवाह करने के लिए तैयार हुआ था। मगर बाप का माथा खराब हो गया, तेरा विवाह कनक से नहीं होने दिया। ऐसा लगता है, तेरा विवाह नकुल से करवाकर उसे घर-जमाई बनाकर रखेगा..."

"क्या कहा तूने, पाखंडी ?" शिवनाथ अचानक कुर्सी से झपटकर खड़ा हो गया, "बहुत दिनों से मैं तेरी बहुत असहनीय बातें सहन करता रहा हूं। मगर आज तूने सारी सीमाएं तोड़ दी हैं। सुन, आज से तू मेरा त्याज्य पुत्र है। आज के बाद तू मेरे घर में कदम नहीं रखेगा। तू अभी मेरी नजरों से दूर हो जा।" शिवनाथ लक्ष्मीनाथ की तरफ तेजी से बढा।

देखते-देखते घटना ऐसा मोड़ ले लेगी, किसी ने सोचा नहीं था। देबेरा बूढ़े ने लड़खड़ाते हुए आगे बढ़कर शिवनाथ को पकड़ लिया, "देउताकन, मैं तुम्हें गोसाई की शपथ देता हूं, थोड़ा धीरज रखो। यह पाखंडी अपने होश में कुछ नहीं कह रहा है। दारू के नशे में क्या कह रहा है, यह खुद भी नही जानता।...ए कन बापू, ए महापापी, तू अभी इस घर से चला जा। तेरे मुंह से ऐसी बात निकलने के बाद तुझे इस घर मे रहने या देउताकन को देउता कहने का कोई अधिकार नहीं है।"

"मैं जरूर चला जाऊंगा। चला जाऊंगा, इसीलिए तो मैं हिसाब-किताब बराबर करने के लिए आया हूं।"—लक्ष्मीनाथ क्रुद्ध होकर कहा, "मगर उससे पहले मुझे संपत्ति का हिस्सा देना पड़ेगा। अभी मेरी संपत्ति का हिस्सा दे दो। नहीं तो आज मैं घर में आग लगा दूंगा।"

"तू तो मेरा त्याज्य पुत्र है, फिर संपत्ति का हिस्सा क्यों चाहिए ?" शिवनाथ देबेरा बूढ़े को धकेलकर बेटे की तरफ बढ़ा और उसके गाल पर थप्पड़ मारकर "तू निकल जा, अभी निकल जा"—कहकर धक्का देने लगा। लक्ष्मीनाथ भी "मैं संपत्ति का हिस्सा लिए बगैर खाली हाथ जाने वाला नहीं" कहते हुए चीख-चीखकर अनर्गल बातें बकते हुए पिता के साथ हाथापाई करने लगा। बाप-बेटे को हाथापाई करते

देख शिवनाथ की पत्नी और बेटी सिर पटक-पटककर रोने लगीं। अब तक आंगन में खड़े होकर नाटक देख रहे लोग भी इस दृश्य को देखकर चुपचाप खड़े नहीं रह सके। दो युवकों ने आगे बढ़कर बाप-बेटे को अलग करने की कोशिश की। इसी दौरान किसी से धक्का लगने पर 'उफ मर गया' कहकर शिवनाथ जमीन पर गिर पड़ा। शिवनाथ की पत्नी और बेटी ने समझा कि लक्ष्मीनाथ ने ही पिता को मारकर जमीन पर ढेर कर दिया है। शिवनाथ का इस तरह धराशायी होकर गिरने का मार्मिक दृश्य उन्होने पहले कभी देखा तो क्या, कभी इसके बारे में कल्पना भी नहीं की थी। यह दृश्य उनके लिए एक भयंकर प्रतीक अर्थ की तरह था। उन्होंने महसूस किया कि आज उनके अस्तित्व का मुख्य खूंटा ही दुर्भाग्य के वज्राघात से टूट गया है। समाज में चिरकाल से ऊंचा रहने वाला उनका सिर आज धूल में सराबोर हो गया। आज के बाद इस घर का स्वरूप कभी पहले जैसा नहीं रहेगा। भीषण हताशा से टूटे हुए मनुष्य की तरह वे भी जमीन पर सिर पटक-पटककर जोर-जोर से रोने लगीं।

दो युवकों ने शिवनाथ को जमीन से उठाकर कुर्सी पर बिठा दिया। और दो युवक लक्ष्मीनाथ को पकड़कर खींचते हुए बाहर की तरफ ले गए। जाते हुए वह चीखता गया, "तू सब मुझसे बच गया, मत सोचना। कल सुबह मैं फिर आऊंगा।"

शिवनाथ की पत्नी और बेटी की रुलाई जब बंद हो गई तब उस घर में मरघट का भयंकर सन्नाटा फैल गया।

4

शिवनाथ का घर सचमुच मरघट जैसा ही हो गया था। बहुत सारी आशाओं, सपनों का मरघट। बड़े बेटे गौरीनाथ ने पिता की इच्छा के विरुद्ध 'नीच कुल' की लड़की से विवाह कर घर से पूरी तरह नाता तोड़ लिया। पिछले पांच सालों से इस घर से उसका कोई संबंध नहीं है। बड़ी बेटी रंभा दुर्भाग्य का अभिशाप सिर पर लिए बिन ब्याही ही रह गई। आतंक का कारण बना हुआ है छोटा बेटा लक्ष्मीनाथ। भयंकर कैंसर की तरह वह घर को तिल-तिलकर खत्म कर रहा है। शिवनाथ के जीवन का मुख्य आधार या संजीवनी शक्ति थी उसकी सामाजिक मर्यादा। देखते-देखते वह भी टूट-फूटकर धूल में मिलती जा रही है। जीवन की संध्या-बेला में पहुंचकर शिवनाथ ने अत्यंत करुण भाव के साथ महसूस किया कि आज वह पूरी तरह रिक्त है, शून्य है। उसके पास उपलब्धि के नाम पर सिर्फ शून्य ही है।

चारों तरफ घने अंधेरे के बीच अभी भी रोशनी की एक पतली रेखा झिलमिला रही थी। वह था शिवनाथ का मंझला बेटा कालिनाथ। वह अभी विश्वविद्यालय में एम. ए. की पढ़ाई कर रहा था। मगर बार-बार किस्मत की मार खाने वाले शिवनाथ

के मन में ऐसा डर समा गया था कि कालिनाथ पर भरोसा रखने का साहस भी उसके भीतर नही बचा था। अभी भी वह पढ़ ही रहा है। पढ़ाई पूरी कर लेने के बाद वह कैसा रूप धारण करेगा, कौन जानता है ? इसके अलावा, शिवनाथ अपने तीन बेटों में कालिनाथ की प्रकृति से आज तक ठीक से परिचित नहीं हो सका था। बचपन से ही वह काफी चुप रहने वाला लड़का था। लोगों के साथ ज्यादा बात करना या घनिष्ठता करना उसे पसंद नहीं था। औरो की संगत से बचकर वह खुद में खोया रहता था। हमेशा एक उदासी की छाया उसके चेहरे पर रहती थी। पढ़ाई-लिखाई में भी वह अधिक तेज नहीं था। किसी भी तरह एक कक्षा से दूसरी कक्षा में पहुंचना उसके छात्र जीवन की उपलब्धि थी। वैसे उसमें एक प्रशंसनीय गुण था कि अपनी तरफ से कोशिश करने में कोई कसर नहीं रखता था, प्रतिभा की कमी को वह मेहनत और अध्यवसाय से पूरी करने का प्रयास करता था। मगर फिर भी वह कभी भी शिवनाथ के मन में कोई आशा जगा नहीं पाया था। प्रतिभा की दीप्ति से उज्ज्वल गौरीनाथ या सेहतमंद एवं वाचाल लक्ष्मीनाथ की तुलना में वह निष्प्रभ और नगण्य था। इसके अलावा उसके चुप रहने, उदास और एकाकी रहने का स्वभाव देखकर शिवनाथ को उसके मानसिक स्वास्थ्य पर संदेह होता था। अभी भी वह संदेह उसके मन से पूरी तरह दूर नहीं हो पाया है, फिर भी गौरीनाथ और लक्ष्मीनाथ ने जिस तरह उसे भयंकर मानसिक ठेस पुहंचाई थी उनकी तुलना में खामोश और उदास स्वभाव का कालिनाथ अधिक सांत्वना का उत्स है—आजकल वह ऐसा सोचने लगा है। अब वह एम. ए. पास कर कहीं काम करना शुरू कर दे तो शिवनाथ को चैन आ जाएगा, क्योंकि उसके भविष्य के साथ रंभा का भी भविष्य जुड़ा हुआ है। मां-बाप के न रहने पर उसे एक आश्रय या सहारे की जरूरत पड़ेगी। इस मामले में शिवनाथ को सिर्फ कालिनाथ पर ही भरोसा रह गया है। वैसे इसके बाद भी शिवनाथ का एक काम बचा रहेगा। वह है सावित्री का विवाह। दुर्भाग्य की निरंतर चोट के कारण शिवनाथ का मनोबल टूट चुका है, फिर भी सावित्री के विवाह के संबंध में वह पूरी तरह निराश नहीं हुआ है। देखने में वह बहुत सुंदर भी है। ऐसी लड़की का समय पर योग्य पात्र के साथ विवाह न हो पाए, तो मानना पड़ेगा कि शिवनाथ का जीवन एक अंतहीन अभिशाप का पर्याय है, जिस अभिशाप से उसके बच्चे भी मुक्त नहीं हैं।

स्वयं को ढाढस बंधाने के लिए शिवनाथ आजकल अक्सर कालिनाथ के बारे में सोचता है। उसका खामोश उदास चेहरा एक नया अर्थ लेकर उसकी आंखों के सामने कौंध जाता है। संभवतः घर पर एक के बाद एक आने वाली मुसीबतों के कारण उसका संवेदनशील मन इस तरह टूट गया कि हमेशा के लिए उसके मन की प्रफुल्लता गायब हो गई। या फिर माता-पिता के प्रति मूक सहानुभूति उसकी उदासी का मुख्य कारण हो। बचपन में शिवनाथ गौरीनाथ को ज्यादा स्नेह देता था।

उसकी तुलना में कालिनाथ की उपेक्षा ही करता था। वह सब बातें याद कर उसका मन वेदना और ममत्व से भीग गया। अब कालिनाथ से ही आशा है। उसने तय किया कि इस बार छुट्टी में जब कालिनाथ घर आएगा तो अपना सारा स्नेह उस पर उड़ेल देगा, इतने दिनों तक की गई उपेक्षा की क्षतिपूर्ति करने की कोशिश करेगा।

लक्ष्मीनाथ के साथ शिवनाथ की हाथापाई की घटना के एक महीने बाद अचानक कालिनाथ घर आया। माघ का महीना था। विश्वविद्यालय की छुट्टी होने में कई महीने बचे हुए थे। अचानक कालिनाथ के आगमन से शिवनाथ को आश्चर्य हुआ। जब वह हाथ-मुंह धोकर चाय-नाश्ता कर चुका, तब शिवनाथ ने उससे पूछा, "तेरा कालेज बंद हो गया क्या ?"

"नहीं।" कालिनाथ ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

"तो फिर तू घर क्यो आया है ?" शिवनाथ ने चिंतित होकर पूछा।

"आने का जी चाहा।"

शिवनाथ कुछ देर तक चिंतित होकर चुप रहा। फिर सहज स्वाभाविक स्वर में पूछा, "फिर कब जाओगे ?"

"लौटकर जाने के लिए नहीं आया। हमेशा के लिए आ गया हूं।" इतना कहकर पिता को और कोई प्रश्न पूछने का मौका दिए वगैर कालिनाथ बाहर चला गया। एक आकस्मिक आघात से शिवनाथ काफी देर तक जड़ बना रहा। यह कैसी नई घटना घट गई ! जिस कालिनाथ को वह अंतिम भरोसा मान रहा था, क्या वह भी उसकी आशा पर कुल्हाड़ी मार देगा ? उसे लगा, जैसे सिर चकरा रहा हो। उसे आशा थी कि कालिनाथ जब एम. ए. पास कर लौटेगा तो उसे पास के शहर के कालेज में अध्यापक की नौकरी दिला देगा। कालेज का प्राचार्य उसका दूर का रिश्तेदार है। शांत-शिष्ट कालिनाथ भी एकमात्र अध्यापन कार्य के लिए उपयुक्त होता। मगर वह पढाई अधूरी छोड़कर आया है तो न घर का रहेगा न घाट का, तो फिर उसका क्या होगा ? शिवनाथ के सीने से एक लंबी आह निकल पड़ी। अब तक उसे जिस बात का डर था, वही हुआ। यह जरूर कालिनाथ के पागल होने का पूर्व-संकेत है। कोई पागल हुए बगैर यूं ही पढ़ाई छोड़कर इस तरह आ सकता है क्या ? शिवनाथ ने शून्य दृष्टि से सामने की तरफ देखा। चारों तरफ गहरा अंधेरा था। बहुत दूर क्षितिज के सामने प्रकाश की एक किरण इतने दिनों से झिलमिला रही थी, वह भी आंधी के थपेड़ों से बुझ गई। उसने अपनी आंखें बंद कर लीं, आंसू की बूंद गालो पर टपक पड़ी।

काफी देर बाद उसने रंभा को पुकारा। रंभा जब पास आकर खड़ी हुई तो उसने पूछा, "भाई पढ़ाई छोड़कर क्यों आया है—तुम लोगों से कुछ बताया भी है ?" रंभा परेशान हो उठी। कालिनाथ अचानक इस तरह घर लौट आया, इसके बारे में घर में सिर्फ वही जानती है। लक्ष्मीनाथ के साथ हाथापाई के दौरान जब उसने पिता

को गिरते देखा तो उसके दिल को जबर्दस्त ठेस पहुंची। और कोई चारा न देखकर अगले दिन उसने किसी से कुछ कहे बगैर कालिनाथ को एक लंबा पत्र लिखा। पत्र मे उसने सिर्फ अपने परिवार का हाल ही नहीं लिखा, बल्कि पूरा मोहधूलि क्षेत्र किस तरह धीरे-धीरे तबाही की तरफ बढ़ रहा है—यह सब बातें भी विस्तार के साथ लिखीं। उसने यह भी लिखा कि लक्ष्मीनाथ जिस तरह लगातार अत्याचार कर रहा है, वह अगर ज्यादा दिनों तक जारी रहा तो माता-पिता अधिक दिन नहीं बचेंगे। उन्होंने वैसे भी खाना-पीना लगभग छोड़ दिया है। उनके यत्रणाकातर चेहरे देखकर ही समझा जा सकता है कि जीवन की सारी आशाएं खोकर वे अब व्याकुलता के साथ सिर्फ मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में उनको सहारा देने के लिए कालिनाथ को कुछ करना चाहिए। अपने मन के आवेगों को रोक न पाने के कारण रंभा बहुत कुछ लिखती चली गई, जिसके कारण पत्र में उसके घर और मोहधूलि का भयंकर चित्रण हुआ। वैसे पत्र लिखते समय उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसे पढ़ते ही कालिनाथ पढ़ाई बंदकर घर लौटने का फैसला कर लेगा। कालिनाथ के घर आते ही उसे अकेले देखकर रंभा ने फुसफुसाकर पूछा, "तू बेवक्त घर क्यों आया है ?"

"क्यों ? तूने ही तो बुलाया था !"

"मैने ? बुलाया था ?"—हैरान होकर रंभा ने पूछा, "मैंने तुझे घर का हाल बताया था। पिता की हालत देखकर इस तरह टूट गई थी कि किसी से सारी बातें बताए बगैर मन को चैन नहीं मिलने वाला था। मगर इसीलिए तुझे पढ़ाई-लिखाई छोड़कर घर लौटने के लिए तो गलती से भी नहीं कहा था।"

"ठीक है, तूने नहीं कहा था। मैं खुद ही आ गया।"

"मगर घर में रहकर तू क्या करेगा ? पढ़ाई बंदकर घर में बैठा रहेगा तो पिताजी को सुख के बदले दुख ही ज्यादा देगा।"

"तुझे किसने कहा, मैं घर में बैठकर खाऊंगा ? मैं क्या करूंगा, तू देखती रह। कल सुबह से ही मैं अपना काम शुरू करूंगा। जिन लोगों ने अवैध दारू के अड्डे खोलकर मोहधूलि को नरककुंड बना डाला है और जो नई पीढ़ी को बर्बाद कर रहे हैं—उन लोगों को इस बार मैं अच्छी सीख दूंगा। मोहधूलि के कंधे पर जो भूत बैठा हुआ है, उसे मोहधूलि से खदेड़कर ही दम लूंगा।"

कालिनाथ की बातें सुनकर रंभा आनंदित हो उठी। चारों तरफ हताशा और विषाद के अंधेरे से घिरे उसके अभिशप्त घर में कुछ अच्छा भी घट सकता है, रंभा के मन में यह आशा खत्म हो चुकी थी। उसकी धारणा बन चुकी थी कि भयंकर तबाही की खामोशी और बेबसी के साथ प्रतीक्षा करना ही उनकी किस्मत में लिखा हुआ है, उसमें कोई बदलाव होने की आशा नहीं है। मगर कालिनाथ की दृढ़ आवाज जैसे उस अंधकार में डूबे घर में आशा की रोशनी ले आई, रंभा ने अपने बेजान शरीर में फिर से प्राण संचारित होते हुए महसूस किया। आवेग-विह्वल दृष्टि से वह

भाई के चेहरे को देखती रही। इस बीच अंधेरा गहरा हो गया था। इसीलिए वह उसका चेहरा नहीं देख पाई। मगर अंधेरे में ही उसने महसूस किया कि कालिनाथ का चेहरा किसी भीषण प्रतिज्ञा के कारण वज्र की तरह सख्त हो गया है। वह भाई के कंधे पर एक हाथ रखकर कुछ देर खामोश खडी रही, आवेगवश उसकी आंखे छलछला उठीं।

कालिनाथ जाने लगा, तब रंभा ने फिर उससे पूछा, "तेरी पढ़ाई सिर्फ एक साल बाद पूरी हो जाती। पढ़ाई पूरी करके भी तो तू यह काम कर सकता था ?"

कालिनाथ दरवाजे के पास ठिठक गया। शायद गुस्से से कोई बात वह कहना चाहता था। मगर गुस्से पर काबू पाकर शांत स्वर में वह बोला, "पढ़ाई-लिखाई करने से कोई फायदा नहीं, समझी ? अगर सिर्फ नौकरी के लिए पढ़ना चाहो तो पढाई का कोई अर्थ नही, क्योकि हजारों लड़के बी. ए., एम. ए. पास कर नौकरी नहीं मिलने के कारण भटक रहे हैं और निराश होकर दिन गुजार रहे हैं। अगर माना जाए कि ज्ञान-प्राप्ति के लिए एम. ए. की पढ़ाई जरूरी है तो इससे बड़ी गलत धारणा दूसरी नहीं हो सकती। हमारे विश्वविद्यालयों में सब कुछ है, मगर ज्ञान-प्राप्ति का परिवेश नहीं है। तू जानती है, मैं पढाई में अच्छा छात्र नहीं रहा हूं, यानी परीक्षा में मुझे अच्छे नंबर नहीं मिलते। मगर कुछ बातें जानने या समझने के लिए मेरे भीतर भी जिज्ञासा रही है। मगर हमारे विश्वविद्यालयों में छात्रों की जिज्ञासा शांत करना तो दूर की बात है—अधिकतर शिक्षक स्वयं भी कुछ जानने या समझने में रुचि नही रखते। वैसे इसके लिए छात्र भी दोषी हो सकते हैं, क्योंकि छात्र अगर न चाहें तो शिक्षक भी अधिक मेहनत करने की जरूरत महसूस नहीं करते। हमारे देश में अधिकांश विद्यार्थी विश्वविद्यालय में ज्ञान-प्राप्ति के लिए नहीं जाते, जाते हैं अपने बाप के पैसे पर दो सालों तक गुलछर्रे उड़ाने के लिए। खैर, अब उनकी बातें छोड। यही समझ, मुझे अच्छा नहीं लगा। मैं हमेशा सोचता था कि एम. ए. पास करने के बाद भी बाहर कहीं नौकरी करने नहीं जाऊंगा, घर में रहकर खेती करूगा। गाव के स्कूल में मास्टरी करूंगा और बुढ़ापे में पिताजी की थोड़ी मदद कर दूंगा। यह सब करने के लिए एम. ए. पास करना जरूरी नहीं है। मगर मैं काफी दिनों से दुविधा में था। तेरे पत्र ने मेरी काफी मदद की, दीदी ! गांव में मेरा काम क्या है, अब मैं समझ चुका हूं।"

पिता का सवाल सुनकर रंभा कुछ देर चिंतित होकर खड़ी रही। सारी बातें पिताजी से कह देना उचित होगा या नहीं, कुछ देर वह मन ही मन सोचती रही। आखिरकार कुछ बातें छिपाकर रखने का फैसला कर वह बोली, "आप मंझले बापू की कोई चिंता न करें, पिताजी ! वह जो कर रहा है—घर के सभी लोगों की भलाई के बारे में सोचकर कर रहा है। भैया घर से वैसे ही निकल गए, छोटे बापू का रवैया तो आप देख ही चुके हैं। अब बुढ़ापे में क्या आपको एक सारथी की जरूरत नहीं

है ? मंझला बापू एम. ए. पास कर नौकरी करने कहीं बाहर चला जाता, तो आपको उससे क्या सुख मिलता ? आजकल नौकरी से जो पैसा मिलता है, उससे उसे क्या सुख मिलेगा ? वास्तव में वह आपके बारे में सोचकर ही पढ़ाई छोड़कर लौट आया है। शायद वह सोचता है कि वह घर पर रहेगा तो आपको सहारा मिल सकेगा। आजकल कौन लड़का माता-पिता के बारे में इतना सोचता है ? बड़े बेटे से ही इस बात का प्रमाण नहीं मिला क्या ? गांव के नवीन भैया ने इतना पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बनकर पिता का क्या उपकार किया ? बेटा हाकिम बना—फिर भी वे बुढ़ापे में हल जोतकर गुजारा कर रहे हैं। मंझले बापू ने आपके बारे में इतना सोचा है—इसे परम सौभाग्य मानना चाहिए।''

शिवनाथ कुछ और पूछता, इससे पहले रंभा भीतर चली गई। शिवनाथ स्तब्ध होकर बैठा रहा। कुछ देर तक उसके मन में अच्छी या बुरी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह सिर्फ एक बात अच्छी तरह समझ गया कि कालिनाथ गुवाहाटी लौटकर जाने के लिए घर नहीं आया है। वह हमेशा के लिए पढ़ाई छोड़कर आ गया है।

रंभा की बातें वह एक-एक कर याद करने लगा। धीरे-धीरे उसके मन में मिश्रित प्रतिक्रिया हुई। और सिर्फ एक साल ठहरकर एम. ए. की परीक्षा दिए बगैर कालिनाथ घर आ गया। इस बात से उसे काफी दुख हुआ। एम. ए. पासकर कालिनाथ घर के पास शहर में कालेज अध्यापक बनकर एक शांत और सम्मानित जीवनयापन करे—यही उसके जीवन की अंतिम बड़ी आशा थी। धीरे-धीरे मोहधूलि जिस तरह नरककुंड बनता जा रहा है और उसके साथ ही उसके घर की मर्यादा भी जिस तरह नष्ट होती जा रही है—वैसी स्थिति में मन कभी नहीं चाहेगा कि इसी नरककुंड में कालिनाथ पूरी जिंदगी गुजार दे। मगर आशा-भंग की इस यंत्रणा के बीच भी उसने एक गुप्त तृप्ति और सांत्वना का कारण पा लिया।

कालिनाथ अपने भविष्य की परवाह किए बगैर पढ़ाई छोड़कर घर लौटा है, (रंभा का कहना अगर सच है) उसका एकमात्र कारण है—वह बुढ़ापे में पिता की कुछ मदद करना चाहता है, उसके जीर्ण-शीर्ण घर की मरम्मत कर बचाना चाहता है। उसके इस आत्म-त्याग के जरिए पिता के प्रति जो ममत्व उजागर हुआ है, उसी से शिवनाथ अभिभूत हो उठा। गौरीनाथ और लक्ष्मीनाथ की चरम निष्ठुरता ने उसके जीवन को मरुभूमि के सीने में बारिश दे दी है, इसके साथ ही शिवनाथ की आखों से आनंद और कृतज्ञता के आंसू बहने लगे।

''हे प्रभु, हे करुणामय भगवान, तुम मेरे बेटे का भविष्य मंगलमय करो।'' बहुत दिनो के बाद उसने अत्यंत आंतरिकता के साथ भगवान से प्रार्थना की।

5

कालिनाथ जिस दिन घर आया, उसी दिन आधीरात में किसी की चीख सुनकर हड़बड़ाकर जाग गया। नींद से जागते ही उसने अपने भाई लक्ष्मीनाथ की विकट चीख सुनी। तकिए के नीचे से टार्च निकालकर उसने मेज पर रखी घड़ी की तरफ देखा—रात के दो बजकर बीस मिनट हुए थे। वह ध्यान से लक्ष्मीनाथ की बातें सुनने लगा। दो बातें सुनने के बाद उसने पूरी ताकत के साथ कानों में उंगलियां डाल लीं। कोई भी व्यक्ति अपने माता-पिता, भाई-बहन को इस तरह अश्लील गालियां भी दे सकता है, उसने इससे पहले इस बात की कल्पना भी नहीं की थी। उसने सोचा—सिर्फ दारू के नशे के कारण लक्ष्मीनाथ ऐसा व्यवहार नहीं कर रहा है, वह जरूर किसी गंभीर मानसिक बीमारी से ग्रस्त है। उसके मन मे जरूर काफी दिनों से हीनभाव की ग्लानि, दूसरों के प्रति गुप्त ईर्ष्या का भाव जम गया है, साथ ही उसकी अशालीन और अमर्यादित भाषा गलत संगत का परिचय देती है। कान में उंगलियां डालकर उसने सोचा—वह सिर्फ एक दिन लक्ष्मीनाथ की अश्लील चीख-पुकार सुनकर परेशान हो गया और कान बंदकर शुतुरमुर्ग की तरह रेत में मुंह छिपाने की कोशिश कर रहा है, मगर उसके माता-पिता-बहनों के लिए इस तरह रोज उंगलियों से कान बंद कर पाना सभव है क्या ? वे जरूर लक्ष्मीनाथ की अश्लील-भद्दी गालियां सुनकर कई रातें जागते हुए गुजारते हैं और बेबसी की पीड़ा से घुटते रहते हैं। कानों से उंगलियां निकालकर उसने फिर लक्ष्मीनाथ की बातें सुनने की कोशिश की। आंगन में शोर मचाने पर कोई जवाब नहीं मिला तो लक्ष्मीनाथ दरवाजे के पास आकर पूरी ताकत के साथ धक्का देने लगा। उसके जबर्दस्त धक्के से पूरा घर कांप उठा। काफी देर तक मन ही मन कुछ सोचने के बाद आखिरकार धीरे से दरवाजा खोलकर बाहर निकल पड़ा। बरामदे में खड़ा होकर उसने काफी कोमल स्वर में पुकारा—'कन बापू !'

लक्ष्मीनाथ ने शायद काफी दिनों से किसी के मुंह से ऐसा कोमल स्वर नहीं सुना था। वह ठिठक गया। फिर अपने भाई को पहचानकर फिर कर्कश स्वर में चीखा, "अच्छा तू—मुझे मारने के लिए आया है क्या ? आ तो देखूं, मुझे एक बार हाथ लगाकर तो देख।"

कालिनाथ और एक कदम आगे बढ़ा।

"तुझे क्यों मारूंगा ?" पहले से भी अधिक कोमल स्वर में वह बोला, "घर आकर मैंने तुझे देखा ही नहीं। आ, जरा बातें करें।"

"बकवास मत कर मेरे साथ।" पियक्कड़ों की तरह हिसक अंदाज में चीखते हुए वह बोला, "इस घर में किसी से भी मुझे बात करने की जरूरत नहीं है। तुम सब मेरे दुश्मन हो। मैं तुम सबको एक-एक कर खत्म करके ही छोड़ूंगा।"—उसने फिर दरवाजे पर पैर से जबर्दस्त धक्का मारा।

कालिनाथ क्रोध से सुलग उठा। पागल कुत्ते को प्यार के बोल से वश में करने की कोशिश बेकार है, पिटाई को छोड़कर और कोई रास्ता नहीं है। उसका जी चाहा कि उसके चेहरे पर एक जोरदार घूंसा जमा दे। मगर अगले ही पल उसने सोचा—लक्ष्मीनाथ भले ही पागल है मगर कुत्ता नहीं, आदमी है। आदमी से विश्वास खो देना पाप है। वह इतनी जल्दी धैर्य खोए, ऐसा ठीक नहीं। शांत स्वर में वह फिर बोला, "इस आधी रात में तू खुद नहीं सोता, औरों को भी सोने नहीं देगा क्या ? तू रोज इस तरह अत्याचार करेगा तो पिताजी कितने दिन बचे रहेंगे ? तू पितृ-हत्या के पाप का भागी बनना चाहता है क्या ? तू आधीरात में क्या लेने घर आया है, बोल। मैं ही तेरी बात सुनता हूं।"

चांदनी में कालिनाथ ने देखा, लक्ष्मीनाथ की आंखों में सांप की तरह कठोर शीतलता और धूर्तता कौंध उठी। अचानक जैसे उसका शराब का नशा टूट गया, स्वाभाविक स्वर में वह बोला, "मुझे दस रुपए दे, मैं अभी चला जाऊंगा। तू सब आराम से सो पाएगा।"

"दस रुपए का तू क्या करेगा ?" कालिनाथ ने पूछा।

"दारू पीऊंगा। जुआ खेलूंगा। जो मन चाहेगा वही करूंगा।"

"उसके बाद फिर कल रात इसी तरह नशे में झूमता पैसे मांगने आएगा ?"

"जरूर आऊंगा। सौ बार आऊंगा। इस घर की संपत्ति में मेरा हिस्सा नहीं है क्या ? मैं लावारिस हूं क्या ?"

"घर की संपत्ति में जरूर तेरा भी हिस्सा है। मगर कौन माता-पिता शराब पीने जुआ खेलने के लिए धन-संपत्ति का हिस्सा संतान को दे सकता है ? तू एक काम कर, कन बापू ! तू कोई कारोबार या खेती करना शुरू कर। तुझे सही रास्ते पर आते देख तेरे हिस्से की संपत्ति और जमीन तो तुझे दूंगा ही, मैं अपना हिस्सा भी तेरे नाम लिख दूंगा।"

"भैया, सुन ! मैं आधी रात में तेरे मुंह से धर्मकथा सुनने नहीं आया हू। मेरे हिस्से की संपत्ति मुझे दे दे, उससे मेरा जो जी चाहेगा, वही करूंगा। तू सब कुछ कहने वाला कौन होता है ? अगर चाहता है कि मैं अभी चला जाऊं तो मुझे रुपए दे दे। नहीं तो आज रात मैं घर में आग लगा दूंगा।"

"तू इस तरह मुझे डराने की कोशिश मत करना, कन बापू !"—इस बार कठोर स्वर में कालिनाथ ने कहा, "देश अभी भी इतना अराजक नहीं हुआ कि एक पियक्कड़ आधीरात में किसी के घर जाकर आग लगा दे। तू अगर अभी यहां से नहीं चला गया तो मैं पुलिस को बुलाने के लिए मजबूर हो जाऊंगा।"

कालिनाथ को चौंकाते हुए लक्ष्मीनाथ अचानक अट्टहास करने लगा। "पुलिस को बुलाएगा ?" आवाज में सीमाहीन उपहास का भाव मिलाकर लक्ष्मीनाथ ने कहा, "जा, जा, खुद ही जांच कर देख ले, तेरा कौन बाप मुझे पकड़ने के लिए आता

है ? थाने का दरोगा खुद मुझे दारू पीने के लिए पैसे देता है, जानता है ? उसे खुद भी दारू की जरूरत होती है, तो मुझसे मंगवाता है। तू अगर सोचता है कि तू मुझसे टक्कर ले पाएगा या पुलिस की धौंस दिखाकर मुझे ठंडा कर देगा, तो वैसी आशा इसी घड़ी छोड़ दे। तू सब पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बना है। गुवाहाटी-डिब्रूगढ़ में होगा तू सबसे बड़ा आदमी, मोहधूलि का राजा तो मैं ही हूं, समझा ? मोहधूलि की पुलिस मेरी मुट्ठी में है, गुंडे मेरी मुट्ठी में हैं, सारे सरकारी अफसर मेरी मुट्ठी में हैं ...रुपए देगा या नहीं, बता।''

लक्ष्मीनाथ को कोई जवाब देने से पहले कालिनाथ ने काफी बातों पर विचार किया। खुलेआम यह धमकी देकर रुपए लेने की कोशिश थी। एक बार अगर वह उसकी धमकी के सामने झुक गया तो यह सिलसिला कभी खत्म नहीं होगा, हमेशा लक्ष्मीनाथ धमकी देकर रुपए मांगने आता रहेगा। मगर अभी वह दस रुपए देकर उसे विदा नहीं करेगा, तो सचमुच वह ऐसी परिस्थिति पैदा कर देगा कि घर के लोगों का सो पाना मुहाल हो जाएगा। औरो की बात चाहे जो भी हो, उसे स्वयं नींद की काफी जरूरत थी। सफर की थकान और मानसिक चिंता से वह स्वयं को काफी कमजोर महसूस कर रहा था। इसके अलावा, काफी बातों पर ठंडे दिमाग से विचार करने के लिए उसे कुछ आराम की सख्त जरूरत थी। अब समय खरीदने के सिवाय उसके पास कोई चारा नहीं था। वह भीतर चला गया और दस रुपए लेकर बाहर निकला। रुपए भाई की तरफ फेंककर बोला, ''ले जा दस रुपए। दारू पीकर पागल होकर किस-किस के लात-घूंसे खाने हैं, खाकर मर, जा मर। मगर सावधान, आज के बाद नशे में आकर घर में अशांति फैलाएगा या रुपए मांगेगा तो नतीजा ठीक नहीं होगा। झगड़ा करने या लोगों को मारने की शक्ति सिर्फ तुझमें ही है, ऐसा मत सोचना।''

कालिनाथ ने कहने के लिए यह बातें कह दीं, मगर उसने स्वयं अनुभव किया कि उसकी बातों में विश्वास का जोर नहीं था।

जमीन से रुपए बटोरते हुए लक्ष्मीनाथ ने कहा, ''कल की बात कल देखी जाएगी, आज ही उसकी चिंता करके क्यों मर रहा है ? तू जा अब, थका-हारा आया है, सो जा।''

कालिनाथ ने घड़ी देखी, तीन बजे हैं। वह बिस्तर पर लेट गया, मगर नींद आने के आसार नजर नहीं आए। एक बात सोचकर वह हैरान हो उठा। इतनी देर तक लक्ष्मीनाथ इस तरह शोरगुल मचाता रहा। घर को हिलाते हुए दरवाजे पर ठोकर मारता रहा, उसने खुद उसके साथ बहस भी की—मगर इन सारी घटनाओं के प्रति घर के दूसरे सदस्य पूरी तरह खामोश और निर्विकार बने रहे। और तो और, परेशान होकर बिस्तर पर किसी के करवट बदलने की आवाज तक सुनाई नहीं पड़ी। सभी जैसे एक भयंकर शत्रु के प्राणघाती हमले की प्रतीक्षा में दम साधे पड़े रहे। कालिनाथ

समझ गया, घर के सभी सदस्य हताशा की चरम सीमा तक पहुंच चुके हैं। जमीन में सिर छुपाकर चुपचाप चोट सहने के सिवा कोई रास्ता नहीं है, ऐसा वे मान चुके हैं। इस विशाल पृथ्वी पर कितनी तरह की समस्याएं हैं, मगर उनके बीच एक शराबी के अंतहीन अत्याचार ने एक परिवार के लोगों के जीवन को किस तरह जहरीला कर दिया है—इस बात को कोई समस्या मानेगा ? मगर उनके लिए यह एक जीवंत समस्या है। किसी भी तरह इसका समाधान नहीं करने पर उनके लिए जीवन जहर का पात्र बनकर रह जाएगा। कालिनाथ ने आज भाई की जैसी भयंकर मूर्ति देखी और इस बीच दीदी के पत्र में उसके चरित्र का जैसा वर्णन पढ़ा—उससे उसे विश्वास नहीं होता कि प्यार से समझाकर या नैतिक प्रभाव के जरिए लक्ष्मीनाथ को सही रास्ते पर ला पाना संभव हो पाएगा। ईसाई दार्शनिक जिस evil की चर्चा करते हैं—वह जैसे उसी evil का जीवंत प्रतीक है। कालिनाथ जो संकल्प लेकर पढ़ाई छोड़कर घर आ गया था, उस संकल्प का पालन करना कितना कठिन होगा, उसके बारे में सोचकर उसका हृदय कांप गया।...

भय और चिंता के विषाक्त दंश से दिमाग को बचाने के लिए लंबी सांस लेकर उसने सोने की कोशिश की। मगर कुछ देर बाद ही वह समझ गया कि उसकी यह कोशिश फिजूल थी। कुछ भी न सोचने की कोशिश करते हुए वह लेटा रहा। कुछ देर बाद घुनूसा के घर से मुर्गी के बांग की आवाज सुनाई पड़ी, पास ही किसी घर से ढेकी की दम-दम आवाज ने रात खत्म होने की सूचना दी। कालिनाथ का पिता पादुका की खट-खट आवाज के साथ द्वार खोलकर बाहर निकल आया। मोहधूलि गांव में एक नए दिन की शुरुआत हुई।

कालिनाथ ने अनिद्रा के कारण थकी आंखें जोर से मूंद लीं—मानो एक नई सुबह उसे जिस कठोर कर्तव्य का पालन करने के लिए पुकार रही है, उस पुकार को सुनने के लिए उसके तन-मन में शक्ति नहीं हो...

6

कालिनाथ के घर से दो मील की दूरी पर समूवा गांव है, जिस गांव का दिवाकर नामक लड़का बचपन में कालिनाथ के साथ स्कूल में पढ़ता था। कक्षा के सभी छात्रों में सिर्फ दिवाकर के साथ ही कालिनाथ की दोस्ती हो पाई थी, क्योंकि वह भी उसी की तरह एकांतप्रिय और खामोश रहने वाला लड़का था। पढ़ाई-लिखाई में भी वह काफी तेज था। हमेशा कक्षा के सर्वश्रेष्ठ पांच विद्यार्थियों में से एक वह होता था। मगर घर की हालत इतनी खराब थी कि माध्यमिक स्कूल में पांचवीं कक्षा में पहुंचकर उसे पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी। उसके स्कूल छोड़ने का दृश्य इतना हृदय-विदारक था

कि आज तक कालिनाथ उस बात को भूल नहीं पाया है। उसे स्कूल आने में हमेशा देर हो जाती और शिक्षक जब कारण पूछता तो वह सफाई देता था—खेत में हल जोतते हुए उसे देर हो गई। उसकी बात पर विश्वास करने के सिवा शिक्षक के पास कोई चारा नहीं होता था, क्योंकि उसके चीथड़े जैसे कपड़े हमेशा कीचड़ में सराबोर रहते थे। उसके चेहरे को देखकर यही आभास होता था कि वह अक्सर बिना कुछ खाए स्कूल आता था। ऐसी स्थिति में भी पढ़ाई-लिखाई में उसने पर्याप्त प्रतिभा का परिचय दिया था। शिक्षक उससे कभी नाराज नहीं होते थे।

उस दिन भी वह कीचड़ और पानी में भीगा हुआ हांफते हुए कक्षा में पहुंचा था और अपराधी की तरह संकुचित मुद्रा बनाकर शिक्षक की बातें ध्यान से सुनने की कोशिश कर रहा था। कुछ देर बाद कक्षा में एक नाटकीय घटना घटी।

अचानक कक्षा के दरवाजे पर काले रंग का एक अधेड़ खड़ा हो गया, उसके शरीर पर वस्त्र के नाम पर किसी तरह शर्म ढकने के लिए एक फटा हुआ गंदा गमछा था। सिर से लेकर पैर तक भादो महीने की बुआई के दौरान लगे हुए कीचड़ के दाग थे। हाथ में बैल को फटकारने वाली एक छड़ी थी। देखकर ही कहा जा सकता था कि वह अभी-अभी खेत में हल जोतकर बाहर-बाहर से ही स्कूल आया था। कक्षा के विद्यार्थियों की चकित नजरों को देखकर शिक्षक ने पढ़ाना बदकर दरवाजे की तरफ मुड़कर देखा, और उस आदमी को देखकर शिक्षक भी कुछ पल के लिए भौंचक रह गया। कक्षा में ऐसा दृश्य उसने पहले कभी नहीं देखा था। जो भी हो, विस्मय के धक्के को संभालते हुए शिक्षक ने उस आदमी से पूछा, "तुम्हें यहां क्या काम है ?"

आदमी ने शिक्षक की तरफ देखकर हाथ जोड़कर कहा, "बाबू, हम अज्ञानी मूर्ख आदमी हैं, कोई गलती हो जाए तो माफ करें। मैं दिवाकर को स्कूल से हमेशा के लिए ले जाने के लिए आया हूं।"

उस आदमी ने ज्यों ही अपनी बात पूरी की, कक्षा के सभी लड़कों की नजर दिवाकर पर टिक गई, और दिवाकर डर और शर्म की भावना से डेस्क में मुंह छिपाकर सिसकने लगा।

शिक्षक ने चकित होकर उस आदमी से पूछा, "दिवाकर की पढ़ाई छुड़वाने के लिए आए हो ? क्यों ?"

"यह सब बहुत सारी बातें हैं, बाबू।"—आदमी एक कदम आगे बढ़ा, "मैं बहुत दिनों से इसे मना करता रहा हूं कि उसे स्कूल आने की कोई जरूरत नहीं है, मगर यह मेरी बात अनसुनी कर भागकर स्कूल आ जाता है। आज भी मैंने इसे खेत में हल जोतने में लगा दिया था और मैं एक बांस काटने चला गया। लौटकर देखा, मेरे जाते ही यह हल छोड़कर स्कूल भाग आया है। मैं अकेला आदमी हूं बाबू, यह अगर मुझे खेती में थोड़ी मदद नहीं कर स्कूल में बाबूगिरी करने आएगा, तो

मैं घर कैसे चलाऊंगा ? अपना नाम लिखना सीखने के लिए और पट्टा पढ़ने लायक बनाने के लिए मैंने इसे स्कूल में दाखिला दिलवाया था। अब वह सीख चुका है, अब इसे पढ़ने की कोई जरूरत नहीं है। सात पीढ़ियां कच्ची मछली खाती हुई गुजर गईं, अब यह स्कूल में पढ़कर मेरा उद्धार न करे तो भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा। दिवाकर, चल उठ, मैं खेत में हल जोतने का काम अधूरा छोड़कर आया हूं।''

शिक्षक अब तक विस्मय से अवाक होकर उस आदमी की बातें सुन रहा था, जब उसने दिवाकर को पुकारते देखा तो शिक्षक ने फौरन कहा, ''ठहरो, ठहरो ! तुम इस तरह मेरी कक्षा से जबर्दस्ती लड़के को नहीं ले जा सकते। तुम्हारा लड़का पढ़ने में बहुत तेज है, उसकी किताब-कापी का खर्च मैं दे दूंगा, तुम उसे पढ़ने दो। वह कम से कम एम. पी. पास कर ले तो प्राइमरी स्कूल में पडित की नौकरी मिल जाएगी, तब वह तुम्हारी ज्यादा मदद कर पाएगा।''

''न राधा को नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी''—कहते हुए आदमी दिवाकर की तरफ बढ़ा, फिर उसका एक हाथ पकड़कर खींचने लगा। दिवाकर जोर-जोर से रोने लगा। शिक्षक कुर्सी से उठकर आगे बढ़ा और दिवाकर के बाप को रोकने की कोशिश की, मगर उसकी दृष्टि और मुद्रा से सख्ती और आक्रमकता जाहिर हो रही थी; शिक्षक ज्यादा कुछ करने की हिम्मत नहीं कर सका। वह आदमी दिवाकर को घसीटते हुए घर ले गया, और उसकी दर्द भरी रुलाई देर तक कक्षा के लड़कों के सीने में प्रतिध्वनित होती रही।

इसके बाद शिक्षक भी कुछ पढ़ाए बगैर बुत की तरह बैठ गया। बीच में कालिनाथ को संदेह हुआ था कि शिक्षक की आंखों से आंसू निकल आए थे। चूंकि आंखों में तिनका जाने का बहाना कर शिक्षक ने बार-बार कुर्ते के सिरे से आंखें पोंछी थीं, जिससे आंखें लाल हो गई थीं। बारह-तेरह साल पहले की घटना होने के बावजूद उसका इतना गहरा प्रभाव कालिनाथ के मन पर पड़ा था कि वह कल की घटना लग रही थी, एक-एक बात उसे उसी तरह याद है। दिवाकर के स्कूल छोड़ने के बाद भी कई बार रास्ते में उससे मुलाकात होती रही थी, कालिनाथ को देखते ही दिवाकर की आंखों और चेहरे से करुण भाव प्रकट हुआ था, जिसके कारण वह ज्यादा बातें नहीं कर पाया था। कालिनाथ जब कालेज में पढ़ने चला गया, उसके बाद दिवाकर से मुलाकात नहीं हो पाई।

सुबह देर तक बिस्तर पर लेटकर अपने कर्तव्य के बारे में सोचते हुए कालिनाथ को अचानक एक बार दिवाकर की याद आई। वह एक ऐसे आदमी के बारे में सोच रहा था जो उसके काम में कुछ मदद कर सके। मोहधूलि में कौन अवैध शराब बनाता है, अवैध शराब का कारोबार करने वाले कौन हैं, इस धंधे के कायदे-कानून क्या हैं—इन सब बातों को पहले जान लेना उसने आवश्यक समझा। इसके अलावा मोहधूलि में वह जिस तरह का काम शुरू करना चाहता है—उस काम के लिए चारों तरफ

के गांवों को घूमकर देखना जरूरी है। इसके लिए उसे एक विश्वसनीय सहयोगी और साथी चाहिए। गांव का लड़का होकर भी कालिनाथ गांव की बातें बिल्कुल नहीं जानता, चूंकि शिवनाथ ने अपनी वंश-मर्यादा का ध्यान रखते हुए अपने बच्चों को गांव के लोगों के साथ ज्यादा घुलने-मिलने नहीं दिया। एक ऐसे साथी के बारे में सोचते हुए अचानक कालिनाथ को दिवाकर की याद आई।

स्कूल में एक साथ पढ़ने के समय से ही कालिनाथ मन ही मन अनुभव करता था—जैसे वह सरलता और पवित्रता का जीवंत प्रतीक था। गरीबी ने अगर असमय ही उसके जीवन को नष्ट नहीं किया होता तो जरूर वह समाज के लिए बड़ा काम कर सकता था। कालिनाथ ने सोचा—अभी भी समय है, दिवाकर के चरित्र की जो विशिष्टता है उसका उपयोग आज भी समाज के कल्याण के लिए करने की संभावना है। दिवाकर की बातें याद आते ही कालिनाथ ने अपने एकाकीपन की यंत्रणा को कुछ कम होते महसूस किया।

सुबह आठ बजे उठकर उसने नहाने के बाद नाश्ता किया, चाय पी। फिर उसने मां से कहा, "मां, मैं आज एक जगह जाऊंगा। लौटने में मुझे देर हो सकती है। अधिक देर हो तो समझ लेना—मैं रात में ही घर लौटूंगा।"

कालिनाथ की बात सुनकर मां हैरान रह गई। वह तो कहीं घूमने के लिए नहीं जाता। आज दिनभर के लिए घर से बाहर कैसे जा रहा है...। उसने हैरान होकर पूछा, "तुझे तो कभी कहीं जाते हुए नहीं देखा। आज कहां जा रहा है ? दोपहर में भात कहां खाएगा ?"

"अब से तुम मुझे हमेशा घूमते हुए देखोगी—" पहेली जैसी मुस्कान के साथ कालिनाथ ने जवाब दिया, और मां के अन्य प्रश्नों का कोई जवाब दिए बगैर बाहर निकल गया।

7

जीवन में सिर्फ एक बार कालिनाथ दिवाकर के घर आया था। इसीलिए लोगों से पूछते हुए वह दिवाकर के घर को तलाश पाया। लोगों ने उसे दिवाकर का जो घर दिखाया—उसे देखकर वह स्तब्ध हो गया। कुछ पल वह बाहर ही खड़ा रहा।

बारह साल पहले दिवाकर की तीन झोंपड़ियां थीं। उनमें कोई विकास होना तो दूर की बात थी, अब तीनों झोंपड़ियां जीर्ण-शीर्ण हो चुकी थीं। कई जगह पर बांस के खूंटे की सहायता से झोंपड़ी के वजूद को कायम रखा गया था। कालिनाथ ने बाहर से ही देखा—एक आदमी आंगन में उड़द के पौधे को झाड़ रहा था। उसके सिर पर एक गमछा बंधा था, कई दिनों की बढ़ी हुई दाढ़ी थी, कई जगह से फटा

हुआ गंदा कुर्ता उसने पहन रखा था। कालिनाथ काफी देर आंगन के बाहर खड़ा रहा मगर दिवाकर की नजर उस पर नहीं पड़ी, क्योंकि धरती पर किसी भी हिस्से में देखने की उसे फुर्सत नहीं थी। आंगन की तरफ बढ़कर कालिनाथ ने पुकारा—'दिवाकर !'

दिवाकर उड़द के ढेर पर एक जोरदार चोट करने वाला था, आवाज सुनकर बीच में ही ठिठक गया। कुछ देर तक वह कालिनाथ की तरफ अवाक होकर देखता रहा। फिर बांस का टुकड़ा फेंककर दो कदम आगे बढ़कर बोला, "आप मुझे बुला रहे हैं ? मगर मैने आपको पहचाना नहीं।"

"मुझे नहीं पहचाना ?" कालिनाथ ने हैरान होकर कहा, "मैं कालिनाथ हूं।" एक साथ बहुत भाव उमड़ने के कारण दिवाकर कुछ पल स्तब्ध रहा, फिर आवेग से विकृत स्वर में लगभग चीख उठा, "कालिनाथ—!" आनंद की अधिकता के कारण उसी पल वह कालिनाथ को बांहों में भर लेना चाहता था, मगर अगले ही पल उसे ध्यान आया कि कालिनाथ अत्यंत शुभ्र, सुंदर और निर्मल था, दूसरी तरफ वह कीचड़ में लोटने वाले एक सूअर की तरह गंदा और घिनौना था।

हिचकते हुए दोनों हाथ फटकारते हुए उसने कहा, "कालिनाथ, तुम ? तुम मेरे घर में...यह सपना है या हकीकत कालिनाथ, आओ, आओ भीतर। मुझे तो ऐसा लग रहा है मानो सपना देख रहा हूं।"

कालिनाथ चुपचाप दिवाकर के पीछे बढा। दिवाकर के घर की भयंकर गरीबी के बीच सिर्फ उड़द की गंध पाकर उसके मन को थोड़ी खुशी मिली। उस गंध को ठीक से अनुभव करने के लिए उसने एक लंबी सांस ली। बरामदे पर चढ़कर जिस घर में उसने प्रवेश किया उसमें एक कोने में चूल्हा, बाड़ से सटी हुई लकड़ी की पीढ़े और कोने में टूटी हुई एक कुर्सी पर उसकी नजर पड़ी।

दिवाकर की मुद्रा देखकर कालिनाथ ने अनुभव किया—वह जैसे कालिनाथ की नजरों से अपनी फटेहाली का निरीक्षण देखकर लज्जावश संकुचित हो गया हो। सिर से गमछा खोलकर उसने दस बार कुर्सी को पोंछकर कालिनाथ से कहा, "बैठो भाई इसी पर। तुम्हारे लायक आसन इस अभागे के घर में नहीं है।"

"मैं तुम्हारे घर में आसन की तलाश में नहीं आया, तुम्हारी तलाश में ही आया हूं..." यह कहकर कालिनाथ एक पीढ़े पर चूल्हे के पास बैठ गया और एक लकड़ी लेकर उसने आग को कुरेदते हुए कहा, "आज जैसा मौसम है, आग के पास बैठना अच्छा लग रहा है।"

दिवाकर भी कालिनाथ के पास एक पीढ़े पर बैठ गया और कुछ पल तक कालिनाथ के चेहरे की तरफ देखता रहा। कालिनाथ ने देखा—किसी आवेग के कारण दिवाकर की आंखें नम हो गई हैं। बहुत देर तक दोनों चुप रहे। आखिरकार चुप्पी तोड़ते हुए दिवाकर ने कहा, "अचानक इस गरीब के घर कैसे आए, कालिनाथ ?

बी. ए., एम. ए. क्या-क्या पास किया ? हाकिम-अफसर किस नौकरी में गए ?"

"तुमने तो एक साथ ढेर सारे प्रश्न पूछ डाले," कालिनाथ ने हंसकर कहा, "तुम्हारे पास क्यो आया हूं, यह लंबी बात है। कहने में समय लगेगा। अन्य दो प्रश्नों का उत्तर पहले देता हूं, सुनो। बी. ए. पास किया, एम. ए. की पढ़ाई अधूरी छोड़ दी। हाकिम-अफसर की नौकरी नहीं तलाशी। घर में रहकर खेती करने का फैसला कर चुका हूं।"

कालिनाथ की आखरी बात सुनकर दिवाकर चौंककर, चिल्लाकर कुछ कहना चाहता था, मगर कालिनाथ ने उसे कहने का मौका दिए बगैर तेजी से पूछा, "अब अपनी खबर बताओ। तुम्हारे पिता कहीं दिखाई नहीं पड़े, वे कहां गए हैं ?"

"मेरी खबर क्या सुनोगे, भाई ?"—दिवाकर ने एक लंबी आह भरकर जवाब दिया, "दो साल हुए, पिताजी गुजर गए। जिस तरह उनकी पूरी जिंदगी तकलीफ उठाते हुए गुजरी, मरते वक्त भी उन्हें काफी तकलीफ हुई। बहुत दिनों से पिताजी को पेट की बीमारी थी। बीमारी भी क्या थी, भूखे रहने से पित्त सूख गया था। अंत में किसी तरह उनके कंकाल में सिर्फ उनका प्राण बचा था। वैसी हालत में भी उन्होंने कभी काम करना बंद नहीं किया था। मेरे मना करने पर भी नहीं सुनते थे। एक दिन वैसी हालत में ही खेत से आहू धान काटकर लाने के लिए गए। शक्ति नहीं थी, फिर भी धान का एक गट्ठर उठाकर ला रहे थे। तभी बारिश के कारण फिसलन वाले खेत के रास्ते पर फिसलकर गिर पड़े। उस दिन जो गिरे, उसके बाद उठ नहीं पाए, और तो और, मुंह से चीख तक नहीं निकली। कितनी देर तक वहां अधमरे होकर पड़े रहे, भगवान ही जानता है। तभी गांव का एक आदमी खेत में धान का गट्ठर लेने के लिए गया। उनको वैसी हालत में देखकर उसने शोर मचाकर और लोगों को बुलाया। सभी पिताजी को उठाकर घर ले आए। होश आते ही पिताजी दर्द से चीखने लगे। कैसी थी वह चीख, बिना सुने तुम कल्पना नहीं कर सकते, भाई ! जो भी हो, कर्ज लेकर कुछ रुपए का जुगाड़ कर डाक्टर को ले आया। डाक्टर ने जांच करने के बाद कहा—रीढ़ की हड्डी टूट गई है, वे कुछ नहीं कर सकते। मेडिकल कालेज ले जाना पड़ेगा। वहां भी कम से कम छह महीने तक पड़ा रहना पड़ेगा। मेरी हालत की कल्पना कर सकते हो, कालिनाथ ! तुम तो शायद जानते हो—मैं पिताजी का इकलौता बेटा था—जिसके लिए उन्होंने मेरी पढ़ाई छुड़वा दी। तब आहू धान की कटाई का समय था। जो दो खेतों में धान उपजाया था उससे छह महीने तक गुजारा हो सकता था। अगर पिता के साथ मैं जुटा रहता तो फिर कटाई कौन करता ? कटाई न करें तो साल भर गुजारा कैसे हो ? कटाई की बात छोड़ भी देते तो फिर पिताजी को मेडिकल कालेज ले जाने के लिए ढेर सारे रुपए कहां से मिलते ? इस तरह पिताजी का डाक्टरी इलाज करवाने की आशा छोड़कर गांव के ओझा की सहायता ली। किसी ने हड्डी जोड़ने के लिए लता बांध दी। किसी ने बिहलंगनी के

पौधे से दर्द को झाड़ा, मगर कुछ फायदा नहीं हुआ। सात दिन, सात रात दर्द से तड़पते हुए पिताजी चल बसे।"

पिता की यंत्रणा के समस्त अनुभव को दिवाकर जैसे नए सिरे से महसूस कर रहा हो, ऐसी मुद्रा में कुछ देर तक चुप रहा। फिर एक करुण मुस्कराहट के साथ बोला, "ऐसा लगता है जैसे तुम हमारे दुख-दर्द की कहानी सुनने आए हो। यह सब बातें छोड़ो भी। मैं कैसा आदमी हूं, देख रहे हो न ? तुम्हें थोड़ी चाय पिलाने की जरूरत भी मैंने अब तक महसूस नहीं की। मां कहां गई, पता नहीं। अरे वह रही—आ रही है, ठहरो।"

आंगन में खड़ी होकर दिवाकर की मां ने कहा, "आंगन में इस तरह उड़द छोड़कर मैना कहां चला गया ? अभी बारिश हो जाए तो सारा उड़द गलकर खत्म हो जाएगा।"

दिवाकर ने घर के भीतर से आवाज लगाई, "तुम उड़द की चिंता मत करो। बारिश आने से पहले मैं उसका इंतजाम कर दूंगा। तुम जल्दी से भीतर आओ। देखो तो कौन आया है।"

दिवाकर की मां घर के भीतर आ गई। उसके एक हाथ में कुछ बैंगन और दूसरे हाथ में थोड़ा-सा लाई साग था। घर के भीतर अनजान आदमी को देखकर वह आश्चर्य से कालिनाथ की तरफ देखने लगी।

दिवाकर बोला, "मां, तू इस तरह देखती रहेगी तो क्या होगा ? पूरा एक युग बीत जाएगा, फिर भी तू इन्हें पहचान नहीं पाएगी। हमारे किसी जन्म के पुण्य का फल है जो ऐसा आदमी हमारे घर आया है। ये हैं कालिनाथ, मोहधूलि के शिवनाथ फुकन महाशय के बेटे...।"

दिवाकर अपना वाक्य पूरा भी नहीं कर पाया, उसकी मां ने हाथ की चीचें पटक दीं और जमीन पर बैठ गई। हाथ जोड़कर कालिनाथ की तरफ सिर हिलाकर कहा, "हे हरि, हे भगवंत, आज कैसी अनहोनी हुई है मेरे घर में ! फुकन देउता के लड़के हमारे घर में ? अरे मैना, तुझे जरा भी ज्ञान नहीं है क्या ? बोपादेउता को तूने खाली पीढ़े पर बैठाया है ? इस्स-इस्स, जा, भीतर से चादर लेकर आ।"

कालिनाथ के विरोध को अनसुना कर दिवाकर की मां ने उसे चादर पर बिठाकर दम लिया। फिर वह कहने लगी, "बोपादेउता, आपलोगों का घर है जगत-जननी, पतित-पावनी। इस मोहधूलि मौजे में एक भी आदमी ऐसा नहीं मिलेगा जिसने कभी आपके घर का भात न खाया हो। आपलोग छोटे लड़के हैं। पुराने जमाने की बातें नहीं जानते। आपके परदादा के समय में मेरे पिता के पिता आपके घर में चरवाहा थे। हमलोग आपलोगों के सात पुश्तों से गुलाम हैं। अरे मैना, बोपादेउता की किस तरह खातिरदारी करेगा ? मुझे तो एक तांबूल देते हुए भी डर लग रहा है।"

अपने बालसखा के समक्ष वृद्धा के मुंह से यह सब बातें सुनते हुए कालिनाथ को काफी संकोच हो रहा था, अब मौका पाते ही वह लगभग चिल्ला उठा, "आप यह सब कैसी बातें कर रही हैं, मांजी ? मैं क्या सिर्फ एक तांबूल खाने के लिए आया हूं ! मैं आज यहां भात भी खाऊंगा। शाम तक आपलोगों के घर में रहूगा। दिवाकर से मुझे बहुत सारी बातें करनी हैं।"

कालिनाथ की बात सुनकर दिवाकर और उसकी मां की आंखों में बिजली कौंधने की तरह विस्मय का भाव कौंध पड़ा। दोनों ने एक-दूसरे की आंखों में देखकर प्रतिक्रिया समझने की कोशिश की। कुछ देर स्तब्ध रहने के बाद दिवाकर की मां ने कहा, "आप बोपादेउता क्या लीला दिखाना चाहते हैं, हम समझ नहीं पा रहे। इस गरीब के घर का रूखा-सूखा खाना क्या आप खा पाएंगे ?...अरे मैना, मुंह फाड़कर बैठा क्यों है ? उठ, जल्दी उठ, एक बत्तख पकड़कर मार।"

दिवाकर कुछ कहता, इससे पहले कालिनाथ ने विरोध किया, "बत्तख-कबूतर मारने से मैं खाऊंगा नहीं। मैं मेहमान बनकर नहीं आया हूं। घर के आदमी की तरह आया हूं। आपलोग जो खाते हैं, वही मैं भी खाऊंगा। और एक बात मानिए, मुझे मांस पसंद नहीं है।"

जब यह बातचीत चल रही थी तभी एक लगभग बीस-वर्षीया युवती भीतर आई और खड़ी हो गई। वह नदी में नहाकर कपड़े बदले बगैर भीगी हुई हालत में ही घर आ गई थी, भीगे कपड़े उसके शरीर से चिपक गए थे, जिससे उसके शरीर का केले के पत्ते जैसा रंग चमक रहा था और कसे हुए अंगों की शोभा स्पष्ट रूप से उजागर हो रही थी। घुटने से नीचे उसके मांसल पैर अनावृत नजर आ रहे थे। उसके हाथ में प्याज के पत्ते एवं जंगली जिलमिल साग की गठरी थी। उसने शायद सोचा था कि गांव का ही कोई आदमी माघ महीने के बादल से घिरे मौसम में आग सेंकते हुए मां और भैया से गप्पबाजी में मशगूल है, इसीलिए कालिनाथ की तरफ ध्यान दिए बगैर मां के पास खड़ी होकर साग की गठरी नीचे रखते हुए वह बोली, "आज यह कैसी अद्‌भुत बात हुई भैया, आंगन में उड़द झाड़ने का काम आधा छोड़कर आग सेंकते हुए गप्प कर रहे हो ?"

मां ने मुस्कराकर कहा, "अरी बोहागी, आज हमारे घर में कौन आए हैं, तूने देखा है क्या ? तू सोच रही होगी, गांव का कोई ऐरा-गैरा होगा, है न ?"

मां की बात सुनकर बोहागी ने कालिनाथ के चेहरे की तरफ गौर से देखा और अगले ही पल अपने भीगे शरीर का ख्याल कर शर्म के कारण एक अजीब आवाज निकालती हुई कूदकर भीतर चली गई। उसकी हड़बड़ाहट देखकर मां-बेटे की हंसी फूट पड़ी।

कालिनाथ स्वयं हड़बड़ाकर लकड़ी के टुकड़े से आग कुरेदने लगा।

दिवाकर की मां ने कहा, "बोपादेउता, वह मेरी ही लड़की है, बोहागी। उससे

बड़ी और भी दो लड़कियां थीं, किसी तरह उन दोनों का ब्याह किया। अब किसी तरह इसके हाथ पीले हो जाएं तो मैं सुख से मर सकूंगी।''

बोहागी को देखने के साथ ही कालिनाथ के मन में विमुग्ध विस्मय का भाव पैदा हुआ था, उसे व्यक्त करने का अवसर मिल गया। संसार के अनुभवी बुजुर्ग की तरह उसने कहा, ''ऐसी कच्चे सोने जैसी लड़की के लिए आप क्यों चिंता करती हैं, मांजी ? उससे ब्याह के लिए कितने ही लोग आकर आपके पैर पकड़ेंगे।''

''यह सब झूठी बातें हैं, बोपाई !''—दिवाकर की मां का चेहरा अचानक गंभीर हो गया, ''गरीब के घर मे कच्चा सोना भी हो तो वह पीतल के भाव बिकता है। उससे बड़ी लड़की फुलेश्वरी देखनें में उससे भी दस गुना ज्यादा सुंदर और घर के कामों में निपुण थी। फिर भी उसे अभी आंसू पी-पीकर गुजारा करना पड़ रहा है।''

''क्यों ?'' कालिनाथ ने चकित होकर पूछा।

दिवाकर की मां की आंखें अचानक छलछला गईं। आंचल के कोर से आंखें पोंछती हुई बोली, ''उसकी बात याद आते ही मेरा दिल डूबने लगता है, बोपाई। गरीब की बेटी रूपवती भले ही हो, कौन राजपुत्र उससे विवाह करने के लिए आएगा ? अपने बराबर के ही एक वक्त खाकर एक वक्त भूखे रहने वाले घर के एक लड़के से उसका विवाह किया। हमारे बच्चे भूख सहन करना जानते हैं। जन्म से ही बर्दाश्त करते-करते उनकी आदत हो गई है। मगर वह बहू बनकर जिस घर में गई, वहां उसका सामना एक राक्षसी सास से हुआ—यह सब बातें क्या कहूंगी बोपाई, आज तुम नए आदमी हो, यही देखकर दिल का बोझ हल्का करने के लिए यह सब कह रही हूं—जब तक उसकी सास जिंदा रही, उसने उसका जीना मुहाल कर रखा था। उसने मेरी बेटी पर जो अत्याचार किए कोई अपने दुश्मन के ऊपर भी इतना अत्याचार नहीं करता होगा। पिछले साल वह पापिन कीड़े लगने के साथ ही मर गई। सास अत्याचार करे, मगर अपने मर्द से दो मीठे बोल सुनने को मिलते तब भी उसे सहारा मिलता। मगर मेरी लड़की की किस्मत ही फूटी थी—जैसी सास थी वैसा ही पति भी मिला। उठते-बैठते मेरी बेटी को डंडे से बैल की तरह वह जब तक पीट नहीं लेता, तब तक उस कलमुंहे के पेट में भात नहीं जाता।''

मां की बातें भीतर सुनती हुई बोहागी शायद शर्म से अधमरी हो गई थी, उसने भीतर से पुकारा, ''मां, इधर आओ तो।''

''मैं क्यों भीतर आऊं, तू ही आ जा, मेहमान के साथ परिचय करवा देती हूं। ओह—मैं क्या कह रही थी बोपाई ? पति की मार खाते-खाते मेरी बेटी का कच्ची हल्दी जैसा रंग काला हो गया, जोड़-जोड़ में दर्द रहता है। इतना कुछ होने पर भी मुसीबत का अंत नहीं हुआ। साल बीतते-न बीतते एक बच्चा पैदा हो गया। सूअर के बच्चे की तरह ढेर सारे बच्चे हो गए। घर में मदद करने वाला कोई नहीं। प्रसव से उठकर शरीर के ताजा घाव सूख भी नहीं पाते कि खेत में जाना पड़ता।...यही

है हमारे फटेहाल घर की रूपवती-गुणवती लड़की की किस्मत, कितना कहूंगी, कितना सुनोगे ?"

दिवाकर की मां की एक लंबी आह निकल पड़ी।

मां कब चुप हो, दिवाकर इसी बात की प्रतीक्षा कह रहा था। मौका मिलते ही उसने कहा, "मां, तुमने एक बात पर गौर किया है ? कालिनाथ को आए शायद एक घंटा से अधिक हो गया, इतनी देर में तू इसे एक कप चाय भी नहीं दे पाई है। उठ-उठ, जल्दी से चाय तो दे, मैं भी आधा झाड़े गए उड़द को मवेशीघर में रखकर आता हूं।" दिवाकर खड़ा हो गया।

"ओह बोपाई, तू बात समझ नहीं पा रहा है, मैं नहाए बगैर चाय कैसे बनाती ? इसीलिए बोहागी की राह देख रही थी। अरी बोहागी, निकल आ, बोपादेउता को यहीं एक बाटी चाय बनाकर दे–" कालिनाथ की तरफ देखकर दिवाकर की मां ने सफाई देने के अंदाज में कहा, "हमारी बेटियां रसोईघर में जा नहीं सकतीं, बोपाई ! निकल आ बोहागी, ये बोपादेउता तुम्हारे अपने भैया के समान हैं, इनके सामने शर्म कैसी ! मैं जा रही हूं, नहाकर रसोईघर में जाऊंगी। ओह, तूने एक बात सुनी है या नहीं ? आज बोपादेउता हमारे घर में ही भात खाएंगे।"

दिवाकर उड़द रखने के लिए आंगन में चला गया। मां जमीन से साग बटोरकर भीतर चली गई। बोहागी के पास कोई चारा नहीं था, वह अपनी शर्म को छोड़कर कालिनाथ के सामने आने के लिए विवश हो गई।

झिझक सिर्फ बोहागी को हो रही थी–यह बात नहीं थी। पूरी परिस्थिति कालिनाथ के लिए अधिक असहज हो गई थी। अपनी बहनों को छोड़कर उसने जीवन में किसी दूसरी लड़की से कभी बात नहीं की थी। लड़की तो दूर की बात, लड़कों से भी उसका रिश्ता कम रहा है। आज अचानक दिवाकर और उसकी मां ने एक अनजान युवती के साथ उसे अकेला छोड़ दिया तो उसने खुद को अथाह सागर में डूबता हुआ अनुभव किया। बोहागी के निकल आने पर वह गूंगे पत्थर की तरह बैठा रहेगा या इधर-उधर की बातें करेगा–यह सोचते हुए उसके माथे पर पसीना छलछला आया।

अचानक बोहागी भीतर से निकल आई। कालिनाथ ने उसकी आहट सुनकर सिर उठाकर देखा–शर्म के कारण लड़की लाल होकर सर्दी के महीने में भी पसीने से तर हो गई है और उसका शरीर सिकुड़ गया है। मगर उसकी शर्म और हिचक के बीच से ही ग्रामीण सरल लड़की का ऐसा शालीन स्निग्ध व्यक्तित्व उजागर हुआ–उसके आंचल से टकराकर आती हवा को कालिनाथ ने महसूस किया–जैसे बहुत दूर वेगवती नदी की धारा को छूकर और सुरभित अरण्य की स्निग्धता बटोरकर आई हवा उसके शरीर से टकराई हो। उसने मन में एक गहरे आनंद का भाव महसूस किया–जिस तरह के आनंद का स्वाद इससे पहले उसे जीवन में कभी नहीं प्राप्त

हुआ था।

बोहागी कालिनाथ की तरफ पीठ करके आग के पास बैठ गई और बुझ रही आग को फूंककर बोली, "हमारी चाय आप पी सकेंगे, ककाईदेव ? आपलोग तो हमेशा चीनी की चाय पीते हैं, गंदे गुड़ की चाय कैसे पीएंगे ?"

बोहागी के साथ बातचीत कैसे शुरू होगी, कालिनाथ के लिए यही प्रमुख समस्या थी। मगर बोहागी ने इतनी सहजता से उसकी समस्या का समाधान कर दिया कि कालिनाथ ने मन ही मन उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। उसने फौरन जवाव दिया, "मुझे गुड़ खाना अच्छा लगता है। बहुत दिनों से गुड़ की चाय पी नहीं, आज पीकर जरूर मजा आ जाएगा।"

बात करने के लिए कोई विषय खोज न पाने के कारण कुछ देर तक दोनों खामोश रहे। चूंकि बोहगी की पीठ कालिनाथ की तरफ थी, इसीलिए उसने एक बार बेहिचक उसकी पीठ की तरफ देखा। भीगे वस्त्रों में उसे जब पहली बार देखा था तब उसके शरीर का रंग कालिनाथ को इतना आकर्षक लगा था कि वह एक बार फिर उस रंगत को देखने का लोभ छोड़ नहीं पाया । उसके शरीर की रंगत सचमुच आकर्षक थी–दूसरी बार देखकर उसने मन ही मन सोचा–जैसे बांस की कोंपल का रंग हो, देखकर आंखों को ठंडक मिल जाती है। मुग्ध दृष्टि से वह कुछ देर तक बोहागी के मेखला और ब्लाउज के बीच उघड़े शरीर की तरफ एकटक देखता रहा, और बोहागी उसकी नजरों से बेखबर इत्मीनान से चाय के लिए पानी उबालने में जुटी रही।

कालिनाथ की तन्मयता भंग करते हुए अचानक एक आदमी अंदर आया। "दिवाकर घर में है क्या ?" इतना कहकर उसकी नजर कालिनाथ पर पड़ी, और कालिनाथ ने महसूस किया कि उस आदमी के चेहरे का भाव अचानक बदल गया। एक वर्जित कार्य करते हुए रंगे हाथ पकड़े गए आदमी की तरह कालिनाथ के चेहरे का रंग उड़ गया। उसने उस आदमी की तरफ से नजरें फेर लीं। बोहागी ने सिर उठाकर उस आदमी की तरफ देखकर कहा, "अरे ददाइदेव आए हैं, भैया तो आंगन में ही थे। कहीं इधर-उधर गए होंगे ?"

आदमी ने कहा, "भैया न होने से भी काम चलेगा। अगर है तो एक पान का पत्ता दे। घर में एक मेहमान आया है, तांबूल के साथ देने के किए पान नहीं है।"

"ठहरिए, मैं देखती हूं–"बोहागी अंदर चली गई।

आदमी ने शक भरी नजरों से कालिनाथ को देखते हुए पूछा, "आप कहां से आए हैं ? आज से पहले कहीं भी आपको देखा नहीं।"

कालिनाथ ने नम्रता के साथ जवाब दिया, "मोहधूलि गांव के शिवनाथ फुकन को जानते हैं ? मैं उनका मंझला बेटा हूं। मेरा नाम कालिनाथ है। बचपन में दिवाकर

के साथ ही स्कूल में पढ़ता था। मेरी उससे दोस्ती थी। बहुत दिनों बाद उसी से मिलने के लिए आया हूं।''

शिवनाथ का नाम सुनते ही उस आदमी की भंगिमा पूरी तरह बदल गई। ''आप फुकन देउता के लड़के हैं ?'' डरते हुए उसने कहा, ''आपलोग नई पीढ़ी के नौजवान हैं। कभी देखा नहीं, पहचानता कैसे ? मेरी बात का बुरा नहीं मानें।''

बोहागी ने अंदर से दो पान के पत्ते लाकर आदमी को दिए। वह कालिनाथ से विदा लेकर चला गया। कालिनाथ काफी देर तक सोचता रहा कि वह आदमी उसके प्रति संदेहपूर्ण धारणा लेकर गया है। बोहागी ने कालिनाथ को एक छोटी बाटी में चाय देते हुए कहा, ''आपको चाय देते हुए मुझे शर्म आ रही है, यह आपलोगों के लायक चाय नहीं है। फिर भी जब गरीब के घर आए हैं तो दो घूंट पी लें।''

इस बीच बोहागी के सामने कालिनाथ की झिझक काफी कम हुई है। उसने चाय की एक घूंट पीकर पूछा, ''तुमने स्कूल की पढ़ाई की थी या नहीं ?''

''की थी, एम. वी. पास किए हुए तीन साल हो गए।'' बोहागी ने जवाब दिया।

''आजकल लड़कों के हाईस्कूल में लड़कियां भी पढ़ती हैं। तुमने क्यों नहीं दाखिला लिया ?'' —कालिनाथ बातचीत के जरिए बोहागी को और करीब रखना चाहता था, इसीलिए उसने फिर सवाल पूछा।

''इस्स—अच्छी बात कह रहे हैं !'' कालिनाथ के चेहरे की तरफ देखकर बात करने में शर्म महसूसकर दाई बांह के नीचे मुंह छिपाकर बोहागी बोली, ''घर में फूटी कौड़ी नहीं थी तो पढ़ाई कैसे करती ? घर में कितना लड़-झगड़कर किसी तरह एम. वी. तक पढ़ पाई। हाईस्कूल में पढ़ाई के लिए फीस कौन देता ?''

और कुछ कहने के लिए कालिनाथ तत्काल कोई विषय खोज नहीं पाया। बोहागी तब भी दाईं बांह के नीचे मुंह छिपाए हाथ फैलाकर बैठी हुई थी। उसकी उंगलियों पर कालिनाथ की नजर पड़ी। सिर्फ किताबी वर्णन के जरिए नारी के सौंदर्य का परिचय उसे मिला था, उसने किताबों में नर्म उंगलियों वाली नारियों का वर्णन पढ़ा था। मगर उसने देखा, बोहागी की उंगलियां छोटी, मोटी और सख्त थीं। दिन-रात काम करते रहने के कारण श्रमजीवी नारी होने का परिचय हथेली की सख्त त्वचा और मोटी उंगलियों से मिलता था। मगर कालिनाथ की आवेग-विह्वल दृष्टि के समक्ष बोहागी की सख्त और मोटी हथेली का एक नया सौंदर्य उजागर हुआ। वैसी हथेली वाली लड़की कभी किसी के कंधे पर बोझ नहीं बन सकती, बल्कि वह स्वयं बहुतों के लिए सहारा और आश्रय-स्थल जैसी होगी।

इस बीच बोहागी से क्या पूछे, कालिनाथ यही सोच रहा था, तभी अंदर से मां की आवाज आई, ''अरी बोहागी, अगर तू चाय बना चुकी है तो एक बार इधर आना तो।''

बोहागी को राहत मिल गई। वह उछलने के अंदाज में उठकर अंदर चली गई। जाते वक्त उसके आंचल को हिलाने वाली हवा कालिनाथ से टकराई।

कालिनाथ अकेले बैठा रहा। कुछ देर बाद दिवाकर भीतर आया। उसने कहा, "कालिनाथ, तुम जरा बैठो। मैं दौड़कर नदी में एक डुबकी लगाकर आ रहा हूं।"

अकेले बैठे हुए कालिनाथ ने कुछ देर बाद महसूस किया कि वह इतनी देर से बोहागी के बारे में ही सोच रहा है। दूसरी बातें नहीं, बोहागी के भविष्य की बातें। कुछ देर पहले मां ने बोहागी की दीदी के बारे में बताया था। बोहागी से भी अधिक सुंदर और गुणी लडकी साल-दर-साल बच्चे जनती हुई बीमार देह के साथ खेत में काम करके दिन-रात पति की मार खा-खाकर असमय ही बूढ़ी होकर अब मौत की घड़ियां गिन रही है। बोहागी का भविष्य उससे क्या अलग होगा ? देहाती लड़की की सुंदरता मौसमी फूल की तरह क्षणिक होती है, आंखों के सामने देखते-देखते दुनिया की क्रूर हवा उन्हें गोबर-कीचड़ में सराबोर कर देती है और अंतहीन तकलीफों की चक्की में पिसकर सौंदर्य कीचड़ में गायब हो जाता है। कुछ देर पहले रूप-यौवन की सुलगती आग जैसी जो लड़की उसके पास बैठी थी, कुछ सालों बाद उसकी क्या दशा होगी—इस बात की कल्पना कर कालिनाथ ने मन में करुण उदासी का भाव महसूस किया।

जब कालिनाथ यह सब बाते सोच रहा था, तभी दिवाकर नहाकर लौट आया। एक पीढ़ी खिसकाकर वह कालिनाथ के पास ही बैठ गया और बोला, "बारह साल बाद तुम मुझसे मिलने आए, मगर ठीक से तुम्हारे साथ बातें करने के लिए बैठने तक का समय मैं निकाल नहीं पाया हूं। कहो तो भाई, क्या कहने के लिए आए हो ? सुबह से ही तुम्हारी बात सुनने के लिए मेरा मन छटपटा रहा है।"

कालिनाथ ने शुरू से अपने परिवार की समस्या का विवरण सुनाया, फिर अंत में बोला, "देखो दिवाकर, यह सिर्फ मेरे परिवार की समस्या है, यह बात नहीं है। आज मोहधूलि के प्रत्येक परिवार में इस समस्या ने लोगों का जीवन तकलीफदेह बना दिया है। खेत तबाह हो रहे हैं। लोगो के घर बांस के झुरमुट बनते जा रहे हैं। अवैध दारू का धंधा बंद करने के लिए देश में एक कानून है, हजारों कर्मचारी हैं। मैंने सुना है, हमारे मोहधूलि में आबकारी विभाग के एक इंस्पेक्टर के साथ बारह कर्मचारी हैं। मगर वे अवैध दारू का धंधा करने वालों को पकड़ने की जगह उस धंधे को फलने-फूलने में मदद कर रहे हैं। मुझे अगर घर को तबाह होने से बचाना है और पिताजी को बुढ़ापे में थोड़ी शांति देनी है तो लक्ष्मीनाथ का शराब पीना बंद करवाना पड़ेगा। मगर मैंने अच्छी तरह सोचकर देखा है, जब तक समूचे मोहधूलि में अवैध शराब का धंधा बंद नहीं हो जाता, तब तक मैं अपने भाई लक्ष्मीनाथ को शराब पीने से रोक नहीं सकता। इसीलिए मोहधूलि में अवैध शराब के धंधे को बंद करने की एक बार कोशिश करके देखना चाहता हूं। कोई यह भी कह सकता

है, हमारे समाज में विभिन्न समस्याएं हैं, उन सभी समस्याओं के खिलाफ सामूहिक रूप से युद्ध न कर सिर्फ अवैध शराब के विरुद्ध युद्ध करने का कोई फायदा नहीं। यह बात सच भी है। मगर मेरा मानना है कि समाज की एक समस्या के साथ दूसरी समस्या इस तरह जुड़ी है कि कान खींचते ही सिर नजर आने की तरह इस समस्या का गला दबाने पर दूसरी समस्याएं भी अपने आप हमें दिखाई देंगी। इसके अलावा हमारे देश में किन लोगों की गलती से अच्छे कानून भी लागू नहीं हो पाते, यह जानने के लिए भी मैं इस अवैध दारू के धंधे को एक टेस्ट केस—यानी एक नमूने के तौर पर ले रहा हूं। तुम्हारे पास मेरे आने का उद्देश्य है—इस काम में मुझे तुम्हारी कुछ मदद चाहिए। तुमको छोड़कर मेरा कोई विश्वासी मित्र नहीं है।''

कालिनाथ की सारी बातें गौर से सुनने के बाद दिवाकर ने कहा, ''कालिनाथ, ऐसा महान काम सिर्फ तुम ही कर सकते हो। स्कूल में पढ़ते समय ही मैं समझ गया था, तुम कक्षा के दूसरे लड़कों की तरह नहीं हो, तुम कुछ अलग किस्म के हो। अवैध शराब ने हमारे इलाके में जो तबाही मचाई है, वह मैंने अपनी आंखों से देखी है। मगर हम ठहरे हलवाहे-चरवाहे जैसे लोग, इन बड़ी बातों का अगर हम विरोध करें तो यह शेर के जबड़े में हाथ डालने की तरह होगा। इसीलिए सब कुछ देखते-सुनते हुए भी हम चुपचाप मूक दर्शक बने बैठे हैं। मगर एक बात हम अच्छी तरह जानते हैं कि अगर यही हाल कुछ दिनों तक रहा तो देश रसातल में चला जाएगा। देश में जंगल राज जैसा माहौल बन गया है। तुम जानते हो या नहीं, पता नहीं, हमारा गांव शराब तैयार करने का एक प्रमुख अड्डा है। घर-घर में सिर्फ अवैध शराब का धंधा देखोगे। लोगों को भी क्या दोष दोगे ? पहले लोग एक मन धान या एक मन सरसों बेचकर जो रुपए पाते थे—उससे किसी तरह तेल-नमक-कपड़े खरीदकर एक महीने तक गुजारा कर लेते थे। आज पांच मन धान या पांच मन सरसों बेचने पर उतनी चीजे नहीं मिल पाती हैं। चीजों की बढ़ी हुई कीमत ने लोगों की हालत खराब कर दी है, इसीलिए लोग आसानी से कमाई करने का रास्ता चुनने के लिए मजबूर हो गए हैं। एक टेकेली गुड़ की कीमत तीन रुपए समझ लो, मगर उसी एक टेकेली गुड़ से पांच बोतल शराब बनाई जाए तो दस रुपए मिलते है। ज्यादा मेहनत भी नहीं है। अभाव के कारण अधिकतर लोग इस अवैध शराब के धंधे मे शामिल हो गए हैं। एक उदाहरण बताता हूं, सुनो।

''हमारे गांव में एक विधवा है। जवानी में ही उसका पति गुजर गया। तीन बच्चों के साथ वह अकेली रहती है। जब पति जिंदा था तो अपनी एक पूरा जमीन में खेती करने के साथ ही दूसरों से भी बंटाई पर दो बीघा जमीन में खेती करके तकलीफ उठाते हुए भी किसी तरह गुजारा करता था। मगर पति के मरने के बाद छोटे-छोटे बच्चों के साथ बेचारी औरत क्या करती ? अपनी जमीन बंटाई पर दूसरे को दे तो भी अनाज से तीन महीने भी ठीक से गुजारा न हो पाए। उसकी किस्मत

अच्छी थी—उसी समय शराब का धंधा शुरू हो गया। पहले का मोहधूलि गांव अब शहर बन गया, बाहर से आए बाबू साहबों और व्यापरियों से जगह भर गई। सबको शराब की जरूरत थी। देखते-देखते हमारे नए बाबू भी शराब पीने लगे। सुनहरा मौका समझकर उस विधवा ने भी शराब का धंधा शुरू कर दिया। अब वह मजे से गुजारा कर रही है। गुजारा तो कर रही है, मगर इस बीच क्या घटना घटी है—वह भी सुन लो। जवान विधवा के घर आधीरात तक तरह-तरह के शराबियों का आना-जाना लगा रहता है। पहले के समय में जब गांव में नियम के बंधन कड़े थे, तब जवान विधवा के घर आधीरात में मर्दों के जाने की खबर पाते ही गांव का समाज उसका बहिष्कार कर देता। मगर अब कौन किसे रोकने वाला है ? सबके सब स्वयं ही दोषी हैं। इस विधवा के घर अवैध शराब का धंधा चलने की खबर पाकर एक आबकारी विभाग का चपरासी उसके घर आया। उसका उद्देश्य अवैध शराब बरामद करना नहीं था, सिर्फ धमकाकर उससे कुछ और हासिल करना चाहता था। रात में एक जवान आदमी एक सुंदरी विधवा को अकेले पाकर उसकी मजबूरी का फायदा उठाते हुए किस चीज की मांग कर सकता है, तुम अच्छी तरह समझ सकते हो। आबकारी विभाग का चपरासी रात में नौ बजे आया। तब महिला के घर में गांव के कुछ लड़के शराब पी रहे थे। आबकारी विभाग के चपरासी को पहचानकर वे भाग खड़े हुए। मगर विधवा के घर अवैध शराब बरामद करने आए चपरासी की हरकते देखने के लिए लड़के घर के पिछवाड़े में छिप गए। चपरासी ने औरत को शराब के अड्डे पर रंगे हाथ पकड़ते हुए धमकाया, "तुम अब बच नहीं सकती। रंगे हाथों पकड़ी गई हो। तुम्हें अभी मेरे साथ थाने चलना पड़ेगा।"

"कानून के चक्कर से अनभिज्ञ देहाती औरत सचमुच बुरी तरह डर गई। उसने सोचा कि अब वह पकड़ी गई है और उसे छह महीने, साल भर जेल की हवा खानी पड़ेगी। तब उसके बच्चों की क्या हालत होगी ? दूसरे कमरे में बिस्तर पर सो रहे बच्चों की तरफ उसने दरवाजे के सुराख से देखा, उसके बाद वह काफी देर तक चपरासी की आंखों मे आंखें डालकर देखती रही। इस बीच घर के पिछवाड़े में छिपे लड़के घर के कोने में आकर खड़े हो गए। उन्होंने देखा—आबकारी विभाग के चपरासी ने कुछ देर तक औरत की आंखों की भाषा पढ़ने की कोशिश की। उसके बाद चपरासी या औरत को मुंह से कुछ कहने की जरूरत महसूस नहीं हुई। उसी जगह दोनों महापाप में लिप्त हो गए। उस दिन के बाद आबकारी विभाग के चपरासी का जब भी जी चाहता है औरत के पास चला आता, वह भी निर्भीकता के साथ धंधा करने लगी। गांव के सारे लोग चपरासी के साथ औरत के संबंध से वाकिफ हैं। पहले का समय होता तो गांव की जनता औरत के बाल मुंड़वाकर उससे प्रायश्चित करवाती। मगर देखते-देखते समय इतना बदल गया कि गांव के लोगों के लिए ऐसी घटना की कोई अहमियत नहीं रह गई है। इसीलिए कह रहा हूं कालिनाथ, अवैध शराब के प्रचलन

ने सिर्फ लोगों की आर्थिक स्थिति ही खराब नहीं की, इसने लोगों के चरित्र को नष्ट कर सीधे-सादे ग्रामीण परिवेश को पाप की लीला-भूमि बना डाला है।''

कालिनाथ ने कहा, ''तुम तो यह सब बातें मुझसे ज्यादा जानते हो। इसीलिए कहता हूं, तुम मेरी मदद करो, दोनों मिलकर इस पाप को मिटाने की कोशिश करते हैं।''

दिवाकर ने कहा, ''तुम क्या करना चाहते हो, मुझे समझाओ तो। हम ठहरे देहात के बुद्धू किसान, इन सब बातों को ठीक से समझ नहीं पाते। और तुम तो देख ही रहे हो, मैं अकेला हूं, खेत के काम से ही सिर उठाने के लिए फुर्सत नहीं मिलती। तुम्हारे साथ समाज के काम के लिए घूमने की फुर्सत मुझे कहां मिलेगी ?''

कालिनाथ ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था, तभी बोहागी हाथ में एक कांसे का लोटा और एक नया गमछा लेकर आई और बोली, ''ककाइदेव, मुंह-हाथ धो लीजिए। खाने का समय हो गया है।''

मुंह-हाथ धोकर कालिनाथ दिवाकर के पीछे-पीछे घर के भीतर गया। वह अपने लिए निर्धारित आसन पर ज्यों ही बैठा, दिवाकर की मां रसोईघर से बाहर निकल आई। जिस घर में खाने का इंतजाम किया गया था उसमें दिन के समय भी अंधेरा था। कालिनाथ सोच रहा था कि दिवाकर की मां भात लेकर आई है। मगर जब वह करीब आई तो उसने देखा, उसके हाथ में एक पात्र था, जिस पर एक नया गमछा रखा हुआ था, दो तांबूल-पान, उसके ऊपर केले का छोटा पत्ता। पात्र कालिनाथ के सामने रखकर दिवाकर की मां ने कालिनाथ को नमस्कार करते हुए कहा, ''आज हमारा कैसा सौभाग्य है, हमारे सात पुरखों के मालिक फुकन देउता के पुत्र को भोजन खिला रही हूं।''

दिवाकर की मां की हरकत देखकर कालिनाथ ने कुछ कठोर स्वर में कहा, ''मांजी, आप यह सब क्या कर रही हैं ? मैं आपके घर में अपने लड़के की तरह मांगकर भात खाने आया हूं। आप मेरे साथ किसी अजनबी आदमी जैसा व्यवहार कर रही हैं।''

वृद्धा ने कालिनाथ की बात पर ध्यान नही दिया, भात लाने के लिए वह भीतर चली गई। फिर वह थाली में भात लेकर आई। पीछे-पीछे बोहागी भी आई। उसके हाथ में एक थाली थी जिसमें तीन कटोरियां रखी हुई थीं। बोहागी ने जैसे ही कटोरियां उसके सामने रखीं, कालिनाथ ने गोश्त की गंध महसूस की। वह बोला, ''शायद गोश्त है। मैंने तो बार-बार बत्तख-कबूतर मारने से मना किया था।''

दिवाकर की मां कुछ दूरी पर बैठी थी। वह बोली, ''आपके मना करने से ही होगा क्या ? आपके सात पुरखों में से कोई भी हमारे आंगन में तो क्या, आंगन के बाहर भी कदम नहीं रखा होगा। आपके परदादा जब हाथी पर चढ़कर कहीं निकलते थे तो लोग घर से बाहर निकलकर उन्हें देखते थे। वैसे घर के आप, आज हमारी

टूटी झोंपड़ी में भात खाने के लिए आए हैं। मैंने फिर भी कहा था कि बोपादेउता को मांस पसंद नहीं है तो वह बनाने की जरूरत नही है। मगर बोहागी ने मेरी बात नहीं मानी। उसने कुछ बत्तखे पाल रखी हैं। उन्हीं को बेचकर वह मेखला-चादर बुनने के लिए धागा खरीदती है। उसी ने जबर्दस्ती एक बत्तख को मारकर मांस बनाया। खाइए बोपादेउता, थाली के पास रुके क्यों हैं ? हम ठीक से खाना नहीं बनाने वाले देहाती लोग हैं, भूनकर-उबालकर जो दिया है, वही एक कौर खा लीजिए।''

कालिनाथ ने तीनों कटोरियों में रखे व्यंजनों को गौर से देखा। एक कटोरी में बत्तख का गोश्त था। दूसरी कटोरी में उड़द की चटनी थी और तीसरी कटोरी में जिमिल साग था। भात के पास ही बैंगन की चटनी थी। थोड़ा-थोड़ा व्यंजन मुंह में डालकर कालिनाथ की इच्छा, खाना नहीं खाने की हुई। किसी भी सब्जी में या गोश्त में मसाले का नामोनिशान नहीं था, तेल भी नाममात्र के लिए दिया गया था। बत्तख का गोश्त भी जैसे पानी में उबाला हुआ लग रहा था। पानी में तैरते सफेद गोश्त के टुकड़े को मुंह में डालते ही उसे लगा कि उल्टी हो जाएगी। मगर अगले ही पल उसे याद आया कि दिवाकर के घर में आज की तरह राजकीय भोजन शायद पहले कभी नहीं बना था, अपने घर के सबसे सम्मानित अतिथि के लिए दिवाकर की मां ने अपनी समस्त पाककला के ज्ञान का इस्तेमाल कर भोजन तैयार किया है। ऐसी स्थिति में मुंह बिगाड़कर, वह खाना नहीं खाएगा तो घर के सदस्यों का दिल टूट जाएगा। उसने पूरी कोशिश की कि मुंह का भाव विकृत न हो पाए और भात-गोश्त एवं सब्जी को चबाने की जगह निगलने लगा। पास बैठी दिवाकर की मां ने एक बार पूछा, ''खाना कैसा है ?'' कालिनाथ ने प्रसन्नता के साथ उत्तर दिया, ''बहुत स्वादिष्ट है मांजी, बहुत ही स्वादिष्ट है।''

खाते हुए कालिनाथ को अतीत के एक-दो अनुभवों की बात याद आई। वह जब शहर में रहकर हाईस्कूल में पढ़ रहा था, तब मोहधूलि और महकमा शहर के बीच बसों की आवाजाही के लिए सड़क नहीं बनी थी। स्कूल बंद होने पर लगभग तीस मील के रास्ते को कई लड़के पैदल ही तय करते हुए घर आते-जाते थे। एक बार गर्मी की छुट्टी में घर लौटते हुए वर्षा के कारण नदी पार करना संभव नहीं देखकर कालिनाथ को दूसरे लड़कों के साथ रात भर के लिए एक घर में ठहरना पड़ा। जब घर के लोगों को पता चला कि कालिनाथ, शिवनाथ फुकन का लड़का है तो उन्होंने अच्छी खातिरदारी की। जब वे रात में भोजन के लिए भीतर गए तो उन्होंने देखा—किरासिन तेल न होने के कारण सरसों के तेल का एक दीया जलाया गया था। दीए की रोशनी एक हाथ की दूरी तक भी नहीं फैल पाई थी। उनके सामने भोजन की थाली परोसी गई, मगर वे थाली को देख नहीं पा रहे थे। जो हो, कालिनाथ ने भोजन शुरू करते हुए अंदाजा लगाया—थाली में भात का ढेर था और कटोरी में सब्जी थी। सिर्फ एक ही सब्जी थी, और कुछ नहीं था। सिर्फ एक सब्जी के

साथ भात दिए जाने पर कालिनाथ अपने पिता का परिचय देते ही पूरे इलाके में राजकीय आतिथ्य का अधिकारी बन जाता था। आखिरकार उसने सोचा कि जंगली जीवन-शैली होने के कारण जंगल क्षेत्र के गांव के निरक्षर गरीब लोग सम्मानित अतिथि के लिए भी एक से अधिक सब्जी बनाने के बारे में सोच नहीं सकते। जो भी हो, खाना शुरू करते हुए उसने सब्जी की कटोरी को टटोला। मगर कटोरी को टटोलते ही उसने महसूस किया कि सब्जी के नाम पर पीसा हुआ चावल परोसा गया था। मोटा आहू चावल का सख्त भात उस पीसे हुए चावल के साथ कैसे खाए—कालिनाथ के सामने यह समस्या पैदा हो गई। उसने इधर-उधर सबकी तरफ देखा। वह एक-दो चावल को उंगली से छू ही रहा था, तब तक सभी आधा भात खा चुके थे। उसे तब और भी हैरानी हुई जब उसने किसी-किसी लडके की थाली के पास मांस की हड्डियों के ढेर को देखा और उनके मुंह से हड्डी चबाने की आवाज सुनी, उसने कटोरी के पीसे हुए चावल को फिर एक बार टटोल कर देखा। हां, उसकी कटोरी में भी पीसे हुए चावल के बीच बत्तख या मुर्गी का गोश्त छिपा हुआ था। इस अभिनव व्यंजन को तैयार करने की विधि की उसने कल्पना करने की कोशिश की। कड़ाही में पहले थोड़ा तेल डालकर गोश्त डाला गया था, फिर पीसा हुआ चावल डाला गया था। उसके बाद पानी डाला गया था। शिवनाथ फुकन के बेटे कालिनाथ जैसे महा-सम्मानित अतिथि के लिए इससे ज्यादा उत्कृष्ट व्यंजन की कल्पना उस घर की गृहिणी ने नहीं की होगी। पेट की तकलीफ का बहाना कर एक-दो कौर भात मुंह में डालकर कालिनाथ भूखा ही उठ गया था।

आज दिवाकर के घर में स्थिति उतनी शोचनीय नहीं थी। फिर भी पानी में उबाले गए अधपके बत्तख के गोश्त को जबरन निगलते हुए वह पसीने से तर-बतर हो गया।

जब सूरज डूबने लगा, तब कालिनाथ दिवाकर के घर से विदा होकर अपने घर की तरफ रवाना हुआ। आने से पहले बोहागी ने एक छोटी पोटली उसे दी और बोली, "ककाईदेव, इस पोटली को जेब में रख लीजिए।"

कालिनाथ पोटली देखकर समझ गया—खाते वक्त उपहार के रूप में दिए गए गमछे को जाते वक्त बोहागी उसे देना भूली नहीं। जीवन में ऐसा मान-सत्कार और आदर-स्वागत इससे पहले उसे कभी नहीं मिला था।

दृष्टि की नीरव भाषा से उसने बोहागी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की। कालिनाथ को गांव की सीमा तक छोड़ने के लिए दिवाकर भी रवाना हुआ। गांव के बीच संकरी सड़क पर दोनों आगे बढ़े। गांव की बहू-बेटियां तब आंगन साफकर कूड़े को बाहर निकाल रही थीं, मवेशी वापस लौटने लगे थे, गांव की हवा धूल की गंध से भारी हो गई थी। कुछ दूर से नदी पार कर रही भैंसों के गले की घंटी की आवाज सुनाई पड़ रही थी। एक-दो घरों के सामने उड़द के पौधे जलाने के बाद

बची राख से एक मधुर गंध निकल रही थी। कुछ दूर आगे जाकर उन्होंने देखा—गांव की कुछ बहू-बेटियां सरसों बटोरकर घर लौट रही थीं। उनके वालों में किसी तरह एक-दो सरसों के फूल लग गए थे, उनके यौवन पुष्ट शरीर में नदी और अरण्य की गंध थी, उनके सरल, शांत चेहरे में शाम की मादकता थी। गांव की इन जानी-पहचानी आवाजों-गंधों के बीच स्वप्न-विभोर व्यक्ति की तरह बढ़ता हुआ कालिनाथ अचानक स्वप्न के जगत से जागकर यथार्थ के ठोस धरातल पर उतर आया। उसने देखा—शर्ट-पैंट पहने तीन युवक साईकिल पर सवार होकर गांव की तरफ आ रहे थे, उनकी दृष्टि में अश्लील संकेत छिपा था और वे अनर्गल बातें कर रहे थे। कालिनाथ के करीब से गुजरते हुए एक युवक ने कालिनाथ को सुनाते हुए कहा, "ए कलीया, शिवनाथ के बेटे को देखा या नहीं ? वह भी छोकरी और दारू की तलाश में समूवा गांव की खाक छान रहा है। लगता है, उसने इस बीच दिवाकर की उफनती जवानी वाली बहन पर डोरा भी डाल दिया है।"

कालिनाथ अचानक ठिठक गया। उसने मुड़कर युवकों की तरफ देखा—अब तक वे काफी दूर जा चुके थे। कालिनाथ के चेहरे के भाव से पता चलता था—वे युवक करीब होते तो वह खून-खराबा किए बगैर मानता नहीं। कुछ देर बाद गुस्से पर काबू पाते हुए उसने दिवाकर से पूछा, "ये लोग कौन थे, दिवाकर ?"

"ये लोग मोहधूलि के सबसे बड़े शराब व्यापारी और गुंडे हैं।" दिवाकर ने जवाब दिया, "शाम ढलते ही ये लोग हमारे गाव में शराब लेने के लिए आते हैं। यहां से भारी मात्रा में शराब ले जाकर ये लोग मोहधूलि बाजार के शराब-विक्रेताओं को देते हैं। आबकारी का आदमी इन्हें चाहकर भी नहीं पकड़ सकते, शाम के वक्त यहां छिपकर सारा दृश्य देखा जा सकता है।"

कालिनाथ ने आगे बढ़ते हुए कहा, "इस बार वे लोग शराब जब्त करते हैं या नहीं, मैं देख लूंगा। तुम जरा मेरी मदद करना।"

गांव की सीमा के पास पहुंचकर दिवाकर ने कहा, "कालिनाथ, मैं यहीं तुमसे विदा लेता हूं। गाय बांधने का समय हो गया है। मैं तुम्हें वचन देता हूं, तुम्हें जब भी जैसी मदद चाहिए, मैं जरूर करूंगा। हमलोगों की जिंदगी मवेशियों की तरह खत्म हो जाती है। अब तुम्हारी संगत में पड़कर लोगों के लिए मनुष्य जैसा कोई काम कर सका तो अपने आप को धन्य समझूंगा।"

8

एक बार सांप काट ले तो उसकी पूंछ तक से भयभीत होने वाले आदमी की तरह शिवनाथ, कालिनाथ के बारे में आशंकित था। उसके मन में यह दृढ़ विश्वास था

कि गलत सगत और महौल में रहकर साफ-सुथरे आदमी पर भी विपरीत प्रभाव पड जाता है। हालांकि उसने रंभा से सुना था कि उसके बिखरे हुए परिवार की जिम्मेवारी कंधे पर उठाने के लिए ही कालिनाथ पढ़ाई-लिखाई छोड़कर घर लौट आया था, फिर भी उसके मन में आशंकाएं बनी हुई थीं। खेत में बिहमेटका की झाड़ी उग आने से घास या फसल के उगने की गुंजाइश खत्म हो जाती है, उसकी नजरों में मोहधूलि का महौल भी वैसा ही बन चुका था। दूसरों को सुधारने आया कालिनाथ एक दिन स्वयं विनाशकारी दायरे में सिमट जाएगा, इस मामले मे वह पूरी तरह निश्चिंत नहीं हो पाया था। कालिनाथ के घर आने के एक महीने बाद तक की उसकी गतिविधियों एवं आचरण ने उसके मन के संदेह को और गहरा बना दिया था। दोपहर खाना खाकर वह घर से निकल जाता है और देर रात में घर लौटता है। मां या बहन उससे कई सवाल पूछकर भी उसका मुंह खुलवा नहीं पातीं। उसके घर लौटने तक वह देर रात तक बरामदे में बैठा रहता है। उसके लौटने पर उसके मुंह से शराब की गंध महसूस करने या उसकी चाल में शराबियों जैसी लड़खड़ाहट देखने के लिए वह नाक-आंख-कान सतर्क कर रखता है। वैसे आज तक उसने शराब नहीं पी है, इतना तो निश्चित है। फिर भी दिन भर वह कहां घूमता फिरता है—यह सब सोचकर वह डर जाता। पानी में डूब रहे आदमी को जैसे तिनके का सहारा मिल जाता है, उसी तरह उसके लिए अब कालिनाथ ही आखिरी सहारा, आखिरी अवलंबन था, वह भी कही दगा दे जाए तो दुनिया में बचे रहने की कोई उम्मीद नहीं रह जाएगी।

एक दिन दोपहर का खाना खाकर वह बरामदे में एक किताब पढ़ रहा था, तभी बाहर से किसी ने आवाज लगाई, "देउता, क्या कर रहे हैं ?"

शिवनाथ ने सिर उठाकर देखा, कैवर्त गांव का मेमेरा था। वह कुछ कह पाता, इससे पहले मेमेरा भीतर आ गया। वह कई दिनों से शालि धान की खेती के लिए उससे कुछ बीघे जमीन मांग रहा था। मगर वह बंटाई के नए कानून के अनुसार पांच हिस्सा धान में से एक हिस्सा धान ही उसे देने के लिए तैयार था। इसी वजह से वह उसे जमीन देने के लिए तैयार नहीं हुआ था। शिवनाथ ने सोचा कि वह फिर जमीन के लिए गुहार लगाने के लिए आया होगा। इसे क्या जवाब दिया जाए। मन ही मन तय करते हुए शिवनाथ ने मेमेरा से पूछा, "दोपहर के वक्त कहां आया है ?"

मेमेरा ने गमछा खोलकर बेंच को पोंछा और बैठ गया। वह बोला, "पान खरीदने बाजार आया था, देउता ! सड़क से आप पर नजर पड़ी तो सोचा, काफी दिनों से देउता का हालचाल नहीं पूछा है, क्यों न आपका दर्शन करता चलूं ? कहने के लिए और तो कुछ है नहीं। मगर देउता, जब आ ही गया हूं तो एक बात कहना चाहूंगा। एक हाथी चाहे तो हजारों गीदड़ को कुचलकर खत्म कर सकता है, मगर एक गीदड़ ने चालाकी के साथ गजराज को गढ़े में धकेलकर उसका मांस भी कभी खाया था न ?"

"तू भी पहेली बुझाने लगा है, रे मेमेरा !"—शिवनाथ ने मन में पैदा हुए डर को छिपाकर कहा, "जो कहना चाहता है, साफ-साफ क्यों नहीं कहता ?"

"हम जैसे मूर्ख आपके सामने क्या पहेली बुझा सकते हैं देउता, आपको जो समझना चाहिए, आप जरूर समझ गए होंगे। मैं आपके मंझले बापू की बात कर रहा हूं। आपके यह पुत्र फुकन वंश के योग्य सपूत बन चुके हैं, देउता ! मझले बापू को घर आए एक महीने ही बीता है, मगर उन्होंने शेर का बच्चा होने का परिचय दे दिया है, मोहधूलि के लोग तो दांतों तले उंगली दबा रहे हैं। मगर कहा न देउता, हाथी के चिंघाड़ने पर गीदड़ दुम दबाकर भागता है, वैसा गीदड़ धूर्तता के सहारे उस हाथी को फंदे में फंसाकर मार भी सकता है।"

मेमेरा की बात सुनकर शिवनाथ ने अपने दिल को डूबता हुआ महसूस किया। वह धीरज खोकर कुछ गुस्से के साथ बोला, "मेमेरा, तू व्यर्थ की बातें छोड़कर असली बात बता।"

"तो असली बात ही बताता हूं, देउता !"—मेमेरा ने सिर पर गमछा बांधते हुए कहा, "देउता, एक तांबूल मिलेगा क्या ? कल रात से एक तांबूल तक नहीं खा पाया हूं, मुंह में कुछ अजीब-सा स्वाद मालूम पड़ रहा है। घरवाली के चलते घर में पान भी नहीं बचा रहता। सुवह जागने के साथ-साथ उसे तांबूल की जरूरत पड़ती है।"

मेमेरा से मूल बात सुनने के लिए और कितनी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, यह सोचते हुए शिवनाथ ने आवाज दी, "नकुल, अरे नकुल, कोई है, मेमेरा को एक तांबूल दे जा।...खैर, तू बता तो सही, तांबूल मिल जाएगा, तू चिंता मत कर।"

"देउता, पहले की बातें पहले बता देता हूं। बाजार में रेडियो का गाना सुनने के लिए अक्सर शाम के वक्त मैं वहीं बैठा रहता हूं। यह सब चक्कर शुरू नहीं होने से पहले हमारे गांव के नामघर में शाम होते ही नाम-कीर्तन या भावना की तैयारी होती थी। मगर मोहधूलि शहर क्या बना, बाजार में रेडियो के गाने इतने जोर से बजने लगे कि नामघर में जाने का किसी का जी नहीं करता। हमारे गांवों में गाने-बजाने और भावना के खेल की परंपरा खत्म ही हो जाएगी, ऐसा लगता है देउता, वादक के पास गाना-बजाना सीखने के लिए एक भी लड़का नहीं जाता। शाम होते ही सबके सब बाजार में जुट जाते हैं। उनमें से अधिकतर दारू के आदी हो चुके हैं। जिसके घर में फूटी कौड़ी भी नहीं, वह भी छककर दारू पीता है। कैवर्त गांव के लोगों की औकात दो वक्त भात खाने लायक भी नहीं है, वैसी हालत में गांव के लड़के जो मछली पकड़ते हैं, उसे बेचकर दारू की घूंट हलक के नीचे उतारे बिना उन्हें चैन नहीं मिलता। उस दिन नदीराम के बेटे ने दूसरों की नकल करते हुए पहली बार शराब पीकर खून की उल्टियां कीं—यह सब बातें अभी नहीं कहूंगा, देउता ! लड़कों का दोष ज्यादा नहीं है। शाम का वक्त गुजारने के लिए पहले भावना

पर्व वगैरह एक के बाद एक होते ही रहते थे। अब वह सब पुरानी याद बन चुकी है। शाम का समय गुजारने के लिए वे अब बाजार में चले जाते हैं। वहां वे हमेशा दारू और जुए के अड्डे को देखते हैं। आग के पास घी रहेगा तो पिघलेगा ही।"

ऐसा लगा मानो शिवनाथ के धैर्य का बांध टूट जाएगा, फिर भी उसने शांत स्वर में कहा, "कल शाम बाजार में तूने क्या देखा था, वही बता।"

"हां-हां देउता, असली बात मैं भूल ही गया था।" इस बीच तांबूल आ गया था, मुंह में तांबूल डालकर चबाते हुए मेमेरा कहने लगा, "हमेशा की तरह कल भी बाजार गया था। आप जानते होंगे देउता, शिवसागर के टंकेश्वर नामक एक दर्जी ने यहां भी दुकान खोली है, रात में उसकी दुकान में दारू और जुए का दौर चलता है। कल भी वही हाल था। थाने से आठ बजने की घंटी की आवाज सुनाई पड़ी थी। अचानाक टंकेश्वर की दुकान में अफरातफरी मच गई। मैं भी और लोगों के साथ वहां का हाल देखने के लिए चला गया। बात यह थी कि वे दारू पीए जा रहे हैं, मगर नशा नहीं हो रहा है। किसी ने कहा—फजल दारू में पानी मिलाकर बेच रहा है। फजल भी उनके साथ जुआ खेल रहा था। उसके साथ उनका काफी विवाद हुआ, विवाद के दौरान ही किसी के मुंह से गाली निकल गई, देखते-देखते शुरू हो गई हाथापाई और कुरुक्षेत्र का युद्ध शुरू हो गया। किसी ने दारू की बोतल से फजल के सिर पर वार किया। उस दृश्य के बारे में मैं आपको कैसे बताऊं देउता, खून की नदी बहने लगी। जो झगड़ा देख रहे थे, वे भी बीच-बचाव करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। फजल पर वार करने वाले कलीया नामक लड़के के हाथ में टूटी हुई दारू की बोतल थी और वह दुश्शासन का खून पीने के लिए तैयार भीम की तरह नजर आ रहा था।"

मेमेरा नाटकीय रूप से चुप हो गया। मेमेरा के इस नाटक में कालिनाथ की क्या भूमिका हो सकती है, शिवनाथ यह सोचकर हैरान हो उठा। उसने व्याकुल होकर पूछा, "उसके बाद ?"

शिवनाथ जैसे व्यक्ति को अपनी बात सुनने के लिए इतना बेचैन बना देने की खुशी को महसूस करते हुए मेमेरा ने कहा, "उसके बाद देउता, जैसे जमीन फाड़कर आपके मंझले बापू अचानक कहीं से उस झगड़े के बीच आ गए। वे कुछ पल तक चुपचाप उस कुरुक्षेत्र का नाटक देखते रहे। दरअसल वह कुरुक्षेत्र नहीं था देउता, मैं गलत बोल गया। वह तो मूसल पर्व था, प्रभास तीर्थ में दारू पीकर यादवों ने आपस में मार-काट कर जिस तरह स्वयं को नष्ट कर डाला था। जो भी हो, मंझले बापू गुस्से के साथ कुछ देर तक सब कुछ देखते रहे। बीच में सिर्फ उन्होंने एक बात कही, "देश में क्या जंगलराज है ? थाने के सामने ऐसी गुंडागर्दी कैसे चल सकती है ?" यह कहकर वे फौरन थाने की तरफ तेजी से बढ़े। मैं भी कुछ लोगों के साथ उनके पीछे बढ़ा। वे दारोगा के घर के दरवाजे के सामने खड़े हो गए। उनके पीछे

हमलोग थे।

दारोगा के घर में हमने जो नजारा देखा देउता, हमारी आंखें फटी की फटी रह गईं। दारोगा अपने दोस्तों के साथ बैठकर दारू पी रहा था। उसके साथ कांग्रेस प्रेसीडेंट रेब महाजन, वी. डी. पी. सेक्रेटरी कुश सुतीया, हाईस्कूल का मास्टर नंद सैकिया, डाक्टर बाबू और वकील देबेन गगै दारू पी रहे थे। दरवाजे के पास मंझले बापू को देखकर दारोगा ने घूरते हुए कड़ककर पूछा—कौन हो तुम, क्या चाहिए तुम्हें ? मंझले बापू ने कुछ कहने से पहले वहां मौजूद सभी लोगों के चेहरे की तरफ देखा। दारोगा मंझले बापू को पहचान नहीं पाया था, मगर दूसरे लोग पहचान गए थे और शर्म से मुंह छिपाने की कोशिश कर रहे थे। मंझले बापू ने मजाक उड़ाते हुए कहा—ओह ! अब समझा। कांग्रेस प्रेसीडेंट, वी. डी. पी. सेक्रेटरी सब मिलकर दारोगा बाबू के घर मे शराबबंदी की मीटिंग कर रहे हैं। इसीलिए मोहधूलि में चारों तरफ शांति है।

दारोगा ने गुस्से से खौलते हुए कहा—ए, कौन हो तुम, दारोगा के सामने इस तरह जुबान लड़ाने की हिम्मत कर रहे हो ? जूते की ठोकर से थोबड़ा बिगाड़कर रख दूंगा, मुझे पहचानता नहीं ?

रेब महाजन ने दारोगा की पीठ पर चिकोटी काटकर उसे शांत करने की कोशिश की, मगर नशे में चूर दारोगा उसका संकेत समझ नहीं पाया। कालिनाथ पर क्रोध करने के कारण उसका जितना नशा खराब हुआ था, उसकी भरपाई करने के लिए उसने गिलास में दारू उड़ेलकर पी ली।

मंझले बापू ने शीत स्वर में कहा, दारोगा बाबू, आपके थाने के सामने ही कुछ गुंडे शराब पीकर खून-खराबा कर रहे हैं। एक तो इतना घायल है कि शायद मर ही जाएगा। ऐसी घटना सिर्फ आज ही नहीं घटी है, रोजमर्रे की बात बन चुकी है। आपकी आंखों के सामने थाने से बीस हाथ की दूरी पर ऐसी घटना कैसे घट सकती है ? रुकिए, रुकिए, मुझे एक और सवाल पूछना है। जहां तक मुझे मालूम है, देशी दारू तैयार करना और बेचना दोनों ही कानून की नजर में अपराध है। वैसी हालत में आप खुद एक कानून के रक्षक होते हुए अपने घर में दारू का अड्डा चलाने के लिए दारू कहां से लाते हैं ?

दारोगा ने गुस्से के साथ कहा—वाह ! तुम उंगली हिला हिलाकर दारोगा बाबू से सफाई मांग रहे हो। तुम्हारी हिम्मत कम नहीं है, तुम अभी यहां से दफा हो जाओ। नहीं तो मैं तुम्हें लॉकअप में बंद कर दूंगा।

दारोगा की बात सुनकर मंझले बापू कुछ देर चुप रहे। मैंने उनके चेहरे की तरफ देखा जो गुस्से से आग की तरह लाल हो चुका था। दारोगा के घर में कोई मारपीट न हो जाए, इस डर से मैं कांप उठा। अचानक मंझले बापू के चेहरे का रंग बदल गया। उन्होंने शांत स्वर में रेब महाजन और नंद सैकिया समेत दूसरे लोगों

की तरफ देखकर कहा, मगर आपलोग साक्षी रहेंगे, बाद में झूठ नहीं बोलेंगे। दुनिया भर के धूर्त-बदमाश अफसर मोहधूलि में आकर खुद को राजा समझने लगते हैं। वे समझते हैं कि यहां कोई आदमी नहीं रहता। इस जगह को अगर किसी ने बिगाड़ा है तो इन बदमाश अफसरों ने ही बिगाड़ा है। मगर मैं इस दारोगा के खिलाफ ऊपर लिखूंगा। आपलोगों को साक्षी रहना पड़ेगा।...और सुन लो मेमेराकाई, भोगमनकाई, तुमलोगों को भी साक्षी रहना पड़ेगा।

इतना कहकर मंझले बापू वहां से तेजी से चले गए। हम भी उनके पीछे रवाना हुए। मैं थाने के गेट तक पहुंचा ही था तभी एक सिपाही दौड़ता हुआ आया और बोला, सुनो, तुम्हें दारोगा बाबू ने अभी बुलाया है। मुझे तो लगा कि मेरी जान निकल रही हो। बड़े लोगों की लड़ाई में कहीं मैं तो मारा नहीं जाऊंगा ? जो भी हो, जान हथेली पर लेकर दारोगा बाबू के पास पहुंचा। जाकर देखा, मंझले बापू की फटकार सुनकर उसका नशा खत्म हो चुका था। जीवन में शायद ऐसी फटकार उसने पहले कभी नहीं सुनी थी। मुझे देखकर दारोगा बोला—क्या रे मेमेरा, तू भी आजकल देशप्रेमी बन गया है क्या ? सुन, जो कह रहा हूं, गौर से सुन, नहीं तो अंजाम बुरा होगा। बड़े बाप का बेटा मुझे मेरे ही घर में कितना अपमानित करके चला गया, तूने तो खुद अपनी आंखों से देखा न। इससे पहले कि वह ज्यादा बढ़े, उसे ठंडा करना पड़ेगा नहीं तो पूरे मोहधूलि में आग लगा देगा। उसके कारण लडके कहीं शांति के साथ ताश खेलने के लिए भी नहीं बैठ सकेंगे। तूने आज अपनी आंखों से देखा—वह दारू के नशे में चूर होकर आया और थाने में गड़बड़ी फैलाई। जरूरत पड़ी तो भविष्य में तुझे उसके खिलाफ गवाही देनी पड़ेगी।

दारोगा की बात सुनकर चौंकते हुए मैं कुछ कहना चाहता था। तभी उसने डपटकर कहा—तू और क्या कहना चाहता है ? तूने अपनी आंखों से देखा, दारू के नशे में चूर होकर उसने थाने में गड़बड़ी फैलाई। पहला दिन था, इसीलिए मैने उसे चेतावनी देकर छोड़ दिया। मगर इसके बाद जिस दिन उसे दारू की बोतल के साथ रंगे हाथों पकड़ लूंगा, उस दिन मैं उसे छोडूंगा नहीं। तुझे तब गवाह रहना पड़ेगा। नहीं तो उसके साथ तुझे भी लपेट लूंगा। तू आज के बाद उसके पीछे-पीछे घूमता नजर नहीं आएगा। वह बहुत खतरनाक आदमी है। समझा, वह एक कम्यूनिस्ट है। उसके साथ रहना कानून की नजर में अपराध है। मुझे बहुत दिनों से रिपोर्ट मिल रही थी—शिवनाथ फुकन का दूसरा बेटा अधकचरी कालेजी पढ़ाई छोड़कर मोहधूलि में अब कम्यूनिस्ट का काम कर रहा है। साथ ही रात में वह दारू-भांग का धंधा भी करता है। नाम तो काफी सुन रखा था, मगर चेहरे से नहीं पहचानता था। लेकिन आज अच्छी तरह पहचान गया। मेमेरा, तू यह बात जानता है या नहीं, बड़े बाप का यह बेटा रात-रात भर घर में न रहकर समूवा गांव के एक आदमी के घर में पड़ा रहता है ? समूवा गांव में कौन ऐसा घर है जहां दारू का कारोबार

नहीं होता ? इसके अलावा जिस घर में इसका आना-जाना है, सुना है उस घर में वेश्या प्रवृत्ति की एक सुंदर छोकरी रहती है। क्यों भाई सैकिया, आपने ही कहा था न कि यह लड़की एल. पी. स्कूल में मास्टरनी की नौकरी पाने के लिए रहमान या क्या नाम था, उस स्कूल के एस. आई. के साथ दिनदहाड़े डाकबंगले में हमबिस्तर हो गई थी ? मेमेरा, तू ही मुझे बता, तेरे इस बड़े बाप के बेटे के मन में दारू या छोकरी के लिए कमजोरी नहीं होती तो क्या वह भले घर का लड़का होकर भी समूवा गांव के उस फटीचर आदमी के घर मे आधी-आधी रात तक क्यों डेरा डाले रहता ? उसने आज मेरा जो अपमान किया है मेमेरा, मैं उसका बदला लेकर रहूंगा। समूवा गांव से लौटते हुए एक दिन मैं उसे दारू की बोतल के साथ धर दबोचूंगा, और थाने में लाकर लाकअप में बंदकर जूते की ठोकर से उसका थोबड़ा बिगाड़कर रख दूंगा।''

मेमेरा ने एक ही सांस में लंबी कहानी समाप्त कर सांसों पर काबू पाने के लिए कुछ देर चुप रहा। उसने सोचा था कि इस दौरान शिवनाथ उससे कोई प्रश्न पूछेगा, मगर वह चुप ही रहा। विस्मय के कारण वह स्तब्ध हो गया था। मन में नए सिरे से भय और आशंका का भाव पनपा जो भीतर ही भीतर उसे कमजोर करने लगा।

उसे खामोश पाकर मेमेरा ने फिर कहना शुरू किया, ''दारू के नशे में दारोगा बाबू ने और जितनी बातें कहीं, सारी बातें आपसे कहने की मेरी हिम्मत नहीं है। कुल मिलाकर मैंने एक बात समझ ली कि दारोगा बाबू, नन्द सैकिया, रेब महाजन—ये सारे लोग मंझले बापू से बुरी तरह नाराज हैं और उनके खिलाफ कोई गहरी साजिश रच रहे हैं। मोहधूलि के शराबी गुंडों का रवैया भी मझले बापू के प्रति ठीक नहीं लगता। इसीलिए मैंने सीधे आकर देउता को बता दिया—गीदड़ हाथी को ताकत से तो नहीं पछाड़ सकता, मगर धूर्तता से जरूर पछाड सकता है। आप मंझले बापू पर जरा ध्यान दें।...मैं अब चलता हूं देउता, बातें करते-करते सूरज सिर पर चढ़ गया। आज बाजार में पान मिलेगा या नहीं, कह नहीं सकता। ओह देउता, बातें करते-करते असली बात कहना तो मैं भूल ही गया। इस साल मुझे एक 'पूरा' जमीन देनी ही पड़ेगी। अब आपका ही भरोसा है।''

मेमेरा की आखिरी बात शिवनाथ ने ठीक से नहीं सुनी, उसके मन में भय और आशंका का भाव उसे मथने लगा। कालिनाथ का उद्देश्य सही है और वह अच्छा काम ही कर रहा है, इस बारे में कोई संदेह नहीं। उसने स्वयं युवावस्था में कई अच्छी-अच्छी बातें सोची थीं, मगर किसी काम में वह स्वयं जुटा नहीं था। देखते और सोचते हुए ही उसका सारा जीवन बीत गया। मगर बेटे ने सिर्फ सपने ही नहीं देखे, वह काम करने की भी कोशिश कर रहा है। यह सचमुच आशा का संकेत है, उसने मन ही मन सोचा, चूंकि जिस महौल और समाज व्यवस्था में उसके जैसा

आदमी दूसरों की मेहनत की कमाई जीवन भर बैठे-बैठे खाता था वह समाज-व्यवस्था तेजी से टूट रही है। जो नया समाज और मूल्यबोध तैयार हो रहा है, उसके तहत कालिनाथ की पीढ़ी को बैठे-बैठे जीवन गुजारने का सौभाग्य नहीं प्राप्त होगा। अपने काम के जरिए उन्हें नए समाज के लिए स्वयं को उपयोगी बनाना पड़ेगा। मगर-मगर—तरह-तरह की आशंका से शिवनाथ का हृदय कांप उठा—कालिनाथ के चारों तरफ साजिश का जाल फैलता जा रहा है, उस जाल को तोड़कर बाहर निकलने में वह सफल हो पाएगा ? क्या वह कभी कोई गलती नहीं करेगा ? समूवा गांव की वह लड़की कौन है—जिसके साथ इस तरह कालिनाथ का नाम जोड़ा जा रहा है ? इस बात में दुश्मनों की फैलाई झूठी अफवाह शामिल है या सचाई है ? समूवा गांव के अधिकतर लोग उसके परिवार के नौकरों के वंशज हैं। आखिरकार भाग्य उसके साथ अंतिम बदला लेगा, और उसके जीते जी फुकन वंश की मर्यादा का ऊंचा किला धूल में मिल जाएगा ? हे भगवान, वह चरम पतन देखने के लिए वह जीवित नहीं रहे, उससे पहले मृत्यु आकर उसका उद्धार कर दे।

तब अपराह्न का समय था, मगर शिवनाथ की आंखों के सामने जैसे अमावस की रात का गहरा अंधेरा नजर आने लगा था।

9

उस दिन भी कालिनाथ को घर लौटते हुए काफी रात हो चुकी थी। भोजन करने के बाद शिवनाथ उसकी प्रतीक्षा में बाहर बैठा हुआ था। शाम के वक्त दारू के नशे में धुत्त होकर लक्ष्मीनाथ आया था, काफी देर तक शोरगुल करने के बाद जब पिता ने कोई जवाब नहीं दिया तो मां का बक्सा तोड़कर एक नई एंड़ी की पोशाक लेकर चला गया। शिवनाथ के साथ ही घर के सारे सदस्य इतने टूटे हुए और हताश थे कि किसी ने भी उसे रोकने की हिम्मत नहीं की। भयकर थकान और यंत्रणा के कारण शिवनाथ लगभग टूट चुका था, किसी तरह बिस्तर पर लेटने से उसे राहत मिलती। मगर आज उसे कालिनाथ से बात करनी ही पड़ेगी। अपने कलेजे की धड़कन और कराहने की आवाज सुनते हुए वह बरामदे में बैठा रहा।

जैसे ही कालिनाथ आंगन में पहुंचा, शिवनाथ ने पुकारा, ''मंझले बापू !'' कालिनाथ ने अंधेरे में पिता को देखा नहीं था, अचानक पिता की आवाज सुनकर वह चौंक पड़ा। इसके अलावा, असामान्य क्लांति और दर्द में डूबकर विकृत आवाज निकली थी, जिसे सुनकर किसी दुर्घटना या विपत्ति की आशंका से कालिनाथ का हृदय कांप उठा। वह जहां खड़ा था वहीं से बोला, ''क्या बात है, देउता ? आप अभी तक सोए नहीं ?''

"मैं तेरी राह देख रहा हूं।" शिवनाथ ने थके हुए स्वर में कहा, "इधर आ। तुझसे कुछ बात करनी है।"

कालिनाथ को और अधिक आश्चर्य हुआ। बातचीत जिसे कहते हैं, वैसी बातचीत उसके पिता ने अपने बेटों से कभी नहीं की। उस घर में पिता-पुत्र की बातचीत अक्सर मां या बहन के जरिए ही होती थी। शंकित होकर वह बरामदे पर चढ़ गया और दीवार के पास बेंच पर बैठ गया।

शिवनाथ कुछ देर चुप रहा। बातें कैसे और कहां से शुरू करें—तय नहीं कर पाया। उसके बाद अचानक उसने सोचा कि व्यर्थ की भूमिका बांधने की जरूरत नहीं है, असली बात से ही शुरुआत करनी चाहिए। उसने बेटे से पूछा, "तू हमेशा देर रात तक कहां घूमता रहता है ?"

यह बाद पूछने के लिए पिताजी को एक महीने तक क्यों प्रतीक्षा करनी पडी, यह सोचकर कालिनाथ को मन ही मन कुछ हैरानी हुई। बाहर से सहजता का भाव दर्शाते हुए वह बोला, "देउता, मैं मोहधूलि में अवैध दारू का धंधा बंद करवाने की कोशिश कर रहा हूं। छोटा बापू शराबी बनकर अपने घर का सर्वनाश कर चुका है। मगर उसे समझा-बुझाकर शराब छुड़वाने की अब कोई आशा करना फिजूल है। सिर्फ हमारे घर में ही नहीं, मोहधूलि के कई घरों मे शराबियों के अत्याचार की वजह से हाहाकार की स्थिति पैदा हो गई है। मैंने काफी विचार करके देखा है, जब तक समूचे इलाके में अवैध दारू का धंधा बंद नहीं होगा तब तक शराबियों के उत्पात को रोकना संभव नहीं होगा।"

"यह तो समझ गया"—शिवनाथ बोला, "तू एक अच्छा काम कर रहा है। मगर दारू का धंधा बंद करवाने के लिए देर रात तक घूमकर तू क्या कर रहा है ? आज ही तू इतनी रात तक कहां था ? क्या कर रहा था ?"

"तब तो आपको काफी बातें बतानी पड़ेंगी।"—कालिनाथ ने एक लंबी बातचीत के लिए स्वयं को तैयार किया, "यह काम मैं अकेले नहीं कर सकता। इसके लिए मुझे एक विश्वासी साथी की जरूरत है। समूवा गांव में मेरा एक दोस्त है। बचपन में हमलोग एक साथ स्कूल में पढ़ते थे। वह बहुत अच्छे स्वभाव का था, पढ़ाई-लिखाई में भी काफी तेज था। मगर घर की गरीबी की वजह से उसे पांचवीं कक्षा मे ही स्कूल छोड़ देना पड़ा। समाज का काम करने के लिए मैंने उसे ही अपना साथी चुना है। उसके पास दिन में समय नहीं होता, खेत के कामों से उसे जरा भी फुर्सत नहीं मिलती। इसीलिए रात में मैं उसके पास जाता हूं। देउता, आप तो जानते ही हैं अवैध दारू का धंधा बंद करवाने के लिए मोहधूलि में एक आबकारी विभाग है जिसमें कई कर्मचारी हैं। मगर वे दारू जब्त करने की जगह अवैध दारू का धंधा चलाने में भरपूर मदद ही करते हैं। मैं पहले इन सब बातों को ठीक से नहीं जानता था, यह सब जानने के लिए मुझे दिवाकर के साथ गांव-हाट के चक्कर लगाने पड़े हैं।

बचपन से ही शहर में पढ़ाई करने की वजह से गांव के साथ मेरा कोई नाता नहीं रहा। घर में रहते हुए भी आपने हमें गांव के लोगों के साथ घुलने-मिलने नहीं दिया। अब गांव में ही हमेशा रहकर कुछ काम करने के लिए लौटने के बाद मैने देखा—गांव के समाज को जाने बगैर कोई काम शुरू कर पाना सभव नहीं हो सकता। मुझे घर लौटने में हमेशा जो देर होती है—उसका एकमात्र कारण है, दिवाकर के साथ मैं गांव-गांव घूमता हूं। अब तक मोहधूलि क्षेत्र के अधिकतर गांवों में मैं घूम चुका हूं।''

कालिनाथ की बातें सुनकर शिवनाथ ने महसूस किया—उसकी नजरों में रो-रोकर भात खानेवाला कालिनाथ अब बच्चा नहीं रहा, बल्कि इस बीच जवान हो चुका है। अचानक उसनेमहसूस किया कि उसका बेटा एक अजनबी भद्रलोक बन चुका है। बेटा जैसे उसके आश्रय और अधिकार से बाहर जा चुका है—कालिनाथ के प्रति ऐसी दूरी उसने जीवन में पहली बार महसूस की। अपना अधिकार फिर कायम करने के लिए उसने व्यंग्यपूर्ण अंदाज में पूछा, ''गांव-गांव जो घूम रहा है, यह बात भी समझ गया। मगर अवैध दारू का धंधा बंद करने का काम कितना हो पाया है ? तू अपने दोस्त के साथ रात-रात भर गांवों में घूमेगा तो क्या शराबी डर कर दारू पीना छोड़ देंगे ? आज शाम ही छोटा बापू दारू पीकर घर में एक लंकाकांड दिखाकर चला गया।''

कालिनाथ के संवेदनशील मन ने पिता के व्यंग्य को तत्काल अनुभव किया। वह यह भी समझ गया कि उन्होंने उसकी बातों को गंभीरतापूर्वक स्वीकार नहीं किया। भारतीय माता-पिता अपनी संतान को आसानी से आजादी देना नहीं चाहते। उन्हें जल्दी बड़ा होने देना नहीं चाहते, जितने दिनों तक संभव हो संतान को नियंत्रण में रखना चाहते हैं—पिता की बातों से उसे इसी भाव का अनुमान हुआ। स्वाभिमान पर ठेस लगने के कारण वह कुछ देर खामोश रहा। उसके बाद शांत एवं भावहीन स्वर में वह कहने लगा, ''देउता, एक बात मैं आपसे खुलकर कह देता हूं। अवैध दारू का धंधा मोहधूलि की एकमात्र समस्या नहीं है। यह बात भी सच नहीं है कि अवैध दारू का धंधा बंद होने पर मोहधूलि रातोंरात स्वर्ग बन जाएगा। मगर समाज की एक समस्या के साथ दूसरी समस्या इस तरह जुड़ी हुई है कि एक समस्या की छानबीन करने पर दूसरी कई समस्याओं की असलियत उजागर हो सकती है। मान लीजिए, चोट लगने से किसी आदमी को घाव हो जाता है। काफी इलाज करने पर भी घाव ठीक नहीं होता। डाक्टर उसका इलाज करने के लिए उसके पूरे शरीर की जांच करता है। तब डाक्टर को पता चलता है कि उस आदमी को बहुमूत्र रोग है, हाई ब्लड प्रेशर है, पेट में अल्सर है—इत्यादि। तब वह घाव का इलाज करने की जगह बहुमूत्र रोग का इलाज पहले करेगा। समाज के साथ भी यही मामला है। हमारे गांव-देहात में पहले कहीं अवैध दारू का प्रचलन नहीं था। अब यह प्रचलन कैसे

है ? पहले कोई शराब पीकर नामघर के परिसर में कदम भी रखता था तो गांव का समाज उसे बहिष्कृत कर देता था। आजकल परिसर की बात तो दूर है, दारू के नशे में धुत होकर कोई गांव के वार्षिक भावना में श्रीकृष्ण की भूमिका भी निभाए या मणिकूट के पास चला जाए तो गांव के लोग इसे कोई दोष नहीं मानेंगे। क्यों नहीं मानेंगे ? पहले बच्चे मां-बाप से डरते थे और उनकी बात मानते थे, अब क्यों नहीं मानते हैं ? पहले सरकारी कर्मचारी अफसरों से बाघ की तरह डरते थे और डर के मारे अपने कर्तव्य का ठीक से पालन करते थे, आजकल क्यों नहीं करते ? ...ऐसे हजारों सवाल हैं जिनके जवाब तलाशे बगैर एक सिरे से सड़ रहे समाज के इलाज का काम शुरू नहीं किया जा सकता।

मैं यह दावा नहीं करता कि मैं समाज का इलाज कर उसे सभी बीमारियों से मुक्त कर दूंगा या समाज की सारी समस्याओं का समाधान कर सकूंगा। मोहधूलि पूरा असम या पूरा भारत नहीं है। जब सारा देश बीमार है, तब एक हिस्से का स्वस्थ रह पाना संभव नहीं है। मगर पतीली के एक चावल को छूकर जिस तरह उसके पकने का अंदाजा लगाया जा सकता है, उसी तरह मोहधूलि की एक सामान्य समस्या यानी अवैध दारू के कारोबार की समस्या को मैं एक टैस्ट केस के रूप में ले रहा हूं। मैं सिर्फ एक ही बात जानना चाहता हूं—अवैध दारू के धंधे के खिलाफ सरकार का एक कानून है, उस कानून को लागू करने के लिए मोहधूलि में कई सरकारी कर्मचारी हैं, फिर भी यहां वह कानून लागू क्यों नहीं हो पाया है ? मैं समझता हूं, इस सवाल का जवाब ढूढने के साथ ही एक जटिल पाप-चक्र के अस्तित्व का पता लगा लूंगा। चुल्लू भर पानी में समूचे आसमान की परछाईं देखने की तरह मैं इस छोटे-से मोहधूलि में समूचे देश की परछाई देखने की कोशिश कर रहा हूं।''

कालिनाथ ने जीवन में कभी शायद एक साथ इतनी बातें नहीं कही थीं। पिता के सामने इतनी सारी बातें कहने का तो कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। बात पूरी करने के बाद अचानक उसने महसूस किया कि सारी घटनाएं काफी नाटकीय हो चुकी हैं। थोड़ी शर्म और हिचक महसूस कर वह चुप हो गया।

कालिनाथ की मां ने बाहर आकर कहा, ''आप बाप-बेटे को क्या हो गया है ? इतनी सर्दी में आधी रात तक बाहर बैठे-बैठे बात करने की क्या जरूरत है ? इधर भात भी ठंडा होकर कंकड़ बन चुका है। अगर इतनी ही बात करनी है तो अलाव के पास बैठकर भी कर सकते हैं।''

कालिनाथ खड़ा होकर भीतर जाना चाहता था, तभी शिवनाथ ने कहा, ''तू जरा ठहर।'' फिर पत्नी की तरफ देखकर बोला, ''तुम भीतर चलो। हम आ रहे हैं।''

शिवनाथ की पत्नी बड़बड़ाती हुई भीतर चली गई। शिवनाथ बेटे को उत्सुक बनाते हुए कुछ पल चुप रहा। आश्चर्य है—उसने मन ही मन सोचा—उसने तीन बेटों

का पालन-पोषण किया, मगर पिता होते हुए भी तीनों बेटों के भीतर अलग-अलग कैसी अद्‌भुत संभावना छिपी हुई थी, इस बात की कभी कल्पना ही नहीं कर पाया था। वैसे एक मामले में तीनों बेटों में समानता है—उसने जैसे अचानक पता लगाया—उसके तीनों बेटे विद्रोही हो चुके हैं। गौरीनाथ पिता के साथ और प्रचलित सामाजिक प्रथा के खिलाफ विद्रोह कर असवर्ण के साथ विवाह कर घर छोड़कर चला गया। छोटे बेटे लक्ष्मीनाथ ने भी जीवन के खिलाफ विद्रोह कर आत्मनाश का पथ चुन लिया है। अब मंझला बेटा भी विद्रोह करना चाहता है, वैसे उसका विद्रोह समाज के भ्रष्टाचार और अन्याय के खिलाफ है। मगर एक दिन वह शिवनाथ के खिलाफ भी विद्रोह नही करेगा, इस बात की क्या गारंटी है ? दोपहर में मेमेरा ने जो बातें कही थीं, उसने फिर उन बातों को याद किया। काफी देर बाद चुप्पी तोडते हुए उसने कहा, ''मझले बापू, सुन, तू जो काम करना चाहता है वह सचमुच अच्छा काम है। मोहधूलि में अवैध दारू का धंधा बंद कर देने से देश का भला हो या न हो, मेरा अपना भला जरूर हो जाएगा। दिन-रात एक शराबी कपूत के अत्याचार से मेरी रक्षा हो सकेगी। मगर औरों को कीचड़ से निकालने के लिए अगर खुद तुझे कीचड़ में सराबोर होना पड़े, तब बात बहुत बुरी होगी। तू समूवा गांव के जिस दोस्त के घर में हमेशा जाता है, सुना है उसकी एक बहन है, मैने अपने एक विश्वासी आदमी के मुंह से सुना है, लड़की का चरित्र ठीक नहीं है। मैं तेरा पिता हूं, फिर भी मजबूर होकर कुछ न कहने लायक बातें कह रहा हूं। कहते हैं कि उस लड़की ने एल. पी. स्कूल की मास्टरनी की नौकरी पाने के लिए स्कूल के सब-इंस्पेक्टर के साथ व्यभिचार किया था। मै तुझ पर शक नहीं करता, तुझ पर मुझे पूरा भरोसा है। मगर जो लोग समाज की अच्छाई के लिए काम करते हैं, उन्हें खुद अच्छा होने से काम नहीं चलता, समाज को भी उन पर उंगली उठाने का कोई मौका नहीं देना चाहिए। तू समाज के कई ताकतवर लोगों के खिलाफ लड़ाई शुरू कर रहा है। वे लोग हमेशा तेरा चरित्र-हनन करने की कोशिश करेगे। इस बीच वे लोग तेरा नाम उस लडकी के साथ जोड़कर उल्टी-सीधी बातें फैलाने भी लगे हैं। याद रख, तू ही मेरे लिए आखिरी आशा है। तेरे साथ कोई गलत घटना घटी, तो मरकर भी मुझे शांति नहीं मिलेगी। समाज का काम करना चाहता है तो कर, मगर मेरी बात अगर मानना चाहता है और इस बुढ़ापे में मुझे थोड़ी शांति देना चाहता है तो तू आज से उस आदमी के घर नहीं जाएगा। तुझे जब भी दोस्त की जरूरत पड़े, नकुल को भेजकर उसे बुला लेना।''

कालिनाथ को कुछ भी कहने का मौका दिए बगैर शिवनाथ थके कदमों से पादुका की मध्यम आवाज के साथ भीतर चला गया। वज्र से आहत मनुष्य की तरह कालिनाथ एक ही स्थान पर स्तब्ध होकर बैठा रहा।

10

देर रात तक कालिनाथ को नीद नहीं आई। उसने स्पष्ट रूप से अनुभव किया—उसके जीवन में संभवतः पहली बार एक भयंकर संकट की घड़ी आ गई है। पिता ने उसे दिवाकर के घर जाने से मना कर दिया है। बात सुनने में मामूली लगती है। मगर यह बात उसके लिए मामूली नहीं है, क्योंकि आज उसके सामने दो कर्तव्यों के बीच एक को चुनने की कठिन समस्या खड़ी हो गई है। वह चुपचाप पिता के निर्देश का पालन करते हुए दिवाकर के घर जाना बंद कर देगा, या अपने विवेक के निर्देश को मानकर अपनी मर्जी का पालन करते हुए पिता की बात नहीं मानेगा ? उसके लिए दोनों पथ कठिन हैं। अगर वह पिता के निर्देश का उल्लंघन करता है तो बुढ़ापे में उन्हें सिर्फ मानसिक तकलीफ ही नहीं होगी, बल्कि एक के बाद एक आघात सहने के कारण क्षत-विक्षत हो चुका उनका जीवन इस भयंकर ठेस से पूरी तरह बिखर भी सकता है। वे बार-बार उसके कान में डालते ही रहे हैं कि वही उनके जीवन की अंतिम आशा है, आखिरी सहारा है, अगर वही आशा धोखा दे तो वे फिर क्यों जीवित रहेंगे ?

कालिनाथ यह बात भी अच्छी तरह जानता है कि अगर वह उनकी बात नहीं मानकर दिवाकर के घर जाता रहेगा तो वे उसे हरगिज क्षमा नहीं करेंगे। उन्होंने जीवन में कभी किसी के सामने झुकना नहीं सीखा है। गौरीनाथ के मामले में वे इस बात को साबित कर चुके हैं। उनके तीनों बेटों में गौरीनाथ ही सबसे अधिक प्रतिभाशाली था, सबसे अधिक चरित्रवान था, उनके जीवन की समस्त उच्चाकांक्षा एवं सार्थकता का प्रतीक था। मगर गौरीनाथ ने एक बार उनकी बात नहीं मानी, पलक झपके बिना उन्होंने उसे हमेशा के लिए त्याग दिया। कालिनाथ यह भी जानता है—गौरीनाथ विवाह के बाद कई सालों तक देउता को पत्र लिखता रहा था। शायद उन पत्रों के जरिए उनसे क्षमा मांगता था, पत्नी के साथ घर आने की अनुमति मांगता था। मगर देउता ने उसके किसी पत्र को खोला तक नहीं, लिफाफे पर गौरीनाथ की लिखावट देखते ही उन्होंने पत्रों को सबकी पहुंच से दूर फेंक दिया। फूल से भी अधिक कोमल हृदय वाला इंसान जरूरत पड़ने पर वज्र से भी अधिक कठोर हो सकता है—यह बात कालिनाथ अच्छी तरह जानता है। इसीलिए अगर वह पिता की बात नहीं मानेगा, तो उसका नतीजा क्या होगा, इस बारे में कालिनाथ के मन में कोई संदेह नहीं है। तो पिता को इतनी बड़ी ठेस पहुंचाकर भी क्या वह दिवाकर के घर जाता रहेगा ?

काफी देर कर भाषाहीन भावना के बीच तन्मय रहने के बाद अचानक नींद से जागने की तरह कालिनाथ ने महसूस किया कि उसका मन पिता के निर्देश का उल्लंघन करना चाहता है। और उसकी वजह है बोहागी ! ठीक इस पल से पहले

उसने एक बार भी स्पष्ट भाषा में सोचा नहीं था कि उसे बोहागी से प्रेम हो गया है। सच्ची बात कही जाए तो इससे पहले कभी उसने जानबूझकर बोहागी के बारे में सोचा नहीं था। शायद और काफी दिनों तक यह बात सोचने की हिम्मत वह जुटा नहीं पाता। एक बार सिगरेट पीना शुरू करने वाला आदमी निकोटिन की विषक्रिया का आदी बनकर सिगरेट पीता रहता है। मगर सिगरेट किस तरह उसके जीवन का अपरिहार्य हिस्सा है, सिगरेट की लत छोड़ने की कोशिश करते हुए इस बात का पता चलता है। कालिनाथ के साथ भी वैसा ही हुआ। अब तक वह सोच रहा था कि बोहागी उसे सिर्फ अच्छी लगती है—जैसे अच्छा लगता है उदास होकर रास्ते से गुजरते हुए हवा में घुलकर आई किसी वनफूल की गंध का नाक में समा जाना—निरुद्देश्य भावना में मग्न रहते हुए जंगली चिड़िया की करुण मीठी आवाज सुनकर चौंक जाना—शाम के आकाश की तरफ शून्य दृष्टि से देखते हुए अचानक एकाकी शुक्र तारे का दिख जाना—या किसी युवती के चकित नैनों में हृदय के रहस्यमय अंधेरे को पल भर के लिए आलोकित और उज्ज्वल होते हुए देखना। मगर वैसी अनगिनत घड़ियों की गुप्त विष-क्रिया ने इस बीच उसकी समस्त रक्तधारा को विषाक्त कर नशे का सदा के लिए दास बना दिया है, इससे पहले इस बात की उसने कल्पना भी नहीं की थी। मगर अभी-अभी उसके सामने यह संभावना स्पष्ट हुई कि बोहागी के पास उसका जाना हमेशा के लिए बंद भी हो सकता है, इसके साथ-साथ उसने महसूस किया कि बोहागी के पास न जाना उसके लिए असंभव है। नशा छोड़ने की कोशिश करते हुए ही उसने नशे का जबर्दस्त प्रभाव ठीक से अनुभव किया।

सिर्फ इतना ही नहीं—और एक रूप में उसने अपने हृदय में प्रेम की उज्ज्वल और यंत्रणामय अभिव्यक्ति का अनुभव किया। बहुत देर से वह अनुभव कर रहा था, जैसे एक जहरीला कीड़ा काट रहा हो, वैसी यंत्रणा मन में शुरू हो चुकी है। धीरे-धीरे यंत्रणा इतनी बढ़ गई है कि बर्दाश्त करना मुश्किल होता जा रहा है। उसने यंत्रणा के उत्स की जांच करके देखी।...अचानक उसे याद आया, पिता ने कहा था कि बोहागी एक बदचलन लड़की है, एल. पी. स्कूल की मास्टरनी की नौकरी पाने के लिए उसने किसी स्कूल सब-इंस्पेक्टर को अपना शरीर सौंप दिया था। झूठ है यह ! एक जबर्दस्त विरोध के साथ उसका शरीर कांप उठा। कलेजे के बीच समा गए एक कांटे की तरह इस बात ने उसे मरण-यंत्रणा के साथ कातर बना दिया। झूठ है ! झूठ है ! बोहागी ऐसा कभी नहीं कर सकती !

...मगर यह बात अगर सच भी हो, तो कालिनाथ के जीवन के साथ उसका क्या संबंध है ? दुनिया में न जाने कितनी औरतें जीविका के लिए ताकतवर लोगों को अपना शरीर सौंपती हैं। देश में आज औरतों के बीच भी शिक्षा का प्रचार हो रहा है, समाज यह सोचकर आत्मगौरव अनुभव करता है कि शिक्षा के जरिए काफी औरतों को आर्थिक स्वतंत्रता मिल गई है। मगर गरीब घरों की कितनी पढ़ी-लिखी

औरतों को कैसी कीमत चुकाकर यह आर्थिक स्वतंत्रता खरीदनी पड़ी है—इसका हिसाब कौन रखता है ? बोहागी ने शिक्षिका की नौकरी पाने के लिए किसी कामुक सरकारी अधिकारी को शरीर सौंप दिया, इस बात से कालिनाथ का क्या संबंध है ?...एल. पी. स्कूल की शिक्षिका की नौकरी मांगने के लिए बोहागी स्कूल के सब-इंस्पेक्टर के पास गई थी। भूमिहीन किसान दिवाकर की कमाई से घर में छह महीने भी ठीक से चूल्हा नही जलता। झोंपड़ी के छप्पर में सुराख हैं, जिससे आकाश दिखाई देता है। झोंपड़ी की मरम्मत करने के लिए न तो दिवाकर के पास समय है, न ही क्षमता है। बैल खरीदना है, उसके लिए रुपए चाहिए। दो बीघा खेत दिवाकर के पिता के जमाने से ही मौजादार के पास बंधक पड़े हुए हैं, उसे छुड़वाने के लिए रुपए चाहिए। दिवाकर की शादी करनी है, उसके लिए भी रुपए चाहिए। बोहागी मोहधूलि के माध्यमिक स्कूल से छात्रवृत्ति पास कर घर में ही बैठी हुई है। उसी स्कूल में एक शिक्षिका का पद खाली हुआ—बोहागी ने सोचा, एक बार किस्मत आजमाकर देखने में क्या बुराई है ?

खबर मिली कि सब-इंस्पेक्टर मोहधूलि में स्कूल का निरीक्षण करने आया है, वह एक आवेदनपत्र लेकर उससे मिलने चली गई। आवदेनपत्र थामकर सब-इंस्पेक्टर ने अनुभवी नजरों से बोहागी के चेहरे की तरफ देखा, एक बार उसके शरीर की तरफ देखा—अनछुई, अभी-अभी खिली कली की तरह उसका सुंदर कोमल शरीर, जिसमें असीम आनद और मादकता की संभावनाएं छिपी हुई हैं। दूसरी तरफ, उसकी सरल दृष्टि में गरीबी के नागपाश में कैद दुखियारी की असहाय कातरता है। इस असहाय डरपोक हिरणी को जाल में कैसे फंसाया जाए, इस कला में अनुभवी सब-इंस्पेक्टर माहिर है। जीवन भर वह यही खेल खेलता रहा है। उसने एक समय दिया। उस समय बोहागी को डाकबंगले में आकर उससे मिलना होगा। मछली ने चारा निगल लिया। निश्चित समय पर बोहागी डाकबंगले में पहुंच गई। उसे एक नौकरी मिलेगी। दिन-रात अमानुषिक परिश्रम करने के बावजूद ठीक से दो वक्त के आहार की व्यवस्था नहीं करने वाले एकाकी बड़े भाई को वह थोड़ी मदद कर पाएगी, उस नौकरी के लिए वह डाकबंगला तो क्या, दुनिया के दूसरे छोर तक जाने के लिए तैयार है। वैसे वह जानती नहीं थी कि उसके पिता के उम्र के अधेड़ सब-इंस्पेक्टर ने उसे दुनिया की सीमा लांघकर नरक की यात्रा के लिए बुलाया था या वह जानती थी, और जानबूझ कर उस बुलावे को स्वीकार किया था ? यह प्रश्न सोचकर कालिनाथ ने अपने हृदय के भीतर एक और कांटे की चुभन का अनुभव किया।

...सुनसान डाकबंगला। चौकीदार को भी किसी बहाने से सब-इंस्पेक्टर ने कहीं भेज दिया है। बोहागी का इंतजार करते हुए वह एक के बाद एक सिगरेट पीते हुए बैठा हुआ है, एक उत्तेजनापूर्ण प्रत्याशा के कारण उसका तन-मन स्पंदित हो रहा है।

...तभी बोहागी आ गई। बोहागी के मन को धीरे-धीरे उस अंतिम पल के लिए तैयार करने के लिए सब-इंस्पेक्टर ने पहली आवाज में शहद घोलते हुए उसके परिवार के बारे में कई सवाल पूछे, और बीच-बीच में उसकी तरफ अर्थपूर्ण नजरों से देखता रहा। लगभग आधे घंटे की बातचीत के बाद बोहागी इतना समझ गई कि शिक्षिका के एक पद के लिए उसके अलावा और पचास उम्मीदवार हैं जो नौकरी पाने के लिए कोई भी कीमत देने के लिए तैयार हैं। क्या है वह कीमत ? नगद रुपए ? एंडी चादर ? रेशमी कपड़े का थान ? बोहागी मन ही मन हिसाब करने लगी। औरत की सहजात प्रकृति के अनुसार वह सब-इंस्पेक्टर की अर्थपूर्ण दृष्टि का अर्थ समझने की भी कोशिश करने लगी। क्या वह कीमत चुकाने के लिए तैयार है ? ...बातें करते हुए एक बार सब-इंस्पेक्टर भीतर चला गया। आखिरी हमले के लिए खुद को तैयार करने के लिए उसे कुछ वक्त चाहिए। भीतर से निकलकर वह बोहागी जहा बैठी थी, उस कुर्सी के पीछे खड़ा हो गया और काफी सहज भाव से उसके कंधों पर हाथ रखते हुए प्रेमपूर्ण स्वर में बोला, "नौकरी मैं, तुम्हें ही दूंगा बोहागी, तुम घबराओ मत।" डर के मारे बोहागी का दिल कांपने लगा, मगर वह लकड़ी के टुकड़े की तरह निश्चल बैठी रही। जिन लड़कियों को नौकरी मिलती है, क्या इसी तरह मिलती है ? बोहागी ने जब कोई विरोध नहीं किया तब सब-इंस्पेक्टर ने अपने हाथों को और आगे बढ़ाया और कुछ देर बाद उसके लोभी, दुस्साहसी हाथों के चंगुल में बोहागी के दोनों स्तन नन्हीं चिड़ियों की तरह फड़फड़ाने लगे।... सब-इंस्पेक्टर समझ गया—इसके बाद पीछे हटने का कोई मतलब नहीं। उसने बोहागी को गोद में उठा लिया और बिस्तर की तरफ बढ़ गया...

आंखों के सामने एक नाटक का जीवंत अभिनय देखने की तरह कालिनाथ ने कल्पना में ही सारा दृश्य देखा और माघ महीने की सर्दी में भी किसी भीषण उत्तेजना के कारण उसका शरीर पसीने से भीग गया। इतनी तीव्र यंत्रणा का इससे पहले जीवन में उसने कभी अनुभव नहीं किया था। एक सिरे से उसके शरीर में जैसे आग लग रही है, और कुछ देर बाद जैसे वह जलकर राख हो जाएगा। विवशता के साथ उस असीम यंत्रणा को बर्दाश्त करते हुए कुछ देर तक वह निश्चल पड़ा रहा। बुखार के बाद पसीना बहने के बाद शरीर ठंडा होने की तरह उसने कुछ देर बाद एक भीषण शीतलता का अनुभव किया। तब उसने स्वयं से ही कहा, "मैं जरूर बोहागी से प्रेम करने लगा हूं। नहीं तो मैं इतनी भयंकर ईर्ष्या की भावना हरगिज अनुभव नहीं करता..."

तब तक उसकी चेतना में पिता का कोई अस्तित्व नहीं बचा था, उसे सिर्फ एक ही चिंता सता रही थी—जल्द से जल्द बोहागी के पास जाकर इस बात की सचाई जाननी होगी, उसे जानना होगा—बोहागी के जीवन में उसका स्थान क्या है।

11

अगले दिन शाम के वक्त कालिनाथ ऐसे मौके पर बोहागी के घर गया—जिस समय दिवाकर के घर में रहने की कोई संभावना नहीं थी। उसकी किस्मत अच्छी थी कि उस समय बोहागी की मां भी घर में नहीं थी। बोहागी घर के पश्चिम में रवाब पेड़ के नीचे कपड़ा बुन रही थी। कालिनाथ को देखकर वह हड़बड़ाकर हथकरघे के पास से उठ गई और कालिनाथ को बैठने के लिए कहा, फिर बोली, "आज आपके आने की बात थी क्या ? भैया तो मुझसे कुछ कहे बगैर खेत की तरफ गए हैं।" इतना कहकर अचानक उसकी नजर कालिनाथ के चेहरे पर पड़ी और चौंककर उसने पूछा, "क्या आपकी तबीयत ठीक नहीं है, ककाईदेव ? आपको देखकर ऐसा लगता है, जैसे आप बुखार से उठकर आए हैं।"

कालिनाथ बोहागी की बात का कोई जवाब दिए बगैर कुछ पल तक एकटक उसके चेहरे की तरफ देखता रहा। वह तब भी मन ही मन बुरी तरह उत्तेजित था। अपने आचरण की अस्वाभाविकता का अंदाजा लगाने की शक्ति उसके पास नहीं थी। बोहागी के चेहरे को देखते हुए उसने सोचा—इस चेहरे को सचमुच उस लंपट सब-इंस्पेक्टर ने चूमा होगा ? उसकी दृष्टि धीरे-धीरे नीचे की तरफ उतरती हुई बोहागी के समूचे शरीर से फिसलती चली गई। उसने मन ही मन सोचा—जीवन के परम रहस्य से आवृत उसका यह सुंदर शरीर क्या सचमुच उस कामुक आदमी की नजरों के सामने नग्न हुआ था ? उसके मन में छिपी हुई उत्तेजना अचानक बांध तोड़कर हिंसक हो उठी। आगे-पीछे की परवाह किए बगैर उसने बोहागी से पूछा, "बोहागी, तुम मास्टरनी की नौकरी पाने के लिए एक दिन एक सब-इंस्पेक्टर के पास गई थीं ?"

ऐसे आकस्मिक प्रश्न के लिए बोहागी जरा भी तैयार नहीं थी। पहले तो उसके चेहरे पर हैरानी का भाव नजर आया, उसके बाद उसके चेहरे पर एक गुप्त भय की छाया नजर आई। कालिनाथ के प्रश्न का तत्काल कोई उत्तर दिए बगैर धीरे-धीरे वह वहीं बैठ गई और स्थिर दृष्टि से कालिनाथ को देखते हुए उसने डरते-डरते पूछा, "आप मुझसे यह बात क्यों पूछ रहे हैं, काकईदेव ? कोई घटना घटी है क्या ?"

बोहागी की डरी हुई भंगिमा ने कालिनाथ को और अधिक उत्तेजित कर दिया। उसके अपराध के संबंध में उसको यकीन हो गया। फिर उसने कठोर स्वर में पूछा, "तुम गई थीं या नहीं—बताती क्यों नहीं ?"

"गई थी"—डरती हुई बोहागी बोली, "मगर नौकरी तो नहीं मिली। आप इतने गुस्से के साथ मुझसे क्यों पूछ रहे हैं ? किसी ने मेरे बारे में आपको कुछ कहा है क्या ?"

"कोई क्यों कहेगा ?"—बोहागी से जवाब सुनना जैसे उसका जन्मसिद्ध अधिकार हो, उसी अंदाज में कालिनाथ ने फिर कहा, "समूचा मोहधूलि कह रहा

है कि तुम एक दिन डाकबंगले में सब-इंस्पेक्टर के पास अकेले में गई थीं और तुम-तुम—''

बोहागी ने अचानक बांहों में सिर छिपाकर सिसक-सिसककर रोना शुरू कर दिया। रुलाई के कारण उसका सारा शरीर कांप रहा था। कालिनाथ के मन में कोई संदेह नहीं रहा कि उसके बार में जो बात सुनी थी, सब सच थी। उसके मन में एक गुप्त आशा थी कि बोहागी सभी बातों से इंकार कर देगी, और वह उस पर विश्वास कर लेगा। मगर उसकी आखिरी उम्मीद भी बिखरकर रह गई। नए सिरे से सुलग उठी ईर्ष्या की आग फिर उसे जलाने लगी। सब कुछ गंवाकर लुटे हुए आदमी की तरह वह उदास और शून्य नजरों से बोहागी की तरफ देखने लगा।

काफी देर बाद रोना बंद कर बोहागी ने सिर उठाया। उसकी आंखें लाल मिर्च की तरह सुर्ख लाल हो चुकी हैं, आंसू से भीगे गाल पर सिर के दो बाल गोंद से चिपकने की तरह दिखाई दे रहे हैं। वह लगभग अस्फुट आर्त्तनाद करने के अंदाज में बोली, ''विश्वास कीजिए ककाइदेव, मैं मां और भैया की शपथ खाकर कहती हूं, उस कमीने ने मेरे साथ कुछ नहीं किया, उसने जैसे ही मुझे छुआ, मैं दौड़ती हुई निकल आई।...मगर लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं ककाइदेव, आपको इस बात का पता कैसे चला ?''

कालिनाथ ने बोहागी के प्रश्नों का उत्तर दिए बगैर एक नए कौतूहल की दृष्टि से उसके चेहरे की तरफ देखा। कुछ देर बाद उसके सीने की गहराई से एक राहत की सांस निकल आई। बोहागी कुछ भी कर सकती है मगर झूठ नहीं बोल सकती, इस बारे में उसके मन में कोई संदेह नहीं है। सिर से जैसे एक चट्टान उतर गई हो, उसी तरह आराम की मुद्रा में वह सहज होकर बैठ गया। कातर करुण दृष्टि से अपनी तरफ देख रही बोहागी के आंसू से भीगे चेहरे को अपने सीने में समेटकर उसके आंसू को पोंछ देने का जी चाहा, मगर उसने ऐसा किया नहीं। उसने बोहागी से पूछा, ''असल में क्या हुआ था, मुझे बताओ तो, बोहागी !''

बोहागी फिर एक बार सिसक उठी। फिर रोना बंद कर वह बोली, ''यह सब बातें मेरे मुंह से निकली नहीं हैं, ककाइदेव ! और तो और, कई बार चाहा कि मां को बता दूं। फिर भी आज तक कह नहीं पाई। फिर भी आपको बता देती हूं ...उसके कहे मुताबिक आवेदन-पत्र लेकर मैं डाकबंगले में उससे मिलने गई थी। मेरे पिता की उम्र के बराबर के आदमी के मन में मेरे लिए कोई पाप का भाव भी हो सकता है, इस बात की मैंने कल्पना तक नहीं की थी। दिन के वक्त सबकी नजरों के सामने मैं उससे मिलने गई थी। मुझे बैठने के लिए कहकर वह पहले इधर-उधर की बातें पूछता रहा। वैसे उसके देखने का अंदाज मुझे अच्छा नहीं लगा था, मगर वह इतना आगे बढ़ जाएगा—मैंने तो कल्पना भी नहीं की थी। बातचीत के दौरान अचानक उसने मुझसे कहा—मान लो मैं तुम्हें नौकरी दे दूंगा, तो बदले में तुम मुझे

क्या दोगी ? जानती ही हो, आजकल दुनिया में कीमत चुकाए बगैर कोई चीज नहीं मिलती। मैंने कहा—सर, हम बहुत गरीब हैं, दो वक्त का भोजन जुटा पाना ही हमारे लिए बड़ी समस्या है, आपको देने के लिए हमारे पास क्या है ? मेरी बात का जवाब दिए बगैर वह बेहयाई के साथ मेरी आंखों में देखने लगा और उसे कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ी, मैं उसके पापी मन की बात फौरन भांप गई। उसकी आंखों के सामने से भाग जाने का जी चाहा, मगर मेरा शरीर तब पत्थर बन गया था, मै जरा भी हिल-डुल नही पाई। बाघ को सामने देखकर बुत बने आदमी की तरह मैं बैठी रही। मेरी हालत देखकर उसकी हिम्मत बढ़ गई। अचानक वह उठा और मेरी कुर्सी को दबोचकर मुझे बेइज्जत करने की कोशिश करने लगा। जैसे ही उसने मेरे शरीर को हाथ लगाया, नींद में किसी के आग लगाने की तरह चीखकर मैं जाग उठी और उसे जोर से धक्का मारकर दूर धकेल दिया, फिर दौड़ती हुई बाहर निकल आई...''

बोहागी फिर खामोश होकर रोने लगी।

उसकी रुलाई रुकने की प्रतीक्षा में कालिनाथ चुपचाप बैठा रहा। काफी देर बाद बोहागी चुप हो गई। उसने आंचल के कोर से मुंह पोंछा और कालिनाथ से कुछ सुनने की आशा में उसकी तरफ देखने लगी। कालिनाथ ने भी उसके चेहरे पर गहरी दृष्टि डाली। ठीक उसी पल डूबते सूरज की सुनहरी रोशनी बाड़ के सुराख से होकर बोहागी के चेहरे पर पड़ी। उस सुनहरी रोशनी में उसका आंसुओं से भीगा कोमल चेहरा इस कदर अपार्थिव नजर आया कि एक अद्‌भुत आवेग के कारण कालिनाथ के अस्तित्व की जड़ तक कांप उठी। हृदय की गहराई में जैसे किसी ने उससे फुसफुसाकर कहा, 'यही समय है कालिनाथ, यही समय है। ऐसा एक पल जीवन में दुबारा कभी नहीं भी आ सकता है' —वह जान हथेली पर रखकर अचानक कह उठा, "बोहागी, मैं तुम्हें चाहता हूं, मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूं।"

ठीक उसी पल सूरज डूब गया था, बोहागी के चेहरे से सुनहरी रोशनी लुप्त हो गई थी। मगर फिर भी, एक क्षण के बिंदुतम अंश के लिए कालिनाथ ने देखा—बोहागी के चेहरे पर जैसे अचानक अपार विस्मय का भाव नजर आया, और अगले ही पल उस विस्मय का उच्च शिखर झिलमिला उठा एक नवीन प्रभात के स्वर्ण स्पर्श से, एक नवीन आनंद-चेतना के उज्ज्वल उन्मेष से।

बोहागी को उसी हालत में छोड़कर कालिनाथ झटके से बाहर निकल गया।

12

शाम ढलते-ढलते कालिनाथ घर लौट आया। बोहागी के घर से रवाना होकर लंबा रास्ता किस तरह तय करके आया, उसे पता ही नहीं चला। प्रथम प्रेम-निवेदन करने

की भावना से उसका हृदय झूम उठा था। मगर उसका तब पहली बार स्वप्न भंग हुआ—जब उसकी बगल से साईकिल पर जा रहे दो युवकों ने चिल्लाकर उसे छेड़ा, ''ए कलीया, साधु-महात्मा, दिवाकर की बहन से इश्क लड़ाकर लौट आया, देखा नहीं ?''

आज उसने कैसा जबर्दस्त काम किया है, तभी इस बात का आभास उसे हो पाया। फौरन एक सर्वग्रासी भय ने उसके तन-मन को जकड़ लिया। पिता ने उसे दिवाकर के घर जाने से मना किया था, मगर वह बोहागी से विवाह करने का वादा भी करके आ गया। वह अच्छी तरह जानता है, पिता मरकर भी विवाह के लिए अनुमति नहीं देंगे। उनकी इच्छा के खिलाफ अगर वह उससे विवाह करेगा तो निश्चित रूप से पिता उसे त्याग देंगे। वह भी एक एकाकी, टूटे हुए व्यक्ति को अंतिम वर्षों में प्राणघाती आघात देने की तरह होगा। दूसरी तरफ, बोहागी से विवाह किए बगैर उसके साथ उसके गुप्त रिश्ते की अफवाह मोहधूलि में चारों तरफ इस तरह फैलाई जाएगी कि उसके लिए समाज का कोई काम कर पाना संभव नहीं होगा। उसने आंखों के सामने चारों तरफ अंधेरा देखा।

ऐसी स्थिति मे जब वह घर के सामने पहुंचा, उसने देखा—लक्ष्मीनाथ दारू के नशे में धुत होकर उसी चिरंतन नाटक का अभिनय दुहरा रहा है। पूरे गांव को सुनाकर चीखते हुए वह पिता को अश्लील गालियां दे रहा है, और घर के भीतर बहनें रो रही हैं। अचानक कालिनाथ को क्रोध आ गया। बहुत दिनों से असीम धैर्य के साथ वह लक्ष्मीनाथ का हृदय परिवर्तन करने की कोशिश करता रहा है। उसके क्रोध का उत्तर स्नेहपूर्ण बातो से देता रहा है, उसकी मारपीट की धमकी का उत्तर उसकी पीठ पर प्यार से हाथ फेरकर देता रहा है। उसने उससे यह भी वादा किया है कि अगर वह शराब और गुंडागर्दी छोड़कर सही रास्ते पर आ जाए तो कालिनाथ घर की सारी संपत्ति और जमीन उसके नाम कर देगा। मगर इन सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ा है। हर मामले में गलत और अशुभ शक्ति पर प्रेम एवं सद्‌भावना से विजय पाई जा सकती है या नही—इस संबंध में अब उसके मन में शंका उत्पन्न होने लगी है। गांधीजी हमेशा मनुष्य के हृदय परिवर्तन पर जोर देते थे, मगर उनके विराट व्यक्तित्व और देवतुल्य चरित्र के प्रभाव से उनके शराबी और दुश्चरित्र पुत्र का हृदय परिवर्तन हो पाया था क्या ? अशुभ का अस्तित्व जीवन का एक दुर्जेय और दुज्ञेय रहस्य है, उसे शुभ में रूपांतरित करने की सारी कोशिशें असफल ही होती हैं। अधिक से अधिक—मनुष्य उसे नष्ट कर देने की कोशिश कर सकता है।...

बोहागी की समस्या से वैसे ही कालिनाथ का मन बोझिल बना हुआ था, वैसी हालत में घर के बाहर से ही लक्ष्मीनाथ की पाशविक चीख सुनकर उसका सिर गर्म हो गया। अचानक उसने स्पष्ट रूप से अनुभव किया कि यह शराबी और दुश्चरित्र लक्ष्मीनाथ ही उसके और परिवार के सभी सदस्यों के लिए अशांति की जड़ है, वह

अगर जीवन के स्वाभाविक पथ पर चलता तो कालिनाथ पिता की मर्जी के खिलाफ भी बोहागी से विवाह कर सकता था, चूंकि तब पिता का एकाकीपन और मानसिक कष्ट इतना अधिक सहानुभूति-योग्य नहीं होता। एक हिंसक उत्तेजना से होश खोकर उसने मवेशीघर के सामने रखे बांस के एक टुकड़े को थाम लिया और किसी को भी पता चले, उससे पहले ही पीछे से लक्ष्मीनाथ की पीठ पर बांस के टुकड़े का जबर्दस्त प्रहार किया।

एक दर्दनाक चीख के साथ लक्ष्मीनाथ जमीन पर लुढ़क गया। उसी हालत में अंजाम की परवाह किए बगैर कालिनाथ ने उस पर फिर दो बार प्रहार किया। तभी आस-पास आंगन में खड़े लोगों को होश आया, जो अब तक तमाशबीन बने हुए थे। उन्होंने दौड़कर कालिनाथ को रोका। मां भी भीतर से निकल आई और लक्ष्मीनाथ के पास बैठकर रोने लगी। मगर शिवनाथ चुपचाप बुत की तरह अपनी जगह पर बैठा रहा। शायद अधिक शराब पीने के कारण लक्ष्मीनाथ कमजोर हो गया था, वैसी स्थिति में अचानक चोट लगने से फौरन वह अचेत होकर गिर पड़ा। लोग सहानुभूति जताते हुए लक्ष्मीनाथ को उठाकर पड़ोस के घर में ले गए और पानी के छींटे सिर पर मारकर उसे होश में लाने की कोशिश करने लगे।

अंधेरे में डूबे आंगन में कालिनाथ कुछ देर पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा रहा। बरामदे में पिता और आंगन में वह—दोनों को अकेले छोड़कर सारे लोग लक्ष्मीनाथ के पास चले गए। कुछ देर बाद कुछ सोचकर कालिनाथ आंगन से बाहर निकलने वाला था तभी पिता की वज्र-गंभीर आवाज सुनाई पड़ी, "मंझले बापू—!"

शिवनाथ की आवाज से एक ऐसी स्वाभाविक कठोरता जाहिर हुई थी, जिसे सुनकर कालिनाथ का हृदय कांप उठा। वह कुछ बोले बगैर ठिठक गया।

"इधर आ।—" पिता ने उसे हुक्म दिया।

चुपचाप आकर वह पिता के पास खड़ा हो गया।

"तू आज कहां गया था ?" शिवनाथ ने कठोर स्वर में उससे पूछा।

कालिनाथ ने कभी झूठ बोलना सीखा नहीं। परिणाम भयावह होगा, यह जानते हुए भी पल भर भी हिचके बगैर उसने उत्तर दिया, "दिवाकर के घर गया था।"

"मैंने कल ही तुझे दिवाकर के घर जाने से मना किया था।"

"कालिनाथ कुछ बोले बगैर चुप रहा।

"मेरे तीन लड़के थे—" शिवनाथ ने शुष्क और भावहीन स्वर में कहा, "उनमें से दो लड़के मेरे लिए पहले ही मर चुके हैं। बाकी बचा था सिर्फ तू। सोचा था, मरते वक्त तेरे हाथ से पानी पीकर चैन से मर सकूंगा। मगर आज वह आशा भी खत्म हो गई। आज से तू भी मेरा कोई नहीं है।"

शिवनाथ का एक-एक शब्द गोली की तरह कालिनाथ के कान में समा गया। उसने महसूस किया—प्रत्येक जख्मी स्थान से जैसे खून का फव्वारा फूट रहा है, और

कुछ देर बाद शरीर का सारा खून बह जाएगा और वह दम तोड़ देगा। पिता और कुछ कहेंगे क्या, सुनने की प्रतीक्षा में बुत की तरह वह खड़ा रहा। मगर पिता ने अचानक लंबी चुप्पी साध ली थी। एक ही स्थान पर कुछ समय खड़े रहने के बाद कालिनाथ आंगन से बाहर अपने शरीर को लाश की तरह घसीटते हुए ले गया।

कालिनाथ नदी किनारे जाकर काफी देर तक अकेले बैठा रहा। अपनी समस्या के बारे में बहुत सोचने के बाद भी वह भावना का ओर-छोर तलाश नहीं पाया। अगर पिता को प्रसन्न रखेगा तो अपने जीवन में वह कभी सुखी नहीं हो पाएगा ! मगर दूसरी तरफ पिता को दुखी करके क्या वह स्वयं सुखी रह पाएगा ? एक स्थाई अपराध-बोध का जहरीला कीड़ा हमेशा उसे काटता रहेगा।...मनुष्य होना भी कितनी बड़ी यंत्रणा है—भीषण थकान के साथ उसने मन ही मन सोचा—जीवन के सहज-सरल पथ को भी मनुष्य अपने हृदय से जन्मे विभिन्न आवेगों के जटिल जटा-जाल से दुर्गम बना देता है, उसके बाद खुद ही राह भटककर मर जाता है, अपने हृदय से ही मनुष्य विभिन्न आवेगों और आदेशों की निर्मम प्रतिमा तैयार करता है, और बाद में उस प्रतिमा के सामने स्वयं की बलि चढ़ा देता है।

अगले दिन काफी देर से जागने पर कालिनाथ के मन में पहला ख्याल आया कि कल रात वह खा नहीं पाया। नदी किनारे से लौटने के वाद अधिक रात नहीं हुई थी, मगर घर आकर उसने देखा, सारे सदस्य सो चुके थे। जिस दिन उसे घर लौटने में देर होती, उसके कमरे में मेज पर भोजन परोसकर रख दिया जाता था। मगर कल रात मेज पर भोजन उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा था। वह समझ गया कि उसके घर में चूल्हा नहीं जला था। अशांति की आग में पूरा परिवार जैसे तिल-तिलकर जल रहा था।

कालिनाथ बिस्तर से उठकर बाहर गया और मुंह-हाथ धोकर वापस बिस्तर पर आ गया। घर में व्याप्त दुख, हताशा और अशांति के परिवेश में जीवित रहने का सारा उत्साह वह खो चुका था। बिस्तर पर लेटकर वह तरह-तरह की बाते सोच रहा था तभी सावित्री ने कमरे में आकर कहा, "भैया, तेरे लिए नाश्ता यहीं लाकर दूं ?"

कालिनाथ ने उससे पूछा, "देउता ने नाश्ता किया है ?"

"नहीं।"

"क्यों ?"

"देउता ने तो आमरण अनशन शुरू कर दिया है।" उसने सहजता के साथ जवाब दिया।

"मेरे लिए भी नाश्ता लाने की जरूरत नहीं है।" इतना कहकर उसने करवट बदलकर दीवार की तरफ मुंह घुमा लिया।

देखते-देखते दोपहर हो गई। तब भी कालिनाथ बिस्तर पर ही था। घर में

जैसे कोई गुजर गया हो, वैसा ही सन्नाटा था। सावित्री ने आकर पूछा, "भैया, तू नहाएगा नहीं क्या ? खाने का समय हो गया।"

"देउता खाएंगे या नहीं ?" कालिनाथ के पूछा।

"मैं तो सुबह ही बता चुकी हूं—देउता आमरण अनशन कर रहे हैं। इस घर में जिंदा रहने से मर जाना ज्यादा अच्छा है।"

"मैं भी नहीं खाऊंगा।" आंखे मूंदकर कालिनाथ ने कहा।

रात में कोई भी कालिनाथ को खाने के लिए बुलाने नहीं आया। वह समझ गया—देउता ने नहीं खाने की शपथ ली है, इसीलिए लगातार तीसरे वक्त भी उसके परिवार में उपवास चल रहा है। कालिनाथ समझ गया—अब उसके कर्तव्य को तय करने का समय आ गया है। देउता के स्वभाव को वह पहचानता है। कल भी वे खाने के लिए तैयार हो जाएंगे—इस बात की कोई उम्मीद नहीं है। उनके साथ घर के सारे सदस्य अन्न-जल त्याग कर आत्महत्या करने पर उतारू हैं। आज की रात ही उसे अपना कर्तव्य निश्चित करना पड़ेगा। मगर कर्तव्य तय करने के लिए क्या उसके सामने कोई दूसरा रास्ता खुला हुआ है ? देउता ने उसे इस तरह फंदे में फंसाया है कि उनकी पसंद की राह चुनने के सिवा उसके सामने कोई दूसरा रास्ता नहीं है। गरदन मरोड़े जाने के बाद जिस तरह चिडिया आखिरी बार फड़फड़ाकर विरोध करती है, उसी तरह उसका मन भी आत्मसमर्पण से पहले अचानक देउता के प्रति विद्रोही हो उठा। अगर न्याय और अन्याय में से एक को चुनने का प्रश्न होता तो उसके मन में कोई संदेह नहीं है कि जो काम वह करना चाहता है, वह न्याय-संगत ही है, जबकि देउता एक घृणित तरीका अपनाकर उसे अन्याय के पथ पर धकेल रहे हैं। ब्याह के मामले में देउता वंश-मर्यादा और जमीन-जायदाद आदि बातों पर जिस तरह जोर देना चाहते हैं, उसकी नजरों में वे सारी चीजें फिजूल हैं। वह बोहागी से ब्याह करना चाहता है, जिसके खिलाफ देउता को मुख्य आपत्ति यही है कि वह गरीब लड़की है और कभी उसके पुरखे देउता के खानदान में नौकर हुआ करते थे। दूसरी तरफ, कालिनाथ जिन नए मूल्यबोधों की श्रद्धा करना सीख चुका है, उस शिक्षा का निष्ठा के साथ पालन करने पर देउता की निरंकुशता के खिलाफ बगावत करने के सिवा उसके सामने कोई चारा नहीं है। अचल और अनैतिक मर्यादाबोध के मृत देवता की वेदी पर देउता एक-एककर सभी संतानों की सुख-शांति की बलि चढ़ाते रहे हैं। गौरीनाथ ने अपनी जिद के अनुसार देउता की मर्जी के खिलाफ विवाह किया, मगर उसके मन में संपूर्ण सुख नहीं है, सात सालों से वह अपने घर को और मां को देख नहीं पाया है। अपने नकली मर्यादाबोध की वजह से ही देउता ने रंभा की शादी रोककर उसे हमेशा के लिए एकाकी और दुखी होकर जीने के लिए विवश कर दिया। वह भी अब देउता की इस गलत मांग और निरंकुशता के सामने घुटने टेक देगा ? वैसा करना अपने विवेक और आदर्श के खिलाफ अन्याय के सामने

घुटने टेकना नहीं होगा ?

मगर कालिनाथ का दुर्भाग्य यह है कि न्याय और अन्याय, शुद्ध और अशुद्ध—सिर्फ इन दोनों विषयों पर वह विचार नहीं कर सकता। शायद किसी भी मनुष्य के जीवन में चयन की समस्या इतनी सहज और सरल नहीं होती। आदर्श के नाम पर आज अगर वह बोहागी से विवाह करने की जिद पकड़ ले तो इसका परिणाम देउता को मृत्युदंड देना होगा। इसका अर्थ यह नहीं होगा कि अपनी खुशी के लिए उसने देउता को प्राणघाती आघात पहुंचाया ? आदर्शवाद के प्रलेप से वह कभी गुप्त स्वार्थ की भावना को पूरी तरह छिपा नहीं सकता। इसके अलावा परिस्थिति भी जीवन की बडी निर्णायक शक्ति होती है। जिस परिस्थिति में गौरीनाथ ने आदर्श की पराकाष्ठा पर पहुंचकर देउता की मर्जी के खिलाफ असवर्ण के साथ विवाह किया और त्याज्य पुत्र होने का दुर्भाग्य स्वीकार कर लिया, कालिनाथ के साथ वैसी परिस्थिति नहीं है। गौरीनाथ जानता था कि देउता उसका त्याग कर देंगे, तब भी उन्हें कालिनाथ और लक्ष्मीनाथ का सहारा रहेगा। मगर परिस्थिति आज ऐसी बन गई है कि अगर वह भी देउता की आज्ञा का उल्लंघन कर उनके द्वारा त्याग दिया जाएगा तो यह दुर्भाग्य का शिकार व्यक्ति जीवन के अंतिम वर्षो में पूरी तरह सर्वहारा हो जाएगा।...

बिस्तर पर लेटे-लेटे कालिनाथ ने सिर हिलाया। दुनिया की किसी भी खुशी के बदले वह देउता को यह दुख नही दे सकता।

उसके सामने बोहागी का चेहरा कौंध गया। बोहागी उससे प्रेम नही करती थी...उसके लिए वह आकाश का चांद था, उसे प्रेमी या स्वामी के रूप में पाने की उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी। मगर जिस पल उसने उससे प्रेम-निवेदन किया, उसी पल उसने उसके मन में नई कामना, नई आशा, नई कल्पना को जगा दिया ...'चंडालिका' की तरह उसके मन में स्वयं की नई पहचान जाग गई। उस पल, वह जिस तरह उसे चाहने लगी, उसकी कोई तुलना नहीं हो सकती। एक अलौकिक सूर्योदय ने जैसे उसके तुच्छ जीवन की समस्त अंधेरी घड़ियों को दूर भगा दिया और उसे एक अपार्थिव नवीन ज्योति से प्लावित कर दिया। कालिनाथ जानता है, कल के उस पल के बाद वह एक संपूर्ण नवीन जगत में विचरण कर रही है, हृदय की गहराई में वह प्रतिपल अपने प्रेमी की आहट सुनने की प्रतीक्षा कर रही है, भविष्य के सुनहरे सपनों मे खोकर वह खुद को भुला बैठी है। और बहुत दिनो तक वह इसी तरह प्रतीक्षा करती रहेगी, बहुत दिनों तक उसके मन में यह कामना जाग्रत रहेगी...वह कभी भी जान नहीं पाएगी कि क्यों उसने प्रेम-निवेदन किया था और क्यों फिर वह कभी उसके पास लौटकर नहीं गया।...एक दिन शायद वह उसकी बात भूल जाएगी। मगर पूरी तरह हरगिज भूल नहीं पाएगी। बहुत दिनों तक उसकी आंखें उसकी झलक कहीं किसी तरह पाने के लिए बेचैन रहेंगी, उसकी तुच्छ दीन-हीन दिनचर्या के बीच कभी-कभी किसी अलसाई उदास घड़ी में उसके मन में कल शाम

की स्मृति कौंध जाएगी और उसके हृदय की गहराई से एक लंबी आह निकल पड़ेगी...

हो सकता है, ऐसा कुछ भी न हो—कालिनाथ ने स्वयं से ही कहा—एक मीठे सपने की तरह वह समय गुजरने के साथ सारी घटना भूल जाएगी और दुनियादारी के चक्कर में एक दिन वह अपने अतीत को भी पूरी तरह भूल जाएगी। इसके अलावा उसकी अपनी मान्यता है कि प्रेम और सौंदर्य को जीवन के अद्भुत अनुभव के रूप में स्वीकार करने के लिए उच्चस्तरीय शिक्षा-संस्कृति की जरूरत होती है। बोहागी जैसी लड़की से ऐसी आशा रखना अनुचित है। मगर उसके जीवन में बोहागी की याद एक स्थाई विषाद के उत्स की तरह रहेगी। जीवन की राहों पर बढ़ते हुए वह अचानक ठिठक जाएगा, हेमंत की शाम की तरह बोहागी की सूरत याद आएगी और एक करुण उदासी से उसका मन भींग जाएगा। नदी का सौंदर्य देखकर उसे बोहागी की याद आएगी, मेघ से ढके आकाश के नीचे जब हवा धान के हरे पौधों के साथ अठखेलियां करेगी, तब उसे बोहागी की याद आएगी, वांस के झुरमुट के पीछे लटका दशमी का चांद उसे बोहागी की याद दिलाएगा...न पाने की पीड़ा के साथ जीवन की समस्त आहों से बोहागी की करुण स्मृति जुड़ी रहेगी।...उसके हृदय की गहराई से एक लंबी आह निकल पड़ी, और धीरे-धीरे नींद की गोद में समा गया।

अगले दिन भी वह देर से जागा। जागते ही वह नदी किनारे गया। नहा-धोकर वह घर आया और देउता के कमरे में गया। पुराने मरीज की तरह देउता मृतप्राय बिस्तर पर सो रहे थे। बिस्तर के पास खड़े होकर उसने आवाज लगाई—'देउता !' शिवनाथ ने कोई उत्तर नहीं दिया।

कालिनाथ देउता के पास बिस्तर पर बैठ गया और उनके पैर पर एक हाथ रखकर बोला, "देउता, मैं वचन देता हूं, आज के बाद दिवाकर के घर मैं कभी नहीं जाऊंगा। आप उठकर मुंह-हाथ धोइए और नाश्ता कीजिए। आपके लिए पूरे घर में दो दिनों से किसी ने कुछ नहीं खाया है।"

वह बाहर निकल आया। शिवनाथ काफी देर तक बिस्तर पर लेटा रहा। उसकी आंखों से आंसू की धारा बहने लगी, जिससे तकिया भीग गया। घर के किसी सदस्य को इस बात का पता नहीं चला।

14

कालिनाथ ने याद किया कि वह बोहागी से प्रेम करने और प्रेम के नाम पर पिता से विद्रोह करने के लिए पढ़ाई अधूरी छोड़कर घर नहीं लौटा था, बल्कि बुढ़ापे में पिता को कुछ सुकून देने के लिए घर आ गया था। मगर जो योजनाएं लेकर वह घर आया था, उनमें से कोई भी काम ठीक से आगे नहीं बढ़ पाया है। पिछले कुछ

महीनों से वह सिर्फ गांव-गांव घूमता रहा है और गांव की समस्याओं को कुछ समझ पाया है। मगर उन समस्याओं के समाधान का कोई रास्ता अब तक उसे नजर नहीं आता। और तो और, मोहधूलि में अवैध शराब का प्रचलन बंद करने जैसा एक छोटा काम उसने हाथ में लिया था, उस मामले में भी वह जरा भी आगे नहीं बढ़ पाया है, बल्कि वह जैसे अवैध शराब के व्यापारियों और उनके संरक्षकों की जिद बढ़ाने में मददगार ही बन रहा है। बोहागी से बिछोह की यंत्रणा दिल की गहराइयों में दफन कर उसने फिर पूरे उत्साह के साथ अपने काम में जुटने का फैसला किया।

अपनी कर्मशैली के बारे में विचार करते हुए वह कई दिनों तक घर में ही घुसा रहा। तीन दिन के बाद दिवाकर उससे मिलने आया। दिवाकर ने सोचा था कि जरूर कालिनाथ की तबीयत खराब हो गई है, इसीलिए वह उसके घर नहीं आ पाया है। मगर कालिनाथ को पूरी तरह स्वस्थ हालत में देखकर उसे कुछ हैरानी हुई।

''तुम तीन दिनों से हमारे घर क्यों नहीं आए ?''—उसने कालिनाथ से पूछा। कालिनाथ ने तत्काल दिवाकर के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया और काफी देर तक खामोश रहा। उसके बाद वह बोला, ''दिवाकर, अब मैं तुम्हारे घर शायद कभी नहीं जा पाऊंगा ! मगर तुम कृपा कर इसका कारण मुझसे नहीं पूछना। तुम आ गए—अच्छा ही हुआ। मै तुम्हें बुलाने के लिए किसी को भेजने के बारे में ही सोच रहा था। आओ, अब हम कल की बातें करें।''

कालिनाथ की बात सुनकर दिवाकर चकित रह गया। उसके चेहरे पर गहरी वेदना का भाव नजर आया। कुछ देर अवाक रहने के बाद वह बोला, ''क्या हुआ, कालिनाथ ? हमसे कोई अपराध हो गया क्या ? हम अनपढ़ देहाती मूर्ख लोग ठहरे, तुम जैसे बड़े लोगों से बात करने लायक भी नहीं हैं, मगर...''

काफी संकोच के साथ कालिनाथ ने जल्दी से कहा, ''इस तरह मत कहो, दिवाकर ! तुम मुझे गलत मत समझो। मैं तुम्हारे घर नहीं जाऊंगा, इसके लिए तुम लोगों का कोई दोष नहीं है। अगर कोई दोष है, तो वह मेरा ही है। फिलहाल तुम इतना समझ लो कि जो लोग समाज का काम करने के लिए निकलते हैं, उन्हें अपने कई निजी हितों को त्याग देना पड़ता है। एक दिन वक्त आने पर मैं तुम्हें सारी बातें खुलकर बता दूंगा। मगर अब हमें काम की बातें करनी चाहिए। मैं भले ही तुम्हारे घर नहीं जा सकता, मगर तुम्हें हमेशा हमारे घर आते रहना पड़ेगा। मोहधूलि में जो काम करने के बारे में सोचा था, तुम्हारे बिना उन कामों को पूरा करने के लिए मैं एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकता।''

मन ही मन कुछ सोचते हुए दिवाकर काफी देर चुप रहा। उसके बाद हल्की सी आह भरकर वह बोला, ''मेरे जैसा एक अनपढ़ और फटेहाल आदमी तुम्हारी क्या मदद कर सकता है ? फिर भी तुमने घोंघे को मोती मान लिया है, यही मेरा

परम सौभाग्य है। तुम जो करने के लिए कहोगे, मैं वही करूंगा। अब यह बताओ, तुम क्या करना चाहते हो ?''

काम की तरफ दिवाकर का ध्यान आकर्षित कर पाने के कारण कालिनाथ ने मन ही मन काफी राहत का अनुभव किया। उसने भीतर की तरफ देखकर आवाज लगाई, ''सावित्री, ओ सावित्री ! हमें दो कप चाय दे जा।'' फिर दिवाकर की तरफ मुखातिब होकर वह बोला, ''देखा दिवाकर, मोहधूलि में अवैध शराब का धंधा बंद करने की मैं प्रतिज्ञा ले चुका हूं। अवैध शराब के चलते सिर्फ हमारे घर ही तबाह नहीं हुए हैं, मोहधूलि के घर-घर में यह आंसुओं की वजह बन चुकी है, और पिछले कई महीनों में हमलोग काफी कोशिश करके भी इस समस्या का बाल बांका नहीं कर पाए। दारू तैयार करने वाले लोगों को हम समझाने गए तो उन्होंने हमारा मजाक उड़ाकर हमें भगा दिया। जीविकोपार्जन का इतना सहज रास्ता छोड़ देने के लिए वे तैयार नहीं हैं। सरकारी अफसरों के सामने हाथ-पैर जोड़कर देखा, वहां भी हमारी हालत पत्थर पर सिर पटकने जैसी हुई। उनके खिलाफ सरकार को शिकायती पत्र लिखा, वे पत्र कूड़ेदान में फेंक दिए गए। मैं अब क्या सोच रहा हूं, जानते हो ? सूरेन महंत नामक एक्साइज इंस्पेक्टर मोहधूलि में पांच सालों से है। सारे शराब व्यापारियों को उसी ने पाल रखा है। अवैध शराब जब्त करना तो दूर की बात है, कानून की आंखों में धूल झोककर कैसे अवैध शराब का कारोबार किया जा सकता है, यह उपाय वह उन लोगों को सिखाता है। सारे शराब व्यापारियों से उसे नियमित रूप से कमीशन मिलता है। उसके ऊपर वाले और मोहधूलि के कर्णधारों को भी उस कमाई का हिस्सा जरूर मिलता है, इसीलिए कोई उसका तबादला यहां से होने देना नहीं चाहता। मैंने सुना है, विश्व हजारिका एम. एल. ए. को भी इलेक्शन के समय उसने काफी रुपए देकर मदद की थी। विशेष रूप से विश्व हजारिका की मदद से ही वह मोहधूलि में लगातार पांच सालों से जमा हुआ है। जब तक सूरेन महंत मोहधूलि में रहेगा, हमलोग शराब व्यापारियों का बाल भी बाका नहीं कर पाएंगे।''

कालिनाथ को चुप होते देख दिवाकर ने पूछा, ''तो तुमने अब आगे क्या कदम उठाने के बारे में सोचा है ?''

''मैंने सोचा है–'' कालिनाथ फिर कहने लगा, ''सूरेन महंत के खिलाफ शिकायत पत्र लिखने से कोई फायदा नहीं होगा। उसके तबादले की मांग के संबंध में जनता का आवेदन लेकर मैं स्वयं शिलांग जाऊंगा। मंत्री से मिलकर उसे सारी बातें समझाकर उसके तबादले का आदेश फौरन जारी करवाने की मैं कोशिश करूंगा। मगर मेरे शिलांग अकेले जाने की जगह मेरे साथ जनता का एक प्रतिनिधि-दल भी जाए तो ज्यादा अच्छा रहेगा। इसीलिए हम मोहधूलि में सभी वरिष्ठ लोगों को एकजुट कर पहले एक जनसभा आयोजित करेंगे। उसी जनसभा में सार्वजनिक आवेदनपत्र पर सबसे हस्ताक्षर लेंगे और एक प्रतिनिधि-दल का गठन भी करेंगे। शिलांग आने-जाने

के लिए कुछ रुपयों की भी जरूरत होगी। इसके लिए हमें जनता से चंदा भी मांगना पड़ेगा। कुल मिलाकर जैसे भी हो, सुरेन महंत को मोहधूलि से हटाए बगैर यहां अवैध शराब का धंधा बंद होने की कोई आशा नहीं है। तुम क्या सोचते हो ?''

''एक बात तुमने ठीक ही समझी है''—दिवाकर ने जवाब दिया, ''सूरेन महंत जब तक मोहधूलि में एक्साइज इंस्पेक्टर बना रहेगा तब तक हम दारू के अड्डे कभी बंद नहीं कर पाएंगे। वही तो है अवैध दारू के व्यापारियों का असली महाजन। पुलिस भी उसकी मुट्ठी में है, स्थानीय नेतागण उसकी मुट्ठी में हैं, गुंडे उसकी मुट्ठी मे हैं। उसके खिलाफ लड़ने का मतलब जंगली भैंसे के सींग को पकडने जैसा काम होगा। मगर मेरा सवाल है, हम उसे यहां से किसी तरीके से खदेड़ने में कामयाब भी हो जाएं, तो क्या दूसरी जगह जाकर वह ऐसा जहर नहीं फैलाएगा ? मोहधूलि को विषयुक्त कर किसी नई जगह पर विष फैलाने की स्थिति पैदा करना क्या हमारे लिए उचित होगा ? इसीलिए मैं सोचता हूं कि उसका यहां से किसी दूसरी जगह तवादला न करवाकर हमेशा के लिए नौकरी से मुक्त करने का उपाय किया जाए तो अधिक उचित रहेगा।''

''तुमने बहुत अच्छी बात कही है,'' कालिनाथ बोला, ''मैं शिलांग में मत्री से मुलाकात कर उसे नौकरी से बर्खास्त करवाने की कोशिश करूंगा। मगर फौरन ऐसा न भी हो पाए तो तबालदा कर देने पर उसके विष के दांत टूट जाएगें। किसी नई जगह जाकर गिरोह बनाने में उसे काफी वक्त लगेगा। मगर वहां जड़ जमाने से पहले ही अगर स्थानीय लोग उसे खदेड़ने के लिए एकजुट हो जाएं, तो धीरे-धीरे उसका विष काफी कम हो जाएगा।...हमें पहले मोहधूलि के बारे में ही सोचना चाहिए। हम लोगों की तरह अगर हरेक जगह के लोग अपने-अपने इलाके की भलाई के बारे में सोचें तो समाज के इन शत्रुओं को सिर छुपाने के लिए भी कहीं जगह नहीं मिलेगी। ...तो कल शाम तुम मेरे पास आओगे। एक जनसभा करने के लिए कल हम मोहधूलि के तमाम वरिष्ठ लोगों से मुलाकात करेंगे।''

सिर्फ समाजसेवा करते रहने से दिवाकर की गृहस्थी चलने वाली नहीं है, पेट की भूख के बारे में भी उसे चिंता करनी पडती है। अगले दिन फिर आने का वादा कर वह वहां से विदा हो गया। कालिनाथ ने एक ही बैठक में जनसभा बुलाने के लिए एक आह्वान पत्र लिख डाला और किन-किन वरिष्ठ लोगों के पास जाएगा, इस बारे में विचार करने लगा। स्वाभाविक रूप से जिस व्यक्ति का नाम सबसे पहले उसके दिमाग में आया, वह केशव मंडल था। वैसे आजकल केशव मंडल की प्रतिष्ठा और क्षमता पहले जैसी नहीं रही है। नई पीढ़ी की नजर में वह मतलबी और सुविधावादी व्यक्ति है। समाज के किसी भी बड़े क्षमतायुक्त पदों को हासिल करना ही अब उसके जीवन का उद्देश्य बन चुका है। उसने समाजसेवा को एक मुनाफे का व्यवसाय बना दिया है, और इस व्यवसाय के लिए उसके पास एकमात्र मूलधन है,देश की स्वाधीनता

के आंदोलन में शामिल होकर जेल जाने का उसका अनुभव। क्षमता हासिल करने के लिए वह रेब महाजन जैसे समाजद्रोही तक से सांठगांठ करते हुए हिचका नहीं। जनता उसके पाखंड को समझ चुकी है, नई पीढ़ी के युवक उसकी पीठ के पीछे उस पर तरह-तरह की फब्तियां कसते हैं। मगर फिर भी एक बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि मोहधूलि के समाज में आज भी केशव मंडल एक जीवंत शक्ति का नाम है। त्याग के आदर्श के प्रति सहजात श्रद्धाबोध जिन लोगों में है वे अभी तक नहीं भूले हैं कि अंग्रेजों के शासनकाल के दौरान मंडल ने सरकारी नौकरी के लाभजनक पद को छोड़कर देश की आजादी की लड़ाई मे भाग लिया था और जेल गया था। उसके नैतिक प्रभाव की चिनगारी आज बुझ चुकी है, मगर अवशेष जो बचा है, उसी के प्रति कृतज्ञ लोग आज भी श्रद्धा का भाव रखते हैं। इसके अलावा लोग भक्तिभाव से न सही, भय के भाव से ही उसका सम्मान करते हैं, इसकी भी एक वजह है। वह स्थानीय कांग्रेस का अध्यक्ष है, पंचायत का भी अध्यक्ष है। शासक दल के साथ स्थानीय लोगों का वही प्रमुख सपर्क-सूत्र है। मोहधूलि में कोई सामूहिक कार्य या सभा का आयोजन उसे छोड़कर करने की कल्पना आज भी नहीं की जा सकती।

रेब महाजन को भी सभा में जरूर बुलाना पड़ेगा। हालांकि सभी जानते हैं कि मोहधूलि के समाज में सारे पाप, भ्रष्टाचार और अनाचार का मूर्त प्रतीक रेब महाजन है, फिर भी वह अत्यंत ताकतवर आदमी है। उसे विपक्ष के खेमे में डालकर शत्रु को शक्तिशाली बनने देना बुद्धिमानी का काम नहीं होगा, बल्कि गांठ वाले बास को बुद्धि से ही फाड़ना होगा। विश्व हजारिका एम. एल. ए. उसका गहरा दोस्त है, दूसरी तरफ विश्व हजारिका सूरेन महंत का प्रमुख संरक्षक भी है। अब अगर सूरेन महंत के तबादले की अर्जी पर रेब महाजन का हस्ताक्षर लिया जा सके तो विश्व हजारिका को जरूर कुछ परेशानी होगी।

सभा में हाईस्कूल के हेडमास्टर वसंत बरा को भी बुलाना होगा। मोहधूलि में एक और साजिश का सूत्रधार वसत बरा है। अध्यापन के नाम पर राजनीति करना ही उसका मुख्य काम है। काफी चालाकी का इस्तेमाल करते हुए उसने रेब महाजन को हाईस्कूल की मैनेजिंग कमेटी का अध्यक्ष बना रखा है और दोनों मिलकर स्कूल का शोषण कर रहे हैं। स्कूल में शिक्षकों की नियुक्ति करना, छात्रों को दाखिला देना, ठेका बांटना—इन सब कार्यो में दोनों को रुपए कमाने और प्रभाव बढ़ाने के नए-नए मौके मिलते रहते हैं। यह सब देख-सुनकर मोहधूलि के दूसरे गुट के लोग जल-भुन रहे हैं और वे लोग इन दोनों को अध्यक्ष और सचिव पद से हटाने के लिए कोशिश कर रहे हैं। पिछले साल वसंत बरा को मैनेजिंग कमेटी के सेक्रेटरी पद से हटा ही दिया गया था, मगर उसने धूर्तता का सहारा लेकर छात्रों की हड़ताल करवा दी थी और गड़बड़ी फैला दी थी, जिसके कारण मंत्री ने इंस्पेक्टर के निर्देश को रद्द करके

उसे फिर सेक्रेटरी बना दिया था। वसंत बरा के विरोधी साल में छह बार उसके खिलाफ शिकायत करने के लिए शिलांग जाते हैं, जिसके कारण आत्म-रक्षा के लिए वसंत बरा को भी दस बार शिलांग जाना पड़ता है। यही सब करते हुए उसका अधिकांश समय गुजर जाता है। स्कूल चलाने के लिए या बच्चों को पढ़ाने के लिए उसके पास समय नहीं बचता। वह गलत आदमी है, यह जानकर भी मंत्री उसका पक्ष छोड़ नहीं सकता, क्योंकि विश्व हजारिका एम. एल. ए. के चुनाव-युद्ध का वसंत बरा एक प्रमुख सेनापति है, और विश्व हजारिका के हितो की उपेक्षा करने की हिम्मत मंत्री के पास नहीं है। कालिनाथ जानता है कि वसंत बरा भी सूरेन महंत का घनिष्ठ मित्र है। आपसी स्वार्थ की डोरी ने मोहधूलि के तमाम गणमान्य लोगों को एक खेमे में बांध रखा है।

इसके बावजूद वसंत बरा को भी जनसभा में बुलाना पड़ेगा। जहर से जहर काटने की कोशिश करने के सिवाय फिलहाल कोई उपाय नहीं है।

सभा में और लोगों को भी बुलाना है—रामेश्वर, भोला, हेमचंद्र...कालिनाथ बचपन से ही सुनता रहा है कि कभी ये लोग भी यौवन-सुलभ आदर्शवाद से प्रेरित होकर देश के स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए थे, उन्होंने अन्याय और शोषण-मुक्त एक नए समाज का सपना देखा था। मगर जिन लोगों का उदात्त आह्वान सुनकर वे एक दिन घर छोड़कर संग्राम की आग मे कूद पड़े थे, जिन लोगों की वे देवता की तरह इज्जत करते थे, आजाद भारत में वे लोग ही लोभी, स्वार्थी और शैतान बन गए तो उनके मोहभंग की वेदना ने तीव्र घृणा का रूप ले लिया। आज उनमें अन्याय के खिलाफ लड़ने की शक्ति नही है, समाज के बारे में सोचने के लिए समय नहीं है, लगातार बढ़ रही गरीबी के दबाव से पिसे हुए ये लोग जीवन-युद्ध में पूरी तरह थक चुके हैं।

फिर भी उनमें से हेमचंद्र कम्युनिस्ट बन गया है। उसकी फटेहाली की कोई सीमा नहीं है। उसका बड़ा भाई कांग्रेसी ठेकेदार है। जब हेमचंद्र कम्युनिस्ट बन गया तो धंधे में नुकसान होने की आशंका से उसके बड़े भाई ने उसे घर से अलग कर दिया। पैतृक संपत्ति के रूप में हेमचंद्र को जो एक 'पूरा' जमीन मिली थी, बाढ़ की वजह से उसमें कई सालों से अच्छी फसल नहीं हो पाई थी। राजनीति के नशे में वह इस कदर बौराया है कि अपने जीर्ण-शीर्ण घर की मरम्मत करने के लिए न तो उसके पास समय है, न क्षमता। कालिनाथ ने जब से उसे देखा है—उसके शरीर पर हमेशा एक ही कमीज नजर आई जिसमें एक सौ पैबंद थे। उसी रूप में वह आदमी बाबा आदम के जमाने की फटेहाल साइकिल लिए गांव-गांव घूमता फिरता है, जहां दो लोग मिल जाते हैं वहीं वर्ग-संघर्ष के बारे में भाषण देना शुरू कर देता है। मोहधूलि के लोगों की नजरों में हेमचंद्र एक अजीब जानवर के समान है। किसी मांग दिवस के लिए पार्टी का निर्देश मिलते ही किसी तरह सिर्फ चार-पांच लोगों

को जुटाकर वह सड़क पर जुलूस निकालता है और गला फाड़कर नारे लगाता है—'इन्कलाब जिंदाबाद, कांग्रेस सरकार मुर्दाबाद !' रास्ते से गुजर रहे लोग यह दृश्य देखने के लिए खड़े हो जाते हैं और हंसने लगते हैं। मगर कालिनाथ नहीं हंसता है। वह स्वयं अब तक किसी राजीतिक दल में शामिल नहीं हुआ है। कम्युनिस्ट बनने के बारे में भी अभी नहीं सोचा है, मगर राख में छिपी चिनगारी की तरह उसने हेमचंद्र की आंखों में जो चिरंतन प्रतिवाद और विद्रोह की आग देखी है, उसी से उसके मन में आवेग का स्पंदन पैदा होने लगा है। सफलता ही जीवन का एक मात्र मापदंड नही है—यह गहरा विश्वास अपने हृदय में उसने बनाए रखा है।

...इन लोगों को भी सभा में जरूर बुलाना होगा—उसने मन ही मन सोचा।

15

अगले दिन निर्धारित समय पर दिवाकर कालिनाथ के घर आ गया। दोनों मित्र केशव मंडल के घर की तरफ रवाना हुए।

केशव मंडल के घर में तब और दो व्यक्ति बैठे हुए थे। वे लोग जरूर कोई गोपनीय बातें कर रहे थे, क्योंकि कालिनाथ और दिवाकर को देखकर वे झुंझला उठे थे। फिर भी केशव मडल ने उन्हें बैठने के लिए कहा और उनका परिचय पूछा। कालिनाथ ने पिता का नाम बताकर अपना परिचय दिया तो केशव मंडल की मुद्रा बदल गई। वह चकित होकर स्नेहपूर्ण स्वर में बोला, "तुम शिवनाथ फुकन के बेटे हो ? हे हरि, तुम कब इतने बड़े हो गए ? तुम जानते हो या नहीं, कह नहीं सकता, इस दुनिया मे तुम्हारे देउता से बढ़कर मेरा कोई दूसरा मित्र नहीं है। बयालीस के आंदोलन में जब मैं जेल जा रहा था तब अपने भूमिगत जीवन की आखिरी रात गुजारने के लिए मैं तुम्हारे घर गया था, क्योंकि मैंने सोचा था, तुम्हारी मां के हाथ से एक मुट्ठी अन्न खाकर और तुम्हारे देउता से आशीर्वाद लेकर तीर्थ की यात्रा करूंगा तो मुझे असली पुण्य मिलेगा। रात भर जागकर हम ढेर सारी बातें करते रहे थे, और सुबह ब्रह्म मुहूर्त में तुम्हारे देउता ने मुझे थाने के गेट के पास विदा किया था। बेटे, वह दिन मेरे जीवन का सबसे अधिक पवित्र दिन था। ...मगर मैंने बहुत बड़ा पाप किया है बेटे, आज काफी साल हो गए, मैं तुम्हारे देउता से जाकर मिल नहीं पाया। कैसे हैं वे ? उनकी तबीयत तो ठीक है न ?"

कालिनाथ के जवाब को सुनने लायक मानसिक स्थिति केशव मंडल की नहीं थी, चूंकि उस पल उसका मन अतीत में खो गया था, उसके चेहरे से आवेग भरी व्याकुलता प्रकट हो रही थी। कालिनाथ मुग्ध दृष्टि से कुछ पल केशव मंडल के चेहरे की तरफ देखता रहा। जैसे उस आदमी के चेहरे से बुढ़ापे की, कुटिलता की और

तुच्छता की परतें टूट गई थी और अतीत के अस्तित्व का निर्मल स्वरूप उजागर हो गया था। उस चेहरे से जाहिर हो रही थी एक अलौकिक अनुभव की स्मृति। मगर कुछ पल बाद केशव मंडल वर्तमान जगत में लौट आया और संदिग्ध, मगर कौतूहलपूर्ण दृष्टि के साथ उसने कालिनाथ से पूछा, "तो बेटे, इस बूढ़े के पास किस काम से आए हो ?"

कालिनाथ ने विस्तारपूर्वक अपने उद्देश्य के बारे में बताया। केशव मंडल ने तत्काल कुछ नहीं कहा और खामोश हो गया। उसे याद आया—पिछले चुनाव में विश्व हजारिका ने जब केशव मडल को एक हजार रुपए जुटाने की जिम्मेवारी सौंपी थी तो वह कई लोगों के साथ ही आबकारी इंस्पेक्टर सूरेन महंत के पास भी गया था और महंत ने एक दिन में ही पाच सौ रुपए लाकर दे दिए थे। उसे जब कांग्रेस का अध्यक्ष बनने के लिए कई वोट खरीदने की जरूरत महसूस हुई थी, तब भी सुरेन महंत ने जबर्दस्ती उसे पांच सौ रुपए दिए थे। इस तरह की जरूरत की घड़ियों में हमेशा सूरेन महंत उसकी मदद करता रहा है। उसके पास केशव मंडल को स्वयं जाने की जरूरत भी नहीं पड़ती। वही सप्ताह में दो-तीन बार आकर केशव मंडल की खैरियत पूछ जाता है और जब भी जरूरत होती है रुपए दे जाता है। ऐसी स्थिति में वह अपने पैरों पर खुद ही कुल्हाड़ी कैसे मारेगा ? किस मुंह से वह जनसभा में सूरेन महंत के खिलाफ भाषण देगा ?

दूसरी तरफ, शिवनाथ फुकन के बेटे कालिनाथ से कैसे कहे कि मोहधूलि में जारी अवैध शराब के धंधे के खिलाफ शुरू किए जाने वाले आंदोलन में वह शामिल नहीं हो सकता ? कालिनाथ से वह पहले मिला नहीं है, मगर कई लोगों से उसकी चर्चा सुन चुका है। मोहधूलि में जो तरुण नेतृत्व तैयार हो रहा है, कालिनाथ उसी वर्ग का अग्रणी है। उसे नाराज करने का अर्थ अपनी कब्र खुद ही खोदना होगा। इसके अलावा, उसने आते ही पहली बात यही कही कि पहले जिस तरह कांग्रेस ने अफीम के प्रचलन के खिलाफ आंदोलन छेड़ा था, आज अवैध शराब के प्रचलन के खिलाफ भी कांग्रेसियों को वैसा ही आंदोलन शुरू करना समय की मांग है। दरिद्र जनता के दुख-दर्द दूर किए बगैर उन्हें शराब के नशे में आत्म-विस्मृत रहने देना शोषण का एक हथकंडा ही है। कालिनाथ की इस बात का विरोध करने के लिए केशव मंडल के पास न तो नैतिक अधिकार है, न ही तर्को की शक्ति है।

अपने मन के साथ तर्क करते हुए केशव मंडल काफी देर तक खामोश रहा। उसके बाद वह बोला, "तुम शिवनाथ फुकन के लड़के के रूप में उचित काम ही कर रहे हो, बेटे ! ईश्वर तुम्हारा मंगल करे। हम तो बूढ़े हो चुके हैं, अब हमारी जिम्मेवारी तुमलोगों को ही लेनी पड़ेगी। मुझे यह देखकर बहुत खुशी हो रही है कि मोहधूलि में तुम जैसा आदर्शवादी युवा उभरकर सामने आ रहा है। तुमलोग ही मोहधूलि के भविष्य हो, देश के भविष्य हो...मगर एक बात है बेटे, तुम तो देख ही रहे हो,

आजकल मै काफी बीमार रहता हूं। घर से लगभग निकलता ही नहीं। फिर भी तुम लोगों की मीटिंग के दिन अगर तबीयत ठीक रही तो मैं जरूर आने की कोशिश करूंगा। ऐसे महान कार्य में शामिल नहीं होने पर मुझे पाप लगेगा। मगर बेटे, शरीर ठीक नहीं रहा और आ न सका तो तुमलोग बुरा मत मानना। मेरा हृदय तुमलोगों के साथ रहेगा।''

केशव मंडल ने ये बातें शहद-घुली आवाज में इस तरह कहीं कि उसकी सचाई पर संदेह करने के लिए कालिनाथ कोई कारण तलाश नहीं पाया। उसने जेब से आह्वान पत्र निकालकर कहा, ''मीटिंग के दिन आपकी तबीयत जरूर ठीक हो जाएगी। आपके बगैर इतना बड़ा काम शुरू करने की बात हम सोच भी नहीं सकते। मीटिंग के दिन हमलोग आकर आपको ले जाएंगे। आज इस कागज पर दस्तखत कर दीजिए। आह्वान पत्र पर आपके दस्तखत रहेंगे तो हमें कोई डर नहीं रहेगा, तब हम आधी लड़ाई जीत लेंगे।''

आह्वान पत्र पढ़ते हुए केशव मंडल का दिल भीतर ही भीतर कांपने लगा। उसे ऐसा लगा मानो उस पर दस्तखत कर वह अपने मृत्युदंड के आदेश पर स्वयं ही दस्तखत कर देगा। दो साल पहले मोहधूलि में सूरेन महंत के तीन साल का कार्यकाल पूर्ण होने पर सरकार की तरफ से तबादले का निर्देश आया था, मगर सूरेन महंत को मोहधूलि में रहने दिया जाए, इस आशय का पत्र उसने स्वयं मंत्री को लिखा था। अब अगर मंत्री इस आह्वान पत्र को देखेगा तो वह क्या सोचेगा ? मगर आह्वान पत्र हाथ में लेकर विचार करने का समय नहीं है, कालिनाथ एक हाथ बढ़ाए प्रतीक्षा कर रहा था। वक्त आने पर देखा जाएगा—यह सोचते हुए उसने कांपते हुए हाथ से आह्वान पत्र पर दस्तखत कर दिए।

कालिनाथ और दिवाकर उसे नमस्कार कर विदा हो गए।

उनके बाहर निकलने तक केशव मंडल खामोश बैठा रहा। फिर अब तक खामोश बैठे दोनों व्यक्तियों की तरफ मुखातिब होकर बोला, ''भद्र, जयराम, तुमलोगों ने देखा न, मैं कैसी विपत्ति में फंस गया ! अभी तुम लोग सूरेन महंत के पास जाकर सारी बातें स्पष्ट रूप से बता दो। उससे कहो, जल्द से जल्द विश्व हजारिका के पास जाकर बचाव का इंतजाम पहले से कर ले। मैंने किस तरह विवश होकर कागज पर दस्तखत किए, महंत से कहना, हजारिका को समझा देगा। और एक बात—महंत से कहना, कुछ दिनों तक वह मेरे पास आना बंद कर दे। कौन कहां जासूसी कर रहा हो, कोई नहीं जानता।''

जयराम बोला, ''आप जरा-सी बात के लिए परेशान क्यों हो रहे हैं ? राजनीति में इस तरह की घटनाएं घटती रहती हैं। जोरहाट के पुण्यधर भट्टाचार्य के बारे में आप जानते हैं या नहीं ? मंत्री या अफसर के नाम नौकरी के लिए सिफारिश का पत्र लिखवाने के लिए उनके पास रोज सैकड़ों लड़के आते हैं। सबकी सिफारिश

करते हुए वे पत्र लिख देते हैं। मगर लड़कों के जाते ही वे फोन उठा लेते हैं और मंत्री या अफसर से कह देते हैं—अमुक के मार्फत मैंने एक पत्र भेजा हैं। जानते ही हैं, हम राजनीति करने वाले किसी को नराज नहीं कर सकते। मगर पत्र की बातों को तुम सच नहीं मानना। उसे कूड़ेदान में डाल देना। अब आप भी मंत्री या एम. एल. ए. को वैसा ही पत्र लिख दें।''

भद्र ने कहा, ''पत्र तो लिख देंगे, मगर मीटिंग के भाषण का क्या होगा ? उस दिन जनता के सामने कही गई बातों से मंडल देउता मुकर नहीं सकेंगे न।''

जयराम ने कहा, ''मीटिंग के दिन मंडल देउता को जरूर तेज बुखार हो जाएगा, नहीं तो पेट खराब हो जाएगा। लड़के इन्हें मीटिंग में ले जाने के लिए आएंगे, फिर भी ये बिस्तर से उतर नहीं पाएंगे।''

जैसे सागर में डूबने से बच गया हो और किनारा मिल गया हो, उसी अंदाज में केशव मंडल कुछ देर तक जयराम की तरफ कृतज्ञ दृष्टि से देखता रहा। फिर उसने कहा, ''तुमलोग वक्त वर्बाद मत करो। अभी फौरन सूरेन महंत के पास जाओ। मेरा भी पूजा-गृह में जाने का समय हो गया है।''

16

निश्चित दिन जनसभा हुई, मगर उसमें केशव मंडल, रेब महाजन या वसंत बरा आदि मोहधूलि के बड़े नेताओं को देखा नहीं गया। हालांकि सभी ने जनसभा में शामिल होने की स्वीकृति दी थी, मगर जनसभा के दिन केशव मंडल को पेट की तकलीफ हो गई, रेब महाजन को बहुत 'जरूरी' काम से एक दिन पहले जिला सदर जाना पड़ा, वसंत बरा भी उस दिन किसी घरेलू समस्या में फंस गया। दिवाकर ने कालिनाथ के चिंतित और उदास चेहरे की तरफ देखते हुए कहा, ''तुम्हें हताश होने की जरूरत नहीं है, कालिनाथ ! जनता के दुश्मन खुद ही अपनी असलियत उजागर कर रहे हैं, अच्छा ही हो रहा है। लोग उनका असली रूप देख लें। जिन असली लोगों को सभा में आना था वे सभी आए हैं। तुम लोगों की तरफ देखो तो, सभा में इतने लोगों के आने की उम्मीद थी तुम्हें ? जाहिर हो गया है कि जनता का हित और जनता के तथाकथित नेताओं का हित एक नहीं है। हमें सिर्फ सूरेन महंत जैसे लोगों से युद्ध करने से ही काम नहीं चलेगा, युद्ध करना होगा जनता के नेता बने शोषकों के खिलाफ।...अब तुम सभा की शुरुआत करो।''

केशव मंडल सभा की अध्यक्षता करने वाला था। वह नहीं आया तो एक अन्य व्यक्ति को अध्यक्ष बनाना पड़ा। कालिनाथ ने सभा-स्थल के चारों तरफ नजर दौड़ाई—मोहधूलि में जो लोग सार्वजनिक कामों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं या सभा

में खड़े होकर भाषण देते हैं, वैसा कोई आदमी वहां उपस्थित नहीं था, था तो सिर्फ हेमचंद्र। वह कम्युनिस्ट भले ही हो, मगर आज की सभा का कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं था, इसीलिए उसने हेमचंद्र के नाम का प्रस्ताव अध्यक्ष पद के लिए करने का निश्चय किया। दिवाकर से जब उसने यह बात बताई, तो वह बोला, "हो सकता है, आज की सभा की अध्यक्षता करने के लिए हेमचंद्र को छोड़कर कोई योग्य व्यक्ति न हो। मगर देखना, बाद में षड्यंत्रकारी प्रचार करेंगे कि शराब निषेध के नाम पर कम्युनिस्टों की सभा की गई। पुलिस भी वैसी ही रिपोर्ट तैयार करेगी। तुम सोच-समझकर जो उचित मानो, वही करो।"

कालिनाथ ने कहा, "हमने तो कांग्रेसी-कम्युनिस्ट सबको सभा में बुलाया था। कांग्रेसी नहीं आए तो हम क्या करें ? दुष्टों के पास कभी बहानों की कमी नहीं होती। हेमचंद्र को अध्यक्ष न भी बनाएं तो भी किसी बहाने से वे हमारा विरोध करेंगे। बाद में चाहे जो भी हो, हम आज हेमचंद्र को ही अध्यक्ष बनाएंगे।"

कालिनाथ ने जैसा सोचा, वैसा ही हुआ। हेमचंद्र को अध्यक्ष बनाया गया। कालिनाथ ने एक बार फिर सभा-स्थल के चारों तरफ देखा—हेमचंद्र को अध्यक्ष बनाने से जैसे सारे लोग संतुष्ट नहीं हो पाए थे। कई लोग कानाफूसी करके कुछ बातें कर रहे थे, एक अस्फुट शोर सुनाई दे रहा था, बहुतों के चेहरे से विस्मय और विरक्ति का भाव उजागर हो रहा था। कालिनाथ ने सोचा—हेमचंद्र के प्रति लोगों का कोई व्यक्तिगत बैर हो या कम्युनिस्टों के प्रति जागरूकता के साथ उनका कोई आदर्शगत अंतर हो, यह बात सच नहीं थी। सच तो यह है कि केशव मंडल और रेब महाजन जैसे लोगों को अध्यक्ष-पद पर देखते-देखते लोग इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि यह उनके लिए स्वाभाविक प्रत्याशा बन चुकी है। किसी भी बदलाव को वे आसानी से स्वीकार नहीं कर सकते। जड़ता के बीच वे एक ऐसी सुरक्षा का अनुभव करते हैं कि हर तरह की तकलीफ झेलते हुए भी वे उस जड़ता को खत्म होने देना नहीं चाहते। लोगों की प्रतिक्रिया देखकर कालिनाथ कुछ चिंतित हुआ। मगर अब कोई चारा नहीं बचा था। हेमचंद्र ने अध्यक्ष के आसन पर बैठकर सभा प्रारंभ कर दी।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कालिनाथ सभा के उद्देश्य की व्याख्या करने के लिए खड़ा हुआ। एक लंबे भाषण में उसने अवैध शराब के प्रचलन के कारण मोहधूलि के सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक जीवन में होने वाली तबाही का एक जीवंत चित्र प्रस्तुत किया। शराबी के अत्याचार से स्वयं उसके परिवार के सदस्यों का जीना दूभर हो गया है, यथार्थ अनुभव के आधार पर दिया गया उसका भाषण काफी मार्मिक था। इसके अलावा, सभा में मौजूद अधिकतर लोगों को इस विषय का अत्यंत कड़वा एवं वेदनादायक अनुभव था। युवकगण शराब के प्रति आसक्त होकर काम-काज छोड़ चुके हैं, घर-घर में हाहाकार मचा है, मोहधूलि की सदियों पुरानी शांत परिचित जीवन-धारा में उच्छृंखलता की लहरें उठ रही हैं। भाषण समाप्त

करते हुए कालिनाथ ने जब प्रस्ताव रखा कि मोहधूलि से अवैध शराब का धंधा खत्म करने के लिए प्रथम कदम के रूप में भ्रष्ट आबकारी इस्पेक्टर सूरेन महंत का तबादला यहां से करवाने के लिए सरकार से अनुरोध किया जाए और जनता की मांग मंत्री के समक्ष पेश करने के लिए एक प्रतिनिधि दल को शिलांग भेजा जाए, तब उपस्थित जनता ने ताली बजाकर हर्षध्वनि के साथ कालिनाथ के प्रस्ताव का समर्थन किया।

समाज की तरफ से कुछ लोगों के भाषण देने के बाद प्रतिनिधि दल को चुनने के लिए विचार किया गया। कालिनाथ ने इसके बारे में पहले से ही तय कर रखा था। प्रतिनिधि दल के लिए कालिनाथ, हेमचंद्र और भोला का नाम प्रस्तावित हुआ, जिसका जनता ने समर्थन किया।

आखिरकार हेमचंद्र अध्यक्षीय भाषण देने के लिए खड़ा हुआ। जीवन में इतने बड़े जनसमूह को संबोधित करने का मौका उसे पहले कभी नही मिला था। पार्टी साहित्य पढ़-पढ़कर कठिन मेहनत से रटी गई विद्याएं उसके दिमाग में भरी हुई थीं जिनको कहीं व्यक्त नहीं कर पाने की यंत्रणा से वह छटपटाता रहा था। आज अचानक मौका पाकर मन की बातें कहने के लिए उसने एक लंबा भाषण देने का निश्चय किया। मुस्कराते हुए उसने कहना शुरू किया :

"कामरेड, दुनिया की सर्वहारा क्रांतिकारी जनता की तरफ से मैं सबसे पहले आप सबको लाल सलाम करता हूं। सम्राज्यवाद और पूंजीवाद के खिलाफ दुनिया भर में जो मेहनतकश क्रांतिकारी जनता लड़ाई लड़ रही है, पूरे भारतवर्ष में जो संग्राम शुरू हो चुका है, आज वही संग्राम मोहधूलि की जमीन पर भी शुरू हो गया है। हमारे युवा नेता कालिनाथ फुकन सभा के उद्देश्य की व्याख्या करते हुए कह चुके हैं कि आज की सभा का उद्देश्य मोहधूलि में अवैध शराब के प्रचलन के खिलाफ कार्रवाई करनी है। मगर मैं कहना चाहता हूं—यह अवैध शराब हकीकत में क्या है ? यह पूंजीवाद के पालतू दास, भारतीय बुर्जुवा वर्ग का सरकार के हाथों शोषण का एक हथियार है। इस हथियार का इस्तेमाल कर वे दरिद्र शोषित जनता को क्रांति के रास्ते से दूर रखना चाहते हैं। अवैध शराब के खिलाफ लड़ाई छेड़ने से पहले हमें समाज का वर्ग चरित्र समझना होगा, हमें वर्ग संघर्ष की मुख्य नीति को समझना होगा। आज हमारा देश आजाद तो हो गया, मगर देश की करोड़ों दरिद्र जनता की पहुच से आजादी अभी भी बाहर है, यह मुट्ठी भर कम्प्राडोर बुर्जुवा लोगों को मिली है, देश के शोषक पूंजीपतियों और उनके पालतू जातीय बुर्जुवा वर्ग को मिली है। इसीलिए आज हमारा प्रथम कर्तव्य बनता है कि देश में तेजी से वर्ग संघर्ष की शुरुआत की जाए, और उस संग्राम के जरिए बुर्जुवा वर्ग को खत्म कर, तुच्छ स्वार्थो को खत्म कर, असली मेहनतकश जनता को पूंजीवाद के निर्मम शोषण से मुक्त करें। हमारे सामने इस संग्राम का रास्ता स्पष्ट है। मार्क्स और लेनिन ने जो रास्ता दिखाया है,

वही हमारा रास्ता है। आज हम वियतनाम में क्या देख रहे हैं...।''

मोहधूलि से एक ही झटके में हेमचंद्र वियतनाम पहुंच गया, जहां से लौटने की बात उसे याद नहीं रही। वियतनाम से चीन, चीन से क्यूबा, क्यूबा से बोलविया पहुंचते हुए वह क्रांतिकारी भावना के चरम शिखर पर पहुंच कर विभिन्न देशों, ऐतिहासिक युगों, मार्क्स से लेकर माओ तक—पूरी दुनिया और दुनिया के इतिहास को खंगालता हुआ दुनिया की सैर करता रहा। जीवन में कभी मार्क्स और वियतनाम का नाम नहीं सुनने वाले मोहधूलि के निरक्षर लोगों की अवैध शराब की समस्या कहां पीछे छूट गई—हेमचंद्र को इस बात का तनिक भी ध्यान नहीं रहा। पूरी दुनिया की सैर करने के बाद हेमचंद्र जब मोहधूलि लौट आया और उसका भाषण समाप्त हुआ तब शाम के अंधेरे में सभास्थल में लगभग पांच व्यक्ति ही प्रेत की तरह बैठे दिखाई पड़े।

हेमचंद्र ने कुछ हड़बड़ाकर कालिनाथ से पूछा, ''मैं बहुत देर तक भाषण देता रहा क्या ?''

कालिनाथ ने कहा, ''आपने कितनी देर तक भाषण दिया, यह बड़ी बात नहीं हैं। आप किस उद्देश्य से किन लोगों को संबोधित कर रहे थे, यह महत्वपूर्ण बात थी। जिस 'दरिद्र शोषित सर्वहारा जनता' के लिए आपलोग रोना रोते हैं, वह जनता क्यों आपलोगों को ग्रहण नहीं करती—इसका रहस्य मैं आज समझ गया। बीज बोने से पहले खेत की मिट्टी को तैयार करने की जरूरत होती है। सख्त मिट्टी में बीज बोने से कभी फसल पैदा नहीं हो सकती। आपका उद्देश्य सचमुच महान है, बातें भी सत्य हैं, मगर आपका भाषण काला अक्षर भैंस बराबर था। निरक्षर लोगों के सामने किसी पुरोहित की तरह रटा गया होम के मंत्र का पाठ करने की तरह था। जनता की बाते जनता की भाषा में कहना जब तक आपलोग नहीं सीखेंगे, तब तक लोग आपलोगों को नहीं अपनाएंगे। आपलोग रूस की क्रांति की बातें करते हैं। सोचते हैं अलीबाबा के खुल जा सिमसिम के मंत्र की तरह वहां एक ही दिन में क्रांति हो गई थी। मगर हकीकत ऐसा था। कांति से बहुत पहले वहां क्रांतिकारी युवाओं ने उसके लिए जमीन तैयार की थी। वे दल बनाकर गांवों में जाकर निरक्षर लोगों को पढ़ाते थे ताकि वे क्रांति की भाषा समझ सके। मगर आपलोग वैसा कुछ किए बगैर एक झटके में बाजी मार लेना चाहते हैं। नतीजा क्या हो सकता है, आप अपनी आंखों से देख ही रहे हैं। आप वियतनाम के रणक्षेत्र का वर्णन कर रहे थे तब मोहधूलि की जनता आपका भाषण छोड़कर मवेशी बांधने के लिए चली गई। आप भी अब चलिए। इसी सप्ताह शिलांग जाना पड़ेगा, उसके लिए तैयारी शुरू कीजिए।''

17

कालिनाथ को सिर्फ हेमचंद्र के साथ शिलांग जाना पड़ा। भोला ने जाने का वादा किया था, मगर बाद में बहाना बनाकर मुकर गया। जनता के खर्च से शिलांग देखने की आशा से पहले वह प्रफुल्लित हो गया था। इतना ही नहीं, जनता से चंदा जुटाने में भी उसने उत्साह दिखाया था। मगर जाने की तारीख से एक दिन पहले उसने घोषणा कर दी कि कमर का उसका पुराना दर्द फिर तेज हो गया है, लाठी का सहारा लिए बगैर वह आंगन से बाहर भी नहीं निकल पाता। गांव में बातें हवा की तरह फैलती हैं। हेमचंद्र ने आकर कालिनाथ को बताया कि सूरेन महंत का दूत रात के वक्त भोला के घर आता-जाता रहा है। उससे वादा किया है कि उसके बड़े शराबी बेटे को आबकारी चपरासी की नौकरी दे देगा। दिवाकर अन्य जगह से सूचना लेकर आया कि भोला को शिलांग जाने से रोकने के लिए गहरी साजिश रची गई है। जनसभा की हेमचंद्र ने अध्यक्षता की। उसके बाद से चारों तरफ अफवाह फैलाई जा रही है कि वह कम्युनिस्टों की सभा थी और कालिनाथ भी हेमचंद्र के साथ कम्युनिस्ट बन गया है। अब अगर जनता के प्रतिनिधि के रूप में सिर्फ कालिनाथ और हेमचंद्र शिलांग जाएंगे तो यह साबित करने में आसानी होगी कि वह महज कम्युनिस्टों का प्रतिनिधि दल था। विश्व हजारिका इसी मौके का फायदा उठाकर मंत्री को अपनी बात मनाने के लिए तैयार कर लेगा।

भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ लड़ने या अवैध शराब के प्रचलन को बंद करने जैसे जनहित के गैर-राजनीतिक मुद्दे को भी किस तरह दलगत राजनीति के चक्रव्यूह में फंसाकर जटिल और दुरूह बनाया जा सकता है, यह सोचकर कालिनाथ का अनभिज्ञ मन क्षुब्ध हो उठा। मगर इतना आगे बढ़ जाने के बाद अब पीछे हटने या और कोई कदम उठाने का उपाय नहीं है। मछली मरे या न मरे, पोखर को खंगालकर देखा जाए—इसी भाव के साथ हेमचंद्र के साथ शिलांग जाने के लिए वह तैयार हुआ।

उधर जनता से अधिक राशि का संग्रह नहीं हो पाया। रुपए देने की क्षमता रखने वाले रेब महाजन जैसे प्रमुख धनी लोग आज कल कहकर कालिनाथ और उसके साथियों को टालते रहे। विवश होकर कालिनाथ ने पिता के सामने हाथ फैला दिया। शिवनाथ वैसे भी कुछ रुपए देता ही, मगर उसका व्यक्तिगत स्वार्थ जुड़ा हुआ था, इसीलिए वह दोनों की शिलांग यात्रा का सारा खर्च देने के लिए तैयार हो गया। इस तरह उनके पैसे की समस्या हल हो गई।

कालिनाथ को गुवाहाटी छोड़े हुए लगभग एक साल हो चुका है। अपने घर और मोहधूलि की विभिन्न समस्याओं के बारे में सोचते हुए एक साल कैसे गुजर गया—उसे पता ही नहीं चला। शिलांग यात्रा से पहले उसे याद आया कि एक साल के अंतराल के बाद फिर वह अपने प्रिय शहर गुवाहाटी को देख पाएगा। उसका

मन खुशी से नाच उठा। गांव में आने के बाद वह गुवाहाटी को देख पाएगा। उसका मन खुशी से नाच उठा। गांव में आने के बाद वह गुवाहटी की कई सुविधाओं से वंचित रहा है—रोज नई किताबों के पन्ने पलटने और पढ़ने की सुविधा, रास्ते से गुजरते हुए दीवारों पर चिपके पोस्टरों और प्राचीर-पत्रों के बीच जीवंत जीवन के प्राण-स्पंदन को महसूस करने की सुविधा, विभिन्न सभाओं-बैठकों में विभिन्न विचारों और आदर्शों के टकराव के उत्ताप को अनुभव करने की सुविधा, उससे भी अधिक अपने प्रिय दोस्तों के साथ तर्क और बहस के जरिए समसामयिक भाव-प्रवाह के जटिल जाल के बीच से सत्य की तलाश करने के अभियान का उल्लास—इन सारी सुविधाओं से वह वंचित हो गया है। उसने उसी पल तय किया कि शिलांग से लौटते हुए वह कुछ दिन गुवाहाटी में ठहर जाएगा। फिर कब गांव से बाहर निकलना संभव होगा, कुछ निश्चित नहीं है। उसने फौरन सौमित्र को एक पत्र लिखा। पत्र वह गुवाहाटी में ही डिब्बे में डाल देगा। शिलांग से लौटते हुए वह सौमित्र के घर में दो दिन ठहर जाएगा।

सौमित्र गुवाहटी का स्थानीय बंगाली लड़का है, कालिनाथ का सहपाठी मित्र। उसके पिता गुवाहाटी के एक मशहूर डाक्टर हैं, प्राइवेट प्रैक्टिस करते हैं। गुवाहाटी में एक बार मामूली-सा असमिया-बंगाली संघर्ष हुआ था तब छात्रों के कामन रूम में सौमित्र के साथ कुछ असमिया छात्रों का जबर्दस्त विवाद छिड़ा था, अलमस्त और वाचाल सौमित्र ने तब ऐसी कुछ बातें कही थीं जिसके कारण असमिया छात्र उसे पीटने के लिए तत्पर हो उठे थे। कालिनाथ ने बीच-बचाव करते हुए झगड़ा रोक दिया। उस समय पूर्ण निरपेक्ष दृष्टिकोण से उसने कुछ ऐसी बातें कहीं कि उसके उदार तर्कशील हृदय का परिचय पाकर सौमित्र मुग्ध हो उठा। तभी उनकी दोस्ती की शुरुआत हुई। धीरे-धीरे दोनो एक-दूसरे के करीब आते गए और थोड़ा-थोड़ा करके एक-दूसरे की पहचान करने लगे। इससे पहले कालिनाथ जानता था कि सौमित्र असाधारण रूप से प्रतिभाशाली छात्र है, अमीर घर का लड़का है, तेज-तर्रार, निर्भीक और अलमस्त है, वह साहबों की तरह फर्राटेदार अंग्रेजी बोलता है, बातों-बातों में बुद्धि के चमत्कार का परिचय देता है, जहां भी वह रहता है, लोगों के आकर्षण का केंद्र बन जाता है। हालांकि दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे, मगर कालिनाथ ने स्वयं को कभी सौमित्र के बराबर नहीं समझा, उसके करीब जाने के बारे में कभी नहीं सोचा। सौमित्र भी आंखों से सिर्फ इतना पहचानता था कि कालिनाथ उसका सहपाठी है, मगर हमेशा उसकी तरफ अवज्ञा की दृष्टि से देखता था, चूंकि कालिनाथ औसत बुद्धि का छात्र था और देखने में एक साधारण शांत लड़का था। विश्वविद्यालय के हजारों लड़कों की भीड़ में उसे अलग से देखने का कोई मौका नहीं मिला था। मगर कामन रूम की घटना के बाद सौमित्र को कालिनाथ के नए रूप का परिचय मिला। उसने देखा—कालिनाथ के पास एक तर्कशील हृदय है, अपना मौलिक दृष्टिकोण

है, उससे भी बड़ी बात यह है कि उसके पास विरल नैतिक साहस है।

उसने खुद पहलकर कालिनाथ से दोस्ती कर ली। एक दिन उसने कालिनाथ को अपने घर आमंत्रित किया और मां-पिता से परिचय करवाया। बहुत जल्द उनका संबंध ऐसा हो गया कि दोनों एक-दूसरे के पूरक जैसे बन गए। कुछ दिनों में ही कालिनाथ समझ गया कि सौमित्र धनी परिवार का लड़का है और असाधारण प्रतिभाशाली छात्र है, इसके बावजूद जीवन की सहज राह से वह आगे बढ़ना नहीं चाहता। उसका लक्ष्य है क्रांति के पथ से पृथ्वी को नए सांचे में ढालकर नवनिर्माण करना। उसके अध्ययनकक्ष मे फर्श से लेकर छत तक किताबों से भरी हुई एक लाईब्रेरी है, एक दिन वहीं बैठकर पाइप का धुआं छोड़ते हुए कमरे को धुएं से भरते हुए उसने कालिनाथ को बताया, "कालिनाथ, मैं इन सारी किताबों को पढ़ चुका हूं। अब तुम्हें भी इनको पढ़ना पड़ेगा।"

"क्यों ?" एक छोटे बच्चे की तरह कालिनाथ ने सवाल पूछा।

"क्यों ?"—सौमित्र ने ठहाका लगाया, "किताब पढ़ने के लिए कहने पर कोई सवाल पूछता है—क्या, क्यों ?" फिर हंसी रोककर वह बोला, "सुनो कालिनाथ! बहुत साल पहले की बात है। पेरिस के एक रेस्टोरेंट में रोज रात के वक्त कई कलाकार, लेखक, बुद्धिजीवी इकट्ठे होते थे, आधीरात तक उनकी अड्डेबाजी चलती रहती थी। विभिन्न देशों के लोग थे वे, स्पेन के चित्रकार, अमेरिका के लेखक, जर्मनी के गायक, इंग्लैड के अर्थशास्त्री। अपने-अपने देश से निर्वासित या आत्मनिर्वासित ये सारे गुणी प्रतिभाशाली लोग विश्व की राजधानी पेरिस में बसे हुए थे। जानते होगे—यूरोप में एक कहावत प्रचलित है कि प्रत्येक आदमी के दो स्वदेश हैं—एक है उसका अपना देश और दूसरा है पेरिस। जो भी हो, वे लोग हमेशा देर रात तक उस रेस्टोरेंट में बातें करते थे और उनकी बातचीत से ही आधुनिक सभ्यता-संस्कृति की गतिधारा बदलने वाले नए विचारों, आदर्शों और कल्पनाओं का जन्म होता था। कुछ दिन बाद देखा गया कि उनके अड्डे से कुछ दूर एक अलग मेज पर एक ठिगना गंजा आदमी अकेले बैठकर सामने काफी का कप रखकर उनकी बातें गौर से सुना करता था। लगातार कई दिनों तक यही सिलसिला चलता रहा। एक दिन अड्डे के किसी सदस्य ने अपना कौतूहल शांत करने के लिए उस ठिगने गंजे आदमी से पूछा, 'महाशय, हम यहां बैठकर क्या बातें करते हैं, हम क्या करना चाहते हैं, आप जान ही चुके हैं, मगर आप क्या करना चाहते हैं, हमें बताने की तकलीफ करेंगे ?'

गंजे आदमी ने गंभीरतापूर्वक जवाब दिया, 'मैं रूस के अत्याचारी जार का साम्राज्य जड़ से खत्म कर देना चाहता हूं।'

रूस के प्रबल प्रतापी जार को सिंहासन से हटाने की तैयारी यह ठिगना गंजा आदमी कर रहा है ! पेरिस में रात के अड्डों पर न जाने कितने पागल नजर आते हैं ! अड्डे के सारे लोगों ने ठहाका लगाया। गंजा आदमी फिर भी गंभीर बना रहा।

उसके कुछ साल बाद लोग यह खबर पाकर आश्चर्यचकित रह गए कि रूस का जार सचमुच सिंहासन से हटाया जा चुका है और इस कार्य को अंजाम देने वाला उस रात के अड्डे में सबके उपहास का पात्र बना वही ठिगना गंजा शांत आदमी है। क्योंकि वे लेनिन थे।"

बुझी हुई पाइप को फिर सुलगाकर सौमित्र ने कहा, "कालिनाथ, क्या तुम भी हंसोगे—अगर मैं तुम्हें कहूं कि अपने इस कमरे में इन किताबों के बीच बैठकर मैं भारतवर्ष की पूंजीवादी बुर्जुवा सरकार को खत्म कर जनता की क्रांतिकारी सरकार की स्थापना करने की तैयारी कर रहा हूं ?"

सौमित्र की बात सुनकर कालिनाथ हंसा नहीं था, बल्कि जीवन में पहली बार तुच्छता से कुछ ऊपर उठकर विराट स्वप्न का सामना करने की एक अभिनव सिहरन उसने महसूस की थी। अपनी सीमित बुद्धि और सीमित कल्पना से अपने जीवन को सही रास्ते पर चलाने के सिवा उसने किसी भी बड़ी बात की कल्पना नहीं की थी। उसकी सबसे बड़ी आकांक्षा थी—किसी तरह एम. ए. पास कर किसी नौकरी का जुगाड़कर शांति और सुकून के साथ अपना जीवन गुजारना। उसके भीतर भी एक आदर्शवादी मन सुप्त स्थिति में है, इस बात की कल्पना उसने कभी नही की थी, मगर सौमित्र की संगत में आकर उसने अपने उस मन को धीरे-धीरे जागते हुए अनुभव किया।

कालिनाथ ने सरलता के साथ कहा, "नौकरी करने के सिवा हम जैसे लोगों की और क्या गति हो सकती है ? मगर आजकल नौकरी का बाजार तो देख ही रहे हो, यूनिवर्सिटी में अच्छी पोजीशन पाने वाले विद्यार्थी भी नौकरी के लिए भटक रहे हैं, परीक्षा देने के बाद पहले गांव के स्कूल में मास्टरी की नौकरी पाने की कोशिश करूंगा, संभव हो सका तो वहीं धीरे-धीरे कालेज बनाने की बात भी सोचता रहा हूं। हम जैसे मामूली एम. एम. पास लोगों की नियति आजकल यही हो सकती है।"

पाइप में तंबाकू भरते हुए सौमित्र बोला, "कालेज की अंतिम परीक्षा में कार्ल मार्क्स ने एक लेख लिखा था। लेख का विषय था—कोई पेशा चुनने से पहले एक युवक के विचार। उस लेख में मार्क्स ने क्या लिखा था। जानते हो ?"

सौमित्र उठकर शेल्फ के पास गया और एक किताब ढूंढकर ले आया। फिर पन्ने पलटकर वह पढ़ने लगा :

> We cannot always take up the profession for which we feel ourselves suited. Our relations in society have begun to crystalize more or less before we are in a position to determine them.

"सुनो कालिनाथ, दुनिया के अधिकांश लोग भेड़चाल की जिंदगी गुजारते हुए खत्म हो जाते हैं। मगर ऐसे भी एक-दो लोगों का होना जरूरी है जो भीड़ से निकलकर रास्ते पर अकेले खड़े हो सकें और हरेक बात का नए सिरे से विश्लेषण कर नया

रास्ता बनाने के बारे में सोच सकें। तुम्हारे पास अलग किस्म का मन है। मैं नहीं चाहता कि तुम भी भेड़ों के समूह में शामिल हो जाओ। पृथ्वी का नए सिरे से निर्माण करना होगा। समझे ? और जिन लोगों ने इस काम को जीवन का व्रत मान लिया है, तुम्हें भी उन लोगों में से एक बनना पड़ेगा...। अब तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है—छह महीने के भीतर इस लाइब्रेरी की तमाम किताबों को पढ़ डालना। वर्तमान समाज को तहस-नहस कर नवनिर्माण करने के लिए यह जानना जरूरी है कि अभी वह किस स्थिति में है। इसके अलावा हम कैसा निर्माण करना चाहते हैं, यह भी अच्छी तरह जानना पड़ेगा। इसके लिए प्रणालीबद्ध अध्ययन के सिवा कोई रास्ता नहीं है।'' बात कहते हुए सौमित्र खड़ा हो गया, फिर शेल्फ से दस-बारह किताबें चुनकर उन्हें कालिनाथ के सामने मेज पर रख दिया और बोला, ''आज इनको ले जाओ। दो महीने बाद मैं तुम्हारी परीक्षा लूंगा। उसके बाद ही मैं तुम्हे और किताबें दूंगा।''

होस्टल लौट आने के बाद कालिनाथ किताबों के पन्ने पलटकर देखने लगा। दो पन्ने पढ़कर ही वह समझ गया कि ऐसी किताबें पढ पाना सबके वश की बात नहीं है। किसी तरह जोड़-घटाव सीखने वाले लड़के को जबरन बीजगणित का कठिन हिसाब हल करने को दिया जाए तो उसकी जैसी स्थिति होगी, वही स्थिति कालिनाथ की हो गई। मगर सौमित्र के व्यक्तित्व में ऐसा प्रभाव था कि उसके डर से उसने किताबों को पढ़ना शुरू कर दिया। उसका एक नया जीवन प्रारंभ हुआ।

कुछ दिनों के बाद सौमित्र कालिनाथ के होस्टल के कमरे में आया। उसे देखते ही कालिनाथ ने डरते-डरते पूछा, ''तुम तो दो महीने बाद परीक्षा लेने के लिए आनेवाले थे—अभी एक सप्ताह भी नहीं गुजरा और तुम आ गए। मैं एक भी किताब पूरी नहीं पढ़ पाया हूं।''

सौमित्र ने हंसकर कहा, ''डरो मत। मैं आज तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए नही आया हूं। मगर पढ़ रहे हो या नहीं, यह जानने के लिए आया हूं। देखो कालिनाथ, अगर तुम इन किताबों को शुष्क ज्ञान या जीवन से परे तत्व के रूप में पढ़ने की कोशिश करोगे तो ठीक से बातें दिमाग में नहीं घुस पाएंगी। पढ़ने में भी तुम्हें काफी तकलीफ होगी। मगर याद रखना, इन किताबों का एक-एक शब्द बारूद के ढेर के समान है, इन्हीं शब्दों ने मानव सभ्यता में युगों से जारी सामाजिक अन्याय, शोषण, प्रतिक्रियाशीलता—समस्त अशुभ शक्ति, जिन्होंने समाज के अधिकांश लोगों के जीवन के स्वस्थ विकास के रास्ते को चट्टान से रुद्ध कर रखा है, अधिकांश लोगों को चिरंतर दारिद्रय के अंधेरे पाताल में निर्वासित कर रखा है—मनुष्यों के द्वारा मनुष्यों के निर्मम शोषण के आधार पर प्रतिष्ठित मानव सभ्यता के उस प्राचीन जीर्ण-शीर्ण इमारत को एक तरफ से तहस-नहस किया है और नए मुक्त मानव समाज की नींव रखने की भूमि तैयार की है। इन किताबों के प्रत्येक शब्द तुम्हारे हाथ में एक अस्त्र बन जाएगा। तुम अगर यह बात ध्यान में रखकर किताब पढोगे तो तुम रण-संगीत की

ताल पर उत्तेजित होने वाले सैनिक की तरह एक नया उन्माद महसूस करोगे, किताब छोड़ने को तब जी नहीं चाहेगा।"

बातें कहते हुए बुद्धि की दीप्ति से उज्ज्वल सौमित्र का चेहरा एक गंभीर आवेग के कारण और अधिक उज्ज्वल हो गया था। पाइप सुलगाने के लिए वह कुछ देर ठिठका। फिर पाइप का कश खींचकर ढेर सारा धुआं उगलता हुआ बोला, "जानते हो कालिनाथ, कार्ल मार्क्स को सबसे ज्यादा प्रोमिथ्योस का चरित्र पसंद था--मानव साहित्य का सर्वप्रथम और सर्वश्रेष्ठ विद्रोही चरित्र। मगर मेरा मानना है, कार्ल मार्क्स स्वयं एक प्रोमिथ्योस ही थे। उन्होंने अपने एक लेख का समापन इस्काइलस के 'प्रोमिथ्योस' के कथन से किया था–

For your vile slavery, be assured
Never would I change my unhappy lot.

मार्क्स ने जिंदगी भर प्रोमिथ्योस के इस कथन का अक्षरशः पालन किया और विश्व के समस्त मुक्तिकामी संग्रामी लोगों के लिए उत्तराधिकार के रूप में क्रांतिकारी जीवन की यह महान शिक्षा छोड़ गए हैं। पृथ्वी पर कई देशों में यह युद्ध खत्म हो चुका है, मगर हमारे देश में यह अभी भी शुरू नहीं हुआ है। मगर शुरू होने में अधिक दिन बाकी नहीं हैं। जमीन से कान सटाओगे तो तुम भूकंप की गड़गड़ाहट की आवाज सुन पाओगे। यह एक भीषण और निर्मम युद्ध होगा। उसमें जीत हासिल करने के लिए हमें हर तरह की कीमत चुकाने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। कल मुझे कलकत्ता के एक दोस्त का पत्र मिला है। उसने लिखा है, युद्ध के लिए वे लोग तैयार हो चुके हैं। मार्क्स के लेख में इस्काइलस का प्रसंग उसी ने मुझे याद दिलाया। पत्र के अंत में उसने लिखा है–हमारे दुश्मन अत्यंत शक्तिशाली है। ये धनी इतने शक्तिशाली हैं कि इन्होंने सफलता के साथ मारात का लेखन और उग्रवादियों की गिलेटिन, नापलेयोंर की तलवार, चर्च के क्रास और बूर्बो के अभिजात वंश का खात्मा कर दिया। मगर हम तैयार हैं–

Frightened neither by lightning, nor the threats of Gods,
Nor the growing thunders of Heaven."

(Prometheus Bound : Aeschylus)

दर्शक-मंडली के सामने अभिनय करने के अंदाज में सौमित्र ने इस्काइलस की कविता की पंक्तियों का पाठ किया, उसके बाद नाटकीय रूप से ठिठककर काफी देर तक खामोश रहा।

सौमित्र के चेहरे की तरफ देखते हुए कालिनाथ ने महसूस किया–सौमित्र की इन तमाम बातों के पीछे एक गुप्त और गंभीर उद्देश्य निहित है। शत्रुओं के हमले के दौरान सैनिकों की भर्ती करनेवाले अधिकारी जिस तरह भड़कीला भाषण देकर लोगों को सेना में शामिल होने के लिए उत्तेजित करना चाहते हैं, सौमित्र भी ठीक

वैसा ही कर रहा है। और इस पल उसकी तमाम कोशिशों का लक्ष्य कालिनाथ है। जैसे किसी गुप्त सेना का यह रिक्रूटिंग अफसर हो। मगर वह कौन-सी सेना है ? उसका उद्देश्य क्या है ? वह कुछ पूछना ही चाहता था कि सौमित्र ने उसकी आंखों में अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा, ''कालिनाथ, मैं तुम्हें अपना साथी बनाना चाहता हूं। तुम जल्दी तैयार हो जाओ।''

उसके कुछ दिनों बाद अचानक कालिनाथ को गुवाहाटी छोड़ना पड़ा। ऐसी संभावना के लिए सौमित्र जरा भी तैयार नहीं था। वह जानता था कि कालिनाथ के पिता गांव के धनी किसान हैं, छोटे-से जमींदार ही हैं। कालिनाथ को घर की जिम्मेवारी संभालने की कोई जरूरत नहीं है। कालिनाथ को ध्यान में रखकर उसने एक लंबी योजना मन ही मन तैयार भी कर ली थी। मगर घटना में अचानक बदलाव आने पर वह हताश हो गया। फिर भी गुवाहाटी से रवाना होने से एक दिन पहले सौमित्र ने कालिनाथ को अपने घर खाने पर निमत्रित किया और बोला, ''कालिनाथ, तुम्हें इस तरह खोकर मेरे दिल को कितनी तकलीफ हो रही है, तुम समझ नहीं पाओगे। तुम इस बीच जरूर अंदाजा लगा चुके होगे--मैं मन ही मन एक बड़े काम की तैयारी कर रहा था और सोचा था कि उस काम में तुम मुझे मुख्य सारथी के रूप में मिलोगे। जो भी हो, अब जो हो रहा है, वह भी शायद अच्छा ही हो रहा है। मेरा--या अधिक शुद्ध रूप से कहा जाए तो हमारा--कर्मक्षेत्र सिर्फ गुवाहाटी नहीं है, समूचा देश हमारा कर्मक्षेत्र है। हो सकता है, गांव में रहकर ही तुम हमारी मदद ज्यादा कर सकोगे। मैंने तुम्हें जो किताबें दी हैं, अपने साथ ले जाना। आज मै तुम्हें और भी किताबें दूंगा। इन सबको पढ़ने के बाद तुम्हारे भीतर क्या बदलाव आता है या तुम किस फैसले पर पहुंचते हो--मुझे बताना। तुम्हारा पत्र मिलने पर मैं तुम्हें और भी किताबें भेज दूंगा। पत्रों के जरिए तुम मुझसे संवाद कायम रखना। सिर्फ याद रखना--तुम जहां भी रहो, तुम्हें एक विशेष उद्देश्य के लिए चुना गया है, उस दायित्व को तुम कभी छोड़ नहीं सकते।...और एक बात। मैं एक दिन तुम्हारे गांव आऊंगा। निमंत्रण खुद ही मांग रहा हूं।''

कालिनाथ कुछ सोचते हुए कुछ देर चुप रहा। फिर बोला, ''सौमित्र, मैं गांव में सदा रहने के लिए जा रहा हूं। फिर कब तुमसे मुलाकात होगी, नहीं जानता। तुमसे दोस्ती हुए अधिक दिन नहीं हुए, मगर काफी कम समय में ही तुमने मेरे भीतर एक नए मनुष्य को जगा दिया। तुमसे मिलने से पहले मेरी दशा प्लेटो के उस विख्यात गुफावासी मनुष्य जैसी थी; बंद, चिर परिचित अंधेरा ही जिसके जीवन का एकमात्र सत्य हो। मगर तुम्हारी संगत में आकर मैंने रोशनी को पहचाना, अब मैं इतने दिनों से जानने-समझने वाली बातों को पहले की तरह बगैर सवाल पूछे आसानी से ग्रहण नहीं कर सकता। मैं जो जाग उठा--इसके लिए मैं हमेशा तुम्हारे प्रति कृतज्ञ बना रहूंगा। मगर तुमसे विदा लेने से पहले तुम्हें मुझसे एक बात बतानी पड़ेगी। वह विशेष

दायित्व क्या है—जिसके लिए तुम मुझे धीरे-धीरे तैयार करना चाहते हो।''

सौमित्र ने उत्तर दिया, ''तुम्हारे सवाल का आधा जवाब, मैंने तुम्हें जो किताबें दी हैं, उन्हीं में छिपा हुआ है। प्रणालीबद्ध रूप से एक तरफ से बढ़ते रहना, खुद ही गंभीरतापूर्वक चिंतन करना। अपने तुम्हें प्रश्न का आधा जवाब मिल जाएगा। शेष आधा जवाब मैं तुम्हें उपयुक्त समय आने पर बताऊंगा। मुझसे जल्दी ही तुम्हारी मुलाकात नहीं होगी—यह बात तुम दिल में मत लाओ। पर्वत अगर मोहम्मद के पास नहीं आएगा तो मोहम्मद को खुद ही पर्वत के पास जाना पड़ेगा।''

सौमित्र की दी हुई किताबों की गठरी लेकर कालिनाथ गांव लौट गया। इसमें मार्क्स, एंजिल्स, लेनिन से लेकर माओत्से-तुंग, लीन पीआव और चे ग्वारा आदि कम्युनिस्ट क्रांति के दार्शनिकों और नेताओं के विचार, मार्क्सवाद के दर्शन और क्रांतिकारी रण-कौशल के ऊपर लिखी हुई विभिन्न किताबें थीं। कालिनाथ समझ गया कि सौमित्र मार्क्सवाद के दर्शन में आधुनिक जगत की समस्याओं के समाधान का पथ खोज रहा है और कालिनाथ को भी उसी मंत्र से दीक्षित करना चाहता है। वह सिर्फ एक बात समझ नहीं पाया—क्या है वह विशेष दायित्व—जिसके लिए कालिनाथ को खास तौर पर चुना गया है ? सौमित्र किस विशेष लक्ष्य के लिए स्वयं को तैयार कर रहा है ?

गुवाहाटी में रहते हुए कालिनाथ जिस उत्साह के साथ सौमित्र की दी हुई किताबों को पढ़ना शुरू किया था, गांव आने के बाद उसका वह उत्साह कम हो गया। हो सकता है—जो मानसिक सक्रियता और खोज करने की इच्छा लोगों को विचारों के दुर्गम अभियान और सत्य अन्वेषण के पथ पर ले जाती है—उसके भीतर वैसी सक्रियता न हो। इसके साथ ही कालिनाथ ने यह भी अनुभव किया कि मार्क्सवाद के विभिन्न सिद्धांतों के साथ सहजतापूर्वक वह आत्मीयता स्थापित नहीं कर पा रहा था। कई अनुत्तरित प्रश्नों ने उसके अध्ययन की गति को मंथर और बाधाग्रस्त बना डाला। फिर भी एक कर्तव्यबोध की वजह से वह किताबों को पढ़ता रहा, और जितना अधिक पढ़ता गया, उतने ही नए-नए उतर की जगह नए-नए प्रश्नों से मुखातिब होता गया। ऐसी स्थिति में उसे गुवाहाटी जाने का मौका मिल गया, और लगभग एक साल बाद सौमित्र से दुबारा मिलने की खुशी और उत्तेजना से वह खिल उठा।

18

घर का कोई सदस्य दूर की यात्रा पर निकले तो पूजागृह में दिया जलाकर प्रणाम कर गृह-देवता से आशीर्वाद लेना पड़ता है—शिवनाथ के परिवार में यह पुरखों से चलने वाली परंपरा है। जिस दिन कालिनाथ शिलांग रवाना होने लगा उस दिन भी

उसकी मां ने दो बूढ़े भक्तों को बुलाकर पूजागृह में दिया जलाया और कालिनाथ ने प्रणाम कर सबसे आशीर्वाद लिया, फिर यात्रा के लिए निकल पड़ा। मां आंगन के बाहर तक उसे छोड़ने गई। फिर मन में जाने क्या भाव आया कि फिर पूजागृह में समा गई। मूर्ति के सामने दंडवत होकर वह परम निष्ठा और व्याकुलता के साथ प्रार्थना करने लगी—कालिनाथ का उद्देश्य सफल हो, अवैध शराब के अभिशाप से मोहधूलि हमेशा के लिए मुक्त हो जाए, घर में पहले की तरह सुख-शांति लौट आए। काफी देर तक इसी तरह प्रार्थना करने के बाद धीरे-धीरे वह उठकर बैठ गई। ठीक उसी पल उसने महसूस किया—उसका सिर चकराने लगा है और आंखों के सामने सब कुछ धुंधला होता जा रहा है। हाथों से सिर पकड़कर आंखें मूंदे वह कुछ देर बैठी रही। कुछ देर बाद उसने खड़े होने की कोशिश की। मगर वह ठीक से खड़ी नहीं हो पाई। एक भीषण यंत्रणा के कारण अस्फुट चीख के साथ वह जमीन पर गिर पड़ी।

ठीक उसी समय रंभा ने कुएं से गागर में पानी भरकर पूजागृह के पास रखा था। तभी पूजागृह से कुछ गिरने की आवाज सुनकर दरवाजा धकेलकर वह भीतर चली गई। भीतर उसने मां को अचेत स्थिति में देखा। वह चीखकर शोर मचाने लगी। रंभा की चीख सुनकर सावित्री दौड़ी आई। रंभा रो-रोकर कहने लगी, ''मां को कुछ हो गया है। देउता को बुला, देउता को बुला !''

खबर पाते ही शिवनाथ बाहर से दौडा आया। बाप-बेटी ने मिलकर मां को बिस्तर पर लिटाया। फिर सिर में तेल-पानी लगाया। मगर मां को होश नहीं आया। डाक्टर को बुलाना जरूरी हो गया। मगर डॉक्टर को बुलाने के लिए घर में कोई लड़का नहीं था। पड़ोस के केरकन के घर में पूछा, उस घर के सारे मर्द खेत में गए हुए थे। निरुपाय होकर सावित्री स्वयं डाक्टर को बुलाने के लिए चली गई।

रंभा पागलों की तरह रोती हुई मां के शरीर को झकझोरती हुई कह रही थी, ''मां, ओ मां !'' चीख-चीखकर मां को होश में लाने की कोशिश करने के सिवाय वह और कुछ सोच नहीं पा रही थी। शिवनाथ पत्नी का एक हाथ अपनी हथेली में थामकर उसके सिरहाने स्तब्ध होकर बैठ गया। पत्नी के अचेत यंत्रणाकातर चेहरे की तरफ देखते हुए उसने महसूस किया—कई महीनों से पत्नी के चेहरे की तरफ देखने के लिए उसे समय नहीं मिला था, न ही जरूरत महसूस हुई थी। पत्नी तो है ही—सिर्फ इसी चेतना के साथ वह स्वयं को निश्चिंत और सुरक्षित मानता रहा था। मगर आज—जैसे कई युगों के बाद उसने पत्नी के चेहरे की तरफ देखा—निरंतर शारीरिक परिश्रम और एक के बाद एक मानसिक आघात ने उसे बहुत पहले से तिल-तिलकर मारना शुरू कर दिया था, मगर वह इतनी खामोशी से समस्त दुखों को बर्दाश्त कर रही थी कि शिवनाथ को भी वास्तविकता का अनुमान नहीं हो पाया था। उसकी गृहस्थी की मशीन पत्नी के खून से चल रही थी, मगर कब खून खत्म

हो गया और एक शव बचा रह गया—शिवनाथ ने उसकी तरफ गौर नहीं किया। पत्नी के चेहरे की तरफ वह स्तब्ध होकर देखता रहा और एक मूक डर उसका गला दबाने लगा। अनुभवी नजरों से शिवनाथ समझ गया कि जीवन भर की असीम थकान के बाद जिस नींद ने पत्नी को दबोच लिया है, अब उस नींद के टूटने की कोई आशा नहीं है। मृत्यु की आहट की तरह एक-एक पल उसकी चेतना से होकर आवाज करते हुए गुजरने लगा, और शिवनाथ बेजान की तरह आखिरी पल की प्रतीक्षा में बैठा रहा।

शिवनाथ की पत्नी के अचेत होने की खबर पाकर इस बीच पड़ोस की औरतें इकट्ठी हो गई थीं। सभी होश में लाने के लिए अलग-अलग सुझाव दे रही थीं। मगर एक सम्मिलित शोर के सिवा किसी की बात शिवनाथ ने स्पष्ट रूप से नहीं सुनी। वह अपलक दृष्टि से पत्नी के चेहरे की तरफ देखता रहा और उसने महसूस किया कि पत्नी के साथ-साथ वह भी तिल-तिलकर खत्म होता रहा है।

कुछ देर बाद परेशान स्थिति में सावित्री भीतर आ गई और रोते-रोते उसने बताया कि डाक्टर अस्पताल में नहीं है, कहीं रोगी को देखने गया है। कंपाउंडर भी अस्पताल छोड़कर नहीं आ सकता। अस्पताल बंद होने के बाद ही वह आएगा। डाक्टर की प्रतीक्षा में धीरज रखनेवाली रंभा ने जब सुना कि डाक्टर नहीं आएगा तो रोते-रोते वह मां के शरीर पर गिर पड़ी। सावित्री भी उसकी रुलाई में शामिल हो गई।

शिवनाथ की पत्नी की चेतना लौट नहीं पाई। लगभग एक घंटे बाद उसने दम तोड़ दिया।

मृतक की अंत्येष्टि क्रिया संपन्न करते हुए शाम हो गई। लोग नहाकर अपने-अपने घर जाने लगे। मगर शिवनाथ के घर लौटने का कोई संकेत नहीं दिखाई दिया। नदी किनारे रेत में आधा धंसे एक पेड़ के तने पर वह इस तरह बैठ गया—जैसे काफी देर तक वहीं बैठने का इरादा हो। घर की तरफ दो कदम बढ़ाकर धनीराम और देबेरा बूढ़े ने पीछे मुड़कर देखा और शिवनाथ को अकेले बैठे देखकर दोनों उसके करीब आ गए।

धनीराम ने कहा, "ददाईदेव, शाम हो रही है, घर चलिए।"

शिवनाथ ने उनलोगों की तरफ देखे बगैर कहा, "तुमलोग आगे बढ़ो, मैं कुछ देर बाद आ रहा हूं।"

उदासी में भीगी शांत अस्फुट आवाज में उसने यह बात कही, मगर उसके बीच एक ऐसी दृढ़ता जाहिर हो रही थी कि धनीराम कुछ और कहने की हिम्मत नहीं कर पाया। देबेरा बूढ़े ने जैसे खुद से कहने के अंदाज में कहा, "हम तुम्हें क्या कहकर समझा सकते हैं मैना, तुम हमसे अधिक शास्त्रों के ज्ञानी हो। हम सिर्फ जानते हैं—कच्चू पत्ते पर पानी की बूंद जैसी जिंदगानी है। लुढ़क जाए तो फानी

है। गुरु लोग भी कह चुके हैं–

भार्या पुत्र धन सब अकारण
हरिर नामे करा सार।
महा संकटत अभय सागरे
हरिर नामे होषा पार।

दूसरे लोग काफी आगे बढ़ चुके थे, बचे रह गए थे धनीराम और देबेरा बूढ़ा। शिवनाथ को तनिक भी हिलते-डुलते न पाकर दोनों ने लंबी आह भरी और शिवनाथ के प्रति मूक सहानुभूति दर्शाते हुए आगे बढ़ गए।

शून्य उदास दृष्टि के साथ सामने देखते हुए शिवनाथ निश्चल होकर बैठा रहा। सुबह से लेकर शाम तक लंबी अवधि में क्या-क्या घटनाएं घट गईं–वह जैसे अब तक समझ ही नहीं पाया था, एक आकस्मिक प्रचंड आघात से उसकी समस्त चेतना शून्य हो गई थी। मगर इस एकांत के सन्नाटे में पहली बार उसने होशोहवास में महसूस किया कि आज उसकी पत्नी मर गई, जीवन के पैंतीस सालों तक जिसका अस्तित्व था, पैरों के नीचे की जमीन की तरह सहज और स्वाभाविक; जिसका सान्निध्य सांस की तरह उसके जीवन की प्रमुख जरूरत बन चुका था, आज वह हमेशा के लिए खो गई। आज जब वह घर लौटकर जाएगा, कोई उसके पास आकर खामोशी के साथ खड़ी नहीं होगी, कोई उसके चेहरे की तरफ देखकर उसके मन की बात समझने की कोशिश नहीं करेगी, किसी की समस्त चेतना उसके हृदय का प्रत्येक स्पंदन सुनने की प्रतीक्षा नहीं करेगी। पत्नी के जीवित रहने तक शिवनाथ समझ नहीं पाया था कि उसकी दुनिया को उस दुबली-पतली चुपचाप रहने वाली महिला ने पूरी तरह अपने कब्जे में कर रखा था। आज एक असीम खालीपन की अनुभूति ने उसे याद दिलाया कि पत्नी ही उसके लिए संपूर्ण पृथ्वी थी। पत्नी के मरने के बाद उस पल तक वह रोया नहीं था, मगर अब उसकी आंखों से आंसू की अविरल धारा बहने लगी और एक समय उसने महसूस किया मानो उसका हृदय गलकर नष्ट हो गया हो। उसने महसूस किया कि जैसे वह एक अशरीरी सत्ता हो।

भीगी आंखों से शिवनाथ सामने की तरफ देखता रहा। चैत महीने का सूरज डूब रहा था, सामने नदी की धारा और चारो तरफ के हरे पेड़-पौधों पर अपार्थिव रोशनी फैली हुई थी। मगर उन सबके बीच शिवनाथ एक अतल और असीम विषाद की छवि देख रहा था, जिसके पाषाण भार से उसका तन-मन टूटता जा रहा था। ठीक तभी हवा का एक झोंका आया और नदी किनारे सरकंडे के पन में सरसराहट की आवाज सुनाई पड़ी। निखिल चराचर की रुलाई जैसे इस आवाज के साथ चारों तरफ फैल गई। शिवनाथ का समस्त वजूद विश्वव्यापी शोक के उस महासंगीत के साथ एकाकार हो गया।

बहुत देर बाद शिवनाथ के मन में जो पहला विचार उत्पन्न हुआ, वह यह

था कि पत्नी की मृत्यु के साथ-साथ जैसे उसकी भी मृत्यु हो गई। उसके लहू-मांस का शरीर और कुछ दिन जीवित भले ही रहेगा, मगर वह जीवित शव के समान होगा। अपने शव को ही उसे कुछ दिनों तक काफी तकलीफ के साथ घसीटते रहना पड़ेगा। अभी मृत्यु आकर उसे अपनी गोद में भर ले तो राहत मिलेगी। एक दिन इसी मृत्यु से उसे कितना डर लगता था ! कई पुरानी स्मृतियां शिवनाथ के मन में कौंधने लगीं।

उसकी उम्र तब शायद दस-बारह साल की रही होगी। उसी समय उसके गांव के साथी घनकांत की मां अचानक एक दिन मर गई। शाम के वक्त वह मरी थी, गांव के दूसरे लोगों के साथ शिवनाथ के पिता भी श्मशान गए थे। शिवनाथ के जीवन में मृत्यु का वही पहला अनुभव था। रात में मां शिवनाथ को सीने में समेटकर सुलाने की कोशिश कर रही है। मगर घनकांत के घर से आ रही रुलाई की आवाज के कारण किसी की आंखों में नींद नहीं आ रही है। शिवनाथ ने मां से पूछा, "घनकांत की मां को आज क्या हो गया, मां ?"

"मर गई"—मां ने संक्षेप में जवाब दिया।

"मरने से आदमी का क्या होता है ?"

"मरने के बाद मनुष्य की आत्मा स्वर्ग में जाती है। शरीर को जला दिया जाता है।"

"जला दिया जाता है ?"—शिवनाथ ने मां को और जोर से पकड़ लिया और पूछा, "तब आदमी को दर्द नहीं होता है क्या ?"

मां उदास हो गई थी, उसने शिवनाथ के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया था। कुछ देर खामोश रहने के बाद शिवनाथ ने फिर मां से पूछा, "मां, घनकांत की मां फिर कभी लौटकर नहीं आएगी क्या ?"

मां ने आंसू से भींगी आवाज में कहा, "अब कहां से आएगी बेटे। जाने वाला जाता ही है और फिर कभी लौटकर नहीं आता।"

मां की बातें समझने के लिए शिवनाथ कुछ देर अपेक्षा करता रहा, उसके बाद फिर पूछा, "तो आज से घनकांत किसके पास सोएगा ?"

"क्यों, देउता के पास। अब सो जा, मेरे बच्चे ! बहुत रात हो गई है।"

मां की बात शिवनाथ ने अनसुनी कर दी। उसने फिर सवाल किया, "तुम भी एक दिन मर जाओगी, मां ?"

मृत्यु की जीवंत चेतना ने शिवनाथ की मां के मन में एक सामयिक वैराग्य का भाव उत्पन्न कर दिया था, बेटे की अनुभूति पर ध्यान न देते हुए वह बोली, "कौन है जो नहीं मरता, बेटे ! मैं भी मरूंगी। देख ही रहे हो, हमारे साथ की औरतें जा रही हैं। हमारा भी बुलावा आ जाएगा। अब तुम सो जाओ, बच्चे ! मैं एक 'नाम' गाती हूं, तुम सुनते-सुनते सो जाओ—

बरघर बांधिलों भारलि छाटिलों
इकरार बनालों रूई।
सेई घरर पारत शुवलै नापालों
नदीर पारत दिले जुई।।*

कुछ देर तक नाम गाते-गाते अचानक मां चुप हो गई, शायद सो गई। मगर शिवनाथ देर तक जागता रहा। घनकांत की मां की तरह शिवनाथ की मां भी एक दिन मर जाएगी, और कभी भी लौटकर नहीं आएगी, इस तरह उसके सीने में मुंह छिपाकर सोने का मौका नहीं मिलेगा—यह सब सोचते हुए डर और विषाद से वह बेचैन हो उठा। शिवनाथ ने तभी से मृत्यु के बारे में सोचना शुरू किया था। उसे आज भी अच्छी तरह याद है—बचपन के दिनों में मृत्यु की चिंता से उसका मन गहरे विषाद में डूबा रहता था। दिन की व्यस्तता के दौरान मृत्यु का ध्यान ज्यादा नहीं आता, मगर रात में बिस्तर पर लेटते ही नींद आने तक वह मृत्यु के बारे में सोचता रहता था। वैसे तब वह अपनी मृत्यु के बारे में ज्यादा नहीं सोचता था। उसे सिर्फ यही चिंता सता रही थी कि एक दिन माता-पिता मर जाएंगे और वह उन्हें फिर कभी नहीं देख पाएगा। जहां माता-पिता न हों—ऐसी पृथ्वी की कल्पना करना भी उसके जीवन का सबसे अधिक पीड़ादायक अनुभव था। धीरे-धीरे उसने हिंदू जीवन का यह विश्वास अपना लिया कि मृत्यु से मनुष्य का जीवन खत्म नहीं होता, मनुष्य का पुनर्जन्म होता है, और जन्म-जन्मांतर तक जीवन का प्रवाह चलता रहता है। मगर इस विश्वास से शिवनाथ की समस्या का समाधान नहीं हो पाया। उसके मन में नया प्रश्न पैदा हुआ—मृत्यु के बाद मां कहां पर क्या बनकर जन्म लेगी ? मां शिवनाथ को अपने बेटे के रूप में पहचान पाएगी ? दूसरे जन्म में उसकी मां किसी और की मां बन जाएगी—इस तरह की आशंका से ग्रस्त रहने के कारण शिवनाथ का सारा बचपन एक करुण और दुखद चेतना के दायरे में सिमटा रहा। उसने मन में अनुभव किया कि सारे स्नेह के बंधन बेकार और निरर्थक हैं। वह बड़ा हुआ तब उसकी मां गुजर गई। कुछ सालों बाद पिता की भी मृत्यु हो गई। और माता-पिता के बिना जिस जगत को वह शून्यता से भरपूर मानता था, वह जगत पहले की तरह चलता रहा। कुछ दिनों बाद माता-पिता की बातें एक स्मृति बनकर रह गईं। मगर मृत्यु की चिंता ने शिवनाथ का साथ नहीं छोड़ा। मृत्यु के प्रति मनुष्य का जो स्वाभाविक और चिरंतन डर है, उसे छोड़कर भी, व्यक्तिगत अस्तित्व के खत्म होने की बात छोड़कर भी, मृत्यु उसके लिए जीवन का एक चिरंतन मौलिक प्रश्न बन गया—मृत्यु के साथ ही जीवन का सब कुछ खत्म हो जाता है ? जीवन का यह

* रहने के लिए शानदार घर बनाया, कीमती बिस्तर बनाया, उस घर में सोने का मौका नहीं मिला, नदी किनारे मुझे जला दिया गया।

सारा आयोजन, यह माया-ममता का बंधन, कर्म-उद्यम, विराट सृष्टिकांड—यह सब कुछ क्या मृत्यु के चिर अंधेरे की अतल गहराई में हमेशा के लिए खो जाने के लिए है ? मृत्यु के साथ ही जीवन का अंतिम समापन होता है। बहुत विचार करने के बाद भी वह जीवन का कोई अर्थ तलाश नहीं कर पाया। अगर मनुष्य को जीवन एक बार ही मिलता है और मृत्यु ही उस पर परदा गिरा देती है तो उस जीवन का कोई नैतिक आधार नहीं हो सकता, क्योंकि प्रत्येक आदमी अपने-अपने हिस्से के कम समय को कैसे गुजारता है, उनका सूत्र बांधने का अधिकार किसी को नहीं है। आनंद की कामना की जा सकती है, मगर दुख भी असहनीय नहीं होता, क्योंकि सारे दुखों को खत्म करने के लिए मृत्यु का निश्चित प्रावधान है। मृत्यु के साथ ही जीवन समाप्त हो जाता है, उस जीवन को अर्थहीन मानने का भाव शिवनाथ के मन में पैदा हुआ। मगर मृत्यु के बाद जीवन के अस्तित्व के बारे में भी वह कभी संशयमुक्त नहीं हो सका। और तो और, परंपरागत धार्मिक विश्वास की वेदी पर आत्म-निवेदन करने के बावजूद जीवन भर वह अनुभव करता रहा कि उसके सहज अभ्यासगत विश्वास के पीछे अंतःस्रोता फल्गुधारा की तरह आत्मा की अमरता के संबंध में एक वेदनामय शंका की भावना बहती रही है, जिससे वह कभी भी मुक्त नहीं हो पाया।

जीवनयापन के अनुभव ने उसके मन को काफी कठोर बना दिया, मगर उसके मन से मृत्यु-भय संपूर्ण रूप से खत्म नहीं हो पाया। वैसे इन दिनों वह रोज मृत्यु के बारे में नहीं सोचता। मगर अकेलेपन की घड़ियों में जब स्वयं से उसका आमना-सामना होता है, तब निश्चित रूप से अस्तित्व-रहस्य का विचार उसके मन में पैदा होता है, और एक दिन मृत्यु का अंधेरा उसकी आंखों के सामने परदा गिराकर इस सुंदर धरती और परिचित लोगों के चेहरे को गायब कर देगा—यह विचार उसके मन में एक गुप्त हाहाकर का भाव पैदा कर देता है। गहरी यंत्रणा के बीच भी जीवन चाहिए, क्योंकि वह परिचित है, वह निश्चित है, वह इंद्रियग्राह्य है। दूसरी तरफ, हजारों संभावनाओं वाली मृत्यु अपरिचित और रहस्यमयी है। जीवन का परिचित आश्रय त्यागकर उस अज्ञात, अपरिचित और अंधेरे की अतल गहराई में कूदने के लिए स्वाभाविक रूप से किसी की हिम्मत नहीं होती। जीवन की राहों पर वह जितना आगे बढ़ता गया और मृत्यु के करीब पहुंचता गया, उतना ही अज्ञात-अपरिचित का वह भय उसकी चेतना पर दुख का प्रलेप चढ़ता चला गया।

मगर शिवनाथ यह सोचकर अवाक हो गया कि जो मृत्यु-भय जीवन भर उसके सीने को कुरेदता रहा था, आज पत्नी की मृत्यु के साथ ही वह जैसे खत्म हो गया। एक ऐसी मुक्ति की चेतना उसने जीवन में पहले कभी महसूस नहीं की थी। उसका मृत्यु भय पलक झपकते ही गायब हो गया, बल्कि मृत्यु के लिए वह एक व्यग्रता का भाव अनुभव करने लगा। पृथ्वी अभी भी परम सौंदर्यमयी है। अभी-अभी उसकी

आंखों के सामने नदी की जलधारा ने वसंत संध्या की सुनहरी रोशनी में एक अपार्थिव रूप धारण कर लिया है, उस किनारे से लौट रहे मवेशियों का झुंड पानी में 'छपाक छपाक' की आवाज करते हुए नदी पार कर रहा है, शाम की सुनहरी रोशनी में एक जोड़ा चकोर नदी किनारे सुकून के साथ बैठा हुआ है, उस पार चरागाह से घर लौट रहे चरवाहों द्वारा गाए जा रहे वनगीत की लंबी करुण सीटी सुनाई देती है। हवा के झोके में जंगली पेड़ों-लताओं और नदी के जल की मदिर गंध घुलकर आ रही है। परंतु शिवनाथ के लिए इस रूप-रस-गंधयुक्त पृथ्वी का मोहक आकर्षण जैसे हमेशा के लिए खत्म हो चुका है। एक चिर-विरह के विषाद के कोहरे ने धीरे-धीरे समूची पृथ्वी को ढक दिया, मृत्यु के किनारे, जगत के शून्य क्षेत्र में अब चारों तरफ एक अंतहीन सन्नाटा है। शिवनाथ समझ गया—आज उसे मरने का भी डर नहीं है, चूंकि एक परम एकाकीपन ने मृत्यु की तुलना में जीवित बचे रहने को उसकी आंखों के सामने भयावह अनुभव बना दिया है। इसके अलावा उसकी पत्नी आज जिस अज्ञात दिशा में चली गई उस क्षेत्र ने भी आज सारी अनिश्चितता और भयंकर रहस्यमयता को गंवा दिया। आज उसके लिए मृत्यु अतल अंधेरे के भीतर कूदना नहीं, बल्कि एक आविष्कार का अभियान है। मृत्यु के बाद भी अगर जीवन का अस्तित्व रहता है, तब वह पत्नी को जरूर तलाश पाएगा, और अगर नहीं तलाश पाया तो उसके लिए जीना-मरना एक जैसा है। जीवन की तरह कैसे मनुष्य के लिए मृत्यु प्यारी हो सकती है, मनुष्य कैसे अंत में मृत्यु-भय को जीतता है, इस बात को शिवनाथ ने आखिरकार महसूस किया। माया के हजारों बंधनों में जब जीवन जकड़ा रहता है, तब लगता है ये कभी नहीं टूटेंगे, मगर एक-एक कर बंधन टूटते जाते हैं, जो प्रियजन गुजर जाते हैं। वे मृत्यु के आकर्षक बंधन की तरफ मनुष्य को खींचना शुरू कर देते हैं। धीरे-धीरे मृत्यु अपनी अधिकांश भयावहता खो देती है।

अचानक सूरज डूब गया। नदी किनारे का जंगल अंधेरे में डूब गया। शिवनाथ ने सोचा--अब घर जाना उचित होगा। दोनों लड़कियों की क्या दशा हुई है, भगवान ही जानता है। अपने शरीर को शव की तरह घसीटते हुए पत्नी की चिता के पास जाकर खड़ा हो गया—जैसे आखिरी बार विदा ले रहा हो। उसकी पत्नी मर गई, यहां तक की उसका शव भी जलकर राख हो गया, इस सत्य को तब भी उसकी चेतना ने ठीक से ग्रहण नहीं किया था। नदी किनारे इस वीरान मरघट में पत्नी को अकेले छोड़कर जाना पड़ेगा, इस विचार से उसका हृदय फिर रो उठा। उसने अपने आप से ही कहा, डरना नहीं, मैं तुम्हें अधिक दिनों तक एकाकी नहीं रहने दूंगा।...

जाने से पहले उसने फिर एक बार चारों तरफ घूमकर देखा। अचानक उसने अनुभव किया, पत्नी को जितना एकाकी वह समझता था वह उतनी एकाकी नहीं थी। गांव के सारे लोगों के इस आखिरी ठिकाने मरघट में सारे परिचित प्रियजन, स्वजन एवं मित्र सो रहे है। वैसे मुसलमानों या ईसाइयों के कब्रगाह की तरह प्रत्येक

की समाधि के पास स्मृतिफलक नहीं लगाया गया है। टूटी-फूटी लकड़ियां और राख ही उस समाधि की पहचान बनी रहते हैं। फिर हर साल बरसात आती है और मरघट की पहचान एकाकार हो जाती है, पानी के साथ मिट्टी जम जाती है, जहां जंगली घास-फूस के वन उग आते हैं। फिर भी शिवनाथ कई समाधियों को पहचानता है। बेर के उस बूढ़े पेड़ के नीचे शिवनाथ की मां की समाधि है। नदी में नहाने के लिए आता तो एक बार मां की समाधि को जरूर देखता था। एक दिन उसने देखा, जहां मां को जलाया गया था। वहां बेर का एक पौधा बड़ा हो रहा है। आज वह विशाल बूढ़े पेड़ का रूप धारण कर चुका है। दो डाल वाले प्राचीन सेमल के पेड़ के नीचे देबेरा बूढ़े की पत्नी की चिता जलाई गई थी। पिछले साल मरे श्रीधर बूढ़े की समाधि पर अब एक जांउ का पेड़ खड़ा है, आकाशी कला पेड़ से लिपटी हुई है। शिवनाथ की नजर जिधर गई वहीं अपने परिचित लोग नजर आए—जो जिंदा लोगों की तुलना में उसे अब अधिक प्रिय लगते हैं, ज्यादा अपने लगते हैं—कारण, वे लोग थे उसके स्वप्न, उसकी आशा और उसके सुख-दुख, आनंद-विषाद के समान भागीदार, उन लोगों के साथ जुड़ी हुई हैं उसके समस्त अतीत जीवन की करुण-मधुर यादें। इस मरघट में सोया हुआ है उसका समस्त अतीत, और जीवन की इस संध्या बेला में उसका कोई भविष्य नहीं है, इसीलिए दूर जीवित लोगों का गांव जहां जुगनू की तरह दीए जल रहे हैं, उसे अपनी तरफ नहीं आकर्षित कर रहा है, बल्कि अपने स्वप्न और स्मृति के मरघट के मृत लोगों का आकर्षण उसे अपनी तरफ खींच रहा है।

पहले शिवनाथ नदी किनारे कुछ देर तक सैर करने के लिए आता था, मगर आज जैसे नदी किनारे से ही कुछ देर के लिए घर की सैर करने जा रहा है। इसी अंदाज में वह घर की तरफ कदम बढ़ाने लगा। थके हुए विवश कदमों से बढ़ते हुए उसके मन में भाव आया कि वह और ज्यादा दिन नहीं बचेगा, जीवित रहने की इच्छा उसके मन से पूरी तरह खत्म हो चुकी है, मगर उसके जीवन के अधिकतर कर्तव्य बचे रह गए। बड़े बेटे ने उसे छोड़ दिया, छोटा बेटा जीवित होकर भी उसके लिए मृतक समान हो गया, कालिनाथ के कंधे पर दो कुंवारी बेटियों की जिम्मेदारी छोड़कर जाना पड़ेगा। रंभा की कभी शादी होगी—इसकी कोई उम्मीद नहीं। हमेशा वह कालिनाथ के लिए एक बोझ बनी रहेगी। जिस भूमि संपदा पर उसका परिवार पुरखों से सुखपूर्वक जीवनयापन करता रहा था, अब उस भूमि संपदा की क्या दशा होगी, कौन जानता है ? सीलिंग कानून से बचाव करने के लिए उसने कुछ साल पहले अपनी जमीन के अलग-अलग पट्टे बेटे-बेटियों के नाम से बनवाए थे। सिर्फ इतना ही नहीं, बांध बनने के बाद जब बंजर इलाके में खेती संभव हो गई तब गिरिधर कानूनगो के सुझाव के अनुसार किसी को बताए बगैर उसने कालिनाथ के नाम से दस बीघा खेत का पट्टा बनवा दिया था। क्या कालिनाथ उन खेतों को ठीक से संभाल पाएगा ?

खुद ही अपने सवालों का उत्तर देने के अंदाज में उसने सिर हिलाया—कोई आशा नहीं है। पिता होकर भी वह अपने बेटों को ठीक से समझ नहीं पाया, वे जैसे उसके लिए पूरी तरह अजनबी इंसान हैं। उसके सभी बेटों ने अलग-अलग तरीके से उसके खिलाफ बगावत की और उसके वजूद को पूरी तरह ठुकरा दिया। गौरीनाथ ने उसकी मर्जी के खिलाफ एक छोटी जाति की कैवर्त लड़की से विवाह कर खानदान में कभी न होने वाला काम किया। और तो और, इसी बात पर उसने हमेशा के लिए मां-बाप से नाता तोड़ लिया। उसके अंतिम पत्र के एक-एक मर्मघाती शब्द उसे आज भी अच्छी तरह याद हैं : "पिता जब स्नेह या तर्क से अपने पुत्र पर आदेश चला नहीं पाता तब वह अंतिम हथियार के रूप में आर्थिक क्षमता का प्रयोग करता है। पिता के निरंकुश शासन को कायम रखने या कुलीनता के दुर्ग की रक्षा करने के लिए पिता के हाथ में यही सबसे बड़ा हथियार है। परंतु...पुराने सामंतवादी समाज में भले ही यह हथियार कारगर था, मगर आधुनिक युग में यह बेकार हो चुका है।"

...गौरीनाथ की बात ही शायद सच है, बांध तोड़ने वाली लोहित की बाढ़ की तरह समाज में भी नए युग की बाढ़ आ रही है। नहीं तो जिस समाज के डर से उसने प्राणों से भी अधिक प्रिय बड़े बेटे को त्याज्य पुत्र घोषित कर दिया था। हरकांत ने जब दूसरी जाति की लड़की से विवाह कर लिया तो कुछ साल पहले समाज में भूचाल आ गया था, पर उसी समाज में पिछले कुछ सालों में जबर्दस्त बदलाव आ गया है, फलस्वरूप सिर्फ मोहधूलि गांव में ही चार असवर्ण विवाह होने के बावजूद लोगों ने इस तरह के मामले को सहजता के साथ स्वीकार कर लिया। इसकी वजह है : बाहर से आकर सैकड़ों लोग मोहधूलि में बस गए हैं, इस कारण विभिन्न किस्म के लोगों का एक नया मिश्रित समाज पैदा हो गया है, और गांव के समाज से बहिष्कृत होने वाले लोगों को एक नया समाज मिल गया है। इसके अलावा, जमीन के अनुपात में गांव की आबादी बढ़ जाने के कारण प्रत्येक परिवार के युवक खेती छोड़कर नए-नए पेशे अपनाने के लिए विवश हो गए हैं। कोई दर्जी बन गया है, कोई दुकानदार बन गया है, कोई ठेकेदार बन गया है, और इस तरह खेत पर लोगों की निर्भरशीलता से जो मानसिक और शारीरिक अकर्मण्यता पैदा होती है, उससे वे मुक्त हो गए हैं। जमीन के उत्तराधिकार से बेदखल करने का डर दिखाकर उन पर अब मनमर्जी नहीं चलाई जा सकती।

मगर सिर्फ गौरीनाथ ही क्यों, लक्ष्मीनाथ भी अपने रास्ते पर चलकर शिवनाथ के खिलाफ विद्रोह कर चुका है। उसका विद्रोह सिर्फ पिता के खिलाफ ही नहीं है, समाज के खिलाफ ही नहीं है, वह तो जैसे जीवन के खिलाफ विद्रोह कर रहा है। लक्ष्मीनाथ के बारे में कभी नहीं सोची गई एक नई बात शिवनाथ के मन में आई। वह छोटा लड़का जब छककर दारू पीकर खून की उल्टियां कर दर्द से छटपटाता

है, घायल पशु की तरह भीषण आर्तनाद करता है, उसकी उस यंत्रणा और आर्तनाद के बीच क्या परिचित जीवन से बाहर के किसी रहस्यमय अनुभव के लिए एक व्याकुलता नहीं जाहिर होती ? बूढ़े सतियना पेड़ के नीचे खड़े होकर शिवनाथ ने बाजार की तरफ देखा। पेट्रोमैक्स की रोशनी में बाजार में दिन की तरह माहौल नजर आता है। गांव के शराबी युवक अब वहां एक भयंकर उत्सव मना रहे हैं। उन युवकों में जरूर एक लक्ष्मीनाथ भी है। परिचित चिरअभ्यस्त जीवन के बीच उन्हें कौन-सी चीज नहीं मिली—जिसकी खातिर वे आत्मभक्षी यंत्रणा और उत्तेजना के बीच एक अलग जीवन, अलग अनुभव के लिए हाहाकार कर रहे हैं ? शिवनाथ ने अनुभव किया—उनके जीवन से एक चीज हमेशा के लिए खो गई है, उस शून्यता को भरने के लिए एक नई चीज अभी तक बनी नहीं, इसीलिए वे जीवन के खिलाफ विद्रोह कर रहे हैं।

और कालिनाथ! शिवनाथ ने अचानक अनुभव किया—भले ही कालिनाथ उसकी आखिरी उम्मीद है, एक मात्र भरोसा है, चरित्र की महिमा से वह उज्ज्वल है—फिर भी अपने तीन बेटों में जिसे शिवनाथ सबसे कम पहचानता है और डरता है वह कालिनाथ ही है। वह ज्यादा भयंकर है, क्योंकि उसे कोई मोह नहीं है। वह जरूर दिवाकर की बहन के प्रति आकर्षित हुआ था। मगर शिवनाथ ने उसे दिवाकर के घर जाने से मना कर दिया तो उसने फौरन वहां जाना बंद कर दिया। जो आदमी निजी स्वार्थ और आशा-आकांक्षा का दमन कर सकता है उससे अधिक भयंकर और कौन हो सकता है ? हृदय की समस्त शक्ति और आवेग को ऐसे लोग जुटाते हैं किसी महान उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए। गौरीनाथ का विद्रोह पूरी तरह व्यक्तिगत था, मगर कालिनाथ समाज के लिए समाज के लोगों को साथ लेकर विद्रोह करना चाहता है। शिवनाथ ने स्वयं जीवन भर बहुत सारे आदर्शों के बारे में चिंतन किया था, मन ही मन लोगों की भलाई की कामना की थी। मगर वह था सिर्फ भावुक, काम के नाम पर वह कुछ भी नहीं कर पाया था। मगर कालिनाथ ज्यादा भयंकर है, क्योंकि वह काम का आदमी है। शिवनाथ जानता है, कालिनाथ के हाथों ही उसके परिवार की सदियों पुरानी परंपरा नष्ट होगी। सामाजिक आभिजात्य और जमीन-जायदाद का जो दुर्ग पुरखों से तैयार हुआ था, कालिनाथ के समय में वह धूल में मिल जाएगा।

पेड़ के पत्तों को सरसराती हुई, ठंडी हवा आई। ठंड के कारण शिवनाथ के शरीर के रोएं खड़े हो गए। मगर शिवनाथ ने महसूस किया—उससे भी अलग एक हवा के झोंके ने उसके वृद्ध शरीर को सर्दी और यंत्रणा से हिलाकर रख दिया है। वह हवा बहुत दूर से आ रही है, जिस हवा में घुलकर आए खतरनाक बीजाणु का स्पर्श पाकर लोग पागल जैसे होते जा रहे हैं। अब तक जिन चीजों को वे लोग सत्य, ध्रुव और अपरिवर्तनीय मानते थे, अब वह सारी चीजें उनकी नजरों में असत्य, अस्थाई

और परिवर्तनीय हो गई हैं। इस नए आविष्कार के उन्माद ने उन्हें हिंसक और दुस्साहसी बना डाला है, वे अपने सामने आने वाली हर चीज को तोड़ते जा रहे हैं। जीवन में आखिरी बार देखने की तरह ठिठककर उसने पल भर अपने गांव की तरफ देखा। जीवन में उसने देश-विदेश देखा नहीं, मगर चुल्लू भर पानी में आकाश की परछाई देखने की तरह अपने गांव में समूचे देश और विश्व की परछाई देख पाया। जमीन के नीचे एक गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दे रही है जो भूचाल का पूर्वाभास है। उसके पहले हल्के झटके के साथ ही मोहधूलि गांव का सबसे प्रतिष्ठित उसका घर हिलने लगा। भूकंप के झटके तेज लगेंगे, एक के बाद दूसरे झटके लगेंगे तब वह घर टूट-फूटकर धूल में मिल जाएगा। शिवनाथ को सिर्फ इस बात की तसल्ली है कि इससे पहले वह पृथ्वी से विदा हो जाएगा।

नहीं। यह पूरी तरह विदा होना नहीं होगा, वह होगा पलायन।

19

शिलांग जाते हुए कालिनाथ को गुवाहाटी जाने का समय नहीं मिला। तीन दिनों तक शिलांग में रहने के बाद एक दिन शाम के वक्त टैक्सी लेकर वह गुवाहाटी आया और रिक्शे पर सवार होकर सीधे सौमित्र के घर की तरफ रवाना हुआ। जब वह सौमित्र के घर पहुंचा, तब रात के नौ बजे थे।

सौमित्र घर में नहीं था। उसके माता-पिता ने उत्साह के साथ कालिनाथ का आदर-सत्कार किया। हाथ-मुंह धोकर ड्राइंगरूम में चाय का कप सामने रखकर कालिनाथ ने डा. मुखर्जी यानी सौमित्र के पिता से पूछा, "इतनी रात हो गई, वह कहां गया ?"

डा. मुखर्जी ने फौरन कोई जवाब नहीं दिया। इत्मीनान के साथ पाइप पीते हुए वह कुछ पल खामोश रहा। मगर कालिनाथ ने गौर किया कि उसका सवाल सुनने के साथ ही डा. मुखर्जी की भौं सिकुड़ गई और छिपे हुए क्रोध से चेहरा काला हो गया। कुछ देर बाद उसने कहा, "हमारा भी यही सवाल है कालिनाथ, इसीलिए तुमसे बात छिपाकर क्या फायदा होगा ? सौमित्र को लेकर हमलोग बहुत परेशान हैं। उसने घर में अशांति की आग लगा दी है। तुम्हें तो पता ही है, वह पढ़ाई-लिखाई में कितना अच्छा लड़का था, सबको उससे काफी उम्मीद थी। प्रोफेसर बरुआ जब भी मिलते थे तो कहते थे—सौमित्र की मुट्ठी में आई. ए. एस. है, सिर्फ उसे परीक्षा देनी पड़ेगी। उनके अनुसार उनके समूचे अध्यापन के कैरियर में सौमित्र जैसा ब्रिलिएंट लड़का दूसरा नहीं मिला। मगर ईश्वर ने उसे प्रतिभा दी, उससे क्या फायदा, उस प्रतिभा का सदुपयोग करने के लिए सद्बुद्धि उसे नहीं दी। उससे परीक्षा देने के लिए

कहते हैं तो वह हमें डांट देता है। हमने उससे कहा—आई. ए. एस. में बैठो, कोई बात नहीं, कुछ सालों के लिए विदेश में जाकर पढ़ाई कर लो। ईश्वर ने तुझे प्रतिभा दी है, उस प्रतिभा का विकास करने के लिए ईश्वर ने मुझे कुछ क्षमता भी दी है। मगर हमारी किस्मत ऐसी फूटी है कि वह विदेश जाने के लिए भी तैयार नहीं है।''

गुस्से को छिपाने की कठिन कोशिश का संकेत डा. मुखर्जी के चेहरे से मिल रहा था।

बोझिल खामोशी को तोड़ने के लिए कालिनाथ ने फिर पूछा, ''तो फिर वह क्या करना चाहता है ?''

''क्रांति !''—मनुष्य की भाषा में जैसे इससे अधिक घृणित शब्द दूसरा न हो, इस अंदाज में घृणा उंड़ेलकर शब्द का उच्चारण करते हुए डा. मुखर्जी ने कहा, ''वह और कुछ नहीं करेगा, सिर्फ क्रांति करना चाहता है। समाज की सारी जिम्मेवारी एक मात्र मेरे बेटे के कंधे पर आ गई है, वह अगर क्रांति कर पृथ्वी पर सर्वहारा का स्वर्ग राज्य कायम नहीं करेगा, तो वैसा काम करने वाला दूसरा कोई आदमी नहीं होगा। दरअसल यह सारी उछल-कूद जवानी का जोश है, समझे ? जवानी का खून जब ठंडा हो जाएगा तब सारा स्वप्न-विलास धुएं की तरह शून्य में विलीन हो जाएगा। नीरद चौधरी या किसी ने कहा था न कि प्रत्येक भावविलासी आदर्शवादी भारतीय युवक मार्क्स का शिष्य बनकर जीवन की शुरुआत करता है और रामकृष्ण परमहंस का शिष्य बनकर खत्म करता है। मगर समस्या है—कि इन भाव-विलासिता में जवानी का दुरुपयोग कर वह सुनहरा मौका हमेशा के लिए गंवा देगा, बाद में पत्थर पर सिर पटकने पर भी वैसा मौका दुबारा मिल पाएगा ? फिर जीवन भर पछतावे की आग में झुलसता रहेगा। तुम आए हो, अच्छा किया कालिनाथ ! तुम अगर उसे समझा-बुझाकर सही रास्ते पर ला सके, तो जीवन भर हम तुम्हारे सामने कृतज्ञ बने रहेंगे। भारतीय आदर्श में पितृभक्ति, यानी पिता के प्रति पुत्र का समर्पण एवं आज्ञाकारिता पर जो इतना ज्यादा महत्व दिया गया है, उसके पीछे एक महान उद्देश्य था। रामायण महाकाव्य का मूल विषय क्या है ? वह है पिता के प्रति पुत्र का संपूर्ण समर्पण। भारतीय समाज में पिता-पुत्र का ऐसा संबंध था, इसीलिए दुनिया की तमाम प्राचीन सभ्यताएं नष्ट हो गई, मगर भारतीय सभ्यता पिछले पांच हजार वर्षो से निरंतर जीवित है। मगर हमारे देश में आज विदेशी आदर्श और सभ्यता-संस्कृति का प्रभाव इतना बढ़ गया है कि इस पांच हजार साल पुरानी सभ्यता-और परंपरा का पतन होने लगा है। पुत्र जब पिता के खिलाफ विद्रोह कर देता है, तभी समाज के सामने अंतिम समय आ जाता है। आज हमारे देश में चारों तरफ वैसे लक्षण ही देख रहा हूं।''

काफी दिनों बाद दिल के दुख की बात खुलकर कहने का मौका पाकर डा. मुखर्जी का मुंह बंद नहीं हो रहा था, मगर तभी सौमित्र की मां ने बाहर निकलकर

कहा, "आप लेक्चर से ही लड़के का पेट भर देना चाहते हैं ? दस बज रहे हैं, खाना परोस दिया है, आइए।...कालिनाथ, खाना तो काफी पहले तैयार हो गया। सौमित्र के आने की बाट जोहते हुए देर हो गई। सोचा था, काफी दिनों बाद दोनों दोस्तों की मुलाकात होगी, साथ ही खाना खाओगे। मगर ईश्वर ने उसकी किस्मत में यह सुख नहीं लिखा है, आओ बेटे, भात ठंडा हो जाएगा।"

खाने के बाद कालिनाथ सोने के लिए गया तो उसने देखा, सौमित्र के कमरे में उसके लिए दूसरे बिस्तर का इंतजाम किया गया है। मेज पर सौमित्र का खाना ढककर रखा गया है। सोने से पहले सौमित्र की मां ने आकर कालिनाथ से कहा, "कालिनाथ, तुम्हारे लिए अलग कमरे में सोने का इंतजाम कर सकती थी, मगर सोचा, सौमित्र आएगा तो तुम्हें देखकर खुश होगा। वह जल्दी लौट आए तो कुछ बातें भी कर पाओगे। हमारी परेशानी की बातें तो तुमने सुनी होंगी। तुम उसे जरा समझाने की कोशिश करना।"

कालिनाथ ने घड़ी की तरफ देखा—दस बज रहे थे। अधिक रात नहीं हुई। सौमित्र के लिए वह और एक घंटे तक इंतजार कर सकता है। उसने सौमित्र के शेल्फ से एक किताब निकालकर पढ़ने की कोशिश की। मगर एक पृष्ठ पढ़ने के बाद उसने महसूस किया, किताब पढ़ने में उसका जी नहीं लग रहा, अब तक जो पढ़ा—एक भी शब्द उसके दिमाग में नहीं समा पाया। किताब रखकर उसने हाथ-पैर फैलाकर आराम करने की कोशिश की।

जागने की कोशिश करने के बावजूद कालिनाथ को हल्की नींद आने लगी थी, तभी बरामदे में किसी की आहट सुनकर वह जाग गया। जरूर सौमित्र आया है। उसे इस तरह देखकर सौमित्र के चेहरे पर जो विस्मय और आनंद का भाव प्रकट होगा—उसका लुत्फ उठाने के लिए कालिनाथ दरवाजे की तरफ देखने लगा।

दरवाजा खोलकर सौमित्र भीतर आ गया, इसके साथ ही कालिनाथ ने शराब की गंध का अनुभव किया। कालिनाथ के चेहरे की तरफ देखकर सौमित्र कुछ पल के लिए भौंचक होकर खड़ा रहा। जैसे उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। अगले ही पल खुशी के मारे वह चिल्ला उठा, "अरे कालिनाथ, तुम !"

डगमगाते कदमों से आगे बढ़कर सौमित्र ने कालिनाथ को बिस्तर पर ही बांहों में भर लिया।

सौमित्र के आलिंगन में पल भर के लिए कालिनाथ निश्चल रहा। उसे देखकर सौमित्र को काफी खुशी हुई है, इस बात में कोई संदेह नहीं। मगर आलिंगन के जरिए खुशी जाहिर करना शायद शराब के नशे का परिणाम है—कालिनाथ ने मन ही मन सोचा। जज्बातों को जाहिर करने के मामले में सौमित्र वैसे काफी संयत है।

सौमित्र की बांहों से स्वयं को मुक्त कर कालिनाथ बिस्तर पर बैठ गया, "मुझे देखकर तुम्हें इतनी हैरानी क्यों हो रही है ?" कालिनाथ ने कहा, "मैंने तो अपने

आने की सूचना देते हुए तुम्हें खत लिखा था।''

''इसीलिए तो ज्यादा खुशी हो रही है। तुमने तो मुझे निश्चित तारीख की सूचना नहीं दी थी। जब से तुम्हारा खत मिला तब से तुम्हारी राह मैं रोज देखता रहा हूं।''

''राह देखने का नमूना अच्छी तरह देख चुका हूं,'' कालिनाथ ने व्यंग्य के साथ कहा, ''घर में बैठकर राह देखते-देखते ऊबकर जाने इस आधीरात में गुवाहाटी की सड़कों पर शायद मेरी तलाश हो रही थी !''

सौमित्र कपड़े बदलने लगा।

उसको डगमगाते हुए देखकर कालिनाथ ने एक लंबी आह भरी और खुद से बात करने की तरह कहा, ''इसे कहते हैं किस्मत का मजाक ! मैं राजधानी में आया था अपने गांव में शराब का प्रचलन बंद करवाने की व्यवस्था करने के लिए और अपने प्यारे दोस्त के घर मेहमान बनकर आया तो देख रहा हूं वह खुद शराब के नशे में बेसुध है।''

सौमित्र ने फौरन मुंह घुमाकर कहा, ''क्या कहा ? मैं शराब के नशे में बेसुध हूं ? शराब पीने से क्या होश नहीं रहता ?''

''रहता है, मगर तुम होश में नहीं हो। और इस तरह तुम भावी क्रांति के लिए खुद को तैयार कर रहे हो !'' कालिनाथ की आवाज में ऐसा व्यंग्य जाहिर हुआ कि खुद उसे भी हैरानी हुई।

कालिनाथ के व्यंग्य ने सौमित्र के कमजोर स्थान पर चोट पहुंचाई थी। उसे क्रोध आ गया। मगर अगले ही पल क्रोध पर काबू पाकर ठहाका लगाकर हंसते हुए बोला, ''बस, बस, काफी है। अब रहने भी दो। अब तक काफी नसीहत सुन चुका हूं, सुनते-सुनते कान पक गए हैं। तुम नए घाव पर पका हुआ तेल मत डालो। किसी की बात अगर मुझे सुननी ही पड़ेगी तो अपने गुरु की बात सुनूंगा।''

होंठों पर व्यंग्यपूर्ण मुस्कान लाकर कालिनाथ ने पूछा, ''वह महापुरुष कौन हैं ? वे क्या कहते हैं, हम भी सुनकर जीवन को धन्य कर लें।''

''मजाक करने की जरूरत नहीं है। तुम जैसे दुर्बल प्यूरीटन लोग स्वयं जीवन का स्वाद नहीं लेते। दूसरे लेते हैं तो बर्दाश्त नहीं करते। मेरे गुरु ओलीवर गोल्डस्मिथ क्या कहते हैं, जानते हो ?

Let schoolmasters puzzle their brain
with grammer and nonsense and learning.
Good liquor, I stoutly maintain
Gives genius a better discerning.

कपड़े बदलने के बाद सौमित्र कालिनाथ के बिस्तर के पास एक कुर्सी खींचकर बैठ गया। कालिनाथ बोला, ''खाना खा लो।''

"आज नहीं खाऊंगा"—सौमित्र बोला, "तुम्हें देखकर ही मेरा पेट भर गया। अब सुबह होने तक हमलोग बातें करेंगे। रात भर जागना बर्दाश्त कर पाओगे न ?"

"तुम कर सकते हो तो मैं क्यों नहीं कर सकता ? मुझे रात भर जागने की काफी आदत है।"

"तुम भाग्यशाली हो, कालिनाथ ! अपनी मर्जी से रात भर जाग सकते हो। मेरी समस्या दूसरी है। चाहकर भी मैं सो नहीं सकता। काफी दिनों से मैं इंसोमनिया का शिकार हूं। गोली खाने के बाद ही सो पाता हूं।"

"क्रांति की चिंता के कारण ही शायद तुम्हें नीद नहीं आती ?" फिर एक बार सौमित्र का मजाक उड़ाने का लोभ कालिनाथ दबा नहीं पाया।

सोमित्र ने तीखी नजरों से एक बार कालिनाथ की आंखों में देखा, मगर कुछ बोला नहीं। कालिनाथ के मजाक को जैसें उसने सुना नहीं हो, उसी अंदाज में बोला, "ठहरो, तुम्हारे साथ बहस करने के लिए ठीक से तैयारी कर लेता हूं। जार्ज ग्रासस्मिथ—यह गोल्डस्मिथ नही हैं, जार्ज ग्रासस्मिथ का वह मशहूर गाना सुना है कभी—Another little drink wouldn't do us any harm—और थोड़ी-सी पी लेता हूं, ठहरो।" आलमारी खोलकर सौमित्र ने एक शराब की बोतल निकाली और गिलास में उंड़ेलकर पीने लगा।

कालिनाथ बोला, "तुम्हें मकीबूर की याद है ? सिक्स्थ ईयर में प्रमोशन मिलने पर भी जो पैसे की किल्लत के चलते पढ़ाई छोड़कर चला गया था—वही लड़का। उससे शिलांग में मिला था। वह अब सेक्रेटेरिएट में किरानी की नौकरी करता है। यूनिवर्सिटी में था तो वह भी तुम्हारी तरह क्रांति का सपना देखता था। तुम्हारी तरह वह भी मुझे धैर्यशील और मूक श्रोता समझकर अपनी तरह-तरह की योजनाओं के बारे में बताता था। शिलांग में उससे मिला तो पूछा, "एक साल तक गांव में रहकर आया हूं। वहां अखबार भी एक सप्ताह बाद पहुंचता है। एक साल से दुनिया की कोई खबर मुझे नहीं मिली। हमारे क्रांतिकारियों का क्या हाल है ?" मकीबूर बोला, "मैं खुद सेक्रेटरिएट की फाइलों में क्रांति कर रहा हूं। यह कोल्हू के बैल का काम है। चारों तरफ सिर्फ घूमते रहना पड़ता है। समाज को भी यह चारों तरफ घुमाता रहता है। बीच-बीच में गुवाहाटी जाता हूं। वहां क्रांतिकारियों का एक अड्डा है। एक सफल व्यवसायी अमीर युवक के घर में यह अड्डा जमता है। गुवाहाटी जाने पर मैं भी उस अड्डे में शामिल हो जाता हूं। दिन भर सब अपने काम में व्यस्त रहते हैं। कोई व्यवसाय करता है, कोई अध्यापन करता है, कोई वकालत करता है, इत्यादि। शाम होते ही धनी युवक के घर में क्रांतिकारियों का अड्डा जमता है। खाने-पीने का पूरा इंतजाम किया जाता है। हलक के नीचे शराब की एक घूंट उतरते ही सभी मित्र क्रांति के उन्माद से इस तरह जाग्रत हो उठते हैं कि उनकी बातचीत से आग बरसने लगती है। कुछ देर तक उनकी बातचीत सुनने से ऐसा लगता है—जैसे वर्तमान

की शोषक समाज-व्यवस्था और प्रतिक्रियावादी लोगों को क्रांति की आग में जलकर राख होने में ज्यादा देर नहीं है। वैसे कुछ दिनों के बाद साफ जाहिर हो जाता है कि यह आग उनकी बातों और घर की चारदीवारी के भीतर ही सीमित रहती है। बाहर की दुनिया में उस आग के फैलने की कोई आशंका नहीं होती। उन बेचारों को दोष देने से कोई फायदा नहीं। वे पाखंडी हैं—मैं ऐसा भी नहीं कहता। समाज के दुख-दर्द से वे सचमुच विचलित होते हैं, मगर आराम और सुरक्षा का जीवन छोड़कर समाज के रणक्षेत्र में कूदने की हिम्मत या मनोबल या नैतिक शक्ति वे कभी जुटा नहीं सकते। इसीलिए शराब पीकर क्रांतिकारी भाषण झाड़ना या शोषक वर्ग के खिलाफ जहर उगलना उनके लिए अपने अपराधी विवेक को दबाने का एक मात्र रास्ता है।' "

सौमित्र ने आधा गिलास शराब एक ही सांस में हलक के नीचे उतारकर गिलास जोर से मेज पर रख दिया और कालिनाथ की तरफ तीखी नजरों से देखता हुआ बोला, "तुम जरूर यही कहना चाहते हो कि मैं भी वैसा ही क्रांतिकारी हूं ?"

"तुम्हारे नाम की चर्चा अभी तक हुई नहीं—," कालिनाथ सौमित्र के दबाए हुए क्रोध की पूरी तरह उपेक्षा करते हुए बोला, "मैंने तो सिर्फ भूमिका बांधी है। मकीबूर ने और क्या कहा, सुनो। मैंने उससे पूछा—'तुम क्या यही कहना चाहते हो कि गुवाहाटी या असम के सारे क्रांतिकारी महज शौकिया क्रांतिकारी हैं, रोमांटिक क्रांतिकारी हैं—जिनकी प्रेरणा या उत्तेजना का एकमात्र उत्स एक गिलास शराब है ?' उसने जवाब दिया—'यह बात नहीं है। इतना ही नहीं, शराब के अड्डे पर जिन युवाओं की क्रांतिकारी कल्पना प्रस्फुटित होती है—उनकी गहराई और लगन पर मैं संदेह नहीं करता। ऐसे सैकड़ों युवक जरूर हैं—जिनमें से कई युवकों से मैं स्वयं मिला हूं—जो वर्तमान समाज-व्यवस्था को एक भयंकर अभिशाप मानते हैं और उसे बदलने के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए भी वे मन ही मन तैयार हैं। मगर जिस तरह लकड़ी के टुकड़ों को एक साथ रखने पर आग सुलगती है, अगल-अलग लकड़ी के टुकड़े रखने पर आग नहीं फैलती, ठीक उसी तरह क्रांतिकारी आदर्श और मानसिकता वाले लोगों को एकजुट करने की जरूरत है। यहीं पर नेतृत्व का प्रश्न खड़ा हो जाता है। इतिहास की व्याख्या चाहे जो भी हो, उपयुक्त नेतृत्व की आवश्यकता से कोई इंकार नहीं कर सकता। क्रांति की पूरी तैयारी हो चुकी है, अब सिर्फ नेतृत्व की प्रतीक्षा है। नहीं, मैंने शायद गलत कहा। क्रांति की तैयारी भी पूरी नहीं हुई है। हमारे जो युवा मानते हैं कि क्रांति की तैयारी पूरी हो चुकी हैं, क्रांति के लिए लोगों की मानसिकता तैयार हो चुकी है, दरअसल उनलोगों के बारे में किताबें पढ़ी हैं और किताबें लिखी हैं। मगर किताब और जिंदगी एक ही चीज नहीं होतीं। रूस में सिर्फ किताबें लिखकर क्रांति नहीं हुई थी। वीटंस्की का लेखन तुमने जरूर पढ़ा होगा। उन्होंने लिखा है कि जार के शासनकाल के अंतिम वर्षों में रूस के क्रांतिकारी मानसिकता वाले विद्यार्थी एवं युवा रूस की जनता से क्रांति करने का आह्वान नहीं कर रहे

थे, बल्कि क्रांति की जमीन तैयार करने के लिए वे हुजूम बनाकर गांव के निरक्षर लोगों को लिखना-पढ़ना सिखाने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने दुख के साथ लिखा है कि वैसी क्रूसेड जैसी कोई घटना उन्होंने भारतवर्ष में नहीं देखी है। हम भारत के लोग हर मामले में शार्टकट की तलाश करते हैं। मगर क्रांति के रास्ते में कोई शार्टकट नहीं होता। अपनी जीविका का सुरक्षित इंतजाम कर गुवाहाटी में बैठकर क्रांतिकारी पत्रिका निकालने या प्रतिक्रियावादी लोगों को गालियां देते रहने से ही देश में क्रांति की आग नहीं फैलती। मगर हमारे क्रांतिकारी युवा वैसा ही करने की कोशिश कर रहे हैं।"

"इसीलिए तुम एक साल से देहात में रहकर निरक्षर ग्रामीणों को पढ़ाई-लिखाई सिखाकर क्रांति के लिए तैयार करने की कोशिश करते रहे हो !"—अब तक कालिनाथ का व्यंग्य सुन रहे सौमित्र ने, इस बार उससे एक व्यंग्यपूर्ण बात कहने की कोशिश की।

कालिनाथ का मन दृढ़ है, आसानी से उसे ठेस नहीं पहुंचती। सौमित्र के व्यंग्य को अनसुना करते हुए उसने मुस्कराते हुए कहा, "नहीं भाई, इतनी बड़ी उच्चाकांक्षा मेरी नहीं है। एक साल से गांव में रहकर मैं सिर्फ एक काम ही करने की कोशिश करता रहा हूं। वह काम है—अपने गांव में अवैध दारू के प्रचलन पर रोक लगाना। वह भी इसलिए करने की कोशिश कर रहा हूं कि इससे मेरे परिवार का भी हित जुड़ा हुआ है—समाज के हित के बारे में इतना नहीं सोचा है।"

तीखे उपहास के स्वर में सौमित्र ने पूछा, "मगर तुम्हारा महान उद्देश्य सफल हुआ या नहीं ?"

"नहीं, यानी अभी तक नहीं हुआ है"—कालिनाथ ने उदास स्वर में कहा, "अवैध शराब का प्रचलन रोकने के लिए सरकार ने वहां जिन कर्मचारियों को तैनात कर रखा है, वे कर्मचारी ही इस धंधे के प्रमुख संरक्षक हैं। काफी सोच-विचार कर देखा—जब तक ये कर्मचारी वहां रहेंगे, मोहधूलि में अवैध शराब का प्रचलन बंद होने की कोई उम्मीद नहीं है। इसीलिए एक जनप्रतिनिधि दल को लेकर शिलांग आया था—मंत्री के सामने हाथ-पैर जोड़कर उनलोगों के तबादले का आदेश दिलवाने के लिए।"

"सफल हो पाए ?—" गिलास से शराब की आखिरी घूंट पीते हुए सौमित्र ने पूछा।

"नहीं हो सका। मंत्री लगभग तैयार था। मगर जनप्रतिनिधि दल के शिलांग जाने की सूचना पाकर आबकारी कर्मचारियों का प्रतिनिधि या वकील बनकर स्थानीय एम. एल. ए. भी वहां पहुंच गया। तीन दिनों तक हमारे बीच टग आफ वार चलता रहा। आखिरकार हम हार गए।"

"क्यों ? एक तरफ थी मोहधूलि की पूरी जनता और दूसरी तरफ आबकारी कर्मचारी और एम. एल. ए.—फिर भी तुमलोग क्यों हार गए ?"

"क्यों ? जवाब बहुत आसान है। एम. एल. ए. मोहधूलि की समूची जनता का चुना हुआ प्रतिनिधि नहीं है ? हम एक दिन जनसभा करके खुद को जनता के प्रतिनिधि घोषित कर दें, उससे क्या फर्क पड़ता है ? विश्व हजारिका को वोट देकर जनता ने जिस तरह एम. एल. ए. बनाया है, अपना प्रतिनिधि बनाया है, हमें तो उस तरह नहीं बनाया है, तो मंत्री किसकी बात मानेगा ?"

"ठहरो, ठहरो !"—सौमित्र ने गंभीर होकर कहा, "एक बात मैं अभी तक समझ नहीं पाया। जनता के हितों के खिलाफ जाकर एम. एल. ए. सिर्फ आबकारी कर्मचारियों के हितों की परवाह क्यों कर रहा है ? उससे उसे क्या फायदा होगा ?"

कालिनाथ ने अचानक जोर से ठहाका लगाकर कहा, "सौमित्र, मार्क्स-एंजिल्स-लेनिन की समस्त रचनावली तुम्हें कंठस्थ है, चीन-रूस-इंडोचीन की यथार्थ परिस्थिति तुम्हें मालूम है, मगर तुम्हारा अपना देश किस तरह चल रहा है, तुम नहीं जानते। वोट खरीदकर एम. एल. ए. बनने के लिए विश्व हजारिका को रुपए की जरूरत है—समझे ? वह रुपए कहां से आएंगे ? किसी को मारवाड़ी महाजन रुपए देता है, किसी को ठेकेदार देता है, विश्व हजारिका को आबकारी कर्मचारी रुपए देते हैं। भारत में राजनीति करने के लिए प्रत्येक आदमी को एक-एक कामधेनु गाय पालने की जरूरत पड़ती है। पार्टियां भी ऐसी कामधेनु गाय पालती हैं, राजनेता भी निजी तौर पर पालते हैं। हमारे विश्व हजारिका के लिए आबकारी कर्मचारी कामधेनु गाय हैं। अब रहस्य समझ में आया ?"

सौमित्र कुछ पल एकटक कालिनाथ की आंखों में देखता रहा। जैसे कोई जंग जीत ली हो, वैसी खुशी उसके चेहरे से झलकने लगी। विजय गर्व के साथ उसने कालिनाथ से पूछा, "इस समूची घटनावली से तुम्हें क्या शिक्षा मिली ?"

कुछ कहते-कहते कालिनाथ अचानक ठिठक गया। असहाय भाव के साथ उसने सिर्फ सिर हिलाया।

कालिनाथ को असहाय और निरुत्तर पाकर सौमित्र की उत्तेजना बढ़ गई। उसने उंगली हिलाते हुए कालिनाथ की आंखों में आंखें डालकर कहा, "इस अभागे देश की हजारों बड़ी समस्याओं की तुलना में अवैध शराब की समस्या इतनी नगण्य है कि उसका जिक्र भी नहीं किया जा सकता। फिर भी एक साल तक कोशिश करने के बावजूद तुम सिर्फ एक गांव में इस समस्या का समाधान नहीं कर पाए। पूरी जनता के प्रतिनिधि बनकर तुम आए, मगर कुछ आबकारी कर्मचारियों के तबादले का आदेश मंत्री से दिलवा नहीं पाए। वैसी स्थिति में क्या तुम सचमुच विश्वास करते हो कि आवेदन-निवेदन के जरिए, सिर्फ तथाकथित संसदीय गणतंत्र के प्रहसन के जरिए इस देश की हजारों बड़ी समस्याओं का समाधान कर पाओगे ? इस देश में युग-युग से कायम गरीबी, शोषण और अन्याय-अत्याचार को तुम खत्म कर पाओगे ? कालिनाथ, कम से कम एक बार तुम सचाई का सामना करने की कोशिश करो,

तुम जिस रास्ते पर चलकर काम करना चाहते हो, उस रास्ते पर हजार सालों तक काम करके भी विराट समस्याओं के इस ढेर की एक मुट्ठी धूल तक तुम निकाल नहीं पाओगे। याद रखो, मैं भी गणतंत्र चाहता हूं। मगर जो गणतंत्र तुम्हारे विश्व हजारिका जैसे अजीबो गरीब प्राणी को पैदा करता है, जिस गणतंत्र में जनता के घनघोर शत्रु को भी दंडित करने का कोई रास्ता नहीं है, उस गणतंत्र में मैं विश्वास नहीं करता। मैं चाहता हूं समाज के शोषित, लाछित, सर्वहारा लोगों का गणतंत्र, जो गणतंत्र समाज के दरिद्रतम व्यक्ति को भी हर तरह के आर्थिक और राजनीतिक दासता से मुक्ति देगा—वैसा गणतंत्र। और उस गणतंत्र की स्थापना का एक मात्र मार्ग है क्रांति का मार्ग, सशस्त्र क्राति का मार्ग।"—सौमित्र ने पहले से धीमी आवाज में कहा, "देश की हालत ने हमें चरम सीमा तक पहुंचा दिया है, कालिनाथ ! सशस्त्र क्रांति के सिवा हमें इस देश की मुक्ति का दूसरा रास्ता दिखाई नहीं देता। तुमसे मैंने एक साल पहले ही कहा था कि समय आने पर एक खास काम के लिए तुमसे मदद मांगूंगा। आज वह बात तुमसे खुलकर कहने का समय आ गया है। हम सशस्त्र क्रांति के लिए तैयार हो चुके है। पहाड़ पर, जंगल में, शहर की अंधेरी गलियों में इस घड़ी भी उस क्रांति की तैयारी हो रही है। तुम भी हमारे साथ शामिल हो जाओ—यही मेरा अनुरोध है। संसदीय बुर्जुवा गणतंत्र की अंधी गली का काफी अनुभव तुम्हें मिल चुका है, अब और अधिक समय बर्बाद किए बगैर क्रांति की लड़ाई में शामिल हो जाओ। और कुछ दिनों बाद मैं घर छोड़ दूंगा, तुम्हें भी मेरे साथ चलना होगा।"

दोनों काफी देर तक खामोश रहे। भौंहें सिकोड़कर कालिनाथ कुछ सोचने की कोशिश कर रहा था। उसके बाद खामोशी तोड़ते हुए कालिनाथ ने कहा, "क्रांति मैं भी चाहता हूं सौमित्र, मगर मैं विश्वास नहीं करता कि क्रांति का सिर्फ एक ही रास्ता है, सशस्त्र क्रांति का रास्ता। उस अंतिम रास्ते पर चलने से पहले हमें दूसरे सभी वैकल्पिक रास्तों को आजमा कर देखना होगा।"

सौमित्र अचानक काफी नाराज हो उठा। उत्तेजित होकर वह लगभग चीख उठा, "जीवन के कुछ लक्ष्य ऐसे भी होते हैं कालिनाथ, जहां पहुंचने के लिए हजारों रास्ते नहीं होते। औरत को गर्भवती बनाने का एक ही रास्ता होता है। वह रास्ता चरम आनंद का भी रास्ता है। आज के इस समाज के गर्भ में अगर नए शोषणहीन मुक्त समाज का बीज बोना है, उसका भी एक ही रास्ता है—वह है सशस्त्र क्रांति का रास्ता। जो पाखंडी, बदमाश और कायर हिंसा का विरोध करते हैं, वे लोग समाज में प्रतिदिन प्रतिपल घट रही हिंसक घटनाओं के प्रति मौन बने रहते हैं। क्या तुम भी उन्हीं पाखंडियों, बदमाशों में से एक हो ?"

कालिनाथ फिर खामोश हो गया। कुछ देर बाद वह बोला, "मुझे नीद आ रही है। तुम जो सवाल पूछ रहे हो, इस घडी समूचे भारतवर्ष के सामने यही सबसे बड़ा सवाल है—और कितने दिनों तक हम इस देश में हिंसक क्रांति का अंतिम रास्ता

चुनने से बच पाएंगे ? एक मामले में तुम मुझसे ज्यादा सुखी और भाग्यशाली हो। तुम्हारे भीतर कोई अंतर्द्वंद्व नहीं है। तुमने एक रास्ता चुना है, और आगे-पीछे देखे बगैर उसी रास्ते पर चलने के लिए तुम तैयार हो। हो सकता है, तुम असफल हो जाओ, मगर तुम्हारा रक्तदान बेकार नहीं जाएगा। युग-युग से तुम जैसे जोशीले स्वप्नदर्शी लोगों के खून ने मनुष्य के मन को जीवंत और उर्वर बनाकर रखा है। मगर मैं हिसाबी, दुविधाग्रस्त और अंतर्द्वंद्व से क्षत-विक्षत हूं। अंतिम रूप से कोई रास्ता चुनने से पहले मैं दूसरे हजारों रास्तों की जांच कर लेना चाहता हूं। और वैसा करते हुए शायद मेरी उम्र ही बीत जाए। हो सकता है, देश के अधिकतर लोग मेरे जैसे ही हैं। इसीलिए यह देश सदियों से जड़ बना हुआ है।...तुम जो सवाल पूछ रहे हो—बीसवीं सदी के आखिरी हिस्से में भारत के सामने यही सबसे बड़ा सवाल है—आज रात के अंतिम हिस्से में उसका समाधान करने की जिम्मेवारी तुम पर और मुझ पर नहीं है। आओ, अब सो जाएं। कल फिर बातें करेंगे।"

"कल सुबह मुझे कहीं जाना होगा," सौमित्र ने कहा, "दिन भर तुमसे मुलाकात शायद नहीं हो पाएगी।"

"ठीक है," कालिनाथ ने बिस्तर पर लेटते हुए कहा, "तुम अपने रास्ते पर बढ़ते रहो, मैं अपने रास्ते के अंत में क्या है, उसे देखने की कोशिश करता हूं। एक दिन जरूर कहीं फिर हमारी मुलाकात होगी। उस दिन हम फैसला करेंगे और एक-दूसरे के अनुभवों की तुलना करेंगे।"

कालिनाथ ने चेहरे तक रजाई खींच ली।

कुछ पल खामोश रहकर सौमित्र बोला, "शुतुरमुर्ग जिस तरह रेत में सिर छिपाता है, तुम अभी रजाई में मुंह छिपाने की कोशिश कर रहे हो ! मगर एक बात तुम्हें अभी ही बता देता हूं, कालिनाथ ! दो समानांतर रेखाएं जिस तरह कहीं नहीं मिलतीं उसी तरह तुमसे मुलाकात होने की कोई संभावना मुझे नजर नहीं आती—जब तक तुम वर्ग-शत्रु के रास्ते को छोड़कर मेरे रास्ते पर नहीं आ जाते। साथ ही, और एक बात याद रखना—क्रांति का रास्ता सिर्फ एक है, जैसे औरत को गर्भवती करने का रास्ता सिर्फ एक है।"

सौमित्र ने एक नींद की गोली खाकर गिलास में शराब उंड़ेली।

कुछ दिनों के बाद देश के विभिन्न हिस्सों में नक्सलपंथियों का सशस्त्र विद्रोह शुरू हुआ और उस विद्रोह में शामिल होकर सौमित्र गिरफ्तार हो गया। तेजपुर जेल में विचाराधीन कैदी के रूप में दिन गुजारते हुए एक दिन उसने अखबार में पढ़ा कि कालिनाथ 1972 के आम चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में विधानसभा के लिए चुनाव जीत गया है और मंत्री बन गया है। खबर पढ़कर सौमित्र ने स्वयं से ही

कहा, "हम दोनों अलग-अलग कारागार में कैद हैं। कब हमें मुक्ति मिलेगी ? कब हमारी मुलाकात होगी और एक-दूसरे के अनुभवों की तुलना करने का हमें मौका मिलेगा ?"

सौमित्र और कालिनाथ अपने-अपने कारागार से कैसे अनुभव लेकर मुक्त होंगे, इसके लिए हम भी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसके बाद की कहानी होगी बीसवीं सदी के अंतिम तीन दशकों के भारत का इतिहास।

□□□

शिवम् ऑफसैट प्रेस, ए-12/1, नरायणा इंडिस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली 110 028 द्वारा मुद्रित